प्रथम से ग्राहक बनने वालों की शुभ नामावली

३१	शा०	सौभागमल उम्मेदमलजी सेठिया	मद्रास
१६	शा०	डूंगरमलजी समदड़िया	मद्रास
१५	शा०	बकताबरमल मोहनलाल सेठिया	मद्रास
११	शा०	अमरचन्दजी ढढ्ढा	मद्रास
१०	शा०	धनराजजी वैद्य	मद्रास
११	शा०	खीवराजजी महता	मद्रास
५	शा०	धनसुखदासजी चोपड़ा	मद्रास
२	शा०	कवरलालजी बाफना	मद्रास
७	शा०	ऋषभदासजी बाफना	रावरसनपेठ
११	शा०	पुखराजजी	मद्रास
११	शा०	सुखलालजी समदड़िया	मद्रास
५	शा०	कानमलजी समदड़िया	मद्रास
७	शा०	बहादुरमलजी समदड़िया	
७	शा०	डूंगरचन्दजी समदड़ियाकी मारफ़त	मद्रास
३१	शा०	जुहारमल उदयचन्दजी	कलकत्ता
१५	शा०	लालचन्द अमानमलजी	कलकत्ता
१५	शा०	मगराज अमरचन्दजी	कलकत्ता
११	शा०	उदयचन्दजी रामपुरिया	कलकत्ता
१०	शा०	बेजवाड़ा निवासी	

मेरी तरफसे

यों तो मैंने इस महासतीके जीवन चरित्र रूप रोचक कथानकको कई चातुर्मासोंमें जनताके समक्ष वाँचा है परन्तु गतचातुर्मास श्रोताओंमें अत्यधिक रुचि देखीगई। प्रथम ठोस उपदेशके समय इतने श्रोता नहीं होते थे जितने कि इस कथानकके प्रारम्भ होते समय।

यह देखकर चीअमीचंदजीके पाटनर श्रीयुत भाई सागर मलजीकी प्रेरणासे हिन्दी भाषाभाषी समस्त जनताको इस बोध दायक ग्रन्थके पठनसे लाभ हो इस कारण इसे उपन्यासके नये ढंगमें मैंने अनुवादित करनेका प्रयास किया है। यदि पाठक इसे पढ़कर कुछभी लाभ उठायेंगे तो मैं अपने इस प्रयासको कुछ अंशमें सफल समझूंगा।

वसन्तपंचमी
देहली।

विनीत तिलक विजय
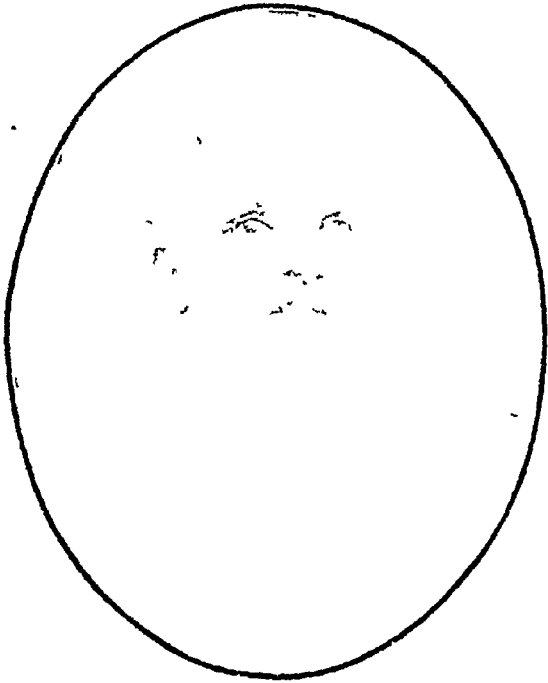
महाराज श्री तिलक विजय जी

आगन्तुक-युवक

महाराज वीरधवल अपने राजप्रासाद के ऊपरी दालान में बैठे हुए थे। संध्याका सुहावना समय था। वासरमणि सूर्य भगवान अपनी सुदूरवर्त्ति किरणों को समेट कर अपने निवास स्थानकी ओर प्रस्थान कर रहे थे। दिनभर अथक परिश्रम करने वाली मनुष्य जाति अपने २ घर पर आ विश्राँतिमें मग्न थी। पक्षीगण अपने २ घोंसलों में जाकर शाँति में लीन हो रहे थे। सृष्टिदेवी पर निस्तब्धता छाई हुई थी। आकाश मण्डल धुंधले रंग में प्रकाशहीन पर अतीव शोभायमान दीख रहा था। राजमहल के भव्य द्वार पर प्रतिहारी रात्रि का आगमन होनेके कारण सावधान हो संरक्षण की भावना से पहरा दे रहे थे। विशाल राजमहल के गगन चुम्बी शिखरों पर धीरे २ अन्धकार का साम्राज्य फैल रहा था। राजप्रासाद के समस्त कर्मचारी अपने २ नियत कार्य पर लग चुके थे। सृष्टिदेवी शान्त, स्निग्ध, हृदय से निद्राकी आराधना कर रही थी।

जिसने असंख्य आशाओंकी, अपरिमित लालसाओं की पूर्तिका समय अपनी आँखोंसे देख लिया है, जिसने राजैश्वर्यका दुष्प्राप्य सुख भोग लिया है, ऐसे महा-

राज वीरधवल सभा विसर्जन कर रात्रिके प्रशान्त समय में राजमहल के एक ऊपरके भागमें बैठे थे। सारी प्रजा उनके राजनियंत्रणकी दयामय स्थितिसे संतुष्ट थी। महाराज वीरधवल जहाँ पर बैठे हुए थे वहाँसे राजनगरीका मनोरम दृश्य दीख रहा था।

ऐसे सुहावने समयमें नीचेके द्वार पर किसी की आहट आई। समुद्रकी लहरें शांत होजाने पर जैसे समुद्र शांत दीखता है उसी तरह राजमहल गंभीर शांतता में विलीन था। राजमहल के महाद्वार पर प्रतिहारिओंके पास एक नव युवक आकर खड़ा हुआ। युवक गठीले शरीर का आरोग्य संपन्न था। उसके चेहरे पर उत्साह और नवचैतन्य की उमंगें नाच रही थीं। उसकी बड़ी २ आँखों में नवतेजोमय उत्साह छलक रहा था। उसके विस्तीर्ण ललाट पर पसीनेके बिन्दु चमकते थे और आँखों में वीरश्री का उज्जवल पानी झलक रहा था। युवक ने महाद्वार के प्रतिहारी को अत्यन्त विनीत भाव से प्रणाम किया और धीमे स्वर में कहा "मैं महाराज की मुलाकात के लिये आया हूँ"। बस! इतना ही कह कर वह युवक चुप होगया। आत्मगौरव की भावनाओं से उसका मुख मंडल निमेष मात्रके लिये प्रसन्न हो गया था।

"नहीं इस समय आप राजमहलमें नहीं जासकेंगे।" द्वारपाल ने युवकके चहरेको निहार कर उत्तर दिया। "आपसे महाराज का इस वक्त मिलना असंभव है। आप फिर कभी......" द्वारपाल की वात काटकर युवक ने अदम्य उत्साह से विनम्र भावयुत फिर कहा—नहीं मुझे इसी वक्त महाराज से मिलनेकी आवश्यकता है। आपसे कहने तकका भी समय नहीं, मुझे जल्दी ही जाने दो। आप किसी तरहकी शंका न रक्खें। महाराज मुझे देखते ही नाराज होनेके वदले प्रसन्न होंगे।

महाराज वीरधवल एकांत चित्तसे दीपकों के प्रकाश में राजनगरका सौन्दर्य निरीक्षण कर रहे थे। अस्तगामी सूर्यकी अस्पष्ट लालिमा भी अब अदृश्य हो चुकी थी। चारों तरफ़ अन्धकारने अपना अधिकार जमा लिया था। महाराजकी नजर महाद्वार पर गई। द्वार पर खड़े युवक को देखते ही वे प्रसन्न होगये। महाराज ने प्रौढ़ और गम्भीर आवाज से पुकारा—"द्वारपाल!"

महाराज की पुकार सुनते ही हाथ जोड़ प्रणाम करके द्वारपालने कहा—"आज्ञा सरकार" "उन्हें हमारे पास भेज दो।" महाराज वीरधवल का यह वाक्य पूरा भी न होने पाया था, महाद्वार खोला गया, और अपने पीछे २ उस युवक को लेकर वह प्रतिहारी

राजाके समीप आया, फिर तीन वक्त प्रणाम करके द्वार पाल वहाँसे बाहर निकल गया। महाराजने उस युवक को देखकर विचार किया इस वक्त संध्या समय मेरे पास आने वाले मनुष्य को अवश्य ही कोई महान् प्रयोजन होगा। राजाको चाहिए हर एक प्रजाजन के दुःखको हर समय सुनने के लिए तत्पर रहे और चाहे जैसे प्रयत्न से प्रजा को दुःखसे मुक्त करनी चाहिये। बहुतसे अधिकारी प्रजाके दुःखकी उपेक्षा करते हैं, नियमित समयके सिवा प्रजाजनों की फर्याद नहीं सुनते। इससे प्रजाको बहुत दफे कष्ट उठाना पड़ता है। इस प्रकार प्रजाकी पुकार पर उपेक्षा करने वाला अधिकारी या राजा वास्तवमें उस पदके योग्य ही नहीं होता। मुझे अपनी प्रजाकी फर्याद हर वक्त सुननी चाहिये और शक्य प्रयत्नों द्वारा उसे सुखी करनी चाहिए। राजा प्रजाके सुखसे सुखी, और दुःखसे दुःखी होता है। प्रजाके सुख पर ही राजाके राजैश्वर्यका आधार है यह बात हमें हर वक्त याद रखनी चाहिए। प्रजाकी यातनाभरी कराहनां राजाको निर्वंश कर भिखारी बना देती है। इत्यादि विचारों में मग्न होते हुए महाराज के सन्मुख आगंतुक युवक आ उपस्थित हुआ। उसने महाराज के सन्मुख उपहार रखकर विनीत भावसे गर्दन झुका

चरणों में नमस्कार किया।

प्राचीन साहित्य में विशाल भारत भूमि आर्य देशके नामसे प्रसिद्ध है। उसके दक्षिण देशमें चन्द्रावती नगरी उसकी शोभा में और भी अधिक वृद्धि कर रही थी। इसी चन्द्रावती नगरी के पूर्ववर्त्ति विशाल काय महान् मलयाचल पर्वत अपने सुगुंध मन्द पवन से नगरी के लोगोंको नित्य ही आनंदित करता था। राजाके महल, धनाढ्य व्यापारियों के गगन चुम्बी मकान, जिनधर्मदेव के मंदिर, और धर्मसाधन करने के पवित्र स्थान ये उस नगरीकी मुख्य शोभा बढ़ा रहे थे। शहरके चारों तरफ सुन्दर किला था। शहर की दक्षिण दिशामें महान् विस्तार वाली गोला नदी कल-कल निनाद करती हुई बह रही थी। शीतल और चमत्कारिक तरङ्गों से देखने वालोंके मनको आनंदित करती थी। नदीके किनारेका हरियाला प्रदेश, शहर के चारों तरफके बगीचे और छोटे छोटे सुन्दर पहाड़ों पर खड़े हुए वृक्षोंके निकुंज ग्रीष्म ऋतुमें प्रचंड आताप से मनुष्योंको शांति देनेके लिए पर्याप्त थे। इसी रमणीय चन्द्रावती नगरीके स्वामी पूर्वोक्त महाराज वीर-धवल हैं।

महाराजके साथ बातचीत कर उस युवकके गये.

बाद महाराज वीरधवल के चेहरे पर कुछ उदासीन भाव ने अपना प्रभाव डाला। मुखपर चमकता हुआ राजतेज निस्तेज सा हो गया, उसके हृदयमें चिंताने स्थान जमा लिया और मुखसे उष्ण तथा दीर्घ निश्वास निकलने लगा। अर्थात् महाराज किसी गूढ़ चिंताके कारण शोक समुन्द्रमें निमग्न होगये। ठीक इसी समय पर महारानी चंपक माला और द्वितीया रानी कनकवती महाराज के पास आ पहुंचीं। महारानी चंपक माला अतिसुन्दर रूप लावण्यके उपरान्त शीलादि अलंकारों से सुशोभित होने के कारण सारे राजकुटुम्ब पर अपना महारानी पनका अद्वितीय प्रभाव रखती थी। इसीसे महाराजने उसे पट्टरानी की पदवीसे विभूषित किया था। कनकवती भी रूप लवण्य में कुछ कम न थी' इसी लिये वह भी महाराज वीरधवलकी प्रिय पत्नी थी। दोनों रानियोंके वहां आ-जाने पर भी ध्यानमग्न योगीके समान चिंतामें एकाग्र हुए महाराज वीरधवल ने उनकी तरफ गर्दन उठाकर देखा तक नहीं। अपने प्रिय पतिकी ओरसे हमेशा की तरह आज कुछ भी आदर मान न मिलने के कारण दोनों रानी घबरा सी गई। वे व्यग्र चित्तसे विचारने लगीं कि आज महाराजकी हम पर सदाके समान कृपादृष्टि न होनेका क्या कारण है? क्या अज्ञानता में हमसे पति देवका

कोई अपराध हुआ है ? आज महाराज हमारी तरफ देखते भी नहीं। इस प्रकार के संकल्प विकल्पकी उलझन में उलझी हुई वल्लभायें महाराज के नजदीक आई और द्रवित हृदय तथा नम्र वचनसे पतिदेव को प्रार्थना करने लगीं। नाथ! क्या आज हम दासियों से अज्ञानता में आपका कोई अपराध हुआ है? आप इतने उदास क्यों हैं? थोड़ी देर पहले तो आप दीवान खानेके बरामदे में आनन्द से फिर रहे थे, और चंद्रावती नगरी की शोभा देख रहे थे। इतने थोड़े ही समय में आप इतने उदास क्यों बने? अगर यह बात इन अपनी सहचारिणियों को मालूम करने लायक हो तो कृपाकर हमे भी अपने दुःखमें सामिल करें।

अपनी प्रिय वल्लभाओं का शब्द कानमें पड़ते ही महाराज की विचार श्रेणी भंग हुई और वे प्रेमगर्भित शब्दों से बोले प्रियवल्लभाओ! आज मैं एक ऐसी चिंतामें निमग्न हो गया हूं कि तुम्हारा आगमन भी मुझे मालूम न हुआ। परन्तु इस चिंताका कारण जुदा ही है और तुम्हें भी इसमें हिस्सा लेना होगा। हमारे ही शहर में रहने वाले एक वणिक पुत्र गुणवर्माने अभी मेरे पास आकर अपने वरका जो इतिहास सुनाया है सिर्फ वही मेरी चिंताका कारण है" इतना कहकर महाराज वीरधवल

फिर शांत होगये ।

महारानी चंपक माला हाथ जोड़कर नम्रतासे बोली महाराज ! आपकी चिंताका कारण हम सहचरियों को अवश्य सुनाना चाहिए । हम आपके ही सुखसे सुखी और दुखसे दुखी होनेवाली हैं । आपके कथनानुसार इस चिंतामें हम खुशी से हिस्सा लेंगी ।

प्रियाका अत्याग्रह देख महाराज वीरधवल अपनी उदासीनता का कारणरूप गुणवर्मा द्वारा कहा हुआ वृत्तान्त सुनाने लगे । प्रिय वल्लभाओ ! हमारी इस चंद्रावती नगरी में लोभाकर और लोभानन्दी नामके दो वणिक रहते हैं । वे अपने नामानुसार ही गुणनिष्पन्न हैं । सहोदर होनेके कारण उन दोनों भाइयोंमें परस्पर प्रेमभाव भी है । वे लोहे आदिका व्यापार करके धन उपार्जन करते हुए सुखसे दिन व्यतीत करते हैं । समय क्रमसे लोभाकरको गुणवर्मा नामक पुत्र हुआ । परन्तु अनेक स्त्रियोंके साथ पाणिग्रहण करने पर भी लोभानंदी को कुछ भी संतान न हुई । सचमुच पुत्र पुत्री आदि संतति रूप फल भी पूर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्म बीजानुसार ही मिल सकता है ।

एक दिन वे दोनों भाई दुकान पर बैटे थे । उस समय एक सुंदर आकृति वाला अपरिचित युवा पुरुष

वहाँ आया । सांसारिक व्यवहार में एवं अधिकतया वणिक् कलामें प्रवीण इन वणिकों ने उसकी आकृति परसे उसे धनवान समझ कर आसनादि देकर उसकी अच्छी भक्ति की । कितनेएक दिनके बाद उन वणिकोंकी बनावटी प्रीति और भक्तिसे विश्वास प्राप्त करनेवाले उस युवान् पुरुष ने अपने पास रहा हुआ एक तूम्बा कुछ दिनके लिए धरोवर के तौर पर उन्हें सौंप दिया और खुद किसी एक गाँव को चला गया । उन्होंने उस तूंबे को दुकानमें किसी एक खूंटी पर लटका दिया । आतापकी गर्मीसे पिघले हुए रसके बिंदु उस तूंबेमें से झर कर नीचे पड़ी हुई लोहेकी एक खुदाली पर पड़े । वह लोहभेदक रस होनेके कारण वह वजनदार लोहेकी खुदाली उस रसके स्पर्श मात्रसे सुवर्णमय बन गई । यह देखकर उन बनियोंने अच्छी तरह समझ लिया कि उस तूंबे में सिद्धरस है । इस कारण उन लोभांध वणिकों ने रस सहित तूंबेको किसी गुप्त स्थानमें छिपा लिया ।

कितनेएक दिनके बाद वह युवक फिर वापिस चन्द्रावती में आया और माने हुये प्रमाणिक उन वणिकों के पास से उसने अपना तूंबा वापिस माँगा । उन दंभी व्यापारियों ने जवाब दिया कि आपका तूंबा चूहोंने डोरी काट देनेके कारण नीचे पड़ कर फूट गया और

उसमें रहा हुआ रस तमाम जमीन पर बह गया! इस प्रकार जवाब देकर किसी अन्य तूंबेके टुकड़े लाकर उसे दिखलाये। टुकड़े देख उस युवा पुरुष ने समझ लिया कि मेरे तूंबे में रहे हुये लोह भेदक रसको इन्होंने किसी न किसी प्रकार जान लिया है। इसी कारण ये मेरे तूंबेको छिपाते हैं। युवा पुरुष बोला–सेठ! मेरा तूंबा मुझे वापिस दे दो, ये टुकड़े मेरे तूंबेके नहीं हैं। कपटसे आप मुझे झूठा उत्तर मत दो। आप न्यायवान् हैं, मैंने आपको प्रमाणिक और विश्वासु समझ कर ही आपके पास रक्षण के लिये तूंबा रक्खा है। यदि आप मेरे साथ विश्वास-घात करेंगे तो आपके लिये भी महान् अनर्थ होगा। मैं किसी तरह भी विश्वासघात का बदला लिए बिना न रहूंगा। इत्यादि अनेक प्रकार से उन दोनों व्यापारियों को समझाया, परन्तु लोभके वसीभूत हो; उन वणिकों ने उसके कथन की बिलकुल पर्वा नहीं की। युवक ने विचारा कि अगर यह बात मैं राजासे जाकर कहूं तो यह ऐसी वस्तु है कि इसे राजा खुद ले लेगा। क्योंकि लक्ष्मी को देखकर किसका मन नहीं ललचाता? दूसरी तरफ ये लोभांध व्यापारी भी मुझे सरलता से मेरे रस का तूंबा वापिस दें यह असंभवित है। मुझे अभी बहुत

दूर जाना है। अतः समय खोना भी ठीक नहीं। मुझे अब अन्तिम उपाय का ही आश्रय लेना चाहिये। "शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्" "शठ के साथ शठता ही करना, धूर्तों के साथ धूर्त बनना, और सरल मनुष्यों के साथ सरलता का व्यवहार करना योग्य है" इस प्रकार विचार कर उसके पास जो स्तंभनकारी विद्या थी उस विद्याके प्रभावसे उस युवकने दोनों भाइयोंको स्तंभित कर दिया और अपने कियेका फल पाओ! यह कह कर वह वहांसे अन्यत्र चला गया।

उस विद्याके योगसे वे दोनों भाई ऐसे स्तंभित होगये कि उनके अंगोपांग भी हिल जुल नहीं सके। परन्तु स्तंभकी माफक स्थिर हो वे दोनों खड़े ही रह गये। थोड़े ही समयमें उन दोनोंकी सन्धियें टूटने लगीं। इससे पीड़ाके कारण वे जोरसे चिल्लाने लगे। मूर्ख लोग किसी भी कामको करते समय जरा भी सोच विचार नहीं करते, पामर जीवोंका यही लक्षण है।

इस संसारमें अज्ञानी जीव कर्म करते समय आगामी परिणाम का बिलकुल खयाल नहीं करते, वे, वर्तमान कालको ही देखते हैं। परन्तु वर्तमान में किए हुये पापकर्मों का जब कड़वा फल भोगना पड़ता है तब

उससे छुटकारा पानेकी वे अनेक विध कोशिश करते हैं और छुटकारा न पानेसे दयाजनक आर्त स्वर से रुदन करते हैं। प्राणी जिस प्रकारके परिणामसे जो कर्म बाँधता है उसका विपाकोदय आने पर वैसा ही मंद या तीव्र फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसी लिए दुःखसे उकताने वाले मनुष्योंको या दुःखको न पसंद करने वाले मनुष्योंको कर्म करते समय ही सावधान रहना चाहिये। जिससे कि उन्हें कड़वा फल भोगने का समय न आवे।

विश्वासघात महा पाप है और विश्वासघात करने वाले अधोगति में जाकर भयंकर कष्ट भोगते हैं। इन वणिकों को अपने किये हुये विश्वासघात–पाप करने का इस वक्त पश्चात्ताप हुआ। परन्तु समय बीते बाद कर्म का परिणाम उदय होने पर पश्चात्ताप करना बेकार होता है। इस समय वह युवा पुरुष निस्पृह मनुष्य के समान अपनी धरोहर की आशा छोड़ कर बहुत दूर निकल गया था। यह बात शहरके बड़े २ हिस्सोंमें फैल गई। जगह २ इस बातकी चर्चा होने लगी और नगरके विचारशील मनुष्य उन दोनों भाइयोंको फिटकारने लगे। बहुतसे मनुष्य यह समझ कर कि उग्र कर्मका फल इसी भवमें मिल जाता है, ऐसे घोर

अकृत्यों का परित्याग करने लगे।

इस समय लोभाकर का पुत्र गुणवर्मा किसी कार्य के लिये कितने एक दिनसे शहर से बाहर किसी गाँवको गया हुआ था। किसी मनुष्यके द्वारा इस बातको सुन कर वह शीघ्र ही घर आया। अपने पिता व चन्द्राकी ऐसी अधम दशा देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। गुणवर्मा उदार दिल, निर्लोभी और विचारशील युवक था। लोगोंमें होने वाली इस कृतिकी निन्दा उससे सहन न हो सकी। दूसरी तरफ अपने बुजुर्गों को निरन्तर दुःखी अवस्था में देखना यह भी उसे उचित न लगा। उसने तुरन्त ही अनेक मंत्रवादी बुलवाये और अपने बुजुर्गों का दुःख दूर करने के लिये खूब द्रव्य व्यय करना शुरू किया। अनेक तरह के उपाय किये गये, अनेक मांत्रिक तांत्रिकोंने अपने प्रयोग किये परन्तु अपने आपसे किये हुये कर्मका कटुफल भोगे बगैर किस तरह मुक्ति हो सकती थी? पाषाण किये हुये प्रहार की माफक उन लोगोंके किये हुये अनेक उपाय सब निष्फल गये। इतना ही नहीं किन्तु धीरे २ उनका कष्ट और भी बढ़ता गया। गुणवर्मा निराश हो गया। उसे कोई उपाय सफल होना मालूम न दिया।

—:: —

धर्म-प्रभाव

चतुरंगो जयत्यर्हन् दिशन् धर्म चतुर्विधं,
चतुष्काष्टासु प्रसृतां, जेतुं मोह चमूमिक।

चारों दिशाओंमें फैली हुई मोहराजाकी सेनाको जीतनेके लिए ही मानो चार शरीरको धारण कर चार प्रकार के धर्मका उपदेश करते हुये अरिहंत भगवन्त जय को प्राप्त करते हैं।

संसारमें धर्म सर्वोत्कृष्ट मंगल है। समृद्धि को देने वाला, अनेक प्रकारकी सुख प्राप्ति कराने वाला, संतान को तारने वाला, पूर्वजोंको पवित्र करने वाला, अपकीर्तिको हरने वाला, और जगतमें कीर्तिकी वृद्धि करने वाला, एक मात्र धर्म ही है। संपत्तिकी इच्छा करने वालों को संपत्ति देने वाला, भोगोंकी तृष्णा वालोंको भोग देने वाला, सौभाग्य के अर्थियोंको सौभाग्य प्राप्त कराने वाला, पुत्रार्थियों को पुत्र और राज्यार्थियोंको राज्य ऋद्धि प्राप्त कराने वाला भी सिर्फ धर्म ही है। विशेष क्या कहा जाय जगत में एक भी ऐसी वस्तु नहीं कि जो धर्मके द्वारा धर्मकर्ताको प्राप्त न हो सके। अर्थात् स्वर्ग और अपवर्ग-मुक्तिकी प्राप्ती भी धर्मसे ही होती है।

धर्मका प्रभाव कथन या श्रद्धामात्र से ही नहीं है, किन्तु विचारक मनुष्य संसारकी विषमताका विचार करके इसका भली प्रकार निर्णय कर सकते हैं। प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि संसारमें एक मनुष्य सुखी, दूसरा दुखी, एक मूर्ख, दूसरा ज्ञानी, एक आरोग्य प्राप्त, दूसरा रोगी, एक धनवान तो दूसरा निर्धन, एक दाता दूसरा भिक्षु, एक मनुष्य अन्य लाखों मनुष्योंका पूज्य और दूसरा मनुष्य लाखों मनुष्यों का तिरस्कार पात्र है। इत्यादि अनेक प्रकारकी विचित्रताका अनुभव क्यों होता है ? मनुष्यता समान होने पर भी इस तरहका भेद क्यों देखा जाता है ? एकही कार्यके लिये सब तरहके साधनों द्वारा समान प्रयत्न करने पर भी एक की उस कार्यमें विजय और दूसरेकी पराजय देख पड़ती है। समान साधन और समान ही प्रयत्न करने पर विजय और पराजय का कारण क्या ? विचारक मनुष्य विचार द्वारा इस कारणको शोधते हुये स्वयं निश्चय कर सकता है कि इन तमाम बातोंमें कारण भूत मात्र एक धर्म ही है। धर्मका विषय बहुत गहन है। उसके कार्य और कारणके नियमोंका अभ्यास बहुत सूक्ष्मता से करना चाहिये। धार्मिक सूक्ष्म ज्ञानके सिवा मनुष्य बहुत दफा गंभीर भूल कर बैठता है, और

उससे अपनी धार्मिक श्रद्धाको शिथिल कर लेता है।

दृष्टांतके तौरपर धर्मश्रद्धाके शिथिल होनेका बहुत दफा यह कारण बनता है, पाप वृत्तिसे आजीविका करने वाले कपट प्रपंच रचने वाले और पापमें अधिक प्रवृत्ति करने वाले बहुतसे मनुष्य सुखी देख पड़ते हैं। व्यवहारिक कार्य प्रपंचमें भी कदाचित उन्हें सफलता प्राप्त होती देख पड़ती है। इत्यादि प्रत्यक्ष कारणों को देख कर बहुतसे मनुष्य अपने दिलमें शंकाशील बनते हैं कि धर्म है या नहीं? धर्मका फल मिलता है या नहीं? पापी लोग सुखी क्यों हैं? धर्म करने वाले दुखी क्यों देख पड़ते हैं? इत्यादि शंकाकी नजरसे धर्म तथा उसके फलको देखते हैं। सच पूछो तो इस प्रकारकी शंका करने वाले मनुष्योंको धर्म और उसके कार्य कारण के नियमोंका पूर्ण परिज्ञान ही नहीं होता इसीसे बाह्य व्यवहार को देख कर उनके दिल में शंकायें पैदा होती हैं, परन्तु उन्हें सोचना चाहिये कि संसारमें कोई सा भी कार्य, कारणके बगैर निष्पन्न नहीं होता।

जमीन में बीज बोये बाद हवा पानी और खाद आदि निमित्त सर्वथा अनुकूल हों तो वह बीज अल्प समयमें ही अङ्कुरित हो शाखायें, पत्तियें, वगैरह

उत्पन्न कर एक वृक्षके रूपमें नजर आता है, और समय पर फल भी देनेमें समर्थ होता है परन्तु पर्याप्त अनुकूल साधन होने पर भी वह बीज एक ही दिनमें महान् वृक्ष के रूपमें नहीं दीख सकता। क्योंकि कारणको कार्यके रूप में आनेके लिये कुछ भी समयान्तर या व्यवधानकी आवश्यकता है। इसी प्रकार इस दृष्टान्तके समान धर्मवृक्षके मीठे फल प्राप्त करने के लिये व्यवधानकी जरूरत होती है। एवं पाप रूपी वृक्षके कड़वे फलोंके साथ भी इस व्यवधान की समानता समझ लेना चाहिये। जिस प्रकार वृक्षकी वृद्धिमें और उसके शीघ्र फल देनेमें अनुकूल कारणोंकी आवश्यकता होती है उसी प्रकार उग्र पुण्य और उग्र पाप वाले कर्मोंका फल भी थोड़े ही समय में तीव्र मिलता है। ऐसे ही मंद परिणामसे किये हुये पुण्य पाप वाले कर्मोंका फल भी कालान्तर में सुख दुख नियमित रूपसे मिलता है।

उपरोक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि जो पाप वृत्ति करने वाले प्रपंची मनुष्य इस समय सुखी देख पड़ते हैं और व्यवहार में सफलता प्राप्त करते हैं यह उनके पूर्व कर्मोंका फल है। उनका पूर्व कर्म जो इस समय पापाचरण करते हुए भी उन्हें सुख और

सफलता दे रहा है शुभ था। इस समयके अशुभ कर्मोंके फलोंके बीच पूर्वके शुभ कर्मों का व्यवधान पड़ा हुआ है। यह व्यवधान या अंतर पूर्ण होने पर अर्थात् पूर्वकृत शुभ कर्मका फल समाप्त होने पर और वर्तमान कालके या पूर्वकाल के अशुभ कर्म उदय होने पर इस समय सुखी देख पड़ते मनुष्योंके तीव्र या मंद पाप परिणामके परमाणमें दुःख की न्यूनाधिकता अवश्य परिवर्तन हो जाती है।

क्रिया अच्छी हो या बुरी उसका फल अवश्य मिलता है। अच्छी क्रियाका अच्छा फल और खराब क्रियाका खराब फल प्राप्त होता है। इसको साबित करनेके लिए अनेक दृष्टांत नजरके सामने मौजूद हैं इस लिए धर्म सत्य है और उसका फल अवश्य ही मिलता है। मनुष्योंके लिए धर्मकी परमावश्यकता है और वह धर्म इस मनुष्य जिन्दगी में ही प्राप्त हो सकता है। ज्यों छाछमेंसे मक्खन, कीचड़मेंसे कमल, बांसमें से मुक्तामणि सारभूत होनेके कारण ग्रहण करने योग्य हैं, त्यों मनुष्य जन्मसे सारभूत धर्म ग्रहण करने योग्य है।

दुर्गतिमें पड़ते प्राणियोंको धारण करने वाला होनेसे और सद्गति प्राप्त कराने वाला अर्थात् जन्म

मरणके भयंकर दुःखोंसे मुक्त कराने वाला होनेके कारण वह धर्म कहलाता है। ज्ञान दर्शन और चारित्र इन तीनोंमें पूर्वोक्त सामर्थ्य होनेसे रत्नत्रय ही धर्म है।

जिससे जीवाजीवादि तत्वोंका बोध होता है उसे महान् पुरुष सम्यक् ज्ञान कहते हैं। आत्मा और उससे भिन्न अजीव, ये दो मुख्य वस्तु हैं। इन दोनों मुख्य तत्वोंमें संसारके सर्व दृश्य और अदृश्य पदार्थोंका समावेश हो जाता है। जड़ पदार्थोंके साथ जो आत्मा की आसक्ति है उसके कारण ही यह सर्व प्रपंच देख पड़ता है। आत्मा और जड़ पदार्थका जो संमिश्रण है वही नाना प्रकार के देह धारण करनेका कारण है। इष्टानिष्ट जड़ पदार्थोंकी प्राप्तिसे उत्पन्न होने वाला हर्ष शोक ही इस संमिश्रण का कारण है जड़ पदार्थों के लिये उत्पन्न होते हुए राग द्वेषसे कर्मका आगमन होता है। ये कर्म अनेक रूपमें विभाजित होकर आत्माके शुद्ध गुणोंको आच्छादित करते हैं (दबाते हैं) उन कर्म आवरणोंके द्वारा यह आत्मा चतुर्गतिरूप संसारमें परिभ्रमण करती हुई अनेक प्रकारकी यातनाओं पीड़ाओंका अनुभव करती है। संसारकी अनेक विध पीड़ाओंकी शांतिका मुख्य कारण मात्र ज्ञान

है। ज्ञानसे सत्यासत्यका, नित्यानित्यका, हिताहित का, और स्वरूपका बोध होता है। वस्तुका वस्तुके रूपमें बोध होनेसे सत्य और हितकारी वस्तुकी ओर प्रीति पैदा होती है। वही सुख दाई है ऐसी श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा प्राप्त होने पर तदनुसार आचरण करनेकी रुचि होती है और उस प्रकार वर्तन करनेसे आत्मा अपने शुद्ध स्वरूपको प्राप्त कर सकती है। तात्पर्य यह है कि सद् ज्ञानसे सत्य वस्तु मालूम होती है, सद् दर्शनसे उसमें श्रद्धा पैदा होती है, और चारित्र से तदनुसार वर्तन किया जाता है। या यों कहें कि सत्य वस्तु जाननेको सत् ज्ञान, उसके निश्चयको सद् दर्शन, और जैसा जाना तथा जैसी श्रद्धा वैसा ही आचरण करना वह चारित्र। ज्ञान, दर्शन और चारित्र इन तीनोंमें ज्ञानकी मुख्यता है। क्योंकि इसके बगैर पिछले दोनों अंग प्राप्त नहीं होते।

अदृष्टार्थका प्रकाशक ज्ञान तीसरे नेत्रके समान है। गाढ अज्ञान अन्धकारको दूर करने वाला ज्ञान सूर्यबिम्बके समान है। ज्ञान निष्कारण बन्धु है। ज्ञान मनुष्योंके लिये संसार रूपी समुद्रमें जहाजके समान है। कर्मके सिद्धान्तोंका ज्ञान अधिकतर मनन करना चाहिये और उसे हरएक प्रसंग पर क्रियामें

उपयुक्त करना चाहिये। दुःखदाई प्रसंगोंमें अपना दुख कम करनेके वास्ते उसे अवश्य ही सन्मुख लेना और धैर्यसे दुखके प्रसंगोंको पार करना चाहिये जिस प्रकार एक श्लोकके अर्थकी विचारनासे राजकुमारी मलया सुन्दरीने दुखके महान् समुद्रको पार किया।

"बन्धन मुक्ति"

धन धान्यसे परिपूर्ण और मनुष्योंसे शून्य एक शहरके दरवाजे पर खड़ा हुआ एक युवा पुरुष विचार कर रहा है "अब मैं कहाँ जाऊँ? उस अनजान पुरुष की किस तरह शोध करूँ? मैं खुद तो उसे पहचानता ही नहीं। उसे पहचाननेवाला साथमें आया हुआ मनुष्य भी बीमार होनेके कारण वापिस चला गया। मैं तो उसका नाम ठाम या आकृति वगैरह कुछ भी नहीं जानता। अब तो अनेक शहर गाँव आश्रम वगैरह फिर २ कर थक गया। परन्तु खोये हुये धनके समान उस मनुष्यका कुछ भी पता न लगा। अगर वह कहीं नजदीकमें ही हो और मुझे मिल भी जाय तो पहले देखे बगैर मैं उसे किस तरह पहचान सकूंगा? इत्यादि विचारों और रास्तेके परिश्रमसे खिन्न हुआ वह युवक

विश्रांतिके लिये इस शून्य शहरमें प्रवेश करता है। आगे चलने पर उसे एक अपने सन्मुख आता हुआ सुन्दर आकृतिवाला पुरुप देख पड़ा। उस पुरुपको शहर में प्रवेश करते हुये इस युवककी कुछ आवश्यकता हो ऐसा उसके चेहरे पर से मालूम होता था। शहरमें प्रवेश करने वाले उस थके हुए युवकको देख कर शहरमें से आता हुआ पुरुप बोल उठा—हे वीर पुरुप! आप कौन हैं? और कहाँसे आये हैं? यह सुन कर शहरमें प्रवेश करने वाले युवकने उत्तर दिया, 'भाई मैं एक पथिक हूँ' देशाटन करते हुये रास्तेके परिश्रमसे थक कर विश्रांतिके लिये इस शहरमें प्रवेश कर रहा हूँ।'

"आप स्वयं कौन हैं? इस शहरमें आप एकले ही क्यों देख पड़ते हैं? यह शहर ऋद्धि सिद्धिसे पूर्ण होने पर भी मनुष्योंसे शून्य क्यों है? और इस नगरका नाम क्या है!

पथिकके ऐसे विनय भरे वचन सुन कर खुशी हो वह पुरुप कहने लगा 'हे भद्र! यह कुशवर्धन नामक शहर है। वीरपुरुपोंमें अग्रेसर शूर नामक राजा यहाँ राज्य करता था। उसके जयचंद्र और विजयचंद्र नामके हम दो पुत्र थे। आयुष्य पूर्ण होनेपर मेरे पिता इस फानी दुनियाको त्याग कर देवलोकमें जा बसे। सचमुच ही

संसारमें तमाम वस्तु नाशवान हैं। देहधारी जीवोंका चाहे जितना लंबा आयुष्य हो तथापि उसका अन्त अवश्य है। मेरे पिताकी मृत्युके बाद मेरा बड़ा भाई जयचंद्र राज्यासनपर आरूढ हुआ। उसने मुझे राज्यका हिस्सा न दिया इससे मैं अपना अपमान समझकर इस राजधानीको छोड़ कर अन्यत्र चला गया। मैं चंद्रावती नगरीमें पहुंचा वहाँ जाकर उस नगरीके बाहर उद्यानमें एक विद्यासिद्ध पुरुषको मैंने देखा, परंतु वह सिद्ध पुरुष अतिसार रोगसे ऐसा दुख भोग रहा था कि जिससे ना तो उससे चलाही जाता था न बोला जाता था। उसकी ऐसी दशा देखकर मेरे हृदय में दयासंचार हुआ। दुःखी मनुष्योंको देखकर जिसके हृदयमें निःस्वार्थ दयाका संचार नहीं होता वह मनुष्य मनुष्य नाम धारण करनेके योग्य नहीं। मनुष्य जब खुद दुखी होता है तब वह दुखसे मुक्त होनेके लिए दूसरे मनुष्योंकी सहायता मांगता है, ऐसी दुखी अवस्था में यदि कोई थोड़ी भी सहायता दे तो वह बहुत खुशी होता है। इस तरहका स्वयं अनुभव होने परभी यदि वह मनुष्य दुखी अवस्थामें पड़े हुए दूसरे मनुष्यको सहायता न दे तो उस विचार शून्य मनुष्यको सचमुच ही नरपशु समझना चाहिए। ऐसे मनुष्य पृथ्वीपर भारभूत होते हैं। जहाँपर अपने पनकी और स्वार्थपनकी वृत्तियाँ होती हैं वहाँ

पर परमार्थ वृत्तियाँ और धार्मिक भावनायें टिक नहीं सकतीं। ज्ञानी पुरुष पुकार कर कहते हैं कि अगर तुम्हें सुखी होना है तो दूसरोंको निस्वार्थ बुद्धिसे सुखी करो। जहाँपर स्वार्थ सिद्धि होनेकी आशा होती है वहाँ सहाय करने वाले अधम मनुष्योंकी दुनियाँमें कमी नहीं है। परन्तु अपने स्वार्थकी आशा न रखकर बल्कि जिससे जान पहचान तक भी न हो ऐसे दुःखी मनुष्योंको सहाय देकर सुखी करने वाले वीर पुरुष इस संसारमें विरले ही होते हैं।

किसी भी वस्तुकी इच्छा न रखकर हृदयमें संचारित दयाकी प्रेरणासे मैंने उस सिद्ध पुरुषकी ऐसी सेवा सुश्रूषा और उपचारसे सहाय की जिससे वह थोड़े ही दिनोंमें सर्वथा निरोगी हो गया। आरोग्य प्राप्त करके उस सिद्ध पुरुषने मेरा नाम ठाम पूछा। संक्षेपसे मैंने अपने ऊपर बीती हुई सब घटना कह सुनाई।

प्रसन्न होकर उस सिद्ध पुरुषने मुझे पाठ-सिद्ध बोलने मात्रसे अपने गुणको प्रगट करने वाली एक स्तंभनकारी और दूसरी वशी-करण वशकरने वाली दो विद्यायें दीं। इसके उपरान्त एक रसका भरा हुआ तूंबा देकर उसने कहा कि भद्र इस तूंबेका तूने अच्छी तरहसे रक्षण करना। यह रस मैंने बड़े कष्टसे प्राप्त किया है। यह लोह

भेदी रस है' जिसके एक बिन्दुके स्पर्श मात्रसे लोहेका सोना बन जाता है। मेरी दुःखी अवस्थामें तूने बड़ी सहाय की है। तू मुझे बिलकुल नहीं पहचानता, एवं मेरी तरफसे तुझे किसीतरहकी आशा भी न थी' क्योंकि धनवानके समान मेरे पास वैसा कोई भी आडम्बर नहीं इस लिए तूने निःस्वार्थ बुद्धिसे मेरी सहायता की है, इसीसे तेरी उत्तमता और सत्कुलीनताका पता लगता है। मैं जो तुझे प्रत्युपकार में ये दो विद्यायें और एक सुवर्ण सिद्धरसका तूंबा दे रहा हूँ इनके द्वारा तू एक महान् राज्यसंपदा प्राप्त कर सकेगा परमात्मा तेरे श्रेष्ठ कर्तव्योंका तुझे बदला दें और तेरे मनोरथोंको सिद्ध करें" इत्यादि शिक्षा और आशीर्वाद देकर वह सिद्ध पुरुष गिरनार पहाड़की तरफ चला गया।

सिद्ध पुरुषने अपने ऊपर उपकार करने वाले मनुष्यपर अपनी शक्तिके अनुसार प्रत्युपकार किया। किये हुये उपकारको भूल जानेवाले, शक्ति होनेपर भी और अवसर मिलने पर भी प्रत्युपकार न करने वाले मनुष्य धिक्कारके पात्र हैं। इस प्रकारके कृतघ्न मनुष्य किये हुए उपकारको भले ही भूल जायँ, बदला न दें, तथापि परिणामकी विशुद्धि पूर्वक निःस्वार्थ बुद्धिसे किया हुआ परोपकार उसे अपने मीठे फल अवश्य चखाता है।

सिद्ध पुरुषकी शिक्षाको स्वीकार कर मैं चंद्रावती

नगरीमें फिरने गया। वहाँ फिरते हुए में लोभाकर और लोभानन्दी नामक व्यापारियोंकी दुकान पर पहुंचा। व्यापार निपुण एवं कपट प्रपंचमें भी निपुण उन वनियों ने मेरा बहुत ही आदर सत्कार किया, उनकी दिखलाई हुई शिष्टताके कारण मैं प्रसन्न होकर उनके स्वाधीन होगया। अतः विश्वास पाकर उस रसके तूंवेको सुरक्षित रखने के लिये उन्हें सौंपकर मैं कुछ दिनके लिए आगे दूसरे गाँव चला गया।

कितनेएक दिन लक्ष्मीपुरमें रहकर मातासे मिलने की उत्कंठासे मैं स्वदेश जानेको पीछे लौटा। रास्तेमें चंद्रावतीमें रसका तूंबा लेनेके लिए सेठकी दुकान पर गया, परन्तु न जाने किस तरह मेरे तूंवेमें रहे हुए लोह वेधक रसका लोभाकरको पता लगनेसे उसने उसे छिपा लिया और मुझे असत्य उत्तर दिया। बहुत कुछ समझाने बुझाने पर भी उन लोभान्ध व्यापारियोंने मेरा रसका तूंवा मुझे न दिया' तब अन्तमें कर्तव्यके अनुसार उन्हे शिक्षा देकर मैं वहाँसे अपने शहरकी तरफ चल दिया। जब मैं वहाँसे देश विदेश फिरता हुआ यहाँ आया तब धनधान्या परिपूर्ण और प्रजासे शून्य अपने पिताकी राज धानीको इस हालतमें पाया कि जैसा तुम खुद इस वक्त देख रहे हो।

पाठकोंको याद होगा कि अपने पिता और चचाको बंधन मुक्त करानेके लिए गुणवर्माके किए हुए अनेक उपाय निश्फल गये। उस वक्त निराश होकर वह महान् चिन्तामें पड़ा था। अन्तमें विचार करनेसे उसने यह निर्णय किया कि जिसके द्वारा यह दुःखाग्नि प्रगट हुई है उसीसे शान्त भी होगी। अब उसीकी शरण लिए बिना किसी तरह छुटकारा न होगा। यह निश्चय कर वह उस मनुष्य को पहचाननेवाले एक अपने नौकरको साथ लेकर उस युवककी खोजमें चंद्रावतीसे निकल पड़ा था। उस सहायकको बीमार होनेसे रास्तेमें ही छोड़ कर गुणवर्मा स्वयं ही थका पका आज इस शून्य नगरमें आ पहुँचा है, और अपने बुजुर्गोंके दुखसे दुःखित होकर वह जिस मनुष्यकी तलाशमें फिरता था आज वही इस शून्य नगरमें प्रवेश करते हुए सन्मुख आ मिला। पाठक यह भी समझ गये होंगे कि शून्यनगरमें गुणवर्माको मिलने वाला युवक कुशवर्धनपुरके राजा शूरचंद्रका विजयचंद्र नामक कुमार है।

मेरे पिता और चचाको स्तंभन करनेवाला और जिसे ढूंढनेके लिए मैं वन उपवन, ग्राम और नगर भटकता फिरता हूँ, वह महाशय यह स्वयं ही है। यह जान कर गुणवर्मा को हिम्मत आई। जब तक विजयचंद्रके

संपूर्ण इतिहाससे मैं वाकिफ न होजाऊँ तबतक अपना उद्देश इसके सामने प्रगट करना सर्वथा उचित नहीं। यह निर्णय कर गुणवर्माने विजयचंद्रसे कहा "भाई! पूरा वृत्तान्त सुनाओ; इस नगरके शून्य होनेका क्या कारण है?

विजयचंद्र बोला इस नगरको मनुष्योंसे शून्य देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। देव ऋद्धिसमान शहरको आज श्मशान सरीखा देखकर मैं सहसा स्तब्ध होगया। अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प उठे; परंतु मनका समाधान न हुआ। अन्तमें उत्साह और हिम्मतका सहारा ले मैंने अपने नगरके उजड़ होनेका कारण जाननेका निर्णय किया। मैं नगरके चारों तरफ फिरने लगा, तथापि मुझे अपने सिवाय कोई मनुष्य नजर नहीं आया। फिर मैंने राज महलमें प्रवेश किया, वहाँपर मेरे बड़े भाई जयचंद्र की विजया नामा पत्नी मुझे अकेली नंजर आई। मुझे देखते ही वह गद् गद् हो उठी और दौड़ी हुई मेरे सन्मुख चली आई। मुझे बैठनेके लिए आसन देकर वह अश्रु पूर्ण नेत्रोंसे रोने लगी। मैंने उसे धीरज दे नगरके उजड़ होनेका कारण पूछा।

विजयाने कहा—"कुछ समय पहले लाल वस्त्र धारक और एक एक मासके उपवास करने वाला यहाँ पर

एक तपस्वी आया था। उसके तपके कारण शहर जनों की उसपर खूब भक्ति होगई। आपके बड़े भाईने एक दिन महीनेके उपवासका पारना करनेके लिए उसे निमंत्रण दिया, वहभी राज निमन्त्रणको स्वीकार कर महलमें जीमनेके लिए आया। उसके पारनेकी सर्व सामग्री तयार करके उसे जीमने बैठाया गया और महाराजकी आज्ञासे उसे भोजन करते समय मैं पंखा करने लगी। नवीन यौवन, सुन्दर रूप और शृंगारित मेरे शरीर को देखकर उस पाखंडी तपस्वीका मन विचलित होगया।

सचमुच ही तपस्वियों का मन भी सुरूपा स्त्रियोंको देखकर चलायमान हो जाता है, इसी कारण वीतराग देवने योगी पुरुषोंको स्त्रियोंके सहवाससे दूर रहने का फर्मान किया है। यद्यपि यह बात एकान्त नहीं है कि योगी और तपस्वियोंका मन विचलित हो ही जाय, तथापि तत्त्व ज्ञानमें पूर्णतया प्रवेश न करने वाले, अज्ञान कष्ट करने में ही आत्मकल्याण समझने वाले या उस मार्गमें प्रथम ही आनेवाले अज्ञानी मनुष्योंके लिये ऐसा बनाव बनना सुलभ है। सत्तामें रहे हुये कितने एक कर्मोंका ऐसा स्वभाव है कि निमित्त पाकर उदयमें आजायँ, उस समय आत्म ज्ञानमें प्रमादी और स्वरूपको भूले हुये अभ्यासी प्रबल कर्मके उदयको

रोकनेमें असमर्थ हो तन मन पर काबू न रखकर अकार्य में प्रवृत्त होते हैं। इसी लिये आत्मस्वरूप प्रगट करने वाले मणुष्योंको ऐसे निमित्तोंसे दूर ही रहना चाहिए।

यह तपस्वी भोजन करते समय अपने आपको भूल गया। तपस्यासे ग्लानिको प्राप्त हुए शरीरमें कामदेवने प्रबल जोस किया, जिससे उसका दुर्बल शरीर भी सबल मालूम होने लगा। उस वक्त तो वह भोजन करके अपने स्थान पर चला गया, परन्तु रात्रिमें कामान्ध होकर वह तपस्वी गोधाके प्रयोगसे मेरे महलमें आ घुसा और मेरे पास आकर विषयकी याचना करने लगा। जब मैंने उसका कहना मंजूर न किया तब मुझे साम, दाम, दंड और भेदके नीति वचनोंसे डरा कर अपनी कार्य सिद्धिके लिये प्रेरित करने लगा यह तपस्वी है इसी लिये इसे जानसे मरवाना ठीक नहीं यह समझ कर मैंने भी उसे साम, दाम दंड भेद की नीति द्वारा उसका मन स्थिर करनेके लिये उसे बहुत कुछ समझाया तथापि उसकी विषयान्धताका अनुराग जरा भी कम न हुआ। इस प्रकार हम दोनों में झगड़ा चल रहा था, इतनेमें ही शयन करनेका समय हो जानेसे आपके बड़े भाई महाराज जयचन्द्र शयन गृहके दरवाजे पर आ पहुंचे और हममें होते हुए गुप्त वार्त्तालापको उन्होंने द्वारके पास छिप

कर सुन लिया। तपस्वीका बोल सुनते ही वे तत्काल क्रोधातुर हो गये और उस तपस्वीको सिपाहियों द्वारा बँधवा लिया। प्रातः काल होते ही उसके दुष्कर्मोंकी वार्ता मनुष्यों में इस तरह पसर गई जैसे पानीमें तेल का बिन्दु। उसके भक्तोंमें भी उसके प्रति तिरस्कारकी भावनायें प्रबल हो उठीं और सब लोग उसकी निन्दा करने लगे। राजाने उसे बुरी मृत्युसे यमराजका अतिथि बना दिया।

मरते समय कुछ शुभ भावके परिणामसे तथा कुछ अज्ञान तपस्याके पुण्यसे वह तपस्वी मरकर राक्षस जाति के देवोंमें राक्षस रूपसे पैदा होगया। तपस्वीके भवमें हुए अपने अपमानको याद करके राजा और प्रजापर वैरभाव धारण कर वह यहां आया। "मैं वही तपस्वी हूँ जिसे राजाने मरवा दिया था। मैं अपने वैरका बदला लूँगा,। राजा और प्रजाको यों कहकर उसने आपके भाई को शीघ्र ही मार डाला और क्रमसे प्रजाका संहार करने लगा। मृत्युके भयसे डरकर प्रजा अपनी जान बचाने के लिए जिधरको भागा गया उधरको पलायन कर गई और बहुतसे मनुष्योंको इसने जानसे मार डाला। बस इसी कारण समृद्धिसे परिपूर्ण भी यह शहर मनुष्योंसे शून्य होगया है। मैं भी भयके मारे भाग निकली थी

परंतु उस समय मुझे इस राक्षसने पकड़ लिया और मुझसे बोला कि भद्रे ! तेरे लिए तो मैंने यह सब प्रयास ही किया है। अगर तू यहाँसे कहीं भाग भी जायगी तो मैं फिर तुझे जहाँ होगी वहाँसे यहाँ ले आऊंगा। इसलिए तुझे इस राजमहलको छोड़कर कहीं भी न जाना चाहिए और तुझे किसी भी तरहका भय न रखना चाहिए. मैं सब तरह तेरी रक्षा करूंगा। इस प्रकार कहकर उस राक्षसने मुझे यहाँपर रक्खा हुआ है। वह दिनके समय न जाने कहाँ चला जाता है, परंतु दीये वत्तीके समय वह रातको यहाँ ही आजाता है। इस तरह मेरे दुखमें दिन व्यतीत हो रहे हैं।

"हे पथिक ! यह इतिहास सुनकर मैंने विजया रानी से कहा—कि भाभी ! जो तू इस राक्षसकी कुछ भी मर्म बात बतलावे तो मैं इसे निग्रह करनेका उपाय करूँ और तुझे इसके फंदेसे छुड़ाकर इससे अपने भाईका बदला लूं।

विजयाने कहा—"जब यह राक्षस आकर सोता है तब इसके पैरके तलिये चीसे मर्दन किये जायँ तो वह बहुत जल्दी अचेतनके समान देर तक महानिद्रामें पड़ा रहता है। उस समय अगर आप कुछ कर सकते हैं तो अपनी शक्तिको अजमाना चाहिए। इसके सिवा इस

राक्षसको निग्रह करनेका अन्य कोई उपाय नहीं है। इसमें एक यह भी बात है स्त्रीके हाथसे तलिये मर्दन करनेसे उसे वैसी निद्रा नही आती जैसी कि पुरुषके हाथसे मसलनेसे आती है। परंतु चरण स्पर्श करनेसे पहले अगर उसे यह मालूम हो जाय कि यह पुरुष है तो वह अपना पैर भी न छूने देगा और जानसे मार डालेगा।

इस प्रकार शहरके उजड होनेका कारण अपनी भाभीके मुखसे सुनकर मैं किसी उत्तम उत्तर साधककी खोजमें फिरता था। इतनेमें ही अकस्मात् आपके ही मुझे दर्शन हुए हैं। "उत्तम पुरुष! अगर तू मेरा सहायक बने तो मैं उस राक्षसको स्वाधीन कर सकता हूँ। आपके जैसे भद्राकृति वाले पुरुष पृथ्वी पर परोपकारी ही होते हैं। सज्जन पुरुष अपना काम छोड़कर भी परकार्य करने के लिए उद्यम करते हैं। देखो यह चंद्रमा चाँदनीसे अपने भीतर रहे हुए मृगलांछनको दूर न करते हुए संसार भरको धवलित करता है। जगतके वृक्ष सूर्यका ताप सहनकर प्राणियोंको छाया देते हैं। सूर्य परोपकारार्थ ही आकाशमें पर्यटन करता है। समुद्र नाव, जहाज आदिके क्षोभको सहन करता है। मेघ परार्थ ही वृष्टि करता है। पृथ्वी तमाम जीवोंको आश्रय देती है। यह सब परोपकारके लिए ही कष्ट सहन करते हैं। नदियाँ अपने पानीको

स्वयं आप नहीं पीतीं। वृक्ष अपने फ़ल स्वयं नहीं खाते। वारिस क्या धान्य भक्षण करती है? इन सबका परिश्रम मात्र परोपकारके लिए ही है। हे नरोत्तम! मैं तेरी सहायतासे अपने उजड़े हुए शहरको फिरसे पूर्व स्थितिमें बसा सकता हूँ। इससे इस कार्यमें कारण भूत होनेसे तेरा जगतमें कीर्त्ति और यश व्याप्त होगा। इस लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे इस महान् कार्य में प्राणप्रणसे सहायक बनें।

रात्रिदेवीने पृथ्वी पर अपनी काली चादर बिछा दी है। अन्धकारने चारों दिशाओंमें अपना साम्राज्य जमा लिया है। इस समय शून्य नगरमें मनुष्य तो क्या परन्तु पशुओंका भी शब्द सुनाई नहीं देता। शहरके तमाम हिस्सोंमें सन्नाटा छा रहा है ऐसे प्रशांत समयमें जयचन्द्र राजाके महलमें दो युवक पुरुष कुछ आवश्यक सामग्री लेकर एक गुप्त स्थानमें खड़े हैं। या तो कार्य सिद्ध करेंगे या शरीरका नाश होगा बस यही भावना उन दोनों युवकोंके अन्तःकरणमें रम रही है।

पाठक महाशय भ्रान्तिमें न पड़े, ये दोनों युवक वर्तमान परिच्छेदके नायक विजयचन्द्र और गुणवर्मा ही हैं। परोपकार करनेमें तत्पर वणिक-पुत्र गुणवर्माने विचार किया कि मेरे किये हुए उपकारसे वश होकर विजयचन्द्र

अपने क्रोधको शांत कर मेरे पिता और चचाको बंधन मुक्त कर देगा। क्योंकि इसीने उन्हें स्तंभित किया है।

अहा! पुत्रका कैसा पितृवात्सल्य! कैसी भक्ति! कैसा प्रेम! पिताको दुःखसे मुक्त करनेके लिए ऐसे दुष्ट राक्षसके पंजेमें फसनेके दुःसाध्य कार्यको भी उसने स्वीकार किया। क्योंकि इस समय राक्षसके धीसे चरण तलये मर्दन करनेका भयानक काम उसने अपने जिम्मे लिया है।

विजयचन्द्रने कहा—गुणवर्मा! जब तुम राक्षस के चरण तलिए घीसे मर्दन करनेका काम करोगे उस वक्त में स्तंभनी विद्याके एक हजार जाप द्वारा अन्तर्मुहूर्तमें उसे स्तंभित कर स्वाधीन कर लूँगा। इस प्रकार परस्पर संकेत कर वे दोनों युवक घोरान्धकार में अपने उद्देशको सिद्ध करनेकी धुनमें सावधान हो छिपकर खड़े हैं। ठीक इसी समय भयानक रूपमें उस राक्षसने महलमें प्रवेश किया। वह आते ही बोलने लगा अरे! आज इस महलमें मनुष्यकी बू कहाँसे आरही है? विजया! क्या महलमें आज कोई मनुष्य आया है? तुझे मालूम हो तो बतला, मैं अभी उसको शिक्षा दूँगा।"

विजयाने कहा—"मैं खुदही मनुष्य हूँ आपके भयसे यहाँपर मनुष्य किस तरह आ सकता है? यह उत्तर

सुनकर विश्वास कर वह राक्षस एक पलंग पर सोगया। उसे कुछ निद्रित होता देख विजया तत्काल वहाँसे उठ कर एक तरफ होगई, उसके वदले स्त्रीवेसमें गुणवर्मा वहाँ आ उपस्थित हुआ और साहस धारण कर धीरेसे राक्षस के पैरके तलये मर्दन करने लगा इधर विजयचंद्र भी साव-धान रहकर स्तंभिनी और वश कारिनी विद्याका जाप आरंभ करदिया। मनुष्य गंध आनेसे राक्षस वारंवार पलं-गसे उठता है परन्तु उस वक्त गुणवर्मा द्वारा चरण मर्दन की क्रिया झड़पसे होनेके कारण वह मूर्छित सा हो निद्रालू होकर फिर शय्यामें लेट जाता है। इस तरह मंत्र जाप पूरा होनेपर विजयचंद्रके इसारेसे गुणवर्माने चरण मर्दन करनेकी क्रिया बंद कर दी और वे दोनों जने राक्षसके सन्मुख आ खड़े हुए। जागृत हो उन युवकोंको अपने सन्मुख खड़े देख उस राक्षसने क्रोधायमान हो उन्हें मारने के लिए उपक्रम किया। परन्तु मंत्रके प्रभावसे वह उठने तकके लिये भी समर्थ न हो सका। अन्तमें जव उसका कुछभी जोर न चला तव शाँत हो कर वोला—मंत्रवल द्वारा मंत्रित करनेसे आज मैं आप लोगोंका दास वन चुका हूँ। इस लिये आप मुझे आज्ञा करें कि मैं आपकी क्या सेवा करूं।

राक्षसको स्वाधीन हुआ देख विजयचंद्रने कहा—

हे राक्षसेन्द्र । अबसे तू इस नगरीके प्रति वैरभावको छोड़ और नगरकी पूर्ववत् शोभा कर तथा भंडारोंको धन-धान्यसे परिपूर्ण कर । विजयचंद्रके कथनानुसार राक्षस ने तमाम बातें मंजूर कर लीं और अपनी दिव्य शक्तिसे उसने थोड़े ही समयमें नगरकी पूर्ववत शोभा बढ़ा दी । विजयचंद्रने तित्तर वित्तर होकर अपनी भागी हुई प्रजाको जहाँ तहाँ से पीछे बुला लिया पहले ही मंत्रीको उसने प्रधान पद समर्पित किया । प्रधान आदि राज पुरुषों और प्रजा समुदायने मिलकर विजयचंद्रको राज्यासन पर विराज-मान किया । विजयचंद्र भी संतानकी भाँति प्रजा पालन करने लगा । उसने अपने प्रचंड प्रताप से और नीति निपुणतासे पहलेसे भी अधिक अपनी राजधानीकी शोभा बढ़ा दी । गुणवर्माको अर्धासन पर बैठा कर कृतज्ञ राजा विजयचंद्रने नम्रतासे कहा—"गुणवर्मा ! यह तमाम राज्य ऋद्धि तेरी सहायतासे प्राप्त की है इस लिए इस राज्यमें से इच्छानुसार ग्रहण करके मुझपर किये हुए उपकारसे मुझे अनुग्रहित करो ।

समय देख बड़ी नम्रताके साथ गुणवर्माने कहा "महाराज विजयचंद्र ! मुझे राज्य या राज्यकी किसी वस्तुकी आवश्यकता नहीं है, परंतु यदि आप इस उपकार का बदला देना ही चाहते हैं तो चंद्रावती नगरीमें जो

आपलोभाकर और लोभानन्दीको स्तंभितकर आये हैं वे मेरे पुज्य पिता और चचा हैं, उनका अपराध क्षमा कर उन्हे बन्धन मुक्त कीजिए।"

यह बात सुनते ही विजयचंद्र आश्चर्य चकित होगया अहा! विष वृक्षसे अमृत फलकी उत्पत्ति! गुणवर्मा! क्या आप सच कहते हैं? क्या सचमुच ही वे आपके पिता और चचा थे? ओ हो! उनका ऐसा आचरण और आपका यह परोपकारी स्वभाव! अहा! परमात्मा ने कैसी विचित्र सृष्टिकी रचना की है!"

गुणवर्माने गर्दन झुकाकर जवाब दिया हाँ, महाराज! वे मेरे पिताश्री और चचा साहब हैं। महाराज! कर्मों की विचित्र गति है। आप कृपाकर उन्हे शीघ्र ही बन्धन मुक्त करें।

विजयचंद्र—"गुणवर्मा! क्या कहते हो! मुझ पर किये हुए आपके उपकार के सामने यह कार्य कुछ बड़ी बात नहीं। मैं इससे भी अधिक आपका कार्य करनेके लिये तैयार हूँ। परन्तु इतनी बात है कि यह कार्य विशेषतः तुम्हारे खुदके ही स्वाधीन है। इसका कारण मैं आपको बतलाता हूँ। आप सावधान होकर सुनें।

"इस शहर के नजदीक जो यह एकशृंग नामक पर्वत देख पड़ता है इसकी गुफामें देवता अधिष्ठित एक

सुगुप्त कूपिका है। उसका मुखद्वार नेत्र पुटके समान बारंबार विकसित होकर बन्द होता है। उस कूपिका में से स्तंभित हुए मनुष्य का पुत्र पानी लेकर यदि अपने पिता पर तीन दफे छिड़के तो वह तुरन्त ही बन्धन मुक्त हो सकता है। परन्तु यदि पानी ग्रहण करते हुये डर जाय तो पानी लेनेवाले की मृत्यु हो जाती है। गुणवर्मा! पिताको बन्धन मुक्त करनेके लिये इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है।

पितृभक्त, साहसिक, गुणवर्मा ने कहा—"महाराज! मैं यह काम करके भी पिताको बन्धन मुक्त करूँगा आप इस कार्यमें मेरी सहायता करें।

गुणवर्मा की अलौकिक पितृभक्ति देख विजयचन्द्र बहुत खुश हुआ। उपकारी पर प्रत्युपकार करनेके लिये पानी ग्रहण करनेकी सर्व सामाग्री को तैयार कर विजयचन्द्र गुणवर्माको साथ ले उस कूपिका के पास गया। विकसित हुई उस कूपिका में पानी लेनेके लिये विजय चन्द्र की सहायसे मंचिका पर बैठ गुणवर्मा अन्दर उतरा। निर्भयता से उसमें से जलपात्र भर गुणवर्मा ने रस्सा हिलाया, सावधान हो शीघ्रतासे विजयचन्द्र ने गुणवर्माको कूंपिकामें से ऊपर खींच लिया। मंत्र प्रभावसे सेवक रूप बने हुए राक्षस ने घोड़े का रूपधारण

किया। उसपर सवार होकर दोनों जने क्षणमात्र में चन्द्रावती पहुंचे। देवता अधिष्ठित लाया हुआ पानी गुणवर्मा द्वारा लोभाकर पर तीन वक्त छिड़कनेसे वह बन्धन मुक्त हो गया। परन्तु लोभानंदी अपुत्रीय होनेके कारण पूर्ववत् ही दुःखित रहा। क्योंकि उस मंत्रके कल्पके अनुसार अपने पुत्रके सिवा अन्य किसी से उसका दुख दूर होना असम्भव था।

अपने परम उपकारी और मित्र गुणवर्माको विजयचन्द्रने प्रधान पदकी मुद्रा और कुछ देश आदि देनेके लिये अति आग्रह किया तथापि निर्लोभी गुणवर्मा ने उसको बिलकुल स्वीकार न किया। बल्कि उल्टा विजयचन्द्र का विशेष सत्कार करके उसके रसका तूम्बा उसे वापिस दिया। कृतज्ञ विजयचन्द्र ने वह रसका तूम्बा अति आग्रह पूर्वक गुणवर्मा को ही वापिस दे दिया। गुणवर्मा ने भी विजयचन्द्र के विशेष आग्रह से उस रसायन रस को ग्रहण किया। इस प्रकार उन दोनोंकी मित्रता में अधिक वृद्धि हुई। यद्यपि ऐसे परोपकारी नररत्न और मित्रका वियोग सहन करना दुःसह्य था। तथापि राज्यादि कार्य भारकी चिन्तासे विजयचन्द्रको वापिस स्वदेश जाना पड़ा।

महाराज वीरधवल कहते हैं "देवी! यह वृत्तान्त

अभी थोड़ी देर पहले स्वयं गुणवर्माने मेरे पास आकर मुझे सुनाया है। मेरे राज्यमें उसके पिता और चाचाने किये हुए विश्वासघातके महान् अपराधकी उसने बारंबार क्षमा याचना की गुणवर्माकी पितृभक्ति, परोपकारता, निर्लोभिता, उदारता, निडरता और गंभीरतादि गुणोंसे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ, इस कारण उसके पिता और चाचा के किये हुए अपराधको मैंने क्षमा कर दिया। अभी कुछ देर पहले ही गुणवर्मा मुझसे मिलकर अपने घर गया है। प्रिये! जबसे मैंने गुणवर्मा और विजयचन्द्र का इतिहास सुना है तबसे मेरे मनमें अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प पैदा हो रहे हैं। मेरी शान्त वृतियाँ अशान्त हो उठी हैं और मुझे बिलकुल चैन नहीं पड़ती। प्यारी! अब तुम मेरी चिन्ताका कारण भली प्रकार समझ गई होंगी। शूरचन्द्र राजाके पुत्र विजयचन्द्रने अपने गए-हुए राज्यको फिरसे प्राप्त किया और भाई के दुष्मनसे बदला लिया। गुणवर्माने मृत्युके समान आपत्तिको स्वी-कार कर संकटरूप समुद्रमें डूबते हुए अपने पिताका उद्धार किया।

"प्रिय देवी! जिनको पुत्र हैं वे मनुष्य धन्य हैं। अभीतक हमारे घर एकभी पुत्र-पुत्रीका जन्म नहीं हुआ; यह मेरी चिंताका मूल कारण है। प्रिय कोमलांगी! मेरे बाद मेरे

कुलमें देवगुरुकी पूजा कौन करेगा ? धर्मस्थानोंका उद्धार कौन करेगा ? और कौन मेरे वंशको धारण करेगा ? प्रिय सुलोचने ! मेरेसे ही मेरे पूर्वजों के वंश-वृक्ष का उच्छेद होगा। यही चिंताग्नि मेरे हृदय मंदिरमें प्रज्वलित हो रही है। बस इसके सिवा मेरे इस महान् शोक का और कोई कारण नहीं।

पतिके दुःखसे दुःखित हुई चंपकमालाने नम्रतापूर्वक मीठे वचनसे कहा "प्राणनाथ! यह दुःसह्य दुःख आपको और मुझे समान ही है। किसी २ भाग्यवान मनुष्योंकी गोदमें उत्तम बालक सोते हैं, क्रीड़ा करते हैं, मुग्धवचन बोलते हैं, और कदम २ पर स्खलना पाते हुए माता पिता से आचिपटते हैं। सचमुच संसारमें वे ही मनुष्य धन्य हैं जिनके घरमें पैरोंमें घुंगरुओंके रणझणाट करते हुए दो-चार बच्चे क्रीड़ा करते हों उनके जन्मकृतार्थ हैं जिन्होंने सद्‌गुणसंपन्न-कुलदीपक उत्तम पुत्रोंको जन्म दिया है। इस प्रकार बोलते हुए अपत्यमोहसे मोहित होनेके कारण रानीका हृदय गद्‌गद् होगया और उसके नत्रोंसे अश्र धारा बहने लगी। परन्तु कार्यकारण भावको समझनेवाली रानी चंपकमाला थोड़े ही समयमें मेरे दुःख से महाराज अधिक दुःखित न हो जायँ यह समझकर सावधान होगई और स्वयं धीरज धारण कर संतानके

मोहमें विशेष मोहित हुए पति को धीरज देने लगी।

प्रिय देव ! पुत्रादि संतति पुण्यके प्रभावसे मिल-सकती है, मात्र मनोरथ करके बैठे रहनेसे और पुण्य कार्यमें उद्यम न करनेसे कभी कार्यकी सिद्धि होसकती है ? इसलिये हमें आजसे ही पुण्यवृद्धि करनेका प्रयत्न करना चाहिये। जो कार्य सत्ता या धनसे सिद्ध नहीं होसकता उस कार्यके लिये चतुर मनुष्यों को सोच नहीं करना चाहिये। परन्तु उस कार्यसिद्धि में रुकावट करनेवाले विघ्नोंको दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिये। इसलिये हे प्राणेश्वर ! चिंताका परित्याग करो। चिन्तासे विक्षिप्त चित्तवाला मनुष्य अपने इच्छित कार्यमें सफलता नहीं पासकता। हे प्राणवल्लभ ! मुझे इस समय एक उपाय सूझता है और वह यह है पुत्र प्राप्तिके लिए हम दोनोंको किसी देवकी आराधना करनी चाहिये।

महारानी चंपकमालाके समयसूचक, धैर्य गर्भित वचनोंसे महाराज वीरधवलको अतिहर्ष पैदा हुवा। अतः वे प्रसन्न होकर बोले-प्यारी चंपकमाला ! तुम्हारे समान ही उत्तम सहचारिणी पतिके दुःखमें हिस्सा लेने-वाली और ऐसे समय धीरज देनेवाली पतिसुखपरायणा सती स्त्रियाँ होती हैं इसबात का मुझे पूर्ण विश्वास-है। प्रिये ! तुम्हारे जैसी सद्गुणसंपन्ना और श्रेष्ठ

बुद्धि देनेवाली पत्नीको पाकर मैं आज अपने आपको कृतार्थ समझता हूँ।

प्यारी मृगाक्षी! आज तुमने पुत्रप्राप्तिके लिये जो पुण्यवृद्धि करनेका उत्तम रास्ता बतलाया है वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। कारण बिना कार्यकी निष्पत्ति नहीं होती। संसारके तमाम प्रसंगोंमें इस बातका अनुभव होता है, तब फिर यह भी एक सांसारिकही प्रसंग है। इसलिए पुण्योपार्जन करनेकी मुख्य आवश्यकता है। पुण्योपार्जके निमित्त उत्तमज्ञानवानोंको, संसारसे विरक्त, त्यागी आत्माओंको, एवं दुःखी जीवोंको, उनकी आवश्यकतानुसार दान देना, मनवचन और शरीरकी शुद्धिपूर्वक शील पालन करना, देवपूजन करना, जाप करना, तपश्चरण करना, इत्यादि महापुरुषोंके बतलाए हुए उपायोंको सेवन करना चाहिए। अतः प्रियंवदे! पुण्योपार्जनके वास्ते हमें अभीसे सावधान होना चाहिए। पुण्यकी प्रबलतासे एवं देवाराधन करनेसे अन्तरायकर्म दूर होनेपर हमें संतानकी प्राप्ति होगी इस बात पर मुझे संशय रहित विश्वास है। तो फिर प्यारी! हमें किस देव की आराधना करनी होगी?

रानी चंपकमाला—"प्राणवल्लभ! आपने यह प्रश्न क्यों किया? देवाधिदेव परमपूज्य ऋषभदेव प्रभु

हमारे इष्ट देव हैं हीं क्या उन्हें आप नहीं जानते ? ,,

महाराज वीरधवल--"प्राणप्यारी ! मैं अपने परम पूज्य देवाधिदेव ऋषभ प्रभुको भली भांति जानता हूँ तथापि वे लोकोत्तर देव होनेसे वीतराग देव हैं। सांसारिक कार्यके निमित्त लोकोत्तर देवकी आराधना करनेसे सम्यक्त्वमें मलीनता आती है। यह बात हमने पहले सद् गुरुके मुखसे सुनी थी तथा वे रागद्वेष रहित होनेके कारण हमें संतति सुख किस तरह देंगे ? इसी कारण मैंने यह प्रश्न किया है।

चंपकमाला--"स्वामिन् ! आपकी यह शंका योग्य ही है, तथापि संतति प्राप्तिके निमित्त अन्तराय कर्मको क्षय करनेके लिए देवकी आराधना की जाय तो मिथ्यात्व-प्राप्तिका या सम्यक्त्व दूषित होनेका संभव नहीं। प्रिय देव, वीतराग देव संतति सुख किस तरह देसकते हैं इस बातका निराकरण मैंने गुरु महाराजके मुखसे सुना हुआ है कि प्रत्यक्ष तया वीतराग देव कुछ नहीं देते, तथापि जो वस्तु मिलती है पुण्योदय या अन्तराय कर्मके क्षय होनेसे प्राप्त होती है यह पुण्योदय करने या अन्तराय कर्मको क्षय करनेमें जिनेंद्र देवका पूजन, स्मरण या आराधना कारण रूप है।

रानी चंपकमालाके पूर्वोक्त गंभीर और

सरगर्भित वाक्य सुनकर महाराज वीरधवल बहुत ही खुश हुए। रानीकी बुद्धिमत्ता देखकर उनके अन्त करणमें उसके प्रति और भी अधिक प्रेम और सन्मानने स्थान प्राप्त किया उन्होंने उसी दिनसे जिनेंद्र देवकी आराधना करनी शुरू कर दी। अब वे अपना समय सुखसे व्यतीत करने लगे।

———:❀-❀:———

दुःखकी पराकाष्ठा

शयनागारमें महाराज वीरधवल और महारानी चंपक माला सुख पूर्वक बैठे आपसमें विनोदसे बातचीत कर रहे थे। इतने ही में अकस्मात् दीन मुख करके रानी चंपक माला बोल उठी महाराज! आज मेरा दाहिना नेत्र फड़क रहा है। न मालूम इस अमंगल निमित्तसे मुझे क्या कष्ट पड़ेगा? क्या मुझपर बिजली पड़ेगी? क्या मेरा सर्वस्व लुट जायगा? या कोई भयंकर बीमारी आयगी? मुझे इस समय न जाने क्या होगया? हृदय बिलकुल अशान्त है,,

महाराज वीरधवल बोले—प्यारी! स्त्रियोंका

दाहिना नेत्र फड़कना अमंगल सूचक माना गया है। तथापि तुम बिलकुल निर्भय रहो। किसी प्रकारके अमंगलकी शंका मत करो। जिस तरह सूर्यके उदयमें अन्धकार नहीं आ सकता उसी प्रकार मेरे राज्य करते हुए तुझे किसी भी तरहका कष्ट नहीं होसकता। फिर भी दैव वशात् अगर तुझे कुछ भी अमंगल हुआ तो पतंगके समान तेरे साथ ही मुझे भी अग्निका शरण होगा,, इत्यादि शब्दोंसे महारानीको धीरज देकर महाराज वीरधवल राजसभामें जाकर राज्यकार्यमें प्रवृत्त होगये।

इधर ज्यों ज्यों रानीका दाहिना नेत्र विशेष फड़कने लगा त्यों त्यों उसे महलमें, उद्यानमें और बगीचेमें कहीं पर भी शांति न मिली। वह उदासीन वृत्तिसे मध्यान्ह समय महलमें अपने पलंगपर लेट गई और धीरे धीरे निद्रा देवीके आधीन होगई।

थोड़ी देरके बाद दासी वेगवती हाथोंसे मस्तक पीटती हुई, कदम कदम पर स्खलना प्राप्त करती और आंसुओं से हृदयको भिगोती हुई राजसभामें आई और हाथ जोड़कर कहने लगी—महाराज! महारानी चंपकमालाको ......" यह अध वाक्य सुनते ही शोकार्त दासीको देखकर भयभ्रांतके समान महाराज वीरधवल सहसा बोल उठे-हा-देवी! दैववशात् क्या तुझे अमंगल

हुआ ? क्या तेरा फड़कता हुआ दाहिना नेत्र सचमुच ही सफल हुआ ? अरे वेगवती जल्दी बोल ! रानी चंपक मालाको क्या हुआ ? मेरा स्नेही हृदय विलम्ब नहीं सहन कर सकता ।

रूद्ध कंठवाली वेगवतीने रुदन करते हुए जवाब दिया " हे धीर वीर शिरोमणि ! महाराज ! यह समाचार सुनने के लिए अपने कान और हृदय को वज्र समान कठिन करलो। महारानीका जब दाहिना नेत्र विशेष फड़कने लगा तब उसे महलमें बिल कुल शाँति न मिली, इससे हम सब शहर के बाहर उद्यानमें गये, परन्तु बाग बगीचे वगैरह विश्रान्ति के अनेक स्थानोंमें फिरते हुए भी महारानी के चित्त को चैन न पड़ी, तब फिर हम सब वापिस महलमें आई महारानी शयनगृहमें जाकर पलंग पर सो गई और मुझे उन्होंने बगीचेसे पुष्प और पत्ते लानेके लिये भेज दिया महारानीको निद्राधीन हुई देखकर तमाम परिवार खाने पीने आदिके कार्यमें लग गया। मैं थोड़े ही समयमें बगीचेसे उनके उपयोगी पत्ते और पुष्प लेकर वापिस आई। शयन गृहमें जाकर देखा तो महारानी पत्थरकी मूर्तिके समान निश्चेष्ट पड़ी हुई हैं। मालूम नहीं कि महारानीके प्राण रोग या विषप्रयोग या अन्य

किस महान् दुःखसे गये हैं ! हलाहल जहरके समान दासीके मुखसे पूर्वोक्त अमंगल वचन सुनते ही राजा वीरधवल सहसा मूर्च्छित हो जमीनपर गिर पड़े। पास में रहे हुए मंत्रीमंडल द्वारा शीतल वायु और द्रवित चंदनके सिंचन करनेसे कुछ देर बाद महाराज होशमें आये। जागृत अवस्थामें आते ही महाराज वीरधवल रानीके वियोग से व्याकुल हो निम्न प्रकार विलाप करने लगे।

"अरे निर्दय दैव ! तूने मुझे प्रथम क्यों न मार डाला, जिससे रानी के अमंगलकी बात मुझे अपने कानों से सुननेका प्रसंग न आता। अरे दुरदैव ! तूने छपकी की पूंछके समान तड़फतीहुई मेरी अर्द्धआत्माको छेदन करडाला ! हे दक्षदेवी ! दाहिना नेत्र फड़कनेके बहाने से तूने अपना मृत्यु प्रथम ही बतलाया था तथापि मैं तेरा रक्षण न कर सका ! तेरे सिरपर आनेवाली विपत्तिको जानते हुये भी मैं उसका प्रतिकार नकरसका इसलिये मैं महा-अज्ञानी बुद्धिहीन और घोरपापी हूँ। अगर ऐसा न होतातो मैं तेरी बात पर विश्वास रख कर प्रथमसे ही तेरे रक्षणका कुछ उपाय अवश्य करता। इस प्रकार अपने आपकी निन्दा करते हुए और नेत्रजलसे जमीन को सिंचन करते हुए राजाने तमाम राजपरिवारको रुलाया। इस समय राजा वीरधवलकी शोकातुर अवस्थामें रानीके वियोग

से पागलकी तरह हालत होगई। राजा की यह स्थिति देखकर स्वामीके दुःखसे दुःखित हुआ मंत्रीमंडल गद् २ कंठसे हाथ जोड़ राजाको विनति करने लगा। "महराज धैर्य धारण करो और शीघ्रही महल में चलकर महारानी को देखो कि उसके शरीरकी अवस्था कैसी है। जहर के प्रयोगसे भी मनुष्य श्वासोच्छ्वास रहित हो जाता है, क्योंकि उसके प्राण, दीमाग या नाभीमें संस्थित हो जाते हैं। उन्हें चलकर देखना चाहिये कि रानीकी ऐसी ही हालत तो नहीं होगई है? मंत्रीमंडल की प्रेरणासे कदम कदम पर स्खलना प्राप्त करता हुआ राजा रानी के महलमें आया। वहाँ आकर देखा तो सचमुच ही पाषाण मूर्तिवत् रानीका निश्चेष्ट कलेवर पड़ा है। रानीको ऐसी स्थितिमें देखते ही उसपर अति रागवान् राजा ने नेत्राश्रु पूर्ण होकर मूर्च्छित हो जमीन पर गिर पड़ा। ठंडे पानीके प्रयोगसे कुछ देर बाद नेत्र खोलकर राजा बैठा हुआ। परन्तु सामनें ही रानी की वैसी अवस्था देख फिर मूर्च्छित होगया। इस तरह बारंबार मुर्छासे उठना और फिर मूर्छित होजाना, राजा ऐसी भयंकर अवस्थाका अनुभव करनेलगा। राजकुलके मनुष्योंने रानीके तमाम शरीरको अच्छीतरह देखा परन्तु उसके शरीरमें कहीं परभी सर्प आदि जहरी जानवरका डंस मालूम न दिया

और न ही कोई विषप्रयोग जाननेमें आया।

मित्रो! रानीका सारा शरीर सर्वथा अक्षत है जहरका प्रयोग भी मालूम नहीं होता तो क्या रानीके प्राण किसी हृदय दुःखसे या किसी दुष्ट देवके कोपसे निकल गये होंगे? अगर ऐसा न हो तो तमाम शरीर सर्वथा अक्षत न होना चाहिए। रानीके मोहसे मोहित होकर महाराज अवश्य मृत्यु प्राप्त करेंगे और राजाकी मृत्युसे इस राज्य का सर्वनाश हो जायगा क्यों कि राज्यकी धुरा धारण करनेवाला एक भी राजकुमार नहीं है।

सुबुद्धि नामक प्रधान मंत्रीने अपने आश्रित राज्य-कर्मचारियोंके समक्ष पूर्वोक्त कथन कर सेना पतिसे कहा इसी वक्त हमें किसी भी प्रयोगसे महाराजकी ऐसी स्थितिमें उन्हें धैर्य दिलानेके लिए समय व्यतीत करना चाहिये क्योंकि समय व्यतीत होनेसे हमें राजाको बचा लेनेका कोई भी उपाय मिल जायगा। सेनापति बोला—"महानुभाव! ऐसी हालतमें किस तरह समय व्यतीत किया जाय? सुबुद्धि बोला—"राजासे हमें कहना चाहिए कि रानीको जहर चढ़ गया है और वह अभी जीवित है, उसके प्राण नाभीमें संस्थित हैं। इस लिये मणिमंत्र औषधादिके द्वारा उसके जहर उतारनेका प्रयोग करना चाहिये। इस विचार से सबकी सम्मति मिलनेसे प्रधान मंत्री राजाके पास

आकर बोला—"महाराज! महारानी अभी जीवित हैं।
उसे जहर चढ़ा हुआ है उसके प्राण नाभीमें रहे हुए हैं।

यह वाक्य सुनते ही राजा मानों अमृतसे सिंचन किया गया हो त्यों उश्वास प्राप्त कर निन्द्रासे जागृत होकर बोला—"अरे सेवको! जल्दी दौड़ो; विष उतारने वाले मनुष्योंको और भंडारमें से जड़ी बूंटी लाओ! विष दूर करने वाले मणि लाओ। शहरमें जितने मंत्रवादी हों उन सबको बुलाओ और रानीको जल्दी विष रहित करो।

राजाज्ञा मिलते ही जड़ी बूटी, मणि और मंत्रवादी तमाम सामग्री उपस्थित होगई। प्रधान मंत्रीकी आज्ञानुसार रानीको एकान्तमें स्थापन कर शीघ्रही मंत्र वादियों ने मंत्र प्रयोग प्रारंभ किये। अब राजा विचार करता है रानी अब श्वास लेगी, उसकी अभी आँखें खुलेंगी; वह अभी करवट बदलेगी, वह अभी बैठी होकर मुझसे बात करेगी। इस प्रकार मोहसे व्याकुल राजाको विचार करते हुए आधा दिन और कुछ कष्टसे सारी रात व्यतीत हो गई है। बुद्धिमान् मंत्रीमण्डलने अपनी बुद्धिके प्रयोगसे इतना समय तो व्यतीत करा दिया, परन्तु रानीके शरीर पर किये हुए प्रयोगोंकी कुछ भी असर नहीं हुई। प्रातःकाला होनेपर तमाम मंत्रीमण्डल निरुपाय हो

विचार करने लगा, अब हम राजाको किस प्रकार मृत्युसे बचा सकते हैं ! रानीके स्नेहबन्धनमें बँधा हुआ राजा अवश्य ही अपने प्राण खोवेगा । सच्चा प्रेम वालोंके लिये प्रेमीका सदाके लिए वियोग होनेपर मृत्युके सिवा अन्य कोई उपाय नहीं । हा ! हा ! राजाकी मृत्युसे यह राज्य, राष्ट्र, कोप, चार प्रकारकी सेना तमाम प्रजा और हम अनाथ हो जायेंगे ! इस चिन्ता समुद्रमें डूबे हुए राज्य के तमाम प्रधान पुरुष राजाके प्राण बचानेमें निरुपाय होगये ।

पूर्ववत् अपनी वल्लभाको चेष्टा रहित देखकर राजा का फिरसे हृदय भर आया और वह गद्गद् स्वरसे विलाप करने लगा । 'हे देवी ! तुझे सचेतन करनेके ये तमाम प्रयोग निष्फल होगये । अब तू किस उपाय से जीवित होगी ! हे प्रिये ! इतने समयसे इतने सारे उपाय करने पर भी तू क्यों नहीं बोलती ! मैं तो समझता हूँ कि तू मुझे यहाँ अकेला छोड़ परलोक चली गई है । प्यारी ! तेरे बिना यहाँ पर मेरी एक घड़ी एक महीनेके समान बीत रही है और दिन वर्षके समान मालूम हो रहा है, तब फिर मेरा शेष आयुष्य किस तरह व्यतीत होगा ! हे मृगाक्षी ! मेरी शक्ति धिक्कारके पात्र है, क्योंकि तुझपर आनेवाली इस घोर आपत्तिका पता लगनेपर भी मैं तेरे

रक्षणके लिये कुछ भी न कर सका। प्यारी ! तू कहाँ चली गई ? एक दफे आकर तू मुझे अपना स्थान तो बता जा, जिससे मैं तेरा मुखकमल देखकर सुखी बनूं। इस तरह विलाप करते हुए दुःखित राजाको फिरसे पूर्ववत् मूर्छा आगई। शीतोपचार करनेसे जागृतिमें आया हुआ राजा मंत्रियोंसे बोला—

'हे मंत्रिवरो ! आपलोग सावधान होकर मेरी बात सुनो। इतना लम्बा समय बीतने पर भी आप लोग रानी को जीवित नहीं कर सके। मैंने रानीके साथ ही मरना निश्चय किया है। रानीके वियोग में मेरे प्राणदेह धारण करनेके लिये सर्वथा असमर्थ हैं। मंत्रीश्वरो ! अब विलम्ब न करो, गोलानदीके किनारे पर काष्ठकी एक चिता जल्दी तैयार करो कि जिससे रानीके वियोगमें दग्ध हुई अपनी आत्माको चितामें प्रवेश करके शांति दूं !

आँसुओंसे पृथ्वीको भिगोते हुए मंत्री लोग बोले "हा, हा ! महाराज ! आज हम सबके सब जीते हुए भी मृतक समान हो रहे हैं। सूर्य अस्त होने पर क्या कभी कमलाकर विकसित रह सकते हैं ? पिताके मरने पर निराधार बच्चोंकी क्या दशा होगी ? पानी बिना ज्यों मछलियाँ तड़फ तड़फ कर प्राण खोती हैं, वैसे ही

हे नाथ ! आपके विना पुण्य रहित अनाथके समान हमारी क्या दशा होगी ? कृपालु ? हमपर प्रसन्न होकर आप इस मोहको कम करो और अपने किये हुये निश्चयको स्थगित करो। अर्थात् मरनेका विचार छोड़ कर चिरकाल तक राज्य पालन करो। आपके बाद शत्रु लोग इस राज्यको ग्रहण कर लेंगे। प्रजा निराधार होकर संकट में पड़ जायगी। महाराज ! विचार करो, आप जैसे वीर पुरुष भी यदि धैर्यका त्याग करेंगे तो निराधार होकर धैर्यता किसका आश्रय लेगी। आप यह भली प्रकार जानते हैं कि रानीके प्राण रहित होनेमें कर्म ही कारण भूत है। इससे संसारकी असारता प्रकटतया मालूम होती है, संसारकी कोई भी वस्तु चिरकाल तक एकही स्वरूप में नहीं रह सकती। इस लिये महापुरुषों का कथन है—

राजानः खेचरेन्द्राश्च केशवाश्चक्रवर्तिनः।
देवेन्द्रा वीतरागाश्च, मुच्यन्ते नैव कर्मणा॥

राजा, विद्याधर, वासुदेव, चक्रवर्ती, देवेन्द्र और वीतरागों को भी कर्म नहीं छोड़ता। अहा ! ऐसे सामर्थ्य वाले महापुरुषों को भी किये हुए कर्मका फल भोगना पड़ता है, तब फिर अन्य पुरुषोंकी बातही क्या ! महाराज ! आप स्वयं इसकर्मके सिद्धान्तको जानते हैं,

तथापि इस प्रकार पतंगके समान अज्ञान मृत्युसे मरना यह आप जैसे विवेकी पुरुषोंके लिये योग्य नहीं है।

मंत्री के वचन सुनकर शोकसे कुंठित और विचार शून्य हृदयवान् राजाने उत्तर दिया—'मेरे हितेच्छु मंत्रीश्वरो! आप मुझे जो बोध दे रहे हैं, कर्मकी परिणति, संसारकी असारता और अनित्यता जनाते हो यह सब कुछ मैं जानता हूँ, परन्तु मोहकी दशा विचित्र है। रानी के मोहसे मोहित आत्मा मैं इस समय युक्तायुक्त कुछ भी नहीं विचार सकता। तथा जब रानीका दाहिना नेत्र फड़क रहा था और उसने मुझे अपने भावी अनिष्ट की सूचना दी थी तब मैंने उसके साथ ही अग्निशरण होनेका उसे वचन दिया है। अपने मुखसे बोला हुआ सुलभ कार्य भी अगर मुझसे न हो सके तो असत्यवादी मनुष्यों की श्रेणिमें मेरा सबसे पहला नाम होगा। तुम्हें मालूम होगा कि जन्मसे लेकर आजतक मेरा कोई भी वचन कभी अन्यथा नहीं हुआ। अगर इस समय मैं अपने वचन के अनुसार रानीके साथ अग्नि शरण होकर न मरूँ तो मेरा सत्यव्रत किस तरह रह सकता है? इस लिये प्यारे मंत्रीवरो! मेरे और रानीके शवके लिये एक बड़ी चिता तैयार कराओ, कि जिसमें मैं तमाम दुःखोंको भस्मीभूत करूँ। महाराजाको

अनेक प्रकार से समझाया गया परन्तु वह अपने मरणके निश्चय से जरा भी शिथिल न हुआ, तब तमाम मंत्री मण्डल मौन धारण कर उदासीनतासे एक तरफ खड़ा रहा। महाराज फिरसे बोले—"मंत्रिश्वरो! उदास होकर क्यों खड़े हो? तुम भी इस प्रकार निष्ठुर क्यों बनते हो? मैं कदापि जीवित न रहूँगा। समय बिता कर मुझे विशेष कष्ट क्यों पहुँचाते हो? राजाके यह वचन सुनकर कुछ भी उत्तर न देते हुए सारा ही मंत्री मंण्डल जमीन पर दृष्टि लगाये नतमस्तक होकर ज्यों का त्यों खड़ा रहा।

चिता तैयार करानेके लिए मंत्रीमंडलकी उपेक्षा देख राजाने अपने दूसरे मनुष्योंको उस कार्य करनेकी प्रेरणाकी। उन मनुष्योंने निरुपाय होकर रानीके मृतक शरीरको स्नान कराकर, पुष्पादिकसे अर्चन कर शिबिका में स्थापन किया। तमाम परिवार सहित राजा उस शिबिकाके साथ राज महलको सूना छोड़ गोलानदी की तरफ चल पड़ा।

यह घटना शहरमें चारों तरफ बड़ी शीघ्रतासे पसर गई। रानीके विरह दुःखसे दुःखित हो आज महाराज वीरधवल अग्निमें प्रवेश कर मरनेके लिये जा रहे हैं। यह समाचार सुनते ही नगरके आबालवृद्ध तमाम मनुष्य हर एक जगह करुण स्वरसे विलाप करने लगे। उस दिन

नगरके तमाम मनुष्योंने अन्न तो क्या किन्तु जलपान तक भी न किया। तमाम शहरमें इस दुर्घटित घटनाके समाचारसे शोककी घनघटा छा गई। नगर निवासी राजाके शोकसे श्याम मुख वाले देख पड़ते थे। किसी भी मनुष्यके चेहरे पर प्रसन्नता देख नहीं पड़ती थी। उस रोज सर्वस्व खो गये हुए मनुष्यके समान सारे शहरके मनुष्य शून्य हृदय वाले मालूम होते थे। निरुपाय बने हुए मंत्रीमंडलके शोकका कुछ पार ही न था। ज्यादह क्या लिखें उस दिन राजकुलके सहित तमाम स्त्रीपुरुषोंमें दुर्दिनके समान उदासीनताने भयंकर रूप धारण किया था।

नगरके बड़ेसे बड़े प्रजाजनोंने महाराजके चरणोंमें पड़कर उन्हें अपने निश्चयसे पीछे हटनेकी प्रार्थना की। परन्तु उन्होंने किसीकी प्रार्थना पर लक्ष्य न दिया। मंत्रीमंडल और प्रजाजनके रुदन करते हुए रानीकी शिबिकाके साथ महाराज वीरधवल अपने निश्चयको पूरा करनेके लिए गोला नदीके किनारे आ पहुंचे।

रानीके शवकी पालकी एक तरफ रख कर उन मनुष्योंने चिताकी लकड़ियों को ठीक करना शुरू किया। इधर राजाने स्नान करनेके लिए गोलानदीमें प्रवेश किया। इस समय राजाके चेहरे पर पूर्ण उत्साह और

उत्सुकता देख पड़ती थी। वे मनमें विचार कर रहे थे। चिता जल्दी जल उठे तो मैं स्नान कर शीघ्र ही उसमें प्रवेश करूंगा। इन्हीं विचारोंके दरम्यान स्नान कर राजा बाहर आया। ठीक इसी समय गोला नदीके प्रवाहमें बहता हुआ एक बड़ा भारी सूका हुआ काष्ठस्तंभ आ रहा था। उस सूके हुए काष्ठ स्तंभको देख कर प्रधान मंत्रीने नदीमें तैरने वाले मनुष्योंको हुक्म दिया कि यह जो नदी प्रवाहमें लक्कड़ बहता हुआ आ रहा है इसे बाहर निकालो, क्यों कि यह सूका हुआ होनेसे चिताके काम आयगा। मालूम होता है चिताकी लकड़ियां कम आई हैं। मंत्रीकी आज्ञा पाकर तैरने वाले मनुष्योंने शीघ्र ही नदी प्रवाहमें प्रवेश किया और थोड़ी ही देरमें उस सूके हुए काष्ठस्तंभको उन्होंने बाहर निकाल लिया। किनारे पर लाये हुये उस काष्ठस्तंभको देखनेके लिये जो बहुतसे मजबूत बंधनोंसे चारों तरफसे बन्धा हुआ था महाराज वीरधवल भी उसके समीप आये।

——*:०:*——

शोकमें हर्ष

इस काष्ठको चारों तरफसे इस प्रकार मजबूत जकड़ कर बाँधनेका क्या कारण होगा ? क्या यह अन्दरसे पोला तो नहीं होगा ? इसे गोला नदीमें किसने बहा दिया होगा ? क्या इतना बड़ा काष्ठस्तंभ अपने आपही बह आया होगा ? इत्यादि अनेक प्रकारके मनोगत तर्क वितर्क करते हुए राजा वीरधवलने अपने सेवकोंको उसके बन्धन तोड़ डालनेका हुक्म दिया। बन्धन तोड़ते ही उस काष्ठके सीप संपुटके समान दो भाग मालूम हुए। ऊपरी भाग दूर करने पर उसके बीचमें रही हुई अर्धजागृत अवस्थामें रानी चंपकमाला सब लोगोंके अकस्मात् प्रत्यक्ष देखने में आई। उसके शरीर पर चंदनका विलेपन किया हुआ था। उसके शरीरसे कस्तुरी आदि सुगन्धिवाले अनेक उत्तम द्रव्योंका परिमल महक रहा था। उसके कंठमें सच्चे मोतियोंका अमूल्य और सुंदर हार शोभ रहा था। और नेत्रोंमें निद्रा छाई हुई थी।

अकस्मात् उस काष्ठ विवरके अन्दर निद्रालु अवस्था में महारानी चंपकमालाको देख महाराज वीरधवल

और तमाम प्रधान पुरुषोंके मुखसे एकदम हर्षध्वनि हो उठी। अहा! रानी चंपकमाला यहां! क्या देख रहे हैं? सबके चेहेरे विकसित हो उठे। और वहाँ पर रहे हुए तमाम स्त्रीपुरुषोंमें जो शोककी प्रचंड घटा छाई हुई थी वह नष्ट होकर हर्ष और आनन्दका प्रचंड भानुप्रकाशित हो उठा। इस हर्षके साथ ही महाराज वीरधवल विचारमें पड़े कि जिस रानीके मृतकको शिबिकामें डाल कर यहाँ लाए हैं वह असली रानी है या यह? या मैं यह स्वप्न देख रहा हूँ' अथवा वही जीवित रानी डरके कारण इस काष्ट विवरमें आ घुसी है? परन्तु यह तमाम बातें असंभवितसी प्रतीत होती हैं। इसमें वास्तविक सत्य क्या है यह जाननेके लिए महाराज वीरधवलने तुरंत ही अपने सेवकोंको आज्ञा दी कि जल्दी शिबिकाको देखो' उसमें रानीका मृतक है या नहीं? राजाका हुक्म पाते ही राज पुरुष शिबिका देखनेके लिए दौड़े। इतनेहीमें शिबिकामें रहा हुआ शव हाथसे हाथ मसलता हुआ, दाँतोंसे दाँत पीसता हुआ, 'अरे! मैं ठगा गया'' इस प्रकार शब्द बोलता हुआ तमाम जनताके प्रत्यक्ष देखते हुए आकाशमें उड़ गया।

यह घटना देखतेही तमाम लोग भयभीत हो काँपने लगे विस्मय और आनन्दसे पूर्ण हृदय वाला राजा जनताको

आस्वासन देते हुए बोला —“सज्जनो ! इस वृत्तान्तके वास्तविक रहस्यको हमारे अन्दरसे कोई भी नहीं जानता, परन्तु काष्ठस्तंभ में रही हुई रानी शायद इस रहस्यको प्रगट करेगी। यों कह कर उन्होंने रानीकी तरफ देख यह प्रश्न किया। प्रिये ! यह क्या घटना है ? क्या इस रहस्यको जना कर तुम हम सबकी शंका दूर करोगी ?

राजाके पूर्वोक्त वचन कानमें पड़ते ही रानी चंपक-माला अर्धनिद्रामें से जागृत हो महाराजको अपने सन्मुख खड़ा देख उनके मुखमंडलकी तरफ एक टक देखने लगी। नजरसे नजर मिलतेही रानीके नेत्रोंसे अश्रु की धारा वहने लगी। इस समय दोनों दंपत्तीको जो आनन्द प्राप्त हुआ वह अकथनीय था। कुछ देर तक निर्निमेष दृष्टिसे देख कर हर्षके आँसुओंसे विरहकी अग्निको बुझाते हुए रानी स्वयं राजासे पूछने लगी। स्वामिन् ! आज इस नदीके किनारे पर आप किसलिए पधारे हैं ? पानी टपकते हुए ये भीगे वस्त्र आपने क्यों पहिने हैं ? ये तमाम लोग यहाँ पर किस लिये इकट्ठे हुए हैं ? वह सामने चिता किसके लिये बनाई गई है ? यह मृतकको उठाने वाली शिबिका देख पड़ती है, क्या कोई मनुष्य मर गया है ?

राजा अधीर होकर बोला—“देवी ! तुम्हारे पूछे

हुए तमाम प्रश्नों का मैं बादमें उत्तर दूँगा । पहले तुम मुझे अपना संपूर्ण वृत्तान्त सुनाओ । प्रिये ! तुम कहाँ चली गई थीं । इतने समय तक कहाँ रही ? घुणके समान इस काष्ठस्तंभ में किस तरह घुसी ? यह कंठमें रहा हुआ हार तुम्हें किसने दिया ! और इसनदी के प्रवाहमें किसतरह वह आई ? यह सब वृत्तान्त सुनाकर हमारी उत्सुकताको दूर करो ।

रानीने मधुरस्वर से कहा—'अगर आपको प्रथम मेरा ही वृत्तान्त सुनना है तो उस नजदीकवाले वड़ के वृक्षकी शीतल छाया में चलो । वहाँ जरा विश्रांति लेकर मैं शांत चित्तसे इस विचित्र घटना का सर्व वृत्तान्त सुनाऊँगी । रानीके इस उत्तरसे वहाँ रही हुई तमाम जनता को बड़ा हर्ष हुआ और राजा रानी सहित सब लोग नजदीक में रहे हुए उस वट वृक्षकी छायामें यथोचित स्थान पर जा बैठे, तथा इस दुर्घटनाका वृत्तान्त सुनने के लिए उत्सुक हो रानीके मुखमंडलकी ओर देखने लगे ।

"प्रियदेव ! यह बात तो आपको मालूम ही थी कि मेरा दाहिना नेत्र फड़कता था । उस अशुभ निमित्त से मुझे किसी जगह पर भी शांति प्राप्त न हुई । आपके गये बाद मैंने वन उपवन, बगीचे आदिमें घूम कर शांति

प्राप्त करनेके लिये बहुत ही प्रयत्न किया। परन्तु कहीं पर भी चित्त स्थिर न होने से मैं वापिस महलमें आगई। और दासी वेगवती को मैंने फूल पत्र लेने के लिये भेज दिया। उस समय मेरी आँखोंमें कुछ निद्रा भरने लगी थी अतः मैंने आराम पाने के लिये पलंगका आश्रय लिया। मुझे मालूम है कि निद्रागत हो जाने पर तुरन्त ही मुझे किसी दुरात्मा ने उठा लिया। महलसे उठा कर मुझे किसी एक पहाड़के शिखर पर रख दिया गया। मुझे उठा लानेवाला दुष्ट व्यक्ति शीघ्र ही कहीं अन्यत्र चला गया।

इस समय मारे भयसे मेरा सारा शरीर कांपने लगा। वह पहाड़ीप्रदेश यद्यपि रमणीय था तथापि मुझे उस समय वह बहुत ही भयानक प्रतीत होता था। उस पर्वत पर रहे हुये चन्दन वृक्षोंकी सुगंधिका परिमल पवन के साथ मेरे शरीर को स्पर्श करता था। तथापि वह मुझे दुःखद मालूम देता था। चारों तरफ दृष्टि घुमाती हुई मैं उस शिलातल्प से उठी। मैंने सावधान होकर सब तरफ दूर २ तक देखा, परन्तु वहाँ पर कहीं मनुष्य की छाया तक भी न देख पड़ती थी। मात्र, सिंह व्याघ्र, रीछ और उसी तरह के अन्य विकराल प्राणियों के शब्द सुनाई देते थे। ऐसी भयंकर परस्थिति में साहस

धारण कर मैं एक ओर चल पड़ी। मैं चलते समय विचार करती थी कि कहाँ वह मेरी रमणीय चंद्रावती नगरी और कहाँ यह निर्जन प्रदेश! हा मेरे प्राण वल्लभ कहाँ रहे! और अब मुझे उनका किस तरह मिलाप होगा? इस निष्कारण दुष्मनने किस लिये मेरा अपहरण किया? इस संकटसे अब मैं किस तरह मुक्त होऊंगी? इस भयानक जंगलमें मैं किस तरह रह सकूंगी? मेरे बाद वहाँ पर मेरे प्राण प्यारेकी क्या दशा होगी? इत्यादि विचारोंकी उलझनमें क़दम २ पर ठोकरें खाती हुई मैं कितनीक दूर तक उसी दिशामें चली गई! इतनेहीमें मुझे सामने मेरे पुण्यके उदयसे एक विशाल भव्य मन्दिर नजर आया। उस मन्दिरके द्वार खुले हुए थे, इसलिये धैर्यसे मैने उसमें प्रवेश किया। अन्दर जाकर देखा तो वृषभ लांछनसे मालूम हुआ कि उसमें ऋषभ देव प्रभुकी सुन्दर और शांत मूर्ति विराजमान है। प्रभुकी प्रतिमाके दर्शनसे मुझे उस महासंकटमें कुछ विश्रांति मिली। मंदिर की प्राप्तिसे मेरी अनेक आशायें सजीवनसी हो उठीं। मानो मैं तमाम दुःखको भूल गई हूँ, मेरे मनमें ऐसी हिम्मत और शान्ति प्राप्त हुई। ऐसे निर्जन जंगलमें और आपत्तिके समय देवाधि देवका दर्शन हुआ यही मेरे भविष्यके शुभसूचक की निशानी थी। मैं उस संकट हरण

शांतिकर, महाप्रभुकी एकाग्र चित्तसे स्तुति करने लगी।

"हे अनाथोंके नाथ ! परदुःख भंजन ! कृपाके समुद्र ! वीतराग देव ! मैं आपकी शरणमें आई हूँ। हे, शरणागत वत्सल विरुद धारण करनेवाले सर्वज्ञ देव ! संसारमें आपके हितोपदेशसे अनादि कर्मबन्धनसे मुक्त हो भव्यजीव परम पदको प्राप्त करते हैं। हे प्रभो ! आपकी दर्शन प्राप्ति अन्धकारमें दीपक, मरु भूमिमें सरोवर, खुष्क पहाड़ पर कल्पवृक्षोंकी घटा, और समुद्रमें जहाज प्राप्तिके समान आनन्द दायक हैं। हे भगवन् ! मेरे बाह्याभ्यन्तर दुःखोंका अन्त करो !

इस तरह शांतिचित्तसे भगवानकी स्तुति करके जब मैं मंदिरसे बाहर आई तो वहाँ पर मुझे दिव्यरूप धारण करनेवाली एक स्त्री मिली। वह मेरे पास आकर प्रसन्न हो बोली---'सुन्दरी ! तुझपर इस प्रकारकी विपत्तिके बादल आनेपर भी जिनेश्वर भगवानपर तेरी ऐसी अटल भक्ति और अटूट धर्मपरायणता देखकर ऋषभदेव प्रभुके शासनकी अधिष्ठाता देवी मैं तुझे सहाय करनेके लिए प्रगट हुई हूँ। इस प्रभुके मंदिरके नजदीक ही रहनेवाली, और देवमंदिरका रक्षण करनेवाली, मैं चक्रेश्वरी देवी हूँ। इस मलयाचल पहाड़के ऊपर मेरा भुवन होनेसे मुझे लोक मलयादेवी भी कहते हैं। मेरेही धर्मको पालन करनेवाली बहन ! तू धैर्य

धारण कर। भयको त्याग दे। मैं तेरा रक्षण करनेके लिए आई हूँ। इसप्रकार कहकर आदर पूर्वक उसने मेरे हाथमें सुगंन्धिमय कुछ चंदनके टुकड़े दिये। मलयादेवीका अपने पर वात्सल्य देखकर मुझे बड़ा धैर्य प्राप्त हुआ। मैंने देवीसे कहा हे देवी! मुझे कौन और किस लिए यहाँ हरन कर लाया? मुझे अब अपने स्वामीका मिलाप होगा नहीं?" देवीने कहा—"धर्म बहन! तेरे पति वीरधवल का वीरपाल नामक एक छोटा भाई था। राज्यकी इच्छासे उसने राजा को मारनेके लिए अनेक उपाय किये। परन्तु राजाके पुण्यके सामने उसके तमाम प्रयत्न बेकार हुए। एकदिन उस निष्ठुरने राजाको मारनेके लिए महलमें प्रवेश किया और राजा परशस्त्रका वार किया। परन्तु राजाने सावधानहो उसके वारको चुका दिया और तलवारके एकही प्रहारसे उसे जमीनपर गिरा दिया। बुरी तरह घायल होकर वीरपाल अपने पापका पश्चात्ताप करते हुए कुछ शुभ भावनासे मृत्यु पाकर इसी पर्वत पर मेरे परिवारमें प्रचंड शक्तिवाला भूत जातिमें देव पैदा हुआ है। उसने ज्ञानसे अपना पहला भव देखा। वैर याद कर राजासे बदला लेने के लिए उनके छिद्र देखता हुआ उनके पीछे फिरने लगा। राजाका पुण्य प्रबल होनेसे उसका कुछ भी अकल्याण करनेमें वह सर्वथा समर्थ न हुआ, तब उसने

विचार किया कि राजाका रानी चंपक माला पर गाढ़ प्रेम है, उसके जैसा स्वाभाविक प्रेम अन्य किसी पर नहीं मालूम होता। यदि रानीको मार दिया जाय तो प्रेमके बन्धनमें बँधा हुआ राजा स्वयं ही मर जायगा। इसी तरह मैं अपना वदला ले सकता हूँ।

"हे सुन्दरी! इसी विचारसे वह भूत देव तेरे पीछे फिरने लगा। आज तुझे शयनगृहमें एकाकी निद्रावस्था में देख इस पर्वत पर उठा लाया। पुण्यकी प्रवलता और आयुष्य लम्बा होनेसे वह तुझे मार नहीं सका। हे धर्म सहोदरी! अव तुझे घवड़ानेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम्हारे ही शुभकर्मकी प्रेरणासे मैं तुझे आ-मिली हूँ। अवसे तेरे पुण्यकर्मका उदय होगया है। और वही तेरा रक्षणकरने और तुझे इष्टप्राप्ति करानेमें समर्थ होगा। मेरे जैसी उस तेरे पुण्यकी प्रेरणासे इष्ट प्राप्तिमें सिर्फ निमित्त कारण होती हैं। इस लिये तुझे जिस वस्तुकी इच्छा हो तू मुझे मालूम कर जिससे कि मेरा समागम तेरे लिए सफल हो।

"स्वामिनाथ! मैंने मलया देवीसे कहा 'हे महादेवी! यदि आप सचमुच ही मेरी सहायक हैं तो मुझे पुत्रादि संततिनहीं है। जिसके वगैर हमारा विशालराज्य भी निराधार है। गृहस्थियोंका गृहसंसार पुत्रादिके विना

शोभा नहीं पाता। अतः प्रसन्न होकर मुझे पुत्र प्राप्तिका वरदान दो।"

यह बात सुनते ही राजा उत्सुक हो बीचमें ही बोल उठा–"हे प्रिय वल्लभे! उस परोपकारी देवीने तुझे इस बात का क्या उत्तर दिया? रानी बोली–"स्वामिन्! उस देवीने खुश होकर मुझे कहा–'भद्रे! तुझे पुत्र पुत्री रूप एक युगल (जोड़ा) थोड़े ही समयमें प्राप्त होगा। इतने दिनों तक तेरे पतिके दुश्मन इस व्यन्तर देवने ही तुम्हारे संततिका निरोध किया हुआ था। अब मैं उस अपने सेवक व्यन्तर देवको तुम्हारा नुकसान या तुम्हें हैरान करनेसे रोक दूँगी।"

यह वचन सुनकर राजाके हृदयमें हर्षका पार न रहा। उसने रानीकी बहुत ही प्रशंसा की और कहा "हे

साध्वी, प्रिये! तुझे बड़ी श्रेष्ठ बुद्धि सूझी! तूने बहुत अच्छा वरदान मांगा। इससे तूने मेरे वंशका उद्धार किया और मेरे हृदय की चिन्ता भी दूर कर दी। प्यारी! तेरे सिवा मेरे दुःखमें हिस्सा लेने वाला और कौन हो सकता है? प्रिये! ऐसी दुःखी अवस्थामें जो तुझे संतति संबन्धी चिन्ता दूर करनेकी बात याद आई यही हमारे भाग्योदयका सूचक प्रमाण है। क्या मलयादेवीने और भी उपकार किया है? रानीने जवाब

दिया यह लक्ष्मीपुंज नामक हार उस महादेवीने अपने हाथसे मेरे गलेमें डाला है। और उसने कहा है कि यह दुर्लभ हार महाप्रभावशाली है। गलेमें निरन्तर धारण करनेसे शुभ फल दायक होता है। इस हारके प्रभावसे तुझे प्रभावी संतति प्राप्त होगी, और नित्य ही तुम्हारे मनोरथ पूर्ण होंगे। हे स्वामिन्! इसके बाद मैंने मलयादेवीसे पूछा । जिस देवने मुझे इस पहाड़ पर ला छोड़ा है वह फिर इस समय कहाँ गया?" देवीने कहा "भद्रे! तुझे इस पर्वत पर छोड़ कर वह देव फिर वापिस चन्द्रावती नगरीमें ही गया है और तेरे स्थानमें तेरे ही जैसा एक मृतक शरीर बना कर गुप्त रूपसे वहाँ ही रहा है। तेरा पति तेरे सजीवन शरीरको अकस्मात् निर्जीव देखकर इस समय जिस दुःखका अनुभव कर रहा है उसे मैं कथन नहीं कर सकती। राजाको उस व्यन्तर देवकी मायाका पता नहीं लग सका। इसी कारण वह उस बनावटी मुर्देको रानी समझ कर महान् विलाप कर रहा है। आपका दुःख सुनकर मैंने तुरन्त ही देवीसे प्रश्न किया कि मेरे स्वामी मेरे वियोग में जीवित रहेंगे या नहीं? और वे मुझे कब मिल सकेंगे? देवीने कहा—'भद्रे! सात पहरके बाद दुःसह पीड़ाको सहता हुआ राजा तुझे जीवित मिलेगा।

में देवीसे यह पूछना ही चाहती थी कि मुझे कह मिलेंगे। इतने ही में दासी सहित आकाश मार्गसे वहाँ पर एक विद्याधरी आ पहुँची। उसे देखकर मलयादेवी मेरे पाससे अकस्मात् अदृश्य हो गई। मुझे वहाँ पर एकाकी देख वह विद्याधरी मेरे पास आई और विस्मय चित्तसे वह मुझे पूछने लगी। कि हे भद्रे! इस निर्जन पहाड़ पर सुन्दर रूपवाली तू अकेली कौन है? उसके उत्तरमें मैंने उसे अपना तमाम वृत्तान्त कह सुनाया। मेरी बात सुनकर खेद पूर्वक वह विद्याधरी बोलने लगी। अहो! विधिकी विचित्रता! ऐसी रूपवती, उत्तम कुलमें पैदा होनेवाली और राजाकी रानी होने पर भी निर्जन पहाड़ पर ऐसे संकटमें पड़ी है।"

"हे शुभे! मैं तुझे इसी वक्त तेरी चन्द्रावतीमें छोड़ आती परन्तु मुझे इस पहाड़ पर विद्या सिद्ध करनी है। अगर मैं इस वक्त उस विद्या का आराधन न करूँ तो फिर वह विद्या सिद्ध न हो सकेगी। मैं अब दोनों तरफ से संकटमें पड़ गई। इसी लिये मैं तुझे इस समय तेरी नगरीमें नहीं पहुँचा सकती। इस समय मेरा पति भी मेरे पीछे आने वाला है। वह ऐसा सुन्दर रूप देखकर तेरा शील खंडित करेगा या वह तुझे सदाके लिये पत्नी बना कर रक्खेगा तो मुझे भी सौकन पनका

महान् संकट भोगना पड़ेगा, इस लिये हे भद्रे ! चल तू मेरे साथ, मैं तुझे अच्छी तरह किसी जगह छिपा दूँ। इस प्रकार कह कर वह बड़े जोशीले प्रवाहमें बहती हुई मुझे एक नदीके किनारे ले गई। उस समय भयके मारे मेरा सारा शरीर कंपायमान हो रहा था। मुझे शंका होती क्या यह विद्याधरी मुझे मार डालेगी ? वृक्ष पर लटका देगी ? या नदीप्रवाहमें धकेल देगी !"

नदीके किनारे पर एक सूका हुआ और मोटा लक्कड़ पड़ा था। विद्याधरीने अपनी विद्याशक्तिसे उस लक्कड़ के दो लम्बे विभाग किये। एक मनुष्य अच्छी तरह उसमें समा जाय इतने प्रमाण में उसे थोता किया। एवं कपूर, कस्तूरी आदि अनेक प्रकारके सुगन्धी द्रव्योंसे मेरे शरीर पर विलेपन करके वह विद्याधरी मुझसे बोली—"हे भद्रे ! इधर आ। मैं तेरे शीलकी रक्षा करूँ।" यों कह मुझे उस लक्कड़के विवरमें सुला कर उसने मेरे ऊपर उस काष्ठकी दूसरी फाड़ ढक दी। इसके बाद क्या बनाव बना सो गर्भावास में रहे हुए के समान मुझे कुछ खबर नहीं। पूर्वपुण्यके उदयसे यह काष्ठ यहाँ ही आ पहुँचा और आपने मुझे उसमेंसे निकाल लिया; बस यही मेरा सर्व वृत्तान्त है।

राजाने भी रानीके पूछे हुये उत्तरमें इस दुर्दशा

में यहाँ पर सबके एकत्रित होनेका तमाम हाल कह सुनाया। फिर सुबुद्धि नामक प्रधान मंत्रीसे पूछा उस विद्याधरीने रानी को इस काष्ठविवर में क्यों डाला होगा ? और यह काष्ठस्तम्भ यहाँ किस तरह आ गया!

मंत्री बोला "महाराज! मेरा अनुमान है सपत्नी होनेकी शंकासे विद्याधरीने रानीको इस काष्ठविवरमें डाला-होगा और काष्ठको मजबूत बन्धनोंसे बाँधकर उस तरफ से आनेवाली इस गोला नदीके प्रवाहमें इस काष्ठस्तंभ को बहा दिया होगा। यह काष्ठस्तंभ नदीके प्रबलप्रवाहमें बहता हुआ हमारे पुण्यके उदयसे यहाँ आ पहुँचा है। विद्याधरीका चाहे जो आशय हो तथापि उसका किया हुआ प्रयत्न हमारे लिए सुखरूप निकला है। रानीसे जो देवीने कहा था कि तुम सात पहरके बाद अपने स्वामीसे मिलोगी वह देवीका वाक्य सत्य ही हुआ।

राजा "हाँ देवीका वचनतो अन्यथा होईही नहीं सकता। परन्तु उस मायावी व्यन्तरदेवका प्रपंच हमें कुछ भी मालूम न पड़ा कि जिसने थोड़े ही समयमें राज्यवंश क्षय करने का प्रयत्न किया था हमपर मलयादेवीने महान् उपकार किया है। उसकी कृपासे कुलमें कुशलता, पुत्रपुत्रीका वरदान मिला और उपद्रव करनेवाला वह व्यन्तर देव

शांत हुआ। सच पूछो तो इन तमाम बातोंका कारण रानी का अपहरण है। जिस प्रकार कड़वी औषधीसे तुरन्त ही रोग दूर हो जाता है। वैसे ही रानीका यह दुखदाई अपहरण अन्तमें हमें सब तरह सुखरूप हुआ।

काष्ठस्तंभकी उन दोनों फालियोंको गोला नदीके भूषण रूप भट्टारिका देवीके मंदिर आगे रखवा दिया गया मध्यानका समय होगया था, भूखसे रानीका मुखकमल कुमला रहा था। प्रधान मंत्रीने कहा—"कृपानाथ! समय बहुत होचुका है। अब हम कृतार्थ होगये हैं। भोजनका समय बीत रहा है। क्षुधासे क्षाम कुक्षीवाली महारानी भी कुमलाई हुई देख पड़ती है और आप भी कलसे अन्न जल रहित हैं। अतः अब आप शीघ्रही शहरमें चल कर स्नान भोजन कर दुःखको जलांजलि दें। प्रधान के वचन सुनकर महाराज वीरधवल शहरमें प्रवेश करनेके लिए तैयार हो गये। प्रजाजनोंने शहरके रास्ते और बाजार सजा दिये थे। राजा रानी दोनों हाथीपर बैठ कर राजमहलको चल दिये।

इस समय अनेक प्रकारके बाजोंके नादसे आकाश गूंज रहा था। चारण लोग बरदावली बोल रहे थे। महाराज माँगलिक और आशीर्वादके शब्द सुनते हुए तथा याचकोंको दान देते हुए राजमहलमें आ पहुँचे।

महलमें आकर मंत्री सामंत और नागरिकादि सर्व जनों को संतोषित कर महाराजने विसर्जन किया। वे लोग भी महाराजको नमस्कार कर हर्ष प्राप्त करते हुए अपने अपने घर पहुँचे। राजा और रानीने स्नान पूर्वक ऋषभ देव प्रभुकी पूजा करके भोजन किया और प्रजा जनोंने खुशी बतानेके लिये उस दिन महाराजके पुनर्जन्मका महोत्सव किया।

"सफल वरदान,,

पृथ्वीपर सर्वत्र चंद्रमाकी चाँदनी पसर रही थी। महाराज वीरधवल महारानी चंपकमालाके महलमें आकर आराम कर रहे थे। नजदीकमें रहे हुए बगीचेसे शरीर को सुख देनेवाले मंद मंद सुगंधित पवनके झोके आ रहे थे, शय्या पर बिछाये हुये पुष्पोंकी सुगंधी महक रही थी। सारे महलमें शान्तिका साम्राज्य पसर रहा था। ऐसे समय विरहकी वेदनायें नष्ट होजाने पर दंपती अपूर्व सुख सागरमें डूब रहे थे। बहुत समय तक प्रेम और

हास्य विनोदकी बातें कर परिश्रमसे थके हुए महाराज और महारानी सुखनिद्रामें विलीन होगये ।

पुण्यके प्रभाव और मलय देवीके वरदानसे महारानी चंपकमालने उसी रात्रिमें गर्भ धारण किया । ज्यों ज्यों गर्भके चिन्ह विशेष प्रगट होने लगे त्यों त्यों राजा हर्षसे पुलकित होने लगे और महारानी गर्भसे वृद्धिको प्राप्त होती गई । गर्भमें उत्तम प्राणी आनेके कारण रानी का शुभ इच्छायें पैदा हुई ! और राजाने भी उन सबकी पूर्ति की ।

क्रमसे नव महीने पूर्ण होने पर शुभ लग्नमें महारानी चंपकमालाने सुखपूर्वक महान् तेजस्वी पुत्र पुत्रीरूप युगलको जन्म दिया । तुरन्त ही महाराज वीरधवलको बेगवती दासीने राज सभामें जाकर पुत्र और पुत्रीके जन्म की बधाई दी । राजाके हर्षका पार न रहा । बिना किरीट के उसने अपने शरीरसे तमाम अलंकार उतार कर प्रीति-दानमें बेगवतीको दे दिये और उस रोजसे उसका दासी पन मिटा दिया । देशभरमें हर्षोत्सब मनाया गया । अर्थी जनोंको खूब दान दिया गया । आरंभके व्यापार बंद कराये गए । कैदियोंको छोड़ दिया गया । तमाम जीवोंको अभय दान दिया गया । शहरको अनेक प्रकार से सजाया गया, महाराजको बड़ी उमरमें पुत्र पुत्री होनेमें

प्रजाजनोंके आनन्दका पार न रहा।

इस प्रकार दश दिन पर्यन्त आनंदोत्सव कर सगे सम्बन्धी और प्रजाजनोंको प्रीति भोजन कराया, जनताके समक्ष मलयादेवीका वरदान सफल होनेसे उसका नाम याद रखनेके लिए महाराजने हर्ष पूर्वक उन पुत्र पुत्री का मलयकेतु और मलयासुंदरी नाम रक्खा। ज्यों ज्यों कुमार और कुमारी वृद्धिको प्राप्त होने लगे त्यों २ चंद्रमासे समुद्रकी तरंगोंके समान राजा और रानीके मनोरथ बढ़ने लगे। धीरे धीरे वृद्धि पाते हुये कुमार-मलयकेतु और मलयासुन्दरी अब विद्या ग्रहण करनेकी वयको प्राप्त हुये। विद्याके बगैर राजकुलमें पैदा होकर मनुष्य सच्ची शोभा नहीं पाता यह समझ कर बालकों के हितैषी महाराज वीरधवलने एक धुरंधर विद्वान कला-चार्यको बुला कर उसके पास राजकुमार और राजकुमारी को विद्याभ्यास करनेके लिये रख दिया। बुद्धिमान् राज कुमार और राजकुमारीने पूर्व पुण्यके उदयसे थोड़े ही समयके अन्दर पहले ही याद की हुई विद्याके समान तमाम कलाओंको संपादन कर लिया। राजकुमार अश्व-क्रीड़ा, हाथियोंसे लड़ना, और खड्ग खेलमें अत्यंत निपुण होचुका था। अपनी कलाकी और भी उन्नति करनेकी इच्छासे धनुष बाण लेकर वह जब कभी लक्ष्य वेध करता

था तब उसकी कला देख कर राजकुल के बड़े बड़े पुरुष हर्ष से चकित हो जाया करते थे ।

मलयासुन्दरीका हृदय स्वभावसे ही करुणारूप था। वह भोले स्वभावकी थी। उसके हृदय और शरीरमें कोमलताने निवास किया था। माता पिताकी संस्कारिताके कारण उसकी बचपनसे ही सद्धर्ममें रुचि थी। वह अपने अनेक सद्‌गुणोंके कारण समस्त राजकुटुंबको प्राणोंसे भी अधिक प्यारी थी। धीरे २ अब उसने बाल्यावस्थाका परित्याग किया था।

अब युवावस्थामें राजकुमारीके शरीर की शोभा कुछ अपूर्व ही मालूम होती थी। उसके शरीरके अंग प्रत्यंग विकाश को प्राप्त हो चुके थे। नेत्रोंको आनन्द देनेवाली उसके शरीरकी लावण्यता प्रति दिन बढ़ती जा रही थी। उसके लम्बे २ घुँघरवाले काले केश अति मनोहर मालूम होते थे। कमल के समान उसकी बड़ी २ स्निग्ध आँखें देखने वालोंके चित्तको हरण करती थीं। अष्ठमीके अर्धचन्द्राकार कपालके नीचे कमानके जैसी टेढ़ी भौंहें बड़ी ही सुन्दर मालूम होती थीं। साधु पुरुषोंकी चित्तवृति के समान, सरल नासिका उसके मुख मंडलकी शोभामें अधिक वृद्धि कर रही थी। शुभ्र मोतियों के जैसी दन्तपंक्ति उसके लाल २ होठों पर अतीव

सुन्दर प्रकाश डालती थी। उसकी ग्रीवा तीन रेखाओं से शंखके जैसी शोभती थी। वक्षस्थल पर उभरता हुआ कठिन स्तन युगल उसके नवयौवनके आगमन को सूचित कर रहा था। उसकी लम्बी २ कोमल भुजायें मृणाल दंडको भी लजाती थीं। उसके शरीरका मध्यभाग सिंहकी कमरके जैसा पतला और सुन्दर देख पड़ता था। हथनीकी गतिकी भांति मंद २ किन्तु विलास वाली उसकी चाल युवकोंके मनको लुभाती थी।

दोपहरका समय था। महाराज वीरधवल की राज-सभा भरी हुई थी; इतनेमें ही द्वारपाल ने आकर महा-राजको नीचे गर्दन झुका कर प्रणाम करते हुए कहा "सरकार! राजद्वार पर पृथ्वीस्थानपुर नगरसे राजा सूरपालके सेनापति और उनके साथी आये हुए हैं। वे दरबारमें आना चाहते हैं। हुकम मिला उन्हें यहाँ ले आओ। महाराज वीरधवल की आज्ञा पाकर द्वार-पाल, पृथ्वीस्थानपुर से आये हुये मेहमानों को राजसभा में ले आया। आगन्तुक सेनापति और उसके सहचारी राज पुरुषोंने महाराज वीरधवल के सामने पृथ्वीस्थान पुर से लाये हुये वस्तुओंका उपहार रख कर उन्हें झुक कर नमस्कार किया और सबके सब अदबसे एक तरफ खड़े हो गये। राजा वीरधवलने बहुमान पूर्वक

उनके पुरस्कारको स्वीकार कर, उन सबको बैठनेके लिये आसन दिलाये।

प्रसन्न होकर महाराज वीरधलने प्रश्न किया "हमारे परम मित्र महाराज सूरपालके राज्य और परिवारमें कुशलता है?" हाथ जोड़कर सेनापतिने नम्रतासे उत्तर दिया महाराज! धर्मके प्रताप और आप जैसे मित्र राजकी स्नेहभरी नजरसे राज्यामें सर्वत्र आनन्द है। महाराज सूरपालने आपके परिवारकी कुशलता पूछी है।

सेनापतिके साथ आये हुयें मनुष्योंकी तरफ नजर फैंकते हुये महाराज वीरधवलने सेनापतिके नजदीक बैठे हुये एक महान् तेजस्वी, सौम्यमूर्ति, भाग्यवान सुन्दर युयकको देखा। उसे देखते ही राजाकी मनोवृति सहसा उस तरफ आकर्षित होगई। अतः— महाराजने प्रश्न किया' सेनापति यह तुम्हारे साथका युवक कौन है? इसकी सुन्दर आकृति तो राज कुमारोंके समान तेज-मालूम होती है यह बात सुनते ही उस युवकका संकेत पाकर चतुर सेनापति बोल उठा—"महाराज! यह मेरा छोटा भाई है। चंद्रावती नगरीको देखनेकी इच्छासे हमारे साथ चला आया है। इस युवकको देखकर राजाके मनमें कुछ और ही भाव पैदा हुआ था। राज कुमारी मलया-सुन्दरी युवावस्थाको प्राप्त होनेसे राजा अपनी चिंताको

दूर करनेके विचारमें था, परन्तु यह कोई राजकुमार नहीं है यह समझ कर उसने अपने विचारोंको मनमें ही दबा लिया था।

राजकार्य निवेदन किये बाद राजाने उन्हें सन्मान देकर निवास स्थान दिया। उस मकानमें वे सबके सब जा ठहरे। राजसभा विसर्जन हुई। सभासे बाहर आनेपर उस युवकने अपने संबन्धमें उत्तर देनेवाले सेनापतिकी बड़ी प्रसन्नता पूर्वक प्रशंसा की। क्योंकि यह बनावटी उत्तर देनेका कारण उस युवकका चंद्रावतीमें गुप्त प्रवास था। एक सुन्दर महलमें उतारा किये बाद वह युवक अपने साथियोंको कह कर एकला ही चंद्रावती नगरीकी शोभा देखनेके लिये निकला।

रंगमें भंग

विशाल दक्षिणदेशमें पृथ्वी स्थानपुर नामक नगर बसता था। वह अपनी शोभा और समृद्धिमें चंद्रावती नगरी से कम न था। यह शहर भी गोला-

नदीके किनारे परही बसा हुआ था। शहरके चारों तरफ सघन वृक्षोंकी घटा शहरकी शोभा बढ़ा रही थी। शहरके नजदीकमें धनंजय नामक यक्षका मन्दिर था। आस पासमें कुछ पहाड़ी प्रदेश भी था। समीपवर्ति पर्वतोंमें बहुतसी गुफायें भी देख पड़ती थीं, जिनका उपयोग तपस्वी, योगी-पुरुष या चोर वगैरह करते थे। इस सुन्दर और समृद्धिशाली नगरमें क्षत्रियवंशी महाराज सूरपाल राज्य करते थे। वीरधवल और सूरपाल राजामें पारस्परिक मित्रता थी। अपनी मित्रता को बढ़ानेके लिए समय समय पर वे आपसमें एक दूसरे को श्रेष्ठ वस्तुओंकी भेट भेजा करते थे। कार्य प्रसंग पर वे एक दूसरेको आपसमें सहाय भी किया करते थे।

एक दिन महाराज सूरपालने बहुतसी श्रेष्ठ वस्तुयें देकर कुछ राज्यकार्यके निमित्त अपने सेनापतिको चंद्रावतीमें महाराज वीरधवलके पास भेजा था। उससमय अन्य भी कई मनुष्योंके साथ राजकुमार महाबल पिता-की आज्ञा ले गुप्त रीतिसे सादे वेषमें चंद्रावतीकी शोभा देखनेके लिए आया था। जिस तेजस्वी-युवकके विषयमें पाठक महाशय पूर्व परिच्छेदमें पढ़ चुके हैं वह पृथ्वी स्थान नगरका राजकुमार यह महाबलही है। कुमार

महाबल राजके योग्य विद्याओंमें अतीव निपुण था। उसके शरीरकी सुन्दरता और चेहरेका वीरतेज देखने वालेको अपनी तरफ आकर्षित करता था।

पूर्व परिच्छेदमें कथन किये मुताबिक राजकुमार अपने साथियोंको पूछकर चंद्रावतीकी शोभा देखनेके लिए निकला है। शहरके राजमार्ग और चौराहे देखता हुआ तथा सुन्दर राजप्रासादोंकी शोभाका निरीक्षण करता हुआ वह मुख्य जनाने राजमहलके पीछेकी ओर आ पहुँचा। उस महलके पिछले भागकी खिड़की में बैठी हुई एक सुन्दर युवती शहरकी शोभा निहार रही थी। देखते २ उस राजमहलके नीचेसे जानेवाले मार्ग पर चलते हुए राजकुमार पर उसकी दृष्टि जा पड़ी। कामदेवके समान सुन्दर रूपवान और अपने समान वयवाले उस राजकुमारको देखकर वह सुन्दरी विचार करने लगी, यह सुन्दर आकृतिवाला युवक कौन होगा? यह साक्षात् कामदेव ही तो नहीं है? इसके चेहरेका तेज और सुन्दर चमकीली आँखें, विशाल वक्षस्थल, लम्बी २ भुजायें, मूंगेके समान रक्त वर्णके होठ, कैसे सुन्दर मालूम होते हैं! सर्वांग सुन्दर राजकुमारको देखकर वह युवती उसे एकटक नजरसे देखती हुई, चित्रामकी मूर्तिके समान स्तब्ध हो गई।

दैवयोग, राजकुमारकी दृष्टिभी अचानक ही खिड़कीमें बैठी हुई उस युवती पर जा पड़ी। उसे देखते ही कुछ ठसक कर वह विचारने लगा"—अहा! क्या यह कोई स्वर्ग से उतरी हुई अप्सरा है? यह अनुरक्त दृष्टिसे मेरे सन्मुख देख रही है। यह कुमारी होगी या विवाहिता? इधर उस युवतीके मनमें भी यह विचार पैदा हुआ, प्रेम भरी दृष्टीसे मेरे सन्मुख देखनेवाला यह युवक क्या कोई राज कुमार है? इसे देखते ही मेरा मन इतना विवश क्यों होता है? क्या यह कोई मेरे पूर्व जन्मका स्नेही होगा? इस प्रकारके अनेक विचारोंमें उलझी हुई उस सुन्दरीने वह स्वयं कौन और वह युवक कौन है यह जनाने और जाननेके लिए, एक भोजपत्र पर दो श्लोक लिख अपने मनके साथही महलके नीचे खड़े हुए उस युवककी तरफ डाले। शरीर पर रोमांच धारण करते हुए राजकुमारने नीचे पड़े उस पत्रको उठा लिया और उसे मनमें पढ़ा। उस पत्रमें लिखा था——

"कोसि त्वं तव किं नाम क वास्तव्योऽसि सुन्दर!
कथय त्वयका जर्हे मनो मे चिपता दृशं
अहं तु वीरधवल भूपते स्तनया कनी।
त्वदेक हृदया वर्ते नाम्ना मलयासुन्दरी॥

"हे सुन्दर आप कौन हैं? आपका नाम क्या है? आप कहाँ के रहने वाले हैं? यह बतलाइये। मेरे पर

दृष्टि डालकर आपने मेरा मन चुरा लिया है। मैं वीर-धवल राजाकी कुमारी-पुत्री हूँ। आपके हृदयके साथ मेरा हृदय एक होगया है। मेरा नाम मलयासुन्दरी है।

इस पत्रको पढ़कर राजकुमार योगीके समान एकाग्र चित्तसे टकटकी लगा कर, राजकुमारीकी ओर देखने लगा। चार आँखोंके मिलते ही दोनोंका हृदय एक दूसरेकी ओर खिंच गया और कुमारको वहाँसे आगे कदम बढ़ाना कठिन होगया। राजकुमारीकी प्रेमभरी दृष्टिने उसको मंत्रमुग्ध सर्पके समान स्तंभितसा कर दिया था। चित्रित मूर्तिके जैसा स्थिर होकर कुमार विचारने लगा। अहा! इस चतुर राजकुमारीने साहस धारण कर अपना मनोगत भाव और परिचय दे दिया, परन्तु इसके पूछे हुए सवालका जवाब मुझे किस तरह देना चाहिये, कुमार इसी धुन उधेड़में लगा हुआ था इतनेहीमें उसके पीछे जल्दी २ एक पुरुष आया और कुमारको देखकर कहने लगा, राजकुमार? शहरमें फिरना छोड़कर अब आप वापिस अपने मुकाम पर चलें। क्योंकि हम लोगोंने आजही अपने नगरको प्रयाण करना है। जिस राजकार्य के लिए यहाँ आना हुआ था वह कार्य सफल होगया।

मनोगत भावको दबाकर कुमार बोला—अहा! देखो, ये मकान कैसे शोभ रहे हैं? इस नगरीका किला

कितना मजबूत है ! राजमहलोंने इस नगरीकी अत्यंत शोभा बढ़ा रक्खी है । मुझे तो अभी बहुत कुछ देखना है। अभीतक तो सिर्फ इन मकानोंको ही देखने पाया हूँ । तुम वापिस लौट चलनेकी बड़ी जल्दी करते हो" आने वाले पुरुषने कहा---"राजकुमार ! सेनापतिका कहना है कि कुछ आवश्यक प्रसंग होनेसे हमें इसी वक्त देशको प्रयाण करना चाहिये । इसलिए आप जल्दी चलिये.। यद्यपि इस समय वहाँसे कदम उठाना कुमारके लिये अत्यंत दुष्कर था, तथापि विवश होकर उसे अपने सेवक के साथ वापिस मुकाम पर जाना ही पड़ा । वह मनही मन सोचने लगा-मेरी कितनी कमजोरी ! मैं कौन हूँ इस प्रश्नका उत्तर भी कुमारीको न दे सका ! धिक्कार है मेरे कलानैपुण्यको !! और मेरी तमाम बुद्धिमत्ता निरर्थक है । देशसे इतनी दूर आकर भी अगर मैं कुमारीको न मिल सका तब फिर उसका मिलाप मुझे किस तरह हो सकता है ? इस समय रात्रि होगई है, चारों तरफ अन्धकार छा रहा है । मेरे साथी भी अभी तैयारी ही कर रहे हैं, जबतक ये तैयार हों तबतक मैं एकलाही जाकर राजकुमारीसे मिल आऊं और मैं कौन हूँ उसके पूछे हुए इस प्रश्नका उत्तर दे आऊं ।

पूर्वोक्त निश्चय कर किसीको कहे बगैर ही कुमार गुप्त

रीतिसे वहाँसे चल दिया। वह शीघ्र गतिसे उसी महलके नीचे जा पहुँचा जहाँसे वापिस गया था। महलके पहले मंज़िलकी खिड़की खुली हुई थी, और वह किलेके साथही लगती थी। दो तीन मंजिलके ऊपर रहने वाली कुमारीके साथ बात चीत करना सुलभ कार्य न था। तथा विशेष अन्धकार होनेसे दृष्टिका विषय भी आच्छादित हो चुका था। अर्थात् महलकी जिस खिड़की में राजकुमारीके साथ चार आँखें मिली थीं, अब अन्धेरे में वहाँ तक नजर न पहुँचती थी, इसलिए मलयासुन्दरी के मिलापकी आशा व्यर्थसी प्रतीत होती थी। परन्तु वह हिम्मत वान पुरुष निराश न हुआ। अब साहस किये बिना काम नहीं चलेगा, यह सोचकर एकही छलांग में जमीनसे किलेपर जा चढ़ा! वहाँसे पासमें ही पहले मंजिलकी खिड़की खुली हुई थी। राजकुमारने उसी खिड़की से अन्दर प्रवेश किया। जिस खिड़कीसे कुमारने प्रवेश किया था। वह रास्ता वीरधवल महाराजकी दूसरी रानी कनकवतीके महलमें जाता था और उसके ऊपरके मंजिल में राजकुमारी मलयासुन्दरी रहती थी। संयोग वशात् इस समय कनकवतीके महलमें उसके सिवा एकभी दास और दासी न थी। इस अन्धेरी रातमें अपने महलमें प्रवेश किये हुए राजकुमारको देखकर रानी कनकवती सोचने

लगी अहा ! ऐसे सुन्दर रूप वाला और इतना साहसी पुरुष आज तक मैंने कभी नही देखा ! कनकवतीने खिड़कीके द्वारा प्रवेश करते हुये राजकुमारको प्रथम न देखा था; इससे वह सोचने लगी इतने सारे पहरे दार होने परभी इस पुरुषने यहाँ किस तरह प्रवेश किया होगा ? सचमुच ही यह कोई विद्याधर या महान् पुरुष मालूम होता है। यह किसी भी प्रयोजनसे प्रसन्नता धारण किये बेधड़क चला आ रहा है। इस प्रकार विचार करती हुई राजवल्लभा कुमारके रूपसे मोहित हो उसके जानेके रास्तेमें खड़ी होकर उसे कहने लगी; हे नरोत्तम ! सुखसे आइये इस आसन पर बैठिए और प्रसन्न होकर मेरे मनोरथको पूर्ण कीजिए।

रानीके वचन सुन राजकुमार चकित हो विचारमें पड़ गया, वह सोचने लगा कि यह कोई राजाकी रानी मालूम होती है या उसकी बहन होगी। ऐसे खतरनाक स्थानमें आकर मनोवृत्ति पर संयम न रक्खा जाय तो स्वदारा संतोष व्रत किस तरह रह सकता है ? एवं इष्ट कार्यकी सिद्धि होना भी असम्भव हो जाय। मैं इतना साहस कर सिर्फ मलयासुन्दरीसे मिलकर उसके प्रश्नका उत्तर देनेके लिये आया हूँ, परन्तु किसी बुरी भावनाको साधनेके लिये नहीं। इसलिये मुझे इस स्थानमें बडा

सावधान रहना चाहिये। यद्यपि राजकुमारी मुझे दिलसे चाहती है और मैं भी उसके स्नेह बन्धनमें बँध चुका हूँ तथापि उसके माता पिताकी सम्मति विना मैं उसके साथ कदापि विवाह न करूँगा। जब मुझपर प्रेम करने वाली उस कुमारी स्त्रीकी तरफ भी मेरी ऐसी दृढ़ भावना है तो विवाहित परस्त्रीकी तरफ मेरा मन विचलित न होना चाहिये। यह विचार कर कुमारने समयानुसार अपना कार्य साध लेनेके लिये रानी कनकवतीसे कहा "मैं मलयासुन्दरीके वास्ते कुछ वस्तु लेकर आया हूँ। अतः मुझे उसका निवासस्थान बतलाइए। उसे वह चीज देकर वापिस लौटते समय आप जैसा फरमायेंगी वैसा किया जायगा। कनकवतीने कुमारका कथन मान कर उसे नजदीकके जीनेसे ऊपर मलयासुन्दरी के महलमें जानेका रास्ता बतलाया। कुमार ऊपर की मंजिल पर चढ़ गया। राजपत्नी कनकवती भी धीरे २ उसके पीछे चलकर, दरवाजे के पास छिपकर जा खड़ी हुई। कुमारको यह बात मालूम न रही।

राजकुमारके गये बाद राजकुमारी मलयासुन्दरी स्थिर चित्तसे उसी खिड़कीमें बैठी हुई महाबल कुमार के मार्गकी ओर दृष्टि लगाये हुये उसीका ध्यान कर रही थी। अन्धकार हो जानेके कारण महाबल कुमार

के समागम की आशा यद्यपि उसके हृदयमें शिथिल हो रही थी, तथापि कुमारके साथ गया हुआ उसका दिल वापिस न आता था, वह खोये हुये धनको वापिस पानेकी आशावाले मनुष्यके समान अन्धकार होने पर भी उसी दिशामें देख रही थी। वह उसके ध्यानमें ऐसी निमग्न होरही थी कि "कुमारके अन्दर आनेपर भी उसकी ध्यान श्रेणीभंग न हुई। कुमार उसके पास ही जा खड़ा हुआ। फिर भी ध्यानमग्न योगीके समान उसे कुमारका आना मालूम न हुआ। उसकी हालतको देखकर कुमार बोल उठा—"मृगाक्षी! इधर देखो। मैं तुम्हारे हृदयमेंसे निकल कर तुम्हारे सन्मुख खड़ा हूँ। कानोंको अमृतके समान यह वचन सुनते ही अपनी गर्दन पीछे घुमाकर देखा तो उसके चित्तका चोर राजकुमार उसके सन्मुख खड़ा नजर आया। उसे देखते ही मलयासुन्दरी लज्जासे विनम्र मुख कर सन्मुख खड़ी हो गई। जिस तरह रातभर मुर्झाई हुई कमलिनी प्रातः सूर्य का दर्शन कर विकसित हो उठती है वैसे ही कुमारको देख राजकुमारी प्रफुल्लित हो गई। परन्तु मारे लज्जाके वह कुछ भी न बोल सकी। कुमार फिर बोला—"राजकुमारी मैं ऐसे भयानक स्थानमें सिर्फ आपके प्रश्नका उत्तर देनेके लिये ही आया हूँ। मैं पृथ्वीस्थानपुरके महा-

राजा सूरपाल और महारानी पद्मावतीका पुत्र हूँ। मेरा नाम महाबल कुमार है। तुम्हारी नगरीकी शोभा देखने के लिये गुप्त रूपसे मैं अपने परिवार के साथ यहाँ आया हूँ, अर्थात् यहाँकी जनता और आपके पिता महाराज वीरधवलको मेरे आनेका कोई पता नहीं है।

आश्चर्यपूर्ण तुम्हारी इस नगरीको देखते हुए मैं आज संध्यासमय तुम्हारे महलके नीचे आ पहुँचा, उस वक्त जन्मान्तरके प्रेमको प्रगट करनेवाला, तुम्हारे साथ मेरा दृष्टि मिलाप हुआ। इसके बाद जो कुछ हुआ है उसका हम दोनोंको अनुभव ही है। इस समय ऐसे संकट पूर्ण स्थानमें तुमसे मिलनेके लिये मुझे तुम्हारा प्रेम ही खींच लाया है। लो, अच्छा अब मैं जाता हूँ। अपने साथियोंको तैयारी करते हुये छोड़ आया हूँ, क्यों कि इसी समय हमें पृथ्वीस्थानको प्रयाण करना है।

कुमार इसी समय वापिस चला जायगा यह सोच कर राजकुमारी लज्जा और मौनको छोड़कर बोली-"राजकुमार! आपको यहाँसे वापिस नहीं जाना चाहिये। आपके बिना मैं प्राणधारण करनेके लिए असमर्थ हूँ। यदि आप अतिनिष्ठुर हो मेरी अवज्ञा कर चले जायेंगे तो मैं अपने प्राणोंको त्याग दूँगी! इस लिये आप मुझपर दया कर यहाँ ही रहें। मुझे आपके दर्शन मात्र से परम शान्ति

प्राप्त हो जाती है। राजकुमार! मैं आपका क्या स्वागत करूँ? मैं आजसे जन्म पर्यन्त आपको अपनी आत्मा समर्पण करती हूँ और यह लक्ष्मीपुंज हार ग्रहण करो यों कहकर राजकुमारीने अपने हाथसे महाबलके गले में लक्ष्मीपुंज हार डाल दिया और बोली—"कुमार! इस हारके बहाने से मैंने आपके गलेमें यह वरमाला पहनाई है। इस लिये इस वक्त गंधर्व विवाह कर आप मुझे अपने साथ ले चलें,। जिस से पारस्परिक वियोगजन्य-दुःख न सहना पड़े।"

कुमार—'राजकुमारी! आपका कहना उचित है। तुमने अपने मनका भाव प्रगट किया यह ठीक है, तथापि जनताके समक्ष माता पिताकी सम्मतिसे विवाह किये बिना इस तरह विवाह कर मैं तुम्हें साथ ले जाऊं यह कुलीन पुरुषोंके लिए उचित नहीं। ऐसा करनेसे मैं एक साधारण चोरके समान मनुष्योंकी नजरसे गिर जाऊँगा। ऐसे कार्योंमें जल्दी करना उचित नहीं होता। तुम शान्तचित्तसे कुछ दिन तक यहाँ ही रहो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि घर जाकर ऐसाही प्रयत्न करूँगा जिससे तुम्हारे माता पिता मेरेही साथ तुम्हारा विवाह करें। कुमारी? अब धैर्य धारण कर प्रसन्न चित्तसे मुझे जानेकी आज्ञा दो।

भावी दम्पती पूर्वोक्त प्रकारसे आनन्दमें मग्न हो एक दूसरेसे जुदा होनेकी तैयारी कर रहे थे। इतने हीमें अकस्मात् उस कमरेके द्वार बन्द होगए। यह देख सावधान हो कुमार बोला—"द्वार किसने बंद किये? राजकुमारी चकित हो विचारमें पड़ी थी, इसी समय बाहरसे कनक-वतीकी आवाज सुनाई दी। अरे! दुष्ट महाबल! तू मुझे ठगकर कुमारीसे आ मिला! याद रक्खो मुझे ठगनेका फल तुम्हें अभी मिल जाएगा। मलयासुन्दरी बोली—"कुमार! यह मेरी सौतीली माता है, और इसी महलके पहले मंजिलमें रहती है। मालूम होता है कि आपको यहाँ आते हुए उसने देख लिया है, और इससे वह हम पर कोपायमान हुई मालूम होती है। अहा! मेरी कितनी भयंकर भूल! मैंने उसे यहाँ आई हुईको बिलकुल न जाना, सम्भव है उसने हम दोनोंकी तमाम बातें सुनी हों कुमार बोला—'सुन्दरी! जब मैं तुम्हारे पास आ रहा था उस वक्त इसने मुझे रास्तेमें रोका था और कामातुर होकर इसने मुझसे विषययाचना की थी। मैं इसे असत्य उत्तर देकर तुम्हारे कमरेका रास्ता पूछकर ऊपर आगया। परन्तु यह मुझे भी मालूम न हुआ कि खुफिया मनुष्यके समान मेरे पीछे आकर वह हमारा तमाम व्यतिकर सुनेगी। स्त्री स्वभावके कारण डाहसे

यह हमपर अवश्यही कुछ न कुछ आपत्ति लायगी, परन्तु खैर हरकत नहीं सब ठीक हो जायगा।

जिस वक्त महाबल और मलयासुन्दरी अपनी असावधानताका पश्चात्ताप कर रहे थे, उसवक्त कनकवती उनके कमरेके द्वार पर ताला लगा कर महाराज वीरधवलके पास गई और उसने वहाँ जाकर आँखोंसे देखा और कानोंसे सुना हुआ तमाम वृत्तान्त राजासे इस ढंगसे कहा कि जिसके सुननेसे राजा एकदम क्रोधित हो उठा। कनकवतीके मुखसे अपनी पुत्रीका स्वच्छंदी आचरण सुनते ही राजाके नेत्र क्रोधसे लाल हो गये। वह उसी वक्त अनेक सुभटोंको साथ ले 'पकड़ो मारो पकड़ो मारो' वगैरह शब्द बोलता हुआ तत्काल मलयासुन्दरीके मकानके सामने आ पहुँचा। सुभटोंने महलको चारों तरफसे घेर लिया।

—※—※—

विचित्र घटना

अघटित घटितानि घटयति, सुघटित घटितानि जरजरी कुरुते
विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नैव चिन्तयति ॥१॥

दूरसे राजाके शब्द सुनकर मारे भयके राजकुमारी थर्रा गई। उसके दुखका पार न रहा, धैर्य टूट गया। ऐसे सुन्दर आकृतिवाले कुमारके प्राण कैसे बचेंगे? इस नररत्नको नष्ट करानेवाली मुझ विष कन्याको धिक्कार हो! हाय! प्रथम मिलापमें ही मैं अपने प्यारे पर जुल्म ढानेवाली बनी! कुमारीको चिन्तासागरमें डूबी देख महाबलने उसे धीरज दी। सुन्दरी! निश्चिन्त रहो मेरा कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता। जो मनुष्य ऐसे भयंकर स्थानमें प्रवेश करनेका साहस रखता है उसके पास अपने रक्षणका उपाय भी अवश्य होता है' यों कहकर कुमारने अपने पाससे एक गुटिका निकाली और मलयासुन्दरीके देखते २ उसे अपने मुँहमें डाल लिया। महाबल कुमारने आज दोपहरको ही राजसभामें महाराज वीरधवलके पास बैठी हुई महारानी चंपकमालाको देखा था, अतः गुटिकाके प्रभावसे वैसा संकल्प होनेसे कुमारका रूप चंपकमालाके रूपमें परिवर्तित होगया। अब वह

साक्षात् चंपकमाला बनकर मलयासुन्दरीके पास बैठ गया। मलयासुन्दरी भी अपनी माताका रूप देख आश्चर्य पाती हुई निर्भय हो शान्त चित्तसे बैठ गई।

राजाने ताला तुड़वा कर द्वार खोल मलयासुन्दरी के मकानमें प्रवेश किया। अन्दर घुसते ही महाराज वीरधवलने मलयासुन्दरीको अपनी माता चंपकमाला के पास बैठे देखा। यह देख राजा कनकवतीके सन्मुख हो बोला—'प्रिये तुमने मुझे क्या कहा था! यहाँ तो उन बातोंमेंसे कुछ भी मालूम नहीं होता? कनकवतीने कमरेके अन्दर आकर चारों तरफ अच्छी तरह देखा परन्तु अपनी माता सहित बैठी हुई मलयासुन्दरीके सिवा वहाँ पर कोई भी नजर न आया। कनकवतीको देख चंपकमालाका रूपधारण करनेवाला महाबल बोला—'आओ बहन! आज अकस्मात् आप इस महल में कहाँ से! क्या आज महाराज मेरे पर कोपायमान हैं? चंपकमाला रानीको बोलती हुई देख वहाँ आनेवाले तमाम मनुष्य कनकवतीकी तरफ घृणासे देखने लगे। वे बोल उठे—"सचमुच ही सौकनोंकी आपसी ईर्षा उनके निर्दोष बच्चों पर उतरती है, क्योंकि कनकवतीके सम्बन्ध में भी वैसा ही बनाव बना था लज्जायमान होकर कनवतीने कहा—"स्वामिन्! यहाँपर आये हुए एक पुरुषको

मेरे देखते हुए राजकुमारीने लक्ष्मीपुंज हार दे दिया है। आप उसकी तलाश करें। यह बात सुनते ही स्त्रीरूप कुमारने अपने गलेसे हार निकालकर राजाकी तरफ दिखाकर कहा—'क्या आप इसी हारको तलाश करने आये हैं उस हारको देखकर राजाकी शंका सर्वथा निवृत्त होगई। कनकवती ईर्षाके कारण ही ऐसे अनर्थकी बातें करती है, स्त्रियोंमें जरा भी विचार नहीं होता। इत्यादि बोलता हुआ तमाम पुरुषोंको साथ ले राजा अपने स्थान पर चला गया।

चंपकमाला रानी इस समय एक जुदे ही महलमें थी। राजा या कनकवतीको इस बातका पता न था। बादमें उसे यह बात मालूम होनेपर सौकनपन की आपसी ईर्षासे एवं अपनी पुत्रीकी लघुता न हो इस कारण उसने इस बात पर बिलकुल लक्ष्य न दिया। तथा इस विषयमें उसने किसीसे बात तक भी न निकाली।

अब अपनी लघुता हुई देख रानीकनकवती दुखी हो सोचने लगी—'मैं अपने हाथोंसे द्वारका ताला लगा गई थी और वह वैसाही लगा पाया, फिरभी वह कुमार कैसे निकल गया? यह क्या हुआ! मैंने प्रत्यक्ष उसे अपनी आँखोंसे देखा था। क्या मुझे यह भ्रम हुआ है? हाय! सब मनुष्योंमें मेरी कैसी निंदा होरही है!

आज सबके बीचमें मैं असत्य बोलनेवाली साबित हुई ! किसी पूर्व जन्मकी दुश्मन यह कुमारीही मेरी इस लघुता का कारण है । इसको देखते, बोलते हुएभी मुझे उद्वेग होता है । मैं इसे संकटमें डालकर या प्राणदंड दिला कर कब बदला लूंगी ? इस तरह बड़बड़ाती हुई वह अपने महलमें चली गई ।

कोलाहल शान्त होनेपर बड़ी सावधानताके साथ मलयासुन्दरीने चारों तरफ देखभाल कर मकानका दरवाजाबन्द कर लिया; अब महाबलने भी अपने मुखसे गुटिका निकाल कर अपना स्वभाविक रूप बना लिया था । वह कुमारीसे कहने लगा—'राजकुमारी ! यह सब महिमा इस गुटिकाकी है ।

मलया—' कुमार ! यह गुटिका आपको कहाँसे मिली ?
कुमार—एक दिन हमारे शहरमें एक विद्यासिद्ध पुरुष आया था, उसकी मैंने खूब सेवा की थी । संतुष्ट होकर उस सिद्ध पुरुषने रूप परावर्तन करने आदिके मुझे अनेक प्रयोग बतलाये हैं । वे सब मैंने सिद्धकर रक्खे हैं । उन्हीमें से यह एक गुटिका भी है; जिसके प्रभावसे आज हम दोनों संकटसे उतीर्ण हुए हैं ।

मलया—'इस तरहके चमत्कारिक प्रयोगवाली क्या दूसरी गुटिका भी आपके पास है ?

कुमार—हाँ है, उसका प्रभाव ऐसा है कि आमके रसके साथ घिसकर तिलक करनेसे स्त्री पुरुषका रूप धारण कर सकती है, परन्तु वह गुटिका इस समय मेरे पास नहीं है

सुन्दरी ! अब मुझे जाने दो, अधिक समय यहाँ रहनेसे फिर कोई अन्य उत्पात न खड़ा होजाय। आजके प्रसंगसे तुम्हें समझना चाहिए कि विधि हमारे अनुकूल है। मैं अवश्य अपना वचन पालनेकी पूरी कोशिस करूँगा। तुम्हारे मनकी शान्तिके लिए मैं तुम्हें एक श्लोक दिए जाता हूँ। संकटमें उसे याद करनेसे धैर्य प्राप्त होता है।

विधत्ते यद्विधि स्तत्स्यान्न स्यान् हृदय चिंतितं।
एव मेवोत्सुकं चित्त मुपायान् श्चितयेद् बहून् ॥१॥

भाव–जिस तरह पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मरूप भाग्य करता है वैसे होता है; परन्तु हृदय का चिन्तित कार्य नहीं होता। यह चित्त उत्सुक होकर व्यर्थही अनेक उपाय विचारा करता है। अर्थात् संसारमें संयोग और वियोग' सुख और दुःख मनुष्यके स्वयं किये हुए शुभाशुभ कर्मके अनुसार हुआ करता है। परन्तु मनुष्यके किये हुए विचारानुसार नहीं; तथापि मानव स्वभावके अनुसार मनुष्य का हृदय व्यर्थही अनेक उपाय सोचता रहता है। इस पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ समझनेके कारण मलयासुन्दरीने

तुरन्त ही कंठस्थ कर लिया । श्लोकके भावार्थको विचार कर कुमारी प्रसन्न चित्तसे कुमारके धर्मशास्त्र संबन्धी ज्ञान और उसके धैर्यकी प्रशंसा करने लगी तथा ऐसे गुणवान पुरुप रत्नके समागमसे वह अपने आपको कृतार्थ समझने लगी ।

कुमार—'सुन्दरी ! अब तो मुझे प्रसन्न होकर जानेकी आज्ञा दो । समय बहुत होगया, मेरे साथी मेरी राह देख रहे होंगे ।

मलया—'कुमार ! मैं अपने मुखसे ऐसे शब्द कैसे कह सकती हूँ, तथापि आप जानेके लिए इतने उत्सुक हैं और मेरे साथ विवाह करनेका मुझे वचन देते हैं तो मैं इतने से ही संतोष मानकर प्रभुसे प्रार्थना करती हूँ कि आपका मार्ग निष्कंटक हो । आप शान्ति पूर्वक अपने निर्णय किये स्थानपर पहुँचे" इतना शब्द बोलते ही कुमारीकी आँखोंमें अश्रु भर आए । हृदय गद् गद् हो उठा । उससे आगे कुछ न बोला गया । वह अश्रु पूर्ण नेत्रोंसे टक-टकी लगा कर कुमारकी तरफ देखती रही ।

कुमार धैर्य धारणकर उसके मस्तक चुम्बनद्वारा अन्तिम पवित्र प्रेमभावका परिचय देकर किसीको मालूम न हो इस तरह जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते किले से बाहर होगया और प्रयाणके लिये तैयार होकर उसकी राह देखते

हुए अपने साथियोंसे जामिला। रास्तेमें वह राजकुमारीको विवाहित करने के अनेक उपायों के विचारोंमें लगा रहा। पृथ्वीस्थानपुरमें पहुँचने तक राजकुमारीका चित्रपट उसके हृदय सेक्षणभरके लिए भी दूर न हुआ। नगरमें आकर विनय पूर्वक माता पिताको नमस्कार कर मलयासुन्दरीसे मिला हुआ लक्ष्मीपुंज हार उसने अपने पिताको समर्पण किया। पिताने जब उस महाकीमती हारप्राप्तिका कारण पूछा तब शरमसे समयोचित असत्य उत्तर देते हुये कुमार बोला—चंद्रावतीके राजपुत्र मलयकेतुने मित्रतामें बतौर निशानीके मुझे यह हार दिया है। यह सुनकर महाराज सूरपालने कुमारकी प्रशंसा करते हुए कहा पुत्र! तेरा बड़ा अद्भुत कलाकौशल्य है कि जिससे थोड़े ही समयकी मित्रतासे उस राजकुमारने तुझे ऐसा महाकीमती हार भेट कर दिया। राजाने उस लक्ष्मीपुंज हारको कुमारकी माता पद्मावती रानीको सौंप दिया। माताने भी पुत्रकी प्रशंसा कर वह दिव्य हार अपने गलेमें पहन लिया।

अब राजकुमार रातदिन मलयासुन्दरीके समक्ष की हुई प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके विचारोंमें निमग्न रहता है। वह सोचता है कि कुमारीके समक्ष की हुई दुष्कर प्रतिज्ञाको मैं किस तरह पूर्ण करूंगा? यह हृदयकी बात माता पिता

के समक्ष किस तरह कही जाय ! अब वह सदैव इसी उधेड़ बुनमें लगा रहता है।

एक रोज चंद्रावतीके महाराज वीरधवलका भेजा हुआ राजदूत राजा सूरपालकी सभामें आया। उस समय महाराज सूरपाल, महाबलकुमार और प्रधानमंत्री मंडल सब राजसभामें बैठे हुए थे। द्वारपालके साथ राजसभामें प्रवेश कर चंद्रावतीके दूतने महाराज सूरपालको विनययुत नमस्कार कर कुशलवार्ता कथन पूर्वक अपने स्वामीका आदेश निवेदन किया। महाराज! मुझे आपके परम मित्र चंद्रावती नरेशने आपकी सेवामें भेजा है। हमारे महाराजने आपको प्रणाम पूर्वक कुशल प्रश्न पूछा है। विशेष समाचार यह है कि महाराज वीरधवल के रतिरंभाके रूपको तिरस्कार करनेवाली मलयासुन्दरी नामकी एक कन्या है। हमारे महाराजने उसका स्वयंवर मंडप रचा है। वंशपरंपरासे मिला हुआ वज्रसार नामक धनुष उस मंडपमें रक्खा जायगा। जो कुमार अपने पराक्रमसे उस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायेगा उसीके गलेमें राजकुमारी वरमाला डालेगी। इसी स्वयंवर पर अनेक राजकुमारोंको आमंत्रण देनेके लिए चारों तरफ दूत भेजे गए हैं और आपके रूपवान, गुणवान, कलाभंडार महाबल कुमारको बुलानेके लिए यहाँपर मुझे भेजा गया

है। आज जेठ मासकी कृष्ण एकादशी है और स्वयंवर का मुहूर्त जेठवदि चतुर्दशीके दिन रक्खा गया है। यों तो मुझे वहाँसे रवाना हुए बहुत दिन हुए, परन्तु रास्तेमें बीमार होनेके कारण मैं यहाँ पर जल्दी नहीं पहुँच सका। इसलिये महाराज! अब समय बहुत थोड़ा रह गया है अतः महाबल कुमारको आप तुरन्त ही चंद्रावतीकी तरफ रवाना करें, क्योंकि अब विलम्ब करनेका समय नहीं रहा।

महाराज वीरधवलके स्वयंवर संबन्धी आमंत्रणसे राजा सूरपालको बहुत खुशी हुई। सन्मान पूर्वक आमंत्रणको स्वीकार कर दूतको वस्त्रादिके दानसे सत्कारित कर विसर्जन किया। इस समय महाबल राजकुमार भी राजसभामें महाराजके पासही बैठा हुआ था। चंद्रावतीके दूतके वचन सुनकर उसका हृदय हर्षसे प्रफुल्लित हो उठा। वह प्रसन्न हो विचारने लगा—'अहा! पुण्यकी कैसी प्रबलता है! जिस कार्यके लिये मैं रातदिन चिंतित रहता था वह भाग्यसे आज सामने आ उपस्थित हुआ। जो कार्य सामर्थ्य और धन व्ययसे सिद्ध होना असंभवित सा था, वही कार्य पुण्ययोगसे अब अपने स्वाधीनसा ही प्रतीत होता है। अब पिताकी आज्ञा पाकर मैं शीघ्रही चंद्रावतीको जाऊंगा। स्वयंवरमें आए हुए अनेक राज-

कुमारोंका मानमर्दन कर, मलयासुन्दरीका पाणिग्रहण करके मैं अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करूंगा। इत्यादि अनेक विचार लहरियोंसे हर्षाकुल हुए राजकुमारकी तरफ राजा ने दृष्टिपात किया। "बेटा महाबल! तू आजही स्वयंवर पर चंद्रावती जानेकी तैयरी कर। साथमें खूब सेना ले जाना। चंद्रावती नरेश बड़ा राजा है, एवं वह हमारा मित्र राजा होनेसे विशेष माननीय है।

कुमार-(हाथ जोड़कर, मस्तक झुका) "पिताजी! आप की आज्ञा शिरोधार्य है। आप जब फरमायें तभी जानेके लिये तैयार हूँ।'

राजा—(प्रधानमंत्रीकी तरफ देखकर) 'मंत्रीवर! सेनापतिको आज्ञा करो, कुमारके साथ चंद्रावती जानेके लिए सेना तैयार करें। महाबलकी ओर देखकर, बेटा! चंद्रावतीसे लाया हुआ लक्ष्मीपुंज हार भी अपने साथ लेते जाना।"

महाबल—'पिताजी! मैं आपसे एक प्रार्थना करनी चाहता हुँ और वह यह है जब मैं निद्रामें होता हूं तब अदृश्य रूपसे मेरे कमरेमें आकर मुझे कोई हमेशाह उद्रव करता है। कभी वस्त्र, शस्त्र, कभी आभूषण या अन्य कोई उत्तम वस्तु जो मेरे पास होती है, उसे लेजाता है। कभी भयंकर हास्य कर वह मुझे डरानेका प्रयत्न भी करता है।

कल संध्याके समय माताजीने यह लक्ष्मीपूंज हार रखने के लिये मुझे दे दिया था, परन्तु कलही रात्रिको मेरे कमरेमें से उसे किसीने निकाल लिया। हार गायब हुआ जानकर, माताजीको अत्यन्त दुःख हुआ, यह देख मेरा हृदय भी दुःखसे व्याकुल होरहा है। पिताजी! माताको शान्त करनेके लिये, मैंने उनके सामने यह प्रतिज्ञा की है 'यदि पांच दिनके अन्दर में उस हारको वापिस न लादूँ तो अग्निमें प्रवेशकर मरणान्त प्रायश्चित्त करूंगा। माताजीने भी ऐसी ही प्रतिज्ञा की है' अगर यह हार मुझे न मिला तो मैं भी अपने प्राण खो दूंगी। मेरी तमाम वस्तुओंको छिपकर ,हरन करनेवाला जन्मान्तरका वैरी भूत या राक्षस होना चाहिये। पिताजी! मैं चाहता हूँ कि आज रातको दो-तीन पहर तक अपने शयन-गृहमें हथियार सहित सावधान हो छिपकर पहरा दूँ। यदि इतने समयतक मेरी तमाम वस्तुओंको चुरानेवाला वह दुष्ट मेरे मकानमें प्रवेश करे तो उसे पकड़ कर अपनी हार आदि तमाम वस्तुओंको वापिस ले लूं। उनमेंसे हार माताजीको देकर रात्रिके पिछले पहरमें चंद्रावतीकी तरफ प्रयाणा करूँ। यह बात सुनकर राजाने कुमारको वैसा करनेकी आज्ञा दी। पिताको नमस्कार कर महाबल अपने महलमें चलागया।

जेठवदि एकादशीके दिन अन्धेरी रात्रिने पृथ्वीपर चारों तरफ काली चादर बिछाई हुई है। अनन्त आकाशमंडलमें असंख्य तारे अपने मन्दप्रकाश द्वारा रात्रिकी शोभा बढ़ा रहे हैं। तथापि विशेष अन्धकारके कारण उनके प्रकाशसे जमीनपर रही हुई वस्तु स्पष्ट मालूम न होती थी। सारे शहरमें शांतिका सन्नाटा छा रहा था। राजमहलके चारों ओर किसीभी मनुष्यका संचार न था। ऐसे समयमें अपने निवासभुवनमें हाथमें तलवार लिये, दीपकके अन्धकार नीचे सावधान हो गुप्तरीतिसे महाबल कुमार खड़ा है। अपने सोनेके पलँगपर एक वस्त्रसे मनुष्याकृति बनाकर उसपर एक चादर डाली हुई है। उस निवास भुवनके एक खिड़कीके सिवा तमाम द्वार बन्द हैं। चाहे जो हो परन्तु प्राणप्रणसे भी आज उस दुष्टको पूरी शिक्षा दूंगा, इसी विचारमें कुमार सावधान होकर खड़ा है। जब मध्यरात्रिका समय हुआ, उसवक्त खुली हुई खिड़कीसे एक हाथने अन्दर प्रवेश किया। कुमारने भी उसे अच्छीतरह देख लिया और वह विशेष रूपसे सावधान होगया।। वह हाथ कुमारके कमरेमें फिरने लगा, यह देख कुमार आश्चर्य सहित विचारने लगा। अरे! शरीरके सिवा यह एकला हाथ क्यों दीख रहा है।? कंकण आदि भूषणोंसे भूषित तथा सरल और

कोमल होनेके कारण यह हाथ किसी स्त्रीका मालूम होता है। निश्चित यही स्त्री अदृश्यतया मुझे निरन्तर उपद्रव करती है। किसी दिव्य प्रभावसे इसका शरीर गुप्त मालूम होता है। अगर मैं खड्गसे इसके हाथको छेदन कर दूँ तो फिर यह मेरे हाथ न आयगी और ऐसा करनेसे लक्ष्मीपुंज हार आदि गई हुई वस्तुओंकी भी प्राप्ति न होगी। इसलिए इस हाथको न काटकर इसे पकड़ लेना चाहिये। यह विचारकर कुमार सहसा उस हाथपर चढ़ बैठा और उसने उसे दोनों हाथोंसे जकड़ कर पकड़ लिया।

कुमारके इस साहससे अब वह हाथ कमरेमें न रह कर खिड़कीसे बाहर हो आकाशमार्गसे ऊपर जाने लगा। कुमार भी उस हाथपर निर्भीकतासे बैठा रहा। आकाशमें जानेपर वायुवेगसे हिलती हुई ध्वजाके समान वह हाथ काँपने लगा। उस हाथने कुमारको नीचे पटकनेके लिए बहुत ही प्रयत्न किये परन्तु वृक्षकी शाखा पर लटके हुए बन्दरके समान वह हाथके साथ चिपटा रहा। कुछ समयके बाद उस हाथवाली व्यन्तरदेवीका संपूर्ण शरीर कुमारको दीखने लगा। अब वह सोचने लगा 'यह सचमुच ही कोई देवी मालूम होती है, इसे विशेष हैरान करनेसे कदाचित यह कोपायमान हो मुझे

कहीं समुद्र या किसी पर्वतके शिखरपर फेंक देगी। इसलिये अधिक समयतक इस हाथपर बैठे रहना मेरे लिए बड़ा खतरनाक है। यह विचारकर कुमारने पृथ्वीकी ओर उतरती हुई उस देवीकी गर्दनपर इसप्रकार का मुष्टिप्रहार किया जिसकी पीड़ासे वह करुणस्वरसे रुदन करती हुई बोली--'हे साहसिक! कृपाकर मुझे छोड़ दो। मैं अबसे आपको हैरान न करूंगी। इस समय देवीके आकाश मार्गसे पृथ्वी बहुत दूर नहीं थी, अतः कुमारने करुणासे उसका हाथ छोड़ दिया। फिर न जाने वह देवी किस दिशामें गायब होगई। देवीका हाथ छोड़ते ही निराधार होकर कुमार आकाशसे नीचे पड़ा। उसे पड़तेही मूर्च्छा आगई। जंगलके शीतल पवनसे आश्वासन मिलनेपर कुछ समयके बाद वह होशमें आया। पुण्यके प्रतापसे किसी एक घासके ढेरपर पड़नेके कारण कुमारके शरीरको विशेष इजा न पहुँची थी, होशमें आकर वह सोचने लगा। न जाने मैं इस समय किस प्रदेशमें आकर पड़ा हूँ? इस अन्धकारपूर्ण रात्रिमें जंगलमें चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था, कहीं २ जंगली जानवरोंके कर्णकटु शब्द सुनाई दे रहे थे। शेष रात्रि व्यतीत करनेके लिये ऐसे बीहड़ जंगलमें निशस्त्र होकर जमीनपर बैठे रहना उचित नहीं, यह सोचकर राजकुमार

समीपवर्ती एक आमके पेड़पर चढ़ बैठा। वह मनहीमन सोचने लगा। अहो! इस देवीके अपहरनसे मेरी यह क्या अवस्था हुई? अब लक्ष्मीपूंज हारकी प्राप्ति मुझे कैसे होगी? हार न मिलनेपर माताके सामने का हुई प्रतिज्ञाका पालन किस तरह होगा? और वह न मिलने से माताजी कैसे जीवित रहेंगी? माताकी मृत्युसे पिता के भी प्राणोंकी रक्षा होना असंभव है। हा! इस वक्त मेरे वंशके संहारका समय आ गया। हे विधि! तेरी विचित्र गति है! तू क्षणमें मनुष्यको रुलाता है, हँसाता है, आशादेकर ऊंचे शिखरपर चढ़ाता है। थोड़ेही समयमें फिर मनुष्योंको बंधनमें डालता है, और निराश करके ऊंचे शिखरसे नीचे पटकता है। तेरी विचित्रताको ज्ञानी महान् पुरुषोंके सिवा और कोई नहीं जान सकता।

अब रात्रिका तीसरा पहर बीत चुका था। आका-शमें तारें चमक रहे थे। चंद्रोदयका समय होनेसे अन्ध-कार भी कुछ कम हुआ था। इस समय आमके वृक्षपर बैठा हुआ महाबल अनेक प्रकारकी विचार तरंगोंमें गोते लगा रहा था। इसी समय उसी आमवृक्षके नीचे पेटसे घिसरकर चलनेवाले किसी सर्प जैसे प्राणीकी आहट उसके कानोंमें पड़ी। इससे कुमारने सावधान होकर वृक्षके नीचेकी तरफ़ देखा तो आमके थड़के नजदीक

आता हुआ उसे एक भयानक अजगर देख पड़ा । उस अजगरके मुँहमें आधा लटका हुआ कोई मनुष्य मालूम होता था । यह देख कुमार समझगया कि यह कोई क्रूर प्राणी किसी मनुष्यको निगल कर इस वृक्षके साथ लपेटा देकर उसे मारनेके लिये आ रहा है । यदि मैं इस क्रूर प्राणीके मुंहमें पड़े हुये इस मनुष्य को जीवित दान दूँ तो मेरा इस विपत्तिमें आ पड़ना भी सफल गिना जा सकता है । संसारमें मनुष्यमात्र के शिरपर कालकी गर्जना हो रही है । इस नाशवन्त शरीरसे दूसरेका कुछ उपकार हो सके तो जीवन सार्थक है । यह सोचकर कुमार वृक्षसे नीचे उतरा । जिसवक्त वह अजगर उस वृक्षके समीप आकर वृक्षको लपेटा दे अर्ध लटके हुये मनुष्यको मार डालनेका प्रयत्न करता था उसी वक्त कुमारने अपने हाथोंसे उस भीमकाय अजगर के दोनों होठोंसे पकड़ कर उसे जीर्ण वस्त्रके समान चीर डाला । अजगरके मुंहके दो विभाग होते ही उसके मुहसे मंद चैतन्यवाली एक युवती स्त्री निकल पड़ी । यद्यपि वह स्त्री जीवित थी तथापि इस समय वह मूर्छागत होनेसे निश्चेष्ट मालूम होती थी । जंगलका शुद्ध पवन लगनेसे कुछ देरके वाद अर्ध जागृत अवस्थामें उसके मुखसे मंद स्वरसे "मुझे महाबलकुमार का शरण हो"

यह शब्द निकल पड़े। अपने नामको सुन कर कुमार विस्मय प्राप्त कर सावधान हो उस युवतीकी तरफ देखने लगा। रात्रिमें गौरसे उसके चेहरेको देखनेसे कुमार को मालूम हो गया कि चंद्रावतीके राजमहलमें देखी हुई यह मलयासुन्दरी की आकृति है। यह देख कुमारके आश्चर्यका पार न रहा। परोपकार की भावना के उपरान्त हृदयगत प्रेमकी प्रेरणासे अब वह अधिक प्रयत्नसे उसे होसमें लानेका प्रयत्न करने लगा। अब वह कुछ विशेष होशमें आकर महाबल द्वारा याद कराये हुए इस श्लोक को बोलने लगीः—

विधत्ते यद्विधिस्तत्स्यान्न स्यात् हृदय चिंतितं

इत्यादि वाक्य सुनतेही कुमारको पूर्णनिश्चय होगया कि वह राजकुमारी मलयासुन्दरी ही है। अतःउसने गद् गद् स्वरसे कहा—मृगाची! निद्राका त्याग करो और स्वस्थ बनो। तुम्हारी यह अवस्था देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। महाबलका शब्द सुनते ही नेत्र खोल राजकुमारी उसके सामने देखने लगी। अपने पास बैठा हुआ और अपने शरीर की सुश्रुषा करते हुए राजकुमार को देख उस दुःखमें भी उसका हृदय हर्षसे भर आया ऐसी दुःखी अवस्थामें कुमारका दर्शन कर वह अपने तमाम दुःखोंको भूल गई। शरीरको संकोच कर और

वस्त्र समेट के बैठी हो वह स्निग्ध दृष्टिसे कुमारकी ओर एकटक देखने लगी।

"मलया—राजकुमार ! क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ। मैं किस तरह जीवित रही। आप अकस्मात् यहाँ कैसे आ गये। ?"

महाबल—"राजकुमारी ! यह बात मैं तुम्हें फिर सुनाऊंगा। पहले नजदीक में जो यह नदी मालूम होती है वहाँ चलकर जो तुम्हारा शरीर मैल और अजगर की लालसे सना हुआ है, इसे साफ करना चाहिये।

मलया-'जैसी आपकी आज्ञा।" वहाँसे उठकर दोनों जनें पासमें बहनेवाली नदी पर गये, वहाँ जाकर राजकुमारीके शरीरको साफ कर वस्त्र धोके और उसे स्वच्छ ताजा पानी पिलाकर महाबल कुमार अपने साथ ले फिर वापिस उसी आम के पेड़ तले आ बैठा।

मलया-(जरा स्वस्थ होकर) राजकुमार ! आप यहाँ कैसे आये ? महाबलने अपना तमाम वृत्तान्त व्यन्तर देवी के हरनसे लेकर उस अजगरके चीरडालने तक कह सुनाया। वह वृत्तान्त सुनकर मलयासुन्दरी कुमारके धैर्य और साहससे चकित हो वारंवार मस्तक हिलाने लगी। कुमार की ओर स्नेह भरी दृष्टिसे देखते हुए वह बोल उठी कुमार ! आपने बड़ा कष्ट सहन किया।

महाबल—सुन्दरी! तुम अब मुझे अपना वृत्तान्त कह सुनाओ। मेरे गये बाद तुमपर क्या क्या घटनायें घटीं? इस भयानक अजगरके उदरमें किस तरह आ पड़ी? अनेक शुभटोंसे सुरक्षित उस राजमहलमें रहनेवाली तुम्हें इस अजगरने किस तरह सटका?

मलया—राजकुमार! अजगरके मुखमें किस तरह गई यह तो मैं नहीं जानती, परन्तु इसके सिवा मैं आपको अपना तमाम वृत्तान्त सुनाती हूँ। आप अपने कान और हृदयको कठिन करके सुनें।

मलयासुन्दरी अपना वृत्तान्त कहना ही चाहती थी इतनेही में महाबलके कानपर दूरसे आते हुए किसी मनुष्यकी आहट पड़ी। महाबल तुरन्त ही सावधान होकर विचारने लगा। रात्रिके समय ऐसे प्रदेशमें यह कौन फिर रहा होगा? ऐसे अन्धकारके समयमें चोर, जार, या घातक ही अपने लक्ष्यकी खोजमें फिरा करते हैं। यदि ऐसा ही हुआ तो संभव है मुझे अकेलेको स्त्रीके पास बैठा देख वह कुछ उपद्रव करे। अगर राज कुमारीकी खोजमें ही कोई आरहा होगा तो इस समय इसे अकेलीको मेरे पास बैठी देख वह भी कुछ आपत्ति करेगा।

—※—※—

'रहस्योद्घाटन,

रात्रिका समय है। जंगलमें सन्नाटा छा रहा है। आकाशमें तारे टिमटिमाकर तुरन्तहीमें निकले हुए चंद्रमाकी ज्योति बढ़ा रहे हैं। जंगलमें कहीं कहींपर गीदड़ और उल्लूका शब्द सुनाई दे रहा है। ऐसे प्रशान्त समय जंगलमें गोला नदीके किनारेपर आमके पेड़के नीचे दो सुन्दर युवक बैठे हैं। और काँपते हुए शरीरसे नम्रता पूर्वक उनके सामने खड़ी हुई एक युवती उनसे कुछ कह रही है।

कुछ देर मौन रहकर मेरी स्वामिनीने मुझसे कहा सोमा! तू इस हारकी प्राप्तिका किसीको भी जिक्र न करना। मैंने वह बात शिरोधार्य की। स्वामिनीने उस हारको कहीं गुप्त स्थानपर छिपा दिया। इसके बाद हम दोनों जनीं महाराज वीरधवलके पास गईं। मेरी स्वामिनीने हाथ जोड़ कर महाराजसे प्रार्थना की—'महाराज! मैं आपसे एकान्तमें कुछ आपके हित और लाभकी बात कहना चाहती हूँ'। महाराज वीरधवल यह सुन "बहुत अच्छा" कहकर उठ खड़े हुए और मेरी स्वामिनीके साथ

एक जुदे कमरेमें चले गये। वहाँपर मेरी स्वामिनीने महाराजसे कहा स्वामिन्! पृथ्वीस्थानपुरके भूपति सूरपाल राजाका महा पराक्रमी सुन्दर और तेजस्वी महाबलनामक एक कुमार है। उसका एक मनुष्य गुप्तरीतिसे बहुत दफे आपकी अतिप्यारी राजकुमारी मलयासुन्दरीके पास आता है। राज्यका भूषण रूप और दिव्य प्रभाववाला वह लक्ष्मीपुंज हार आजही कुमारीने महाबल कुमारके लिये उस आदमीके हाथ भेज दिया है और साथही उसे यह भी कहलाया है कि "स्वयंवरके बहानेसे बहुतसी सेना लेकर तुम इस अवसरपर जरूर आना। अन्य राजकुमार भी इस समय अवश्य आयेंगे। आपके संकेत करनेपर वे आपको सहाय भी करेंगे। इसलिए इस समय राज्यको ग्रहण करनेका यह अमूल्य अवसर है। मेरा विवाह भी आपकेही साथ होगा।

महाराज! सचमुचही कुमारी सरल स्वभावी है। उसे राज्य लोभी धूर्त और अपने बलसे गर्वित महाबल कुमारने भरमा कर अपने वशमें कर लिया है, इसी कारण उसने इस प्रकारका भयंकर राजद्रोह और कुलघातक विचार किया है। प्राणनाथ! स्त्रियोंकी वाणी मधुर होती है परन्तु उनकी बुद्धि बड़ी तुच्छ होती है। मुखमें कुछ और हृदयमें कुछ और ही होता है। मूर्ख स्त्रियां तुच्छ

लालसामें फँसकर अपने माता पिता, भाई आदि समस्त कुटुम्बको भयानक कष्टमें डाल देती हैं, इसी कारण यह गुप्त रहस्य मैंने आपके सामने निवेदन किया है। अब आपको जो उचित मालूम दे सो करें। यदि आपको मेरे इन वचनोंपर विश्वास न हो तो आप इस समय कुमारीके पाससे हार माँगें, जो उसने आपको हार दे दिया तो उस दिनके समान आप मुझे सदाके लिए झूँठी और ईर्षालु ही समझिये' अन्यथा मेरा कथन सत्य समझ कर आप अपने और नष्ट होते राज्यको बचानेका उपाय करें। इत्यादि अनेक असत्य वचनोंसे राजाको ऐसा कुपित कर दिया कि क्रोधायमान होकर राजाने तत्काल ही हमें वहाँसे विसर्जन किया और कुमारीकी माता चंपकमालाको कुछ मसवरा करनेके लिये बुला भेजा।

पाठक महाशय! आपके दिलमें इस कथानकके मुख्य नायक नायिका महाबल कुमार और मलयासुन्दरी का वृत्तान्त जाननेकी अतीव जिज्ञासा पैदा हो रही होगी, इसलिए उसे पूर्ण करनेके वास्ते पिछले परिच्छेदमें आमके नीचे बैठे हुए महाबल और मलयासुन्दरीके पास ही हम इस समय आपको लिए चलते हैं। आठवें परिच्छेद के अन्तमें आपने महाबल और राज कुमारीकी बातें सुनी हैं।

पूर्वोक्त विचारकर कुमारने अपने केशपाशमें से एक गुटिका निकाली और उसे उसी आम फलके रसमें घिसकर कुमारीके मस्तकपर तिलक कर दिया। उस गुटिकाके प्रभावसे मलयासुन्दरीका पुरुषरूप बन गया। पुरुषरूप देख महाबल बोला-"राजकुमारी! जबतक तुम्हारे मस्तक पर किया हुआ यह तिलक मेरे थूकसे न मिटा दिया जाय तबतक तुम्हारा यह पुरुषरूप ऐसा ही कायम रहेगा। अभी रात्रि बहुत है। उन्मार्गसे कोई सामने मनुष्य चला आरहा मालूम होता है। जब तक उसका भली भांति पता न लग जाय, और अबसे जो आगे ऐसे प्रसंग आयँगे उनमें तुम्हारा ऐसाही रूप बनानेकी आवश्यकता है"।

मलया-"राजकुमार! आपको जैसे उचित मालूम हो वैसे करें। मैंने तो यह शरीर जन्मपर्यंत आपको समर्पण किया हुआ है।"

महाबल-"तुम्हारा कहना सही है, परन्तु इस समय हमें बिलकुल मौन रहना चाहिये। देखो वह व्यक्ति नजदीकही आरहा है। तुम्हें यह जनाये देता हूँ कि वह मनुष्य चाहे जो हो परन्तु तुम्हें सर्वथा निर्भीक रहना चाहिए। इस प्रकार राजकुमारीको धैर्य देकर महाबल सामनेसे आनेवाले व्यक्तिकी ओर देखने लगा। देखते

ही देखते वह व्यक्ति शीघ्र गतिसे बिलकुल नजदीक आ-पहुँचा। नजदीक आनेसे कुमारको यह मालूम होगया कि उनके सामने आने वाला व्यक्ति पुरुष नहीं किन्तु भयसे काँपती हुई वह एक युवती स्त्री है। उसे नजदीक आई देख कुमारने मीठी आवाजसे कहा—"भद्रे! तू कौन है? ऐसी घोर अन्धेरी रात्रिमें इस निर्जन जंगलमें तुझे एकली आनेका क्या कारण हुआ? तेरा शरीर किस भयसे काँप रहा है? यहाँसे नजदीकमें कौनसा शहर है और वहाँ पर कौन राजा राज्य करता है? हम दोनों परदेशी हैं। रास्तेहीमें रात पड़ जानेसे हमने यहाँही विश्राम कर लिया है, परन्तु हम इस प्रदेशसे सर्वथा अनजान हैं" इस तरह कुमारने उसे मीठे वचनों द्वारा कुछ आश्वासन सा दिया।

कुमारके वचनों पर विश्वास रख वह आगन्तुक स्त्री बोली—"हे क्षत्रिय पुत्रो! मैं आपके पूछे हुए प्रश्नोंका उत्तर देती हूँ। आप जहाँ पर बैठे हैं यह गोला नदीके किनारेका प्रदेश है। यहाँसे बिलकुल नजदीक चंद्रावती नामकी नगरी है;। और वहां पर वीरधवल राजा राज्य करता है। आगन्तुक स्त्रीके मुखसे यह समाचार सुनकर महाबलका हृदय हर्ष और आश्चर्यसे पूर्ण होगया। वह सोचने लगा, भाग्यकी कैसी विचित्र गति है? ऐसे संकटमें

पड़कर भी मैं अपने इष्ट स्थानके समीप ही आ पहुँचा हूँ। मृत्युके मुखमें गई हुई राजकुमारी भी मुझे जीवित ही मिल गई। ऐसे मरणान्त संकटोंमें भी मेरा भाग्य मुझे पूर्ण सहायता दे रहा है, इसलिए मुझे संकटपूर्ण विनोद से जराभी हिम्मत न हारना चाहिये।

महाबल—भद्रे! क्या इस राजाके वहाँ कुछ नई घटना घटी है?

आगन्तुक युवती—हाँ इस राजाके एक मलयासुन्दरी नामकी उमर लायक कन्या थी, उसके लिए राजाने स्वयंवर शुरुकिया हुआ है। देश देशान्तरसे राजकुमारोंको बुलाने के वास्ते चारों तरफ राजदूत भेजे हुए हैं। आजसे तीसरे दिन, यानें चतुर्दशीके रोज स्वयंवरका मुहूर्त था, और राजाने स्वयंवरकी तमाम सामग्री तैयार करली थी परन्तु उस कुमारीकी सौतीली माता कनकवतीने उस रंगमें भंग कर डाला। मैं उस कनकवती रानीकी सोमा-नामकी मुख्य दासी हूँ। उसकी पूर्ण विश्वाश पात्र होने से उसका कोईसा भी कार्य मुझसे छिपा नहीं है। कनकवती मलयासुन्दरी पर निरन्तर द्वेषरखती थी और उसके छिद्र देखती रहती थी।

मलयासुन्दरी—सोमा! कनकवती किसलिये राज-कुमारीपर द्वेष रखती थी?

महाबल—इसमें क्या पूछना था ? सौकनको स्वाभाविक ही अपनी सौकनकी संतानपर द्वेष होता है।

सोमा—कुछभी होगा, मुझे इस बातका पता नहीं। हाँ इतना मैं कह सकती हूँ कि राजकुमारीका आज तक कुछ अपराध नहीं देखा गया। उस निर्दोष बालिकाके पीछे पड़ने परभी कनकवती कुमारीका कुछ भी न कर सकी। कल रातका जिकर है मैं और मेरी स्वामिनी सिर्फ हम दोनोंही महलमें बैठी थीं। अकस्मात् रानी कनकवतीकी गोदमें कुमारीका लक्ष्मीपुंज हार आपड़ा' चित्तको आनन्द देने वाला लक्ष्मीपुंज हारका नाम सुनते ही नवचेतन्यसा प्राप्त कर कुमार सहसा बोल उठा—सोमा ! वह हार उसकी गोदमें कहाँसे आ पड़ा था ?

सोमा—वह हार आकाश मार्गसे पड़ा था। उसे देख हम दोनोंने नीचे ऊंचे चारों तरफ देखा परन्तु उस हारको फेंकनेवालेका कुछभी पता न लगा। कुमार ने मनही मन सोचा—"उसी व्यन्तर देवीने मेरे पाससे ले जाकर लक्ष्मीपुंजहार वहाँ डाला होगा, जिसने उस के साथ मेरी अन्य वस्तुयें भी चुराई हुई हैं। मालूम होता है उस व्यन्तर देवीका कनकवतीके साथ कुछ जन्मान्तर का स्नेह संबन्ध होगा। इसीसे उसने वह हार उसे जा दिया होगा।

महाबल–"सोमा! यह हार लेकर कनकवतीने क्या किया? इस वक्त वह हार कहाँ पर है?"

सोमा–"हार मिलनेसे अतिहर्ष प्राप्त कर कनकवतीने मुझसे कहा–'भद्रे! देख, यह कैसा अपूर्व आश्चर्य है। जहाँ पर पुरुषका संचार होना कठिन है ऐसे स्थानमें रहनेवाली राजकुमारी मलयासुन्दरीका यह हार अकस्मात् मेरी गोदमें आपड़ा है। तू चारों तरफ देख; इस समय कोई मनुष्य महलमें छिपकर, यह सब कुछ देखतो नहीं रहा है? मैंने और मेरी स्वामिनी कनकवतीने भी महलमें सर्वत्र देखा परन्तु हमें कोई भी मनुष्य देखनेमें न आया।

पाठक महाशय! अब आप भली प्रकार समझ गये होंगे, कि लक्ष्मीपुंज हारको प्राप्त कर, सौतीली माता कनकवतीने निरपराध मलयासुन्दरीको संकटमें डालने के लिए सोमा दासीको साथ लेजाकर, महाराज वीर-धवलको बनावटी बातोंसे कोपायमान कर दिया था।

महारानी चंपकमालाको बुलाकर राजाने रानी कनकवतीसे सुनी हुई तमाम बातें कहीं, परन्तु चंपक मालाको उन बातोंपर बिलकुल विश्वास न आया। जब राजाने हारके विषयमें सुनाया तो रानीने यह बात मंजूर करली कि हां यदि हार उसके पास न मिले

तो इन बातोंपर विश्वास करनेमें कोई हरकत नहीं है। रानीका अभिप्राय प्राप्त कर राजाने उसी वक्त राजकुमारीको बुलवाया और उसके पाससे लक्ष्मीपुंज हार माँगा। पहले तो कुमारीसे कुछ भी उत्तर न बन सका, परन्तु वह कुछ सोच कर बोली, पिताजी! उस हारको मेरे पाससे किसीने चुरा लिया मालूम होता है। कई रोजसे ढूँढ़ने पर भी वह नहीं मिलता। यह उत्तर सुनते ही मारे क्रोधके राजाके नेत्र लाल शूर्ख होगये' होठ फड़कने लगे' वह तिरस्कार पूर्वक जोरसे बोल उठा—पापिनी! मेरे सामनेसे दूर चली जा' मुझे अपना मुँह न दिखा' तेरे रचे हुए प्रपंचोंका मुझे सब पता लग गया है। इधर रानी चंपकमाला भी तिरस्कार कर उसे फिटकारने लगी। माता सहित पिताको क्रोधातुर देख मलयासुन्दरी तुरन्त ही पीछे लौट अपने महलमें आगई। उसका मुख कमल चिन्ताकी छायासे मुरझा गया। वह सोचने लगी—माता पिताको इतना क्रोध करनेका क्या कारण होगा? मैंने मन वचन और शरीरसे आज तक कभी भी प्यारे माता पिताओंका अनिष्ट आचरण नहीं किया। मेरे हाथसे भारीसे भारी कीमती वस्तु नष्ट होने पर भी पिताजीने मुझपर कभी क्रोध नहीं किया। आज यह क्या हुआ? माता पिता दोनों ही

कुपित हो रहे हैं ? उनके इस असह्य कोपका क्या कारण है यह मालूम नहीं होता। न जाने अब इस भयानक क्रोधका क्या परिणाम उपस्थित होगा ? इसी सोच विचारमें वह हृदयसे झुरती हुई मानसिक वेदना सहन करती हुई अपने कमरेमें बैठ रही।

राजाने चंपकमालासे कहा "देवी ! इस दुष्ट हृदय वाली कुमारीने सचमुचही लक्ष्मीपुंज हार महाबलको दे दिया है। कनकवतीका कथन असत्य नहीं है; स्वयंवरमें आनेवाले अनेक राजकुमारोंसे यह दुष्टा लड़की मुझे मरवा डालेगी। हमने इसे कितना लाड़ लड़ाया ? इसके स्वयंवरके लिये कितना महान खर्च करके मंडप तैयार किया है. यह पुत्रीके रूपमें जन्म लेनेवाली हमारी कोई पूर्वकी दुश्मन है। सचमुचही अनुरागिनी स्त्री मनुष्यको मृत्युसे बचाती है और विरक्ता स्त्री मनुष्यको मृत्युके द्वारपर पहुँचाती है। मित्रको शत्रु और शत्रुकोभी मित्र बना देती है, इसलिए हे प्रिये ! मेरा यह विचार है कि जब तक वे दुश्मन राजकुमार यहाँ पर न आ पहुँचें तबतक इस दुष्टा कुमारीको यमराजके हवाले कर देना चाहिए। रानीने कुछ भी उत्तर न दिया। अनेक विचारोंमें उलझ कर रानीके साथ राजाने कष्टसे रात बिताई। प्रातःकाल होते ही राजाने कोतवालको बुलाकर आज्ञा दी कि इस

मेरी पापिष्टा कुमारी मलयासुंदरीको यहाँसे दूर लेजाकर जानसे मार डालो। इस विषयमें मुझसे बारंबार पुछने या विचार करनेकी तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं।

इस बातकी खबर होतेही बुद्धिनिधान सुबुद्धि नामक प्रधान मंत्री शीघ्र ही महाराजके पास आया। इसवक्त राजाका क्रोध उग्ररूपको धारण किये हुए था; क्रोधसे विकृत बने हुए राजाको देखकर प्रधान मंत्री नमस्कार कर नम्रता पूर्वक बोला–"महाराज! ऐसा असमंजस और भयानक कार्य करनेका क्या कारण है? क्या इस समय कुमारी मलयासुन्दरी आपकी वही पुत्री नहीं है जिसके विनयादि गुणोंकी आप सदैव प्रशंसा किया करते थे? क्या अब वह उसके ऊपरका वात्सल्य आपमें नहीं रहा? इस भोली भाली राजकुमारीने प्राणदंड पानेका ऐसा क्या अपराध कर डाला? महाराज! जो कार्य करना हो उसे दीर्घ दृष्टिसे पूर्वापर विचार करके करना चाहिए। अविचारित किये हुए कार्यका परिणाम किसी २ समय मरणान्त कष्टसे भी अधिक दुःसह्य उपस्थित होता है।

राजा– "प्रधान! तुम्हारा कथन बिलकुल ठीक है; परन्तु मैं अविचारित कार्य नहीं कर रहा हूँ। बाहरसे भोली दीखनेवाली इस कुमारीने हमारा भयंकर अपराध

किया है। इसने हमारे वंशको सर्वथा नष्ट करनेका प्रपंच रचा है। आज हमें इसकी जालसाज़ीका पता लगा है;" इत्यादि कथन पूर्वक राजाने कनकवती द्वारा सुना हुआ वृत्तान्त मंत्रीको कह सुनाया। यह सुनकर मंत्रीभी भय-भीत हो मौन धारणकर कुछ विचारमें पड़गया। इस बात का निर्णय करनेमें भी उसकी वुद्धि न चली।

राजाकी आज्ञा पाकर दो चार सिपाहियोंको साथ ले कोतवाल राजकुमारीके महलमें आ पहुँचा और मन्द स्वरसे मलयासुन्दरीसे बोला- 'राजकुमारी! महाराज तुमपर अत्यन्त क्रोधित हुए हैं। इस कारण उन्होने मुझे तुम्हारा वध करनेकी आज्ञा फर्माई है। हा! पराधीन हतभाग्य, मैं इस समय क्या करूं? कोतवालकी वात सुनकर मलयासुन्दरीके नेत्रोंसे आँसुओंकी झड़ी लग गई। उसके चेहरेपर दीनता छा गई और अव मुझे क्या करना चाहिये इस विचारमें वह मूढ बन गई। रुके हुए कंठ से कुमारीने उत्तर दिया-'कोतवाल! पिताजीका मुझ पर इस भयंकर क्रोधका कारण तुम जानते हो?" कोतवाल बोला-"राजकुमारी! मैं इस घटनाके रहस्यको बिलकुल नहीं जानता।

मलयासुन्दरी दुःखसे अस्थिर चित्तकी अवस्थामें होकर बोलने लगी- 'पिताजी! निर्दोष वालिकापर

निष्कारण ऐसा प्राणघातक कोप किसलिये ? प्यारे पिता ! अनेक भूलें होनेपर भी आजपर्यन्त आपसे ऐसा अविचारित कार्य कभी नहीं हुआ आज आपको क्या किसीने भरमा दिया है ? इस समय पुत्रीपनका निःस्सीम प्रेम कहाँ चला गया ? माता चंपकमाला ! आज आप भी पत्थरके समान कठोर हृदया बनकर निस्नेहा होगई ! यदि आप को मुझसे कुछ अपराध ही हुआ मालूम होता है, तो क्या माता पिता सन्तानके एक अपराधको क्षमा नहीं कर सकते ? मुझपर असीम प्रेम रखनेवाले हे भ्राता मलयकेतु ! क्या ऐसे समय तुम भी मौन धारण किये बैठे हो ! इस विषमताका क्या कारण है ? इतनाभी मुझे नहीं बतलाया जाता ? मैंने ऐसा कौनसा भयंकर अपराध किया है जिससे आज तमाम परिवारका मुझसे प्रेम नष्ट हो गया ? मैं मानती हूँ आज मेरा पुण्य सर्वथा नाश हो चुका है। इसीसे प्राणोंसे प्यारी समझनेवाला सारा राजकुल आज मुझे दुश्मन समझकर निष्ठुर बन गया है। पूर्वोक्त निष्फल विचारोंकी उधेड़ बुनमें उसने यह निश्चय किया कि एक दफे मैं पिताजीसे प्रार्थना करूँ, वे मुझे मेरा अपराध मालूम करें। फिर जो मेरे भाग्यमें होगा सो हो। यह सोचकर उसने वेगवतीको बुलाकर अपना सारा अभिप्राय कह सुनाया और अपनी तरफसे प्रार्थना करने

के लिए उसे राजाके पास भेजा।

वेगवती-महाराज वीरधवलके पास आकर हाथ जोड़ नम्रता पूर्वक विज्ञप्ति करने लगी "महाराज मलयासुन्दरी मेरी मार्फत आपसे हाथ जोड़कर नम्र प्रार्थना करती है कि कृपाकर मुझे यह जनावें मुझ हतभागनी से आपका क्या अपराध हुआ है! यदि मुझे मृत्युसे पहले अपना अपराध मालूम होगा तो मेरे चित्तको संतोष होगा मैं समझूंगी पिताजीने मुझे मेरेही अपराधकी शिक्षा दी है। आपकी दी हुई प्राणदण्डकी शिक्षा मुझे शिरोधार्य है, परन्तु प्राण त्यागसे पहले यदि आपकी आज्ञा हो तो अन्तिम समय एक दफे आपके और माताजीके दर्शन करना चाहती हूँ। अगर यह बात आपको बिलकुल मंजूर न हो तो मैं दूर रही हुई ही आपको, माता चंपकमाला और सौतीली माता कनकवतीको अन्तिम नमस्कार करती हूँ

राजा—"पापिष्टा लड़की! अयोग्य कार्य करके भी मुझसे अपराध जानना चाहती है? मुझे मालूम न था कि तू ऊपरसे भोली देख पड़ती हुई भी भीतरसे इतनी गूढ़ हृदय और कपट प्रवीण है। मैं अन्दरसे विषतुल्य और ऊपरसे अमृतके समान उसके मीठे वचन सुनने नहीं चाहता। मैं अब उस दुष्टाका मुँह देखना नहीं चाहता

और न ही मुझे उसके इस कपटपूर्ण नमस्कारकी आव श्यकता है। जिस तरह कोतवाल कहे उस तरह वह अपने प्राणोंको त्याग दे।

राजाके अन्तिम वचन सुनकर वेगवतीके दुःखका पार न रहा। उसका हृदय भर आया। आँखोंसे आँसु बहने लगे परन्तु अन्तमें धीरज धारणकर उसने मलया-सुन्दरीका महाराजको अन्तिम संदेश सुनाया। 'महाराज! अगर आपका यही अन्तिम निश्चय है तो मलयासुन्दरी गोला नदीके किनारेपर जो पातालमूल नामक अन्ध कार पूर्ण गहरा कुंवा है उसमें झंपा पातकर मृत्यु शरण होगी। इतनी बात कहकर और राजाका उत्तर सुनने की भी प्रतिक्षा न करके वेगवती वहाँसे तत्कालही वापिस लौट गई, और मलयासुंदरीके पास जाकर उसने सवि-स्तर तमाम हकीकत कह सुनाई। मलयासुंदरीपर इस समय अकस्मात् विपत्तिका पहाड़ टूट पड़नेसे उसकी यह सच्ची परीक्षाका समय था। उसने जो बाल्यवयमें संस्कारी शिक्षण प्राप्त किया था उसके प्रभावसे हिम्मत और धैर्य का अवलंबन ले वह अपनेही घोर कर्मोंकी निंदा करती थी। उसके मुखसे निम्न प्रकारके शब्द निकलते थे—

"जो भाग्यकरे वह होता है, नहीं होत हृदयचिंतित तेरा
हे चित्त! सदा उत्सुक होकर, करता उपाय क्यों बहुतेरा!

कठिन है बनना मन रे तुझे, मरणका सहना दुख है मुझे।
मम कुकर्म पुरातन रोप है, जनकका इसमें कब दोष है।

राजाका अन्तिम निश्चय सुनकर मलयासुन्दरीने भी धैर्यपूर्वक प्राणत्यागका निश्चय कर लिया। अब वह पंच परमेष्ठी मंत्रका जाप करती हुई शहरसे बाहर रहे हुए अन्ध कूपको लक्ष्यमें कर निर्भयतासे अपने रक्षक पुरुषोंके आगे २ चल पड़ी। राजकुमारीकी यह स्थिति देख कर, आरक्षक लोगोंके हृदयमें भी दयाका संचार होता था। उसके सखीवर्गकी स्थिति बहुतही करुणा जनक देख पड़ती थी। वे चौधारा आँसुओंसे मुख धोती हुई रुदन करती थीं। हे हृदय! राजकुमारीकी ऐसी दशा देखकर भी तू किस तरह जीवन धारण किये हुए है? हे कुमारी! तेरे मधुर आलाप, सारगर्भित वार्ता और हृदयकी सरलतासे प्राप्त होनेवाला आनन्द अब हम किससे पायेंगी? हे देवी! यह तेरी दशा तेरे बदले हमें क्यों न प्राप्त होगई? हे दिव्य गुण धारण करनेवाली, सरल बालिका! तेरे बिना इस शहरमें रहना हमारे लिए सर्वथा असंभवित होगा! इस प्रकार बोलकर उसे हृदयसे चाहनेवाली उसकी तमाम सखियाँ विलाप करके देखनेवाले मनुष्योंको भी रुलाती थीं।

राजाने अपनी इकलौती कुमारीको गुस्सेमें आकर

मारडालनेकी आज्ञा देदी है यह बात फैलने पर शहरमें कोलाहलसा मचगया। शहरके बड़े २ आदमी राजाके पास आकर विनय पूर्वक प्रार्थना करने लगे-"हे नरनाथ! यह क्रोध करनेका स्थान नहीं है। बचोंसे अपराध होनेपर भी क्या उन्हें प्राणदंडकी शिक्षा दी जा सकती है? हे चतुर नराधीश! यदि आपको ऐसाही अनर्थ करना था तो यह स्वयं वर मंडपका आडंबर किसलिए रचा था? कन्याके विवाहके लिए उत्सुक होकर आये हुए सैकड़ों राजकुमारोंको आप क्या जवाब देंगे? इत्यादि अनेक प्रकारसे प्रजाके आगेवानोंने राजाको बहुत कुछ समझाया; परन्तु क्रोधान्ध राजा अपने विचार से पीछे न हटा। नगरकी औरतें बोलती थीं—हाय, महारानी चंपकमाला कुमारीकी माता होनेपर भी अपनी सन्तान पर ऐसा जुल्म करते हुए राजाको मना नहीं करती? जितने मुँह उतनी ही बातें होती थीं, परन्तु परिणाममें शून्य ही था।

अनेक राजपुरुषोंसे वेष्टित राजकुमारी उस अन्ध-कूपके किनारे पर आ पहुँची। पंच परमेष्ठिमंत्र का शरण लेकर, महाबल कुमारको याद करती हुई और दर्शक जनताके हा-हा कार करते हुए, राजकुमारीने बिजलीकी झड़पसे उस जलरहित कुवेमें झंपापात कर दिया। हृदयको

विदारण करनेवाला यह भयानक दृश्य दयापूर्ण हृदयवाले मनुष्योंसे न देखा गया। उनके नेत्रोंसे चौधारे आँसु बहने लगे। बहुतसे मनुष्य कन्याघातक कहकर राजाकी निंदा करते थे। कितने एक दुर्दैवको उपालंभ देते थे। इस तरह कुमारीके दुःखसे दुःखित होकर बड़े कष्टसे रात्रिके समय लोग वापिस अपने घर गये। राजपुरुषोंने भी शहरमें आकर राजसभामें विचार मग्न बैठे हुए महाराज वीरधवलको राजकुमारीके अन्धकूपमें स्वयं झंपापात करनेकी बात कह सुनाई। कुमारीके मृत्युका समाचार सुनकर राजा सहकुटुम्ब आनंदित हुआ। वह विचारने लगा—कुमारीकी मृत्युसे मेरे राज्य और कुटुम्बकी रक्षा होगई। स्वयंवरमें बुलाये हुए राजकुमारोंको मैं अभी संदेश भेज देता हूँ कि किसी गुप्त रोगके कारण मलयासुन्दरीकी अकस्मात् मृत्यु होगई है; इसलिए आप लोग स्वयंवरमें आनेका कष्ट न उठावें।

मलयासुंदरीकी मृत्युसे राजकुलमें शोकका कुछभी चिन्ह मालूम नहीं देता था। परन्तु कभी २ दास दासियों का टोला मिलकर आपसमें मलयासुन्दरीके गुणोंको याद कर खेद प्रकट करता था। शहरके भी विशेष हिस्सेमें यही बात मालूम होती थी। जहाँ तहाँ पर स्त्री पुरुष मिलकर कुमारीका शोक प्रगट करते थे। यद्यपि राजाके मनमें

शोकका लेशभी न था, तथापि रह रहकर कोई अव्यक्त वेदना उसके हृदयको मसोसती थी। उसे लोक लाजका भी थोड़ा घना भय जरूर था। राजकुटुम्बमें गतरात्रिका कुछ जागरण होनेसे एवं आज सारे दिनका थोड़ा बहुत खेद हानेसे ज्यों ज्यों रात होती गई त्यों त्यों राजमहल शान्त स्थितिको धारण करता गया। तथापि अकस्मात् ही यह भयानक घटना बननेसे इस घटनाके साथ संबंध रखनेवाले व्यक्तियोंमें अभी निद्रादेवीने प्रवेश न किया था।

अर्धरात्रिका समय होने आया; सारे महलमें शांति मालूम होती थी, इस समय दो मनुष्योंने गुप्त वेषमें रानी कनकवतीके महलमें प्रवेश किया। उसके रहनेवाले कमरेके द्वार बन्ध थे। वे दोनों पुरुष फिरते हुए दूसरे द्वारकी तरफ़ लौटे। दरअसलमें रानीके रहनेवाले कमरेका यही मूलद्वार था जहाँपर वे दोनों पुरुष अब आकर ठहरे हैं। दैववशात् कमरेका यह मुख्यद्वारभी उन्हें बन्द मिला, परन्तु द्वारके छिद्रोंसे अन्दरके दीपकका प्रकाश मालूम होता था। वे दोनों पुरुष चुपचाप वहाँही खड़े होगये और द्वारके छिद्रसे दृष्टि लगाकर अन्दर देखने लगे।

इस समय कनकवतीके आनन्दका पार न था। आज उसने उद्भट वेष पहना हुआ था। लक्ष्मीपुंज

हार उसके हाथमें शोभ रहा था। हारके सन्मुख देख वह हर्षके आवेशमें आकर बोलती थी—'हे दिव्यहार ! मेरे बड़े सद्भाग्यसे ही तू मेरे हाथमें आया है। तेरे ही प्रतापसे मैंने आज अपने मनोवांछित कार्यको सिद्ध किया है। तुझे छिपाकर अनेक प्रपंचके वचनोंसे राजाको कोपित कर जन्मान्तरकी वैरन मलयासुन्दरीको प्राणदण्ड दिला उससे बदला लिया है। चिंतामणिके समान तेरी प्राप्ति भी बड़ी दुर्लभ है। अबसे राजाको भी मेरे स्वाधीन कर सदैव मुझे इच्छित फलकी प्राप्ति कराना। हर्षावेशमें कनकवतीको इस समय इस बातका ध्यान बिलकुल न रहा था कि मैं क्या बोल रही हूँ और मेरे इस नग्न-सत्यपूर्ण कथनको कोई सुन तो नहीं रहा है।

कनकवतीके हाथमें लक्ष्मीपुंज-हारको देखकर, तथा उसके पुर्वोक्त वचनोंको सुनतेही गुस्सेके मारे उन दोनों पुरुषोंका खून उबलने लगा। शान्त हुआ कोपानल फिरसे विशेषतया प्रदीप्त हो गया। उनमेंसे एक राजपुरुष सहसा चिल्ला उठा-हा ! हा ! पापनी ! तूने मुझे प्रपंचसे फसा कर ठग लिया ? निर्दोष पुत्रीके पाससे हार चुराकर प्रपंचके द्वारा मुझे कुपितकर निरापराध पुत्रीका घात कराया ! हे दुष्टा ! कनकवती ! तूने मुझे कुटुम्बसहित ठगा ? मेरी उस गरीब लड़कीने तेरा क्या अपराध किया था ? उसने

आजतक कभी किसी चींटी तकको भी तकलीफ़ न पहुँचाई थी। उसके शिरपर ऐसा घोर कलंक !! इसप्रकार बोलता हुआ, जोरसे द्वारको तोड़ता हुआ और ऊंचे स्वरसे पुकार करता हुआ दुःखसे विकलित हो वह पुरुष गश खा कर सहसा पृथ्वीपर गिर पड़ा।

इस आधी रातके समय कनकवतीके महलमें आनेवाले ये दो पुरुष कौन हैं? इस बातका भेद पाठक स्वयं समझ गये होंगे। गश खाकर जमीन पर मूर्छित अवस्थामें गिरजानेवाला स्वयं महाराज वीरधवल हैं और साथमें दूसरा मुख्य मंत्री सुबुद्धि है। वे रात्रि-चर्या देखनेके लिए न निकले थे। उन्होंने अभी तक भी सचाईको निर्णय करनेका प्रयास न किया था; अगर इतनी दीर्घ दृष्टि की होती तो मलयासुन्दरी को जीवित दशामें कुवेमें फेंकवा देनेका प्रसंग न आता। वे इस धारणासे कनकवतीके महलपर आये थे कि कनकवतीने राज्यपर आक्रमण करने और राजाको मारकर निर्वंश करनेका भयंकर खुपियां भेद जनाकर राज्य पर महान् उपकार किया है, इसलिए इस समय उसके पास जाकर कुछ विशेष हकीकत जाननी चाहिए, और उसका महान् उपकार मानना चाहिए। इसी उद्देश से विशेष रात जाने पर भी मंत्री और महाराज कनकवती

के महल पर आये थे। परन्तु यहाँ आते ही कनकवती के उग्रपापका घड़ा फूट गया। उसके गुप्त प्रपंचका पड़दा फास होगया। और उसके प्रपंचमें फसकर, पूर्वा पर विचार न कर, रासभवृत्ति करनेवाले राजा वीरधवल के हृदयका भी अन्धकार दूर होगया। राजाकी पुकार और जमीन पर पड़नेका शब्द सुनते ही सारे राजमहल में अकस्मात् कोलाहल और हाहा कार मच गया। वहाँ पर शीघ्र ही अनेक राजपुरुष एकत्रित होगये और राजा को होशमें लानेका उपचार करने लगे।

"हे पथिको! इस अवसरका लाभ उठाकर मैं और मेरी स्वामिनी कनकवती हम दोनों जनीं मृत्युके भयसे पिछली तरफकी खिड़कीसे नीचे जमीन पर घिसर पड़ीं। हमें थोड़ीशी चोट तो जरूर लगी; परन्तु मृत्युभयके सामने वह कुछ भी मालूम न दी। हम वहाँसे भागकर, एक शून्य मकानमें जा घूसीं और वहाँ छिपकर पासवाले रास्तेसे आते जाते लोगों का वार्तालाप सुनने लगीं।" इतना कहकर सोमा बोली:—'हे कुमारो! अभीतक जो मैंने आपके सामने वृत्तान्त कहा है यह सब मेरा नजरसे देखा हुआ और स्वयं अनुभव किया हुआ है। अब इसके बाद मैं जो कुछ कहूंगी वह मैंने छिपकर उस शून्य घरमें रहकर लोगों के

मुखसे सुना हुआ होगा।" मलयासुन्दरी बोली कुछ हरकत नहीं, फिर राजाकी क्या दशा हुई यह सुना।"

सोमाः—"राजा कुछ देर बाद जागृतिमें आते ही ऊंचे स्वरसे पुकार करने लगा। भयसे व्याकुल हो रानी चंपकमाला भी वहाँ पर आ पहुँची और प्रधान से कहने लगी मंत्री ! यह प्राणनाशक अकस्मात् दूसरी क्ता घटना बनी ? अश्रु पात करते हुए सुबुद्धिनामक मंत्री ने राजाके साथ स्वयं देखा हुआ और कानोंसे सुना-हुआ कनकवतीका सर्व वृत्तान्त महारानी चंपकमाला को कह सुनाया। राजकुमारी की सर्वथा निर्दोषता और कनकवतीका प्रपंच जाल मंत्रीद्वारा मालूम होनेसे मलया सुन्दरीकी मृत्युके शोकसे तमाम लोगोंके नेत्रांसे जलधार बहने लगी। रानी चंपकमाला राजाके कंठका अवलंबन ले निर्दोष पुत्रीके मृत्यु शोकसे करुणस्वर से रुदन करने लगी। इस समय सारे महलमें तो क्या सारे शहरमें शोकका साम्राज्य छागया। राजमहलमें इतना करुणाजनक रुदन होने लगा कि जो सुनने वाले मनुष्योंके हृदयको रुलाये बगैर न रहता था। विलाप करते हुए राजा और रानीको आश्वासन देते हुए प्रधान मंत्री बोल उठा—"महाराज ! इस तरह रुदन करनेसे अब कुछ लाभ न होगा। चलो जल्दी उठो;

वहां जाकर उस अंधकूपमें राजकुमारीको तलाश करें। कदाचित् हमारे पुण्योदयसे राजकुमारी उस अंधकूप में जीवित मिल जाय?"

रोना धोना छोड़कर राजा आदि हजारों मनुष्य मध्यरात्रिके समय उस अंधकूपके पास जा पहुँचे। शीघ्रही बड़ी बड़ी मसालें जलवाकर प्रकाश सहित उस अंधकूपमें मंच द्वारा मनुष्योंको उतारा गया। परन्तु चारों तरफ अच्छी तरह तलाश करने पर भी उस अंधकूपमें राजकुमारीका चिन्ह तक भी मालूम न हुआ। निराश होनेके कारण क्रोधसे भभकता हुआ राजा वहांसे वापिस कनकवतीके महलमें आया। द्वार खुलवाकर, अन्दर तलाश की, परन्तु वहाँपर कोई भी देख न पड़ा। इसलिए महाराजने राजपुरुषोंको आज्ञा दी कि जाओ। उस दुष्टाकी तलाश करो; वह दुष्कृत्य करके कहाँ भाग गई? मालूम होता है; पिछली खिड़की से कूद गई है। सब जगह तलाश कर, उस दुष्टाको पकड़ लाओ।"

हे सत्पुरुषो! राजा वीरधवलकी इस समय जो हालत है उसको देखते हुए वह रात्रिके व्यतीत होने तक भी जीवित रह जाय तो बड़ा भाग्य समझो। प्रातः-काल होने पर तो वह अवश्य ही चितामें प्रवेश करके

प्राण त्याग करेगा। उधर हमारी खोजमें फिरते हुए राजपुरुषोंको देखकर कनकवतीने मुझसे कहा—"अब हम दोनोंको एक जगह रहना फायदे कारक नहीं है। यदि राजपुरुष हमें देख लेंगे तो शीघ्र ही मृत्युके शरण कर देंगे। यों कहकर उसने मेरे पाससे लक्ष्मीपुंजहार आदि सार वस्तुयें ले वह अपनी परिचिता मगधा नामा वेश्याके घर चली गई। वहाँ पर एकली रहने के लिए हिम्मत न पड़नेसे मैं वहाँसे लुकती छिपती इस तरफ चली आ रही हूँ।"

हे पथिको! आपने जो मेरे भयका कारण और मेरा परिचय पूछा था; सो मैंने आपके सामने कह सुनाया। महाबल "अहो! आश्चर्यकी बात? दुष्ट! स्त्रियोंके कैसे विचित्र चरित्र होते हैं! निर्दोष कन्यारत्न का नाश कराया! राजाको मरणान्तसम कष्टमें डाला और अपने भी सुखका नाश कर, निन्दित होकर देश त्याग किया। धिक्कार है ऐसी दुष्टा स्त्रियोंकी तुच्छ बुद्धि को!!!

पूर्वोक्त प्रकारसे मलयासुन्दरीके संकटमें पड़ने का रहस्योद्घाटन कर सोमा बोली—'अब रात्रि पूर्ण होने आई है; इसलिए न जाने मेरे पीछे मेरी खोजमें कोई राजपुरुष न आजाय, अतः मैं अब आगे जाती हूँ

यों कहती हुई और पीछेकी ओर देखती हुई सोमा आगे चली गई ।

विचित्र स्वयंवर ।

सोमाके चले जाने पर कुमार बोला—'कुमारी ! जिस रोज हमारा प्रथम मिलाप हुआ था उसी दिनसे वैर धारण करनेवाली तुम्हारी सौतीली माता कनकवती ने मौका पाकर तुम्हें कष्टमें डाला है । हे सुलोचने ! कनकवतीकी दासी सोमासे ही मुझे तुम्हारा अतिकष्ट दायक वृत्तान्त मालूम हो गया । अहो ! थोड़े ही समयमें तुमने मृत्युके समान कैसा महाभयंकर कष्ट सहा ! सुन्दरी ! उस अन्धकूपमें झंपापात करनेपर और इस समय यहां पर अजगरके मुखसे तुम्हारी प्राप्तिका यही कारण मालूम होता है, जब तुमने उस अंधकूपमें झंपापात किया तब वहां पर रहे हुये इस अजगरने तुम्हें मूर्छित अवस्थामें सटक लिया है । और उस अन्ध-कूपसे बाहर निकलनेका अवश्य कोई गुप्तमार्ग होगा । उस मार्गसे निकल कर वह शीघ्र ही तुम्हें पचानेके लिये इस आमके वृक्षसे लपेटा देने यहां आया था ।

मैंने उसके दोनों होठ पकड़कर उसे चीर डाला। और उसके मुखसे तुम्हें शीपसे मोतिके समान निकाल लिया, पासही में पड़े हुये अजगरको देखकर मलयासुन्दरी भय भीत हो उठी। महाबल बोला—'सुन्दरी! अब तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। ऐसी भयंकर दशामें भी हमारा दुर्घट मिलाप हमारे अनुकूल भाग्यकी सूचना करता है।

अब रात्रि व्यतीत होने आई थी; पूर्वदिशाने अपने स्वामी सूर्यका आगमन जानकर लालरंगकी साड़ी पहन ली थी। आकाशमें टिमटिमाते हुये तेजस्वी तारे धीरे २ छिपते जारहे थे। वृक्षोंपर बैठे हुये पक्षीगणने चहचहाट शुरू कर दिया था। रातभरके भूखे पशु भी अपने भक्ष्यकी गवेषणामें इधर उधर फिरने लगे थे। प्रातःकालके मंद और शीतल पवनसे जंगल के बड़े २ वृक्षोंकी पत्तियाँ हिल रही थीं। अब सूर्यदेव भी अपनी सुनहरी किरणोंसे जगतको जागृत करनेके लिए उदयाचल पर आ विराजा था। प्रातःकालके ऐसे सुहावने समयमें महाबल कुमार और पुरुषवेष धारक मलयासुन्दरी वहाँसे उठकर समीपवर्ती गोलानदी पर आये। वहाँ पर दन्तधावन तथा मुख प्रक्षालनादि कर वे वापिस उसी आम वृक्षके नीचे आये, और वहाँ आकर उन्होंने कुछ पके हुये आम्रफल खाये। इसके बाद वहाँ

से चलकर गोलानदीके किनारे २ वे भट्टारिका देवी के मठपर आ पहुंचे। वहाँ पर बहुत समयसे खड़ी की हुई काष्टफलियोंको देखकर कुमार कुछ सोच विचार के मस्तक हिलाता हुआ राजकुमारीसे बोला—'सुन्दरी! मुझे अबसे मुख्य तीन काम करने होंगे; जिसमें पहला कार्य तुम्हारे वियोगसे मरते हुए तुम्हारे माता पिताके प्राणोंकी रक्षा करना। दूसरा तुम्हारे माता पिताकी संमतिसे अनेक राजकुमारोंके समक्ष स्वयंवरमें तुम्हारा पाणि ग्रहण करना और तीसरा लक्ष्मीपुंज हारको स्वाधीन कर माताको देकर, उनके प्राण बचाके उनके समक्ष की हुई अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करना है। सुन्दरी! इन तीनों कार्योंमें मुझे तुम्हरी पूर्णसहायता लेनी होगी। लक्ष्मीपुंज हारको स्वाधीन करना यह कार्य तुम्हें अपने ज़िम्मे लेना होगा। यह तुम्हारा पुरुषवेष अभी कुछ समयतक ऐसाही रखना पड़ेगा। तुम्हें यहाँसे मगधावेश्या के घर जाना चाहिये। क्योंकि अभीतक कनकवती वहाँ परही होगी। वहाँ जाकर तुम्हें ऐसा आचरण करना चाहिए कि जिससे कनकवतीके पास रहा हुआ वह लक्ष्मी-पुंज हार तुम्हारे हाथ आजाए। एक बात विशेषतया ध्यान रखना, नगरमें इस तरह प्रवेश करना कि कहींपर राजपुरुष तुम्हारी ओर विशेष ध्यानसे न देख पावें।

मगधावेश्याके घर जाकर आजकी सारी रात तुमने कनकवती और हारकी खोजमें निकालनी। कलका सारा दिन भी वहाँपर ही बिताना और संध्याके समय वापिस यहाँ ही आना। मैं भी निर्धारित कार्य यथोचित करके वापिस इसी भट्टारिकाके मन्दिरमें कल शामको आऊंगा। दोनोंका कल संध्याके समय यहाँपर ही मिलाप होगा। मैं यहाँसे इसवक्त श्मशान भूमिकी ओर जाता हूँ, क्योंकि तेरे वियोगसे दुःखित हुए तेरे माता पिताओंका रक्षण करना यह हमरा पहला कर्तव्य है। तुम्हारे हाथमें जो यह नामांकित अंगुठी है; यह तुम मुझे दे दो, क्योंकि शहरमें इसे तुम्हारे हाथमें देख चोरकी भ्रांतिसे तुम्हें कोई उपद्रव न कर सके।"

राजकुमारीने महाबलकी तमाम बातें विनीत भावसे ध्यानपूर्वक सुनीं। कुमारका सहवास न छोड़नेकी इच्छा होते हुए भी उसे मुद्रारत्न देकर उसने उसकी तमाम बातोंको शिरोधार्य किया। अब वे अपने २ कार्यकी सिद्धिके लिए दोनों वहाँसे चलदिए। रास्तेमें चलते हुए महाबल विचारने लगा—'स्वयंवरमें अपनी २ सेना सहित अनेक राजकुमार आयँगे, उस समय एक साधारण पथिकके समान स्वयंवरमें मेरा प्रवेश होना भी असंभव है। उसके पिताकी सम्मतिसे राजकुमारी

के साथ पाणिग्रहण करना तो दूर रहा परन्तु इस दशा में एकाकी उन राजकुमारोंकी पंक्तिमें जाकर बैठना भी दुष्कर होगा, इसलिए मुझे ऐसे समय अपने कार्य को सिद्ध करनेके लिए कुछ प्रपंच अवश्य रचना पड़ेगा। जो कार्य बलसे नहीं होता वह बुद्धि प्रयोगसे सुलभता पूर्वक होसकता है। इत्यादि विचारोंकी उलझनमें महाबल आगेबढ़ा जारहा था, इतनेमें ही एक बड़वृक्ष के नीचे उसने एक हाथी बँधा देखा। उस हाथीके पास कई एक राजपुरुष उसकी लीदको पानी में धो धोकर छलनीमें छान रहे थे, यह देख महाबलने उसका कारण पूछा—राजपुरुषोंने उत्तर दिया "महाशयजो! कल बहुतसे लड़कोंके साथ यहाँ पर राजकुमार आये थे उस समय एक गन्नेमें सुवर्णकी जंजीर लपेट कर वे यहाँ खेलने लगे। गन्ना हाथीके पास पड़ जानेसे उसने सोनेकी जंजीर सहित उस गन्नेको उठाकर खा लिया। अब उस जंजीरको पानेके लिए राजाकी आज्ञासे हम लोग हाथीकी लीदको पानीसे धोकर छान रहे हैं। यह बात सुनकर महाबल कुमारने उनकी आँख बचाकर एक घास का पूला उठा उसमें राजकुमारीकी वह नामाँकित सुवर्ण मुद्रिका (अंगुठी) डालकर पूला हाथीके सामने फेंक दिया। उस पूलेको जब हाथीने अपनी सूंडसे उठाकर

मुँहमें डाल लिया तब महाबल वहाँसे चल पड़ा।

लगभग एक पहर दिन चढ़ चुका था। इस समय गोलानदीके किनारे हजारों मनुष्योंका जमघट लगा था, पासमेंही एक चिता बनी हुई थी। उसमेंसे मंद मंद धूम्र की शिखा काले आकाशकी श्यामतामें वृद्धिकर रही थी। इस समय हाथ ऊंचा किये हुए एक सिद्ध ज्योतिषी उन लोगोंके जमघटकी तरफ दौड़ा हुआ आता मालूम दिया। वह जोर जोरसे चिल्ला रहा था, ठहरो ठहरो! साहस मत करो। राजकुमारी मलयासुन्दरी अभी जीवित है। कानोंको अमृतके समान उस सिद्धज्योतिषीके वचन सुन कर उस भीड़मेंसे कई लोग उसके सन्मुख दौड़े और उसे और भी जल्दी आनेके लिए हाथोंका इसारा करने लगे। तमाम लोगोंकी नजर उस आगंतुक ज्योतिषीकी तरफ ही लगी हुई थी। उसके नजदीक आतेही उत्सुकताके साथ कई आदमी बोल पड़े, हे महानुभाव! क्या राजकुमारी कहीं जीवित है?

सिद्ध—"हां हां राजकुमारी जीवित है और वह सुखमें है" यह सुन हर्षित हो भीने हुए कपड़े धारण किये हुए महाराज वीरधवल और रानी चंपकमाला आतुरतासे बोले—"क्या सच है हमारी पुत्री मलया जीवित है?"

सिद्ध—"महाराज ! राजकुमारी कुवेमें पड़नेसे मरी नहीं, वह अभी जीवित है । मैं आपको सब कुछ बतलाऊंगा, आप पहिले पानीसे इस चिताको ठंडी करा दें । राजाकी आज्ञा न होनेपर भी कई राजपुरुषोंने चिताको ठंडी कर डाला । ज्योतिषी बोला—"महाराज ! मैं जो कहूँगा उसमें आप पूर्ण विश्वास रक्खें । मैंने अष्टांग निमित्त शास्त्रका खूब अभ्यास किया है । अतः मैं अपने अचूक निमित्त ज्ञानसे ठीक कह रहा हूँ कि आप धैर्य धारण करें व्याकुलताको छोड़कर स्वस्थ हो जायें, मलयासुन्दरी जीवित है और वह आपको अवश्य मिलेगी । सिद्धज्योतिषी के अमृतमय वचन सुनकर शान्तहो राजा बोला—"निमित्तज्ञ महाशय ! क्या मेरा इतना पुण्य बाकी है कि यमराजके उदर समान उस अन्धकूपमें फेंकदी हुई अपनी निर्दोष पुत्रीको फिरसे मैं इन आंखोंसे देख सकूं ? मैंने कल रात को ही उसे उस कुवेमें तलाश कराया, परन्तु वहाँ पर उसका पदचिन्हतक भी मालूम न हुआ, इस लिए मालूम होता है उसे अवश्यही किसी हिंसक प्राणीने खा लिया होगा ! हाय ! संतानघातक पापीको मरणके शरणसे आश्वासन देके क्यों रोकते हो ?

सिद्धज्योतिषी—"राजन् ! आज जेठ महीनेकी कृष्ण द्वादशी है । आजसे तीसरे दिन अर्थात् चतुर्दशीको

जब जुदे जुदे देशोंके अनेक राजकुमार आकर स्वयं-वर मंडपमें विराजमान हुए होंगे; उस समय हजारों लोगोंके देखते हुये दुपहरके बाद अनेक प्रकारके वस्त्रा लंकारोंसे विभूषित राजकुमारीका आप सबको दर्शन होगा। राजन्! आप उत्साह पूर्वक स्वयंवर मंडप तैयार करायें। देश देशान्तरसे आनेवाले राजकुमारों को कुमारीके मर जानेकी आशंकासे मत रोकिये। यदि आपको मेरे कथन पर विश्वास न आता हो तो ज्ञान दृष्टिसे देखकर, अपने वचनोंकी प्रतीति दिलाने के लिए आपकी मर्जी हो तो मैं कुछ प्रमाण भी बतला सकता हूँ। राजाकी सम्मति होनेसे सिद्धज्योतिषी कुछ देर ध्यानस्थसा रह कर बोला—"महाराज! राजकुमारी के हाथका नामांकित मुद्रारत्न कलही आपके हाथमें आना चाहिए। चतुर्दशीके दिन प्रातःकालमें नगरके पूर्व दरवाजेके पास राजकुमारोंकी परीक्षाके लिए लग भग छह हाथ प्रमाण लंबा और अनेक प्रकारके रंग विरंगोंसे चित्रित एक स्तंभ कहींसे आपकी गोत्रदेवी लाके रक्खेंगी। वह स्तंभ आपको स्वयंवर मंडपमें स्थापन करना होगा; उसके पास वज्रसार नामक धनुष जो तुम्हारे घर मौजूद है बाण सहित पूजन कर रखना होगा। उस धनुषपर बाण चढ़ाकर जो मनुष्य उस स्तंभ

को भेदन करेगा वही राजकुमारीका पाणि ग्रहण करेगा। उस स्तंभका कुछ पूजन विधिभी करना होगा। हे राजन्! ये तमाम बातें मैंने अपने ज्योतिष ज्ञानबलसे जानकर बतलाई हैं। मेरे बतलाये हुए इन प्रमाण या निशानियोंमें फरक पड़नेपर आप मेरे कथनमें अविश्वास कर सकते हैं।

सिद्ध ज्योतिषीने पूर्वोक्त तमाम बातें ऐसे ढंगसे कहीं जिससे राजा और वहाँपर रही हुई समस्त जनताके दिल पर उसका बड़ाभारी प्रभाव पड़ा। राजाके हृदयमें विश्वास जमनेके साथही जनताको इतना आनन्द हुआ कि हजारों मनुष्य हर्षित हो मुक्त कंठसे उस सिद्धज्योतिषीकी प्रशंसा करने लगे और मारे खुशीके लोगोंने अपने शरीरसे कीमती वस्त्राभरण उतार कर उसके सामने ढेर लगा दिया। सब लोग हाथ जोड़कर उस निमित्तज्ञान शिरोमणि सिद्धज्योतिषीसे बोले-"महानुभाव! आप कृपाकर हमारी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें। इस समय आपने जो हमपर उपकार किया है, उसके बदलेमें यदि हम आपको अपना सर्वस्व भी दे डालें तोभी वह कम होगा" सिद्ध ज्योतिषी बोला "सज्जनो! मैं तुमसे प्रत्युपकारमें एक कौड़ीतक न लूंगा। क्योंकि उपकारके बदलेमें यदि कुछ ले लिया जाय तो वह उपका

कैसा ? सिद्धज्योतिषीके निस्पृह वचन सुनकर राजा तथा प्रजाको बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्हें उसके वचनोंपर विशेष श्रद्धा जम गई। राजा बोला "सिद्धज्योतिषी ! स्तंभ के पूजनका आप जो कुछ विधि बतलाते हैं वह सब कुछ आपकोही करना होगा। जबतक आपके कथनानुसार तमाम बातें न मिलेंगी तबतक आपको मेरे पासही रहना होगा। सिद्धज्योतिषीने महाराज वीरधवलकी आज्ञा शिरोधार्य की। महाराज वीरधवलने विशेष आश्चर्यसे पूछा, ज्ञानीमहाशय ! आशाजनक ये तमाम बातें तो आपने हमें बतलाईं, परन्तु ज्ञान दृष्टिसे देखकर कृपाकर यह भी बतलाइए कि मेरी पुत्री मलयासुन्दरीका पाणिग्रहण किसके साथ होगा ? सिद्धज्योतिषी कुछ देर ध्यानस्थसा रहकर गंभीरतासे बोला—पृथ्वीस्थानपुरके नरेश महाराज सूरपालका पुत्र महाबल कुमार आपकी पुत्री मलयासुन्दरीका पाणिग्रहण करेगा। वरकन्याका योग्य मिलाप होगा यह समझकर वहाँपर रहे हुए तमाम लोग सिद्धज्योतिषीके अद्भुत ज्योतिषज्ञान की प्रशंसा करने लगे।

अब पूर्ण मध्यानका समय होने आया था। अतःसुबुद्धि मंत्रीने महाराज वीरधवलसे हाथ जोड़कर प्रार्थना की। "महाराज ! अब समय बहुत होगया।

आपको राजमहलमें पधारना चाहिये" मंत्रीके वचन सुन सिद्धज्योतिषीको साथले महाराज वीरधवलने बड़े समारोहके साथ याचकोंको दान देते हुए नगरमें प्रवेश किया। स्नानादिसे निपटकर महाराजने प्रथम सिद्ध ज्योतिषीको भोजन करा कर फिर आप भोजन किया। फिर ज्योतिषीके साथ वार्तालाप करते हुए दिनके दोनों पिछले पहर और कुछ निद्रा लेने पूर्वक सारी रात्रिका समय राजाने सानन्द व्यतीत किया। प्रातःकाल होतेही हाथीकी लीद छाननेवाले मनुष्य महाराजके पास आकर हाथ जोड़ निम्न प्रकारसे निवेदन करने लगे।

महाराज! हम विशेष कुछ नहीं जानते, हाथीकी लीद छानते हुए उसमेंसे राजकुमारीकी यह नामांकित अंगूठी हमें मिली है। यों कहकर उन्होंने वह नामांकित अंगूठी महाराजके हाथमें समर्पण की। राजा कुमारीका वह मुद्रारत्न देख मस्तक हिलाने लगा, और निर्निमेष दृष्टिसे उस सिद्धज्योतिषीकी ओर देखने लगा। यह देख उत्साह पूर्वक हिम्मतसे सिद्धज्योतिषी बोला—'महाराज! ज्ञानीका बतलाया हुआ भविष्य कभी अन्यथा नहीं होता।

लंबी साँस लेते हुए राजाने कहा—"ज्ञानी महाशय! कुमारीका यह मुद्रारत्न मदोन्मत्त हाथीके पेटमें किस

तरह गया होगा ? इससे मुझे निराशाजनक शंका पैदा होती है। सिद्धजोतिषी बोला—"राजन् ! हाथीके पेटमें मुद्रारत्न जानेका रहस्य मेरे ज्ञानमें स्पष्टतया मालूम नहीं होता, तथापि यह सर्वप्रभाव आपकी कुलदेवीका ही मालूम होता है। यह बात सुनकर राजाको हर्षके साथ संतोष पैदा हुआ और उसने इस प्रमाणके मिलनेपर स्वयंवर मंडपकी तमाम तैयारी उत्साह पूर्वक प्रारम्भ कर दी। स्वयंवर मंडप तो प्रायः प्रथम ही सम्पूर्णसा तैयार होचुका था, परन्तु बीचमें इस दुर्घटनाका विघ्न पड़नेके कारण कुछ थोड़ासा काम शेष रह गया था, वह अब मुद्रारत्नकी प्राप्तिजन्य प्रतीतिसे पूर्ण होने लगा। दूसरी तरफ राजा और राजकुमारोंके ठहरनेके लिए निवासस्थान भी तैयार कराए गए। स्वयंवर मंडपकी सर्व तैयारियाँ होती हुई देखकर शहरके बहुतसे मनुष्य तरह २ की बातें करते थे। देखो ! राजाकी कितनी मूर्खता है ? कन्याको मरवा कर स्वयंवर मंडप रचा रहा है। यदि कदाचित् ज्योतिषीके कहे मुजब राजकन्या न मिली तो स्वयंवरमें आये हुए राजकुमारोंको वह क्या उत्तर देगा ? इससे देश भरमें राजाकी कितनी लघुता होगी इस बातका उसे कुछ ख्याल है ? अगर ऐसा हुआ तो निराशा और अपमानसे क्रोधित हो देश देशान्तरसे आये हुए वे राजकुमार

राजाको कुछ उपद्रव न करेंगे ? कोई उत्तर देता भाई ! इस समय इस विषयमें युक्तायुक्त कुछ नहीं कह सकते। समय आनेपर सब कुछ देखा जायगा।

संध्याके समय चारों दिशाओंसे अनेक राजा और राजकुमार अपने २ परिवार सहित चंद्रावतीमें आने लगे। महाराज वीरधवलने भी उन सबको सन्मान पूर्वक जुदे २ ठहरनेके स्थान सर्म्पण किये। सिद्धज्योतिषीने राजासे कहा-"राजन् ! मुझे एक मंत्र साधना है, वह आधा तो सिद्ध हो चुका है, परन्तु आधा सिद्ध करना बाकी रहा है। यदि वह शेष रहा हुआ मंत्र आज रातको सिद्ध न किया जाय तो मेरा कार्य सिद्ध होना असंभवित है, इस लिये उस मंत्रको सिद्ध करनेके वास्ते आजकी रात मुझे आपकी आज्ञा मिलनी चाहिये। प्रातःकाल होतेही मैं आपकी सेवामें उपस्थित हो जाऊंगा। राजाने खुशी होकर सिद्धज्योतिषीको शेष मंत्र साधनेकी आज्ञा देकर कहा-"मंत्र साधनके लिये जो कुछ उपयोगी वस्तु या द्रव्यकी आवश्यकता हो सो जरूर साथ लेते जाइये। राजाके कहनेसे थोड़ासा द्रव्य साथ ले सूर्यास्त हुए बाद सिद्ध ज्योतिषी वहाँसे बाहर निकल गया। अब उसके गये बाद आशा निराशा जनक अनेक प्रकारकी विचारतरंगोंमें गोता खाते हुए राजाने बड़े कष्टसे-रात बिताई।

प्रातःकालमें शहरके द्वार खुलतेही सिद्धज्योतिषी राजमहलमें महाराज वीरधवलसे आ मिला। उसे देखकर महाराज वीरधवलके हर्षका पार न रहा और वह उत्सुकता पूर्वक बोल उठा—"महानुभाव! ज्ञानी! तुम्हारा मंत्र सिद्ध होगया?" सिद्धज्योतिषी बोला "महाराज! वह कोई साधारण मंत्र नहीं है। बड़ा दुःसाध्य है। उसका बहुतसा अन्श तो सिद्ध कर आया हूँ, परन्तु कुछ हिस्सा सिद्ध करना बाकी रहा है। मैं कल संध्या समय आपको प्रातःकाल आनेका वचन दे गया था, इसी कारण और आप अधीर न हों इसी लिये मुझे दूसरे कामकी परवा न करके आपकी सेवामें उपस्थित होना पड़ा। अब स्तंभका अर्चनविधि कर शेष रहे मंत्रकी सिद्धिके लिये मुझे वापिस जाना पड़ेगा। यह सुनकर प्रसन्न हो महाराज वीरधवल मुक्तकंठसे सिद्ध ज्योतिषीकी प्रशंसा करने लगा और मन ही मन विचारने लगा-'अहो! बिचारा सिद्धज्योतिषी कैसा परोपकारी है? सचमुचही ऐसे ज्ञानवान परोपकारी मनुष्य अपने कथन किए वचनको पालन करनेमें बड़े तत्पर होते हैं, दूसरेके कार्यके वास्ते निष्कारण इस तरह कष्ट उठानेवाले संसारमें विरले ही मनुष्य होते हैं। इस प्रकार जब राजा सिद्धज्योतिषीकी मनही मन प्रशंसा कर रहा था ठीक उसी समय स्तंभकी तलाश

में नगरसे बाहर भेजे हुए राजपुरुष वहाँ पर आ पहुँचे। और राजासे हाथ जोड़कर कहने लगे—"महाराज! आप की आज्ञा पाकर स्तंभकी शोधमें हम शहरसे बाहर गए थे, वहाँपर तलाश करते हुए दरवाजेसे बाईं तरफ किले के कोनेमें विचित्र चित्रोंसे चित्रा हुआ एक महान् स्तंभ सीधा खड़ा देखनेमें आया है। यह बात सुनते ही सिद्ध पुरुषके ज्ञानकी प्रशंसा करता हुआ महाराज वीरधवल सिद्ध ज्योतिषी और उन राजपुरुषोंको साथ ले नगरसे बाहर स्तंभके पास आया। उस विचित्र काष्ठस्तंभको देख कर सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सबके सब आँखें फाड़ कर उस स्तंभको देखने लगे। कितने एक प्रधान पुरुष उस स्तंभको हाथ लगाकर देखनेके लिए उत्सुक हुए, परन्तु सिद्धज्योतिषीने शीघ्रही आगे आकर वैसा करनेसे उन्हें रोक दिया, और कहा—'बगैर स्नान किए यदि कोई भी मनुष्य इस स्तंभको हाथ लगायगा तो राजकुलकी कुलदेवी कोपायमान हो जायगी। सिद्ध ज्योतिषीके कहनेसे राजा आदि तमाम प्रधान पुरुष पीछे हटगये। अब स्नान कर पुष्पादि पूजाकी सामग्री मंगवा कर सिद्धज्योतिषीने स्वयं स्तंभकी पूजा प्रारम्भ की। उसने पद्मासन लगाकर ध्यानस्थके समान बैठ ह्रंकार आदि मंत्रका जाप शुरू किया। कुछ देर बाद गायन

और नृत्यादि संगीत प्रारम्भ कराया।

इस प्रकार लगभग डेढ़ प्रहर दिन चढ़ने तक पूजन विधि चलता रहा। इसके बाद चार बलवान पुरुषोंको स्नान कराकर उनके गलेमें सुगंधित पुष्पोंकी माला पहिना कर उनसे वह स्तंभ उठवाकर राजा आदि तमाम मनुष्योंके साथ सिद्ध ज्योतिषी नगरकी तरफ चल पड़ा। स्तंभके आगे नाच और गाना हो रहा था; बन्दीजन जय २ की ध्वनि कर रहे थे। इस तरह आदर और सन्मान पूर्वक वह स्तंभ स्वयंवर मंडपमें लाया गया। वहाँपर छह हाथकी लंबी एक शिला मंगाई गई और उसे ज़मीनमें सीधी गाड़वादी। सिद्ध ज्योतिषीके कथनानुसार उस शिलाके आधारसे स्तंभको बड़ी हिफाजतके साथ सीधा खड़ा किया गया। शिलाके पश्चिमकी ओर वज्रसार धनुष बाणसहित रक्खा गया। दक्षिण और उत्तर विभागमें स्वयंवरमें आयेहुए राजा और राजकुमारों के सिंहासन जमाये गये। मंडपमें गांधर्वोंने मधुर स्वर से संगीत शुरू किया। नाचनेवाली युवतिओंने ताल मान के साथ नृत्य प्रारम्भ किया। इस समय धनुष और बाण का पूजन कर सिद्धज्योतिषीने राजासे स्वयंवरमें तमाम राजकुमारोंको बुलवा लेनेकी सूचना की। राजाके निमंत्रण करनेपर तमाम राजकुमारादि स्वयंवर मंडप

में आकर, प्रथमसे नियुक्त किये हुए अपने २ सिंहासनों पर बैठ गये। सबके साथमें अपनी २ योग्यताके अनुसार परिवार भी था। महाराज वीरधवलको राजकुमारों को यथायोग्य स्थान देने और उनका सन्मान करनेमें व्यग्र देख सिद्ध ज्योतिषी एकाएक वहाँसे गुम होगया।

जिस वक्त स्वयंवरमें आनेवाले राजा व राजकुमारादि अपने २ सिंहासनोंपर परिवार सहित आ बैठे उस वक्त महाराज वीरधवलने पीछे लौटके देखा तो सिद्ध ज्योतिषी वहाँ पर नजर न आया। मंडपमें चारों तरफ नजर घुमानेपर भी जब वह नहीं देख पड़ा तब राजाने उसे अपने राजपुरुषोंसे सब जगह तलाश कराया, परन्तु कहीं पर भी उसका पता न लगा। विचारमें पड़े हुए राजा को कुछ देर बाद याद आया कि वह अपने अर्धसाधित मंत्रको सिद्ध करने गया होगा। सिद्ध ज्योतिषीकी कथन की हुई तमाम बातें अभीतक पूरी हुई हैं; परन्तु उसने जो यह कहा था; कि राजकुमारीका पाणि ग्रहण पृथ्वी स्थानपुरके नरेश शूरपालका पुत्र महाबल करेगा। यह बात अभीतक नहीं मिली। किसी कारण इस स्वयंवर महोत्सवमें वह यहाँ पर नहीं आ सका होगा। जब वह बतलाया हुआ कुमार ही यहाँ पर नहीं आ सका तब फिर वह मेरी कन्याका पाणिग्रहण किस तरह करेगा? राजा

इन्हीं विचारोंकी उलझनमें पड़गया। इधर अपने २ स्थानपर स्वयंवरमें बैठे हुए राजकुमार राजकन्याको वहाँ पर न देखकर, और किसीके द्वारा यह सुनकर कि राजकुमारीको राजाने स्वयं अन्धकूपमें डलवा दिया है, वे परस्पर वार्तालाप करने लगे, क्यों भाई! आप किस लिए यहाँ पधारे हैं? स्वयंवर मंडपमें बैठ कर किसलिये मूछोंपर ताव दे रहे हैं! जिसकी आशामें आप यहां पधारे हैं उसे तो राजाने झेरेमें फेंकवा दिया है। उठो किसका पाणिग्रहण करोगे? क्या यह मंडप रचकर स्वयंवरके बहाने हमें यहाँपर बुलवा कर राजाने हमको मूर्ख तो नहीं बनाया? इत्यादि बातें कह कर वे परस्पर एक दूसरेका मन उत्तेजित करने लगे।

इसी समय महाराज वीरधवलकी आज्ञासे एक राजपुरुषने खड़े होकर निवेदन किया। दुर्धर बाहुबल धारण करनेवाले राजा महाराजा और राजकुमारो! आप सावधान होकर सुनें, यह जो आप लोगोंके सामने वज्रसार नामक धनुष रक्खा है। इसपर लीला पूर्वक प्रत्यंचा चढ़ाकर, दृढ़ नाराचके एक ही प्रहारसे दो हात प्रमाण इस स्तंभके अग्र भागको भेद कर, जो बलवान राजा या राजकुमार इसके दो हिस्से कर देगा वही कहींसे भी इसी समय प्रगट होनेवाली राजकुमारी मलया-

सुन्दरीका पाणिग्रहण करेगा, इस तरह हमें हमारी गोत्र देवीने कहा हुआ है। इसलिये हे सामर्थ्यवान् राजकुमारो ! आप इस स्तंभको भेदन करनेका प्रयत्न करें। उस राजपुरुषके वचनोंसे प्रेरित हो महान् उत्साही लाट देशका नरेश खड़ा हुआ, परन्तु धनुष्य की दुर्धर्षता देख हिम्मत हारकर वापिस अपने आसनपर बैठ गया।

चारणकी प्रेरणासे चौल देशके राजकुमारने अपने आसनसे उठकर जमीनपर पैर तो रक्खा परन्तु वज्रसार धनुषकी उत्कटता देखकर उसके मुखपर ग्लानि छा गई अतः सबकी हँसी पूर्वक उसे वापिस अपने स्थान पर बैठ जाना पड़ा।

आमर्षसे उठा हुआ गौड़ देशका राजा धनुषको हाथमें उठाते ही उसके बोजसे जमीन पर गिर पड़ा, यह देख सभामें बैठे हुए समस्त राजकुमार तालियां बजाने लगे। इससे शर्मिन्दा होकर गौड़देशके नरेशको भी नींचा मुँह कर अपने स्थान पर बैठजाना पड़ा।

कर्नाटक देशके राजकुमारने जोशमें आकर धनुषको उठा तो लिया, परन्तु उसपर बाण चढ़ातेही वह झुककर जमीन पर गिर गया। इस प्रकार बहुतसे राजा व राजकुमारोंका अपमान देख कितने एकतो अपने आसनसे उठे तक नहीं। कितनेही लक्ष्यसे भ्रष्ट हुए, कईने स्तंभपर

बाणभी मारा परन्तु स्तंभके दोभाग न हुए। अनेक राज कुमार अपने उद्देशकी पूर्तिमें असफल हो हारे हुए पलवानके समान लज्जित होकर चुपचाप अपने स्थान पर जा बैठे। यह दृश्य देखकर महाराज वीरधवल चिन्ता समुद्रमें गोते खाने लगा। वह सोच रहा था कि अभी तक कन्या प्रगट नहीं हुई, इससे लोगोंमें मेरी बड़ी भारी हँसी और अपमान होगा।

राजा वीरधवलको चिन्तातुर देख मण्डपमें वीणा बजाने वालोंमेंसे एक युवक वीणा बजाता हुआ उठा और वह स्तंभके पास आ खड़ा हुआ। उसने अपनी वीणा वादनकी कलासे सारी सभाको मोहित कर दिया, फिर धनुषको हाथमें लेकर वह महाराज वीरधवलसे बोला—राजन्! अब आप मेराभी सामर्थ्य देखें' यों कह उसने शीघ्रही धनुषपर बाण चढ़ा दिया। उस वीणा वादकके हाथमें धनुष बाण देखकर सारी सभामें कोलाहल मच गया। बहुतसे मनुष्य उसे धनुष बाण जमीन पर रख देनेके लिए बोलने लगे। परन्तु उसने सबकी बातें सुनी न सुनी कर धनुषपर एक टंकारव किया और उस स्तंभके मर्मको जानने के कारण स्तंभके जोड़ पर जोर से बाण मारा। स्तंभपर बाण लगतेही उसके दोनों संपुट एक साथही खुल गये और उसके बीचसे अकस्मात्

राजकुमारी प्रगट हो गई ।

पाठक महाशय ! आपके दिलमें इस बातको जानने की जिज्ञासा पैदा हुई होगी कि वह वीणा-वादक कौन है ? और इन तमाम कार्योंकी योजना करानेवाला वह सिद्धज्योतिषी जो इस समय गुम है कौन था ? आपकी इस उत्कंठाको शान्त करानेके लिए इस विषय का कुछ थोड़ासा खुलासा हम यहाँ पर दिये देते हैं। वह अन्य कोई नहीं था परन्तु इसी कथानकका मुख्य पात्र महाबल कुमार ही है। कुमारीके हाथकी अंगुठीवाला बासका पूला हाथीके मुखमें देकर आगे चलते हुए अपने आपको छिपानेके लिए महाबलने सिद्ध ज्योतिषीका वेश धारण किया था; और उसी वेषके द्वारा उसने राजाको मृत्युके मुँहसे बचाया था। उस समय सिद्ध ज्योतिषीके सिवा मलया सुन्दरी जीवित है; अन्य किसीके इस वचनपर राजाको विश्वास आना अशक्य था। मलयासुन्दरीको वैसीही दशामें महाराज वीरधवल को सुपूर्द कर देना यह भी उस एकले युवकके लिए हित कर न था और वैसा करना मलयासुन्दरीके लिए प्रतिष्ठा या गौरव बढ़ानेवाली बात न थी। इत्यादि अनेक बातों-पर पूर्वापर विचार कर समयानुसार उचित समझकर ही राजकुमारने सिद्धज्योतिषीका रूपधारण किया था।

अपना वह प्रपंच प्रगट न हो या उस परिस्थितिमें रहने से राजकुमारीका पाणिग्रहण करना कठिन होगा इस कारण अब वह स्वयंवर मंडपमेंसे गुम होकर और दिव्य प्रभाववाली गुटिकाके प्रयोगसे अपना रूप परिवर्तन कर वीणा बजानेवालेके वेषमें मंडपमें आ बैठा था । दूसरे अन्य किसी रूपमें उसे सभामें स्थान मिलना मुश्किल था । तथा उसने राजकुमारीके साथ प्रथमसे ही यह संकेत भी किया हुआ था कि जब मैं वीणा बजाऊँ तब तुम यंत्र प्रयोगसे लगाई हुई अन्दरकी कीलको खींच लेना । इससे स्तंभकी दोनों फाड़ें स्वयं खुल जायेंगी । इत्यादि कारणोंसे उसे वीणा वादकका वेष धारण करना पड़ा था । साथमें कुछभी परिवार न होनेके कारण अनेक राजकुमारोंसे भरे हुए स्वयंवर मंडपमें एकाकी असली रूपमें प्रगट होना योग्य भी न था ।

मलयासुन्दरीको देखकर सारी राजसभा आश्चर्यमें पड़गई । उसके शरीरपर कपूर, चंदन, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थोंका विलेपन किया हुआ था । सुन्दरवस्त्र और दिव्य अलंकार पहने हुए थे । उसके वक्षस्थल पर लक्ष्मीपुंजहार शोभ रहा था । मुखमें पानका बीड़ा और दहने हाथमें वरमाला धारण की हुई थी । मलयासुन्दरी को अकस्मात् इस अलंकृत अवस्थामें देख महाराज वीर-

धवल और रानी चंपकमालाके हर्षका पार न रहा। महाराज वीरधवल हर्षके आवेशमें राजकुमारीके नजदीक आ उत्सुकतासे पूछने लगा–'प्यारी, पुत्री मलया! तू इस काष्ठ स्तंभमें कब और किस तरह घुल गई थी?

शुभाशुभ कर्मके परिणामको जाननेवाली और इसी कारण पिताको नहीं परन्तु अपने ही अशुभकर्म को दोष देनेवाली मलयासुन्दरीने पिताकी ओर स्नेहभरी दृष्टि से देखते हुए उत्तर दिया–'पिताजी! जिसकी कृपासे मैं जीवित रही हूँ वह कुलदेवीही इस बातको जानती है।"

कुमारीको पहलेके समान ही बोलती हुई देख तमाम राजकुटुम्ब उसके पास आकर प्रेम गर्भित शब्दोंमें कहने लगा–"कुमारी! हम तुम्हें यादही करते थे कि क्या हम इन नेत्रोंसे अब फिर तुम्हारा दर्शन कर सकेंगे? आज अकस्मात्‌ही आशा लगाये हुए चातकको शान्ति देनेवाले मेघके समान तुम्हारा दर्शन बड़े पुण्यसे प्राप्त हुआ है।

चंपकमाला–(हर्षके अश्रु पूर्णनेत्रोंसे) 'प्यारी पुत्री! मैं तुम्हारी माता होनेपरभी सचमुच इस समय वैरनके समान निकली। बेटी! ऐसा घोर दुःख तुमने कैसे सहन किया होगा? निर्दोष पुत्री! अपने अज्ञानी माता पिता के इस घोर अपराधको क्षमा करना।"

राजा—"विनीत पुत्री ! तुझे अन्धकूपमें पड़तेही हमारी कुलदेवीने अधर धारण कर अपने पास रक्खी होगी, तुझे योग्य वरकी प्राप्ति हो इस हेतुसे राजकुमारों के बलकी परीक्षाके लिये इस स्तंभमें रक्खा हो ऐसा मालूम होता है। कनकवतीके पाससे यह लक्ष्मीपुंज हार वापिस लेकर तेरे गलेमें पहिना, दिव्य वस्त्रोंसे शृंगारित कर हाथमें वरमाला देनेपूर्वक उस कुलदेवीने ही तुझे विभूषित किया मालूम होता है। बेटी ! जिस काष्ठस्तंभके भीतरसे तू प्रगट हुई है यह दिव्य स्तंभ इस पाणिग्रहण महोत्सवके प्रसंग पर हमें आज़ही प्राप्त हुआ है। यह तमाम वृत्तान्त हमें एक सिद्धज्योतिषीने बतलाया था, परन्तु हमारे कुलकी रक्षा करनेवाली कुल-देवीने हमें आज तक कभी स्वप्नमें भी यह बात नहीं जनाई। न जाने इसका क्या कारण होगा ? कदाचित् संभव है उस सिद्ध ज्योतिषीके रूपमें ही कुलदेवीने हमारी सहाय की हो।

मंत्री ! सिद्धज्योतिषीकी तमाम बातें सिद्धही हुईं। परन्तु एकही बात मेरे हृदयमें खटकती है। उसने कहा था—'राजकुमारीका पाणिग्रहण महाराज शूरपालका पुत्र महाबल कुमार करेगा यही बात अन्यथा प्रतीत होती है। हमारी की हुई प्रतिज्ञाके अनुसार ऐसे इस महान् और

दिव्य स्तंभको इस तेजस्वी वीणा बजानेवाले युवकने विदारित किया है, इस लिये कुमारीका पतिभी यही होना चाहिये। महाराज वीरधवलके इन अन्तिम वचनोंको उनके पासही खड़ा हुआ महाबल ध्यान पूर्वक सुन रहा था। इस समय स्तंभ संपुटके बीच खड़ी हुई मलयासुंदरी के पास कई दासी आ पहुँचीं और उन्होंने मलयासुन्दरी को सहारा दिया।" आगे बढ़कर मलयासुन्दरी बोली–"दासी! कलानिधान वह वीरपुरुष कहाँ है? जिसने मेरे पिताके दुःखके साथ इस स्तंभको विदारण किया है। मैं उसके गलेमें वरमाला पहनाऊंगी। मलयासुंदरीकी धायमाता वेगवतीने नजदीकमें आकर स्तंभको विदारण करनेवाले उस वीर युवककी ओर इशारा किया। प्रेमपूर्ण नेत्रोंसे निहारती हुई, अनेक राजकुमारोंके मनोरथ निष्फल करती हुई, लोगोंके चित्तको संतोष देती हुई, गंधर्वके वेषमें रहे हुये, तथापि कामदेवके समान रूपवान् महाबल कुमारके गलेमें मलयासुंदरीने हर्षित हो, वरमाला पहना दी। मलयासुंदरीके रूपसे चकित हो, और गांधर्व जातिके युवकके गलेमें वरमाला आरोपित होनेसे पराभव पाए हुए राजकुमार परस्पर कहने लगे–'देखो! इस विदग्धा राजकुमारीकी कैसी अधम परीक्षा! उत्तम क्षत्रिय वंशके राजकुमारोंको छोड़कर अज्ञात कुलवंशादि

वीणा बजानेवाले साधारण मनुष्यके गलेमें वरमाला डाल दी! इस प्रकार का हम अपना घोर अपमान नहीं सह सकते। हम इस गंधर्वको मारकर भी स्वयंवराको ग्रहण करेंगे। इस तरह विचार कर मारे ईर्षाके वे सबके सब राजकुमार गंधर्वके वेषमें वहाँपर एकले खड़े हुए महाबलकी तरफ़ बढ़ आये। यह देख महाराज वीरधवलने उस युवककी रक्षाके लिये उसके चारों तरफ अपनी सेना खड़ी कर दी।

इस समय महाबल भी स्वयंवरमें रक्खे हुए वज्रसार धनुषको उठाकर उन राजकुमारोंके सामने आ जुटा। महाबलके अमोघ प्रहारोंसे वे तमाम राजकुमार अपने प्राण बचानेके लिए चारो तरफ बिखर गये। उसवक्त स्वयंवर मंडपके प्रसंग पर पृथ्वीस्थानपुरसे स्वाभाविकतया आये हुये एक चारणने ध्यानपूर्वक देखनेसे महाबलको पहचान लिया और वह उच्च स्वरसे बोल उठा—'हे महापराक्रमी सूरपाल नरेशके पुत्र महाबल कुमार! आपकी सदा विजय हो। उस चारणके ये शब्द सुनतेही महाराज वीरधवलकी खुशीका पार न रहा। वह विचारने लगा क्या सचमुच ही गांधर्वके रूपमें यह महाबल कुमारही है! ठीक है साधारण जातिमें उत्पन्न होनेवाले गंधर्व युवकमें ऐसा प्रबल पराक्रम कैसे होसकता है? यह विचार कर शीघ्रही चारणके पास आ राजाने उससे पूछा—'क्या

तू इस कुमारको पहचानता है? चारणने हाथ जोड़ नम्रतासे कहा—'महाराज! मेरे कथनमें जराभी संदेह नहीं, मैंने बचपनसेही इन्हींके राजकुलमें वृद्धिपाई है। सचमुचही महाराज सूरपालका पुत्र यह महबल कुमार है। राजा हर्षपूर्वक बोल उठा—'अहो! अकस्मात् यह अनभ्रावृष्टि हुई! जो कार्य मनसे भी दुष्कर प्रतीत होता था वह इस समय प्रत्यक्ष क्रियामें आ गया। सिद्ध ज्योतिषीका कथन तमाम सत्य होगया। सच कहा है-अचल पर्वतोंके चलायमान होनेपरभी ज्ञानवान पुरुषों के वचन अन्यथा नहीं होते। परन्तु यह कुमार अकेलाही कैसे आया होगा? क्या यह अकस्मात् आकाश मार्गसे आ गया? मुझे इस बातको जाननेसेभी अधिक आश्चर्य उस परोपकारी सिद्धज्योतिषीको जाननेका है, जिसके प्रतापसे यह तमाम कार्य सिद्ध हुआ है। उस परोपकारी दिव्य पुरुषका कार्य सिद्ध हुए बाद दर्शनतक भी न हुआ। न जाने वह देव पुरुष हमारी तमाम इच्छायें पूर्णकर कहाँ चला गया?

कुछ देर विचारकर महाराज वीरधवल ने यह निश्चय किया कि इस वक्त इस चिन्ताकी आवश्यकता नहीं। कुछ समयके बाद राजकुमारके मुखसेही यह तमाम बातें सुनूं-गा। इस वक्त जो कार्य नष्ट हो रहा है पहले उसे सुधार-

ना चाहिये । यह सोचकर राजा वीरधवल शीघ्रही युद्धके लिए तैयारी करते हुये उन राजकुमारोंके पास आया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वह वीणा बजानेवाला और कन्याके हाथसे वरमाला पहननेवाला युवक गंधर्व नहीं परन्तु पृथ्वीस्थानपुरके नरेश महाराज सूरपालका पुत्र तेजस्वी महाबल कुमार है । इत्यादि वचनोंसे समझाकर, उन्हें युद्धके प्रसंगसे निवारण किया । फिर वापिस आकर कुमार और राजकुमारी मलयासुन्दरीको भोजन कराया । अन्य स्वजनोंको जिमाकर स्वयंवरमें आये हुए तमाम राजकुमारोंके लियेभी उनके स्थानपर ही भोजनका प्रबंध करा दिया गया

इस शुभ प्रसंगपर सिद्धज्योतिषीको प्रीतिदान देकर प्रसन्न करनेके लिये राजाने उसकी चारों तरफ तलाश कराई । परन्तु उसका कहीं पर भी पता न लगा । इससे राजा यह सोचकर कि वह सचमुचही परोपकारी दिव्य पुरुष था, अब उसके मिलनेकी आशा छोड़ बैठा । अब उसने विधिपूर्वक अपनी कुलदेवकी पूजा कर बन्धुवर्ग को वस्त्राभरणके दानादि द्वारा संतोषित किया । याचक जनोंकोभी दान देनेमें उसने अपनी लक्ष्मीका खूबही उपयोग किया । राजकुमारीके विवाहके हर्षमें नगरमें जगह २ उत्सव मनाया जा रहा था । अनेक प्रकारके

बाजोंकी मधुरध्वनिसे आकाश गूंज रहा था। कहीं पर मधुर स्वरसे गन्धर्व लोगोंका संगीत होरहा था, कहीं पर मारे खुशीके स्त्रियोंका नृत्य होता था, कहीं कोकिल कंठसे सधवा स्त्रियाँ धवलमंगल गा रही थीं। कहींपर भाट चारणोंके जय जय शब्द उच्चारित होरहे थे, अनेक आभूषणोंसे भूषित वे वरवधू कल्पलता और कल्पवृक्षके समान शोभ रहे थे। पाणिग्रहणके समय उज्वल नेपथ्यको धारण करनेवाला वह दम्पती युग्म साक्षात् रति और कामदेवके समान शोभायमान दीख रहा था।

माता पिताने उस नव दम्पतीको आशीर्वाद दिया कि चंद्र और चाँदनीके समान तुम्हारा अविच्छिन्न संयोग कायम रहे। राजाने अपनी सम्पत्तिके अनुसार हाथी, घोड़ा, रथ, हीरा, माणिक, मोति, शस्त्र, और ग्रामादि अनेकानेक वस्तुयें कन्यादान या दहेजमें दीं। विवाह प्रसंग पूर्ण होनेपर हर्षित हुए नवदम्पती एकान्त निवास स्थानमें गये। इस समय राजा वीरधवल कुमारके पास आकर, अपने संशयकी बातें पूछने लगा। "राजकुमार! आप अपने शहरसे स्वयंवरके प्रसंगपर अकस्मात् ही एकाकी किस तरह आ पहुँचे ?"

अपनी प्रियाके सन्मुख देखते हुये, पूर्वमें परस्पर संकेत

किये मुजब कुमारने उत्तर दिया--"महाराज ! मुझे पृथ्वी स्थानसे उठाकर किसी देवीने यहाँपर अकस्मात् लाकर रख दिया है ।" यह सुन राजा वीरधवल कुछ गर्दन हिलाते हुये बोल उठा—"आपका कहना सच है; यह सब कार्य हमारी कुलदेवीका ही किया मालूम होता है ।"

महाबल—"महाराज ! मेरे वियोगको न सहन करनेवाले मेरे मातापिता विरह दुःखसे दुःखित हुये मेरीचारों तरफ तलाश करते होंगे । अति स्नेहित हृदयवाले माता पिताकी सेवामें यदि मैं बारह प्रहरके अन्दर न पहुँच सका तो सचमुचही वे मेरे वियोगसे प्राणत्याग कर देंगें । इस लिये आप कृपाकर, मुझे जल्दी विदा करें । यदि मैं प्रति-पदाके दिन सूर्योदयसे पहले पृथ्वीस्थानपुर पहुँच जाऊं-गा तो मुझे अपने पूज्य माता पिताका मिलाप हो सकेगा; अन्यथा उनका मिलना असंभवसा मालूम होता है ।"

राजा—"कुमार ! आपको जराभी चिन्ता न करनी चाहिये, आपकी तमाम चितायें मेरे शिरपर हैं । पृथ्वी स्थानपुर यहांसे बासठ योजन है अतः आप रातके प्रथम पहर तक सुखपूर्वक यहाँ रहें; तबतक मैं आपके लिये एक उत्तम जातिकी और अतिवेगसे चलनेवाली सांडनी तैयार कराता हूँ, तथा कोपायमान हुये उन राजकुमारोंको भी सत्कारित कर विदा कर आता हूँ । यों कहकर महा-

राज वीरधवल वहांसे चला गया ।

महाबल—'प्रिये ! आज हमारा इच्छित कार्य सिद्ध हुआ । तुम्हारे समक्ष की हुई प्रतिज्ञा आज जनताके समक्ष तुम्हारे पिताकी सम्मति पूर्वक पाणिग्रहण करनेसे पूर्ण हुई । परन्तु पृथ्वीस्थानपुर जाकर, अपनी माताको हार देनेकी की हुई प्रतिज्ञा अभी सफल नहीं हुई, वह पूर्ण होनेपरही हमें शान्ति और आनन्दका समय मिलेगा । कल हम भट्टारिकाके मंदिरमें मिले थे, परन्तु अपने अपने कार्यकी चिन्ता होनेसे दो दिनमें किये हुये कार्य सम्बन्धी वार्तालाप करनेका विशेष समय नहीं मिला । इस समय महाराज भी हमारे प्रयाणकी तैयारी कराने गये हैं; इसलिये अब एकांतमें उन बातोंको जानना चाहिये, महाबल कुमार इसके आगे कुछ कहनाही चाहता था इतनेमें ही वहाँपर मलयासुन्दरीकी धायमाता वेगवती आ पहुँची । उसने मलयासुन्दरीके पास आकर पूछा—'बेटी मलया ! सच कह इस घटनाका क्या रहस्य है ? क्या सचमुच ही यह देवकर्तव्य है या कुछ बुद्धि प्रयोग द्वारा रचा हुआ अन्य प्रपंच है ?''

मलया०—स्वामिन् ! मेरे गुप्त रहस्यको जानने वाली और मातासेभी बढ़कर मुझपर अतिप्रेम रखने वाली यह मेरी धायमाता है; इसलिये आप जराभी

संकोच न रखकर इस मेरी धाय वेगवतीके समक्ष तमाम वृत्तान्त सुनायें, यह उसे जाननेकी बड़ी उत्सुक है। मलयासुन्दरीके आग्रहसे महाबलने वेगवतीके समक्ष अपना वृत्तान्त सुनाना प्रारम्भ किया-'भट्टारिका देवीके मन्दिरसे अपने अपने कार्यार्थ जुदे हुये थे वहाँतक का वृत्तान्त वेगवतीको सुनाकर उसके बादका हाल मलयासुन्दरीको उद्देशकर महाबल कहने लगा-"प्रिये तुमसे जुदा होकर मैंने तुम्हारे नामांकित अगुंठीको एक घास के पूलेमें देकर वह पूला हाथीको खिला दिया था। फिर श्मशानकी तरफ जाकर सिद्धज्योतिषीके वेष द्वारा राजाका बचाव किया और दूसरे दिन संध्या समय तक मैं राजमहलमें राजाके पासही रहा। संध्याके समय मंत्र साधनका बहाना ले और राजाके पाससे कुछ द्रव्य ले कर राजमहलसे चला गया। बाजारमें जाकर उस द्रव्यसे कुछ आवश्यक बढ़ईके हथियार, कपूर, कस्तूरी चंदन, रंग, और वस्त्रादि खरीद कर मैं भट्टारिका देवी के मन्दिरमें गया। वहाँपर जो काष्ठफाली देखी थीं। उन्हें छीलकर खूब रमणीय बनाया। उनके अन्दर उर्ध्वभागमें यंत्र प्रयोग वाली एक कीलिका लगाई इससमय एक सन्दूक लेकर वहाँपर कितनेक चोर आ पहुँचे, उस सन्दूकको एक चोर सहित मंदिरके पीछे सुरक्षित

रखकर बाकीके तमाम चोर वापिस शहरकी ओर चले गये। बढ़ईके हथियार और अन्य वस्तुयें एक जगह छिपाकर चोरकी संज्ञासे उस चोरको बुलाता हुआ मैं उसके पास गया। मुझेभी चोर समझ कर उस लोभी चोरने मुझसे प्रार्थना की, मैं इस सन्दूकका ताला नहीं तोड़ सकता; इसलिये कृपाकर किसी तरह आप इसका ताला खुलवा दीजिए। मैंने उसका ताला खोल दिया। उसने संदूकमेंसे सार सार वस्तुयें निकाल कर एक पुटलिया बाँधली। उस हीन सत्व चोरने मुझे फिरसे कहा हे महानुभाव! यदि मैं यहाँसे चला जाऊंगा तो मेरे पीछे पैर पहचानते हुए चोर या राज पुरुष मुझे पकड़ लेंगे, इसलिए कृपाकर आप मेरे बचावका कोई उपाय बतलावें।

मैंने उसके बचाव के लिए भट्टारिकाके मन्दिरके शिखर परका ऊपरी पत्थर निकाल कर उस पुटलिया सहित चोरको उसके अन्दर ढकेल कर ऊपर उसी शिला को ढक दिया। फिर मन्दिरके नजदीक रहे हुए वट-वृक्षपर चढ़कर, मैं तुम्हारे आगमनकी राह देखने लगा, इतनेहीमें अकस्मात् उस वटवृक्षकी खोकरकी ओर मेरी दृष्टि पड़ी। उस खोकरमें मुझे कितनेएक वस्त्र और अलं-कारादि देख पड़े। तालाश करने पर मालूम हुआ कि

वे वस्त्रालंकारादि मेरीही वस्तुयें थीं। कुछ दिन पहले जिस देवीने मेरे वस्त्राभरण हरन कर लिए थे उसीने ये यहाँ लाकर रक्खे होंगे यह समझकर वे वस्तुयें मैंने अपने कबजे कर लीं। फिर जब मैंने रास्तेकी तरफ दृष्टि घुमाई तो उन्मार्गसे आते हुए तुम्हे देखा। फिर शीघ्रही वड़से नीचे उतर मैं तुम्हें आमिला। उस रोज का यही मेरा वृत्तांत है। प्रियकान्ते! अब तुमभी अपना हाल सुनाओ, तुमने किस तरह अपना कार्य किया!

मलया०—"प्राणनाथ! उस दिन आपकी शिक्षाको हृदयमें धारण कर मैं शीघ्र ही शहरमें आई, मगधावेश्या का मकान पूछते हुए और उसकी तलाशके लिए शहर में फिरते हुए, मैंने उसे एक मन्दिरमें पाया। एक किसी चालाक धूर्तने उसे महासंकटमें फँसा रक्खा था, इससे वह वहाँसे आगे पीछे न जा सकती थी। उसके दुःख का कारण पूछने पर निश्वास डालते हुए उसने उत्तर दिया—'हे सत्पुरुष? मैं तुम्हें अपने दुःखकी क्या बात सुनाऊं? मेरी बुद्धि कुंठित हो गई है। मैं अपने मकान के आँगनमें बैठी थी उस समय कहींसे फिरता हुआ यह धूर्त मनुष्य मेरे पास आ बैठा। मुझे यह मालूम न था कि यह मनुष्य इतना धूर्त है। मैंने हँसीमें इससे कहा—"तू मेरा शरीर संवाहन कर, मैं तुझे कुछ

दूँगी। यह मनुष्य शरीर सुश्रुषाकी क्रियामें बड़ा निपुण निकला। इसने मेरे शरीरको संमर्दित कर मेरी तमाम थकावटको दूर कर दिया। मैंने खुश होकर इसे भोजन करनेके लिए कहा' यह बोला—'मुझे भोजनकी आवश्यकता नहीं है, तुमने मुझे कुछ देनेके लिए कहा था। इसलिए मुझे अब कुछ दो। मैंने इसे अच्छे वस्त्र, धन, इत्यादि देना चाहा; परन्तु यह धूर्त कुछभी न लेकर मेरी जबानसे निकले हुए 'कुछ दूंगी' इस शब्दको पकड़ कर मुझसे कुछ माँगता है। परन्तु मैं नहीं समझती कि कुछ किस वस्तुका नाम है? इसी कारण यह न तो खुद जाता है और न ही मुझे यहाँसे जाने देता है। प्रिय स्वामिन्! यह दशा देख मैंने विचार किया कि वेश्या इस वक्त आपत्तिमें फँसी हुई है। यदि मैं इस संकटसे इसका उद्धार करूं तो अवश्यही मेरा निर्धारित कार्य जल्दी सिद्ध होगा। यह सोच कर मैंने मगधाको अपने पास बुला उसके कानमें एक बात सुनाई। फिर मैंने उन दोनोंसे कहा—'जाओ इस समय तुम दोनों भोजन करो और तीसरे पहर मेरे पास आना मैं अवश्यही तुम्हारे विवादका फैसला कर दूँगा।

महाबल—"प्यारी! उनका यह विवाद सचमुचही बड़ा विषम था। तुमने किसतरह इसका समाधान किया?

मलया—स्वामिन् ! सो मैं आपको सुनाती हूँ । मैं वहाँ तकके मार्ग परिश्रमसे कुछ थक गई थी अतः मैं वहाँ पर ही सो गई । तीसरे पहर वे दोनों ही मेरे पास आगये । मगधाने मुझे उठाया । मैं गुप्तरीतिसे उससे देव मन्दिरमें एक घड़ा रखवाया और बहुतसे लोगों को साक्षी रखकर कहा—देखो भाई ! मैं अब तुम्हारे सामने इस मनुष्यको कुछ दिलाता हूँ । यह अपने वचनसे पीछे न फिर जाय इसलिये इस मेरे किये हुये इन्साफमें आप लोग साक्षी रहें । यह बात उस धूर्तने भी उपस्थित जनताके समक्ष अंगीकार करली । इसबात पर लोगोंको भी बड़ा आश्चर्य था कि देखें यह नव-युवक इसे 'कुछ देकर' किसतरह फैसला करता है ? मेरा इशारा पाकर मगधाने उसे कहा कि इस मन्दिरके उस कोनेमें एक घड़ा रक्खा है; उसमें एक चीज पड़ी है । उसे तुम ले आओ, फिर तुझे कुछ दिया जायगा । धूर्तने वहाँ जाकर घड़ेका ढकना उठाकर उसमें हाथ डाला । परन्तु तुरन्त ही फुंकार मारता हुआ सर्प उसके हाथको चिपट गया । तत्काल ही उसने घड़ेसे अपना हाथ पीछे खींच लिया । और चिल्लाकर वह बोल उठा अरे ! इसमें तो 'कुछ' है ? यह सुन मगधाने हर्ष प्रास करते हुये कहा—'इसमें तेरे लिये ही कुछ रक्खा

हुआ है। और इस कुछको तू ग्रहण करके अपने घर ले जा। अब मेरे तेरे बीच लेने देनेका कुछ सम्बन्ध नहीं रहा।' यह देख खुश होकर तमाम लोग हँसकर बोले-"वाहरे धूर्त! वस्त्र, धन न लेकर, तूने यह अपने कर्तव्यके अनुसार अच्छा कुछ लिया? उस धूर्त को सांपने डस लिया था इसलिये उसका विष उतारने के लिये उसे तोतला देवीके मन्दिर पर ले जाया गया और मुझे साथ लेकर मगधा अपने मकान पर आगई।

उसके गृहद्वारमें प्रवेश करते ही कुछ आश्चर्यपूर्वक मैंने मगधासे कहा-'मगधा! मैं तुम्हारे घरमें प्रवेश न करूँगा, क्योंकि मुझे मालूम होता है, तुम्हारे घर में कोई भी राजद्रोही मनुष्य छिपा हुआ है। मेरे इन शब्दों से भयभ्रांत हो अनेक प्रकारके तर्कवितर्क करती हुई मगधा मेरे पैरोंमें झुक गई। और हाथ जोड़ कर बोली-'हे भद्र पुरुष! आपने सब कुछ अपने ज्ञानबलसे समझ लिया है, परन्तु कृपाकर आप यह बात अन्य किसीके सामने न करें। राजाकी रानी कनकवती जिसने कपट द्वारा राजाकी निर्दोष पुत्रीको कल जानसे मरवा दिया, उसका कपट प्रगट होनेसे उसे पकड़नेके लिये शहरमें चारों तरफ राजपुरुष घूम रहे हैं। बचपनके स्नेहके कारण वह पिछली रातमें छिपकर मेरे घर

आकर रही है। हे सत्पुरुष ! किसी भी उपायसे इस धधकती हुई आगको आप मेरे घर से बाहर निकालें इससे मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगी। मैंने कहा-'यदि मैं इस समय उसे तेरे मकानसे बाहर निकाल दूं तो इसमें भयंकर परिणाम उपस्थित होगा। बाहर निकले बाद अगर उसे किसी राजपुरुषने देख पाया तो उसके साथ ही हम सबको महान् संकटमें पड़ना होगा। तथापि तेरा विशेष आग्रह है तो मैं कुछ ऐसा उपाय करूंगा कि जिससे तेरे घरसे वह स्वयंही चली जाय। इस कार्यके लिये मुझे आज रातको एकान्त में उसके साथ मिलाना। यह सुनकर मगधा बड़ी खुश हुई। और भावभक्ति पूर्वक मुझे भोजन करा रातमें उसने कनकवतीसे मेरी भेट कराई, मुझे पुरुष रूपमें देखकर उसका हृदय कामवासनासे परिपूर्ण हो गया। वह बारम्बार मेरे सन्मुख कटाक्ष करती हुई, निर्लज्जतासे मुझे विषय प्रार्थना करने लगी। मैंने उससे कहा--भद्रे ! मेरा एक अति प्रियमित्र है, वह रूपमें साक्षात कामदेवके जैसा है, और उसे तुम्हारे जैसी स्त्रीकी चाहना भी है। किसी कार्यके लिए वह आज गाँव गया हुआ है। उसने मेरे साथ संकेत किया है कि आगामी रात्रिको गोलानदीके किनारे पर भट्टारिका देवीके मन्दिरमें मिलूँगा। इसलिये अगर

तुम्हारी मर्जी हो तो तुम वहाँपर आना, वहाँ तुम दोनों का अच्छा संयोग मिल जायगा। कदाचित् किये हुए संकेतानुसार वह वहाँपर न भी आया तो फिर हमतुम दोनों तो हैं ही।

कनकवतीने मुझसे पूछा-आप कौन हैं? और यहाँ किसलिए आये हैं? मैंने कहा हम क्षत्रियपुत्र हैं और देशान्तर जानेके लिये घरसे निकले हैं। रास्तेमें यह शहर देखनेके लिये मैं यहाँ ठहर गया हूँ। मेरा कथन सत्य समझकर मेरे मित्रसे मिलनेके लिये उसने उत्सुकता बतलाई। अपने किये हुए कर्मका वर्णन करते हुये और उस कृत्यके कारण अपने ऊपर पड़े हुए संकट सम्बन्धी वार्तालापमें उसने सारी रात्रि व्यतीत कर दी। सुबह होनेपर मैंने उससे पूछा—सुन्दरी! तुम्हारे पास कुछ वस्त्राभूषणादि भी हैं या नहीं? मुझपर विश्वास और प्रीति रखती हुई कनकवतीने अपनी तमाम वस्तुयें मेरे पास लाकर रख दीं। तलाश करनेपर मुझे उनमें हार दिखाई न दिया। अतः मैंने फिर पूछा—क्या इतनी ही वस्तु तुम्हारे पास हैं? या और भी कुछ है? उसने कहा लक्ष्मीपुंज नामक एक हार और है, वह मैंने गुप्त रीति से एक जगह जमीनमें दबाया हुआ है। वह स्थान पूछने पर वह बोली—यहाँसे कुछ दूरीपर एक शून्य खण्ड-

हर घर है, उसके पास एक कीर्तिस्तंभ है, उसकी दीवारमें मैंने उस हारको छिपाके रक्खा है। वहाँपर मैं दिनमें तो जाही नहीं सकती, रातमें भी राजपुरुषोंके भयसे बड़ी कठिनतासे वहाँ जाया जा सकता है। यदि मेरी बत-लाई हुई निशानीके अनुसार वहाँ जाकर आप उस हार को ला सकते हैं तो ले आइये फिर हम दोनों ही यहाँ से चले जायेंगे। अगर आप नहीं लासकें तो आज ही संध्यासमय मैं स्वयं वहाँ जाकर उस हारको ले आऊं-गी। इस प्रकार वार्तालाप कर मैं उसके पाससे उठकर कमरेसे बाहर आगई।

मुझसे मगधाने पूछा—'सत्पुरुष ! मेरे घरसे बाहर निकालनेका उसके लिये कोई उपाय किया ? मैंने उत्तर दिया-भद्रे ! तेरी प्रार्थनासे मैंने ऐसा उपाय किया है अगर तू उसे जानेसे रोकेगी भी तथापि अब वह तेरे घर में न रहेगी। हर्षित हो मगधा वेश्याने मेरे लिये भोजन तैयार किया।

इधर कनकवतीकी बतलाई हुई निशानीके अनुसार मैंने दिनमें वहाँ जाकर बहुत ही तलाश की परन्तु मुझे हारका पता न लगा, इस लिये वापिस मगधाके घर आकर मैंने कनकवतीसे कहा कि मुझे ढूंढने पर भी वहां हार नहीं मिला। अतः रातको हार लेकर तुम गोला नदीके

किनारेपर भट्टारिकादेवीके मंदिरमें मुझे आ मिलो। यों कहकर मगधासे विदा हो मैं वहाँसे अपने सांकेतिक स्थान की तरफ चल पड़ी। परन्तु मैं रास्तेमें यहाँ आनेका मार्ग भूल जानेके कारण उन्मार्गसे चलकर पुण्ययोगसे उस बड़ के नीचे आपसे आ मिली।

अब मलयासुन्दरीने अपनी धायमाताकी तरफ नज़र कर इसके आगेका वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया। क्योंकि महाबल तो उस वृत्तान्तको जानता ही था।

वेगवती! मैंने अपने स्वामीसे आकर तुरन्त ही यह बात कही कि आपको अपना पति बनानेके लिये कनकवती लक्ष्मीपुंज हार लेकर अभी आनेवाली है। मेरे स्वामीने उत्तर दिया, प्रिये! यह तुम क्या बात कहती हो? ऐसी नीच औरतके साथ बात करना भी मेरे लिये उचित नहीं तब फिर उसे पत्नी बनानेकी तो बातही क्या? यों कहकर कनकवतीको दूरसे आती देख ये वहाँ से उठकर मंदिरके दूसरी तरफ छिपकर खड़े हो गए। कनकवती आ पहुँची, मैंने उसे प्रेमसे बुलाया और कहा—'भद्रे! इस समय बोलचाल किएसिवा मौन रहकर खड़ी रहो' क्योंकि यहाँपर चोर फिर रहे हैं। तेरे पास जो कुछ वस्तु हो वह मुझे सौंप दे। जिसको मैं हिफाजतसे सुरक्षित रक्खूँ। उसे मुझपर विश्वास तो था ही अतः

उसने अपने पासका सब कुछ मुझे दे दिया। मैंने उस पोटलीको देखकर उसमेंसे लक्ष्मीपुंज हार और एक कंचुक निकाल लिया। शेष तमाम चीजें उस चोरकी पड़ी हुई खाली सन्दूकमें डाल दीं। मैंने फिरसे कनकवतीसे कहा—'भद्रे! जब तक यहाँपर चोरोंका संचार मालूम होता है तबतक तुम इस संदूकमें बैठ जाओ। क्रूर हृदया परन्तु कायर स्वभाववाली कनकवती मेरी बात मंजूर कर उस संदूकमें बैठ गई। उसके अन्दर बैठते ही मैंने उस संदूकको बन्द कर उसमें ताला लगा दिया। इसके बाद मैंने अपने स्वामीको बुलाया, हम दोनोंने उस संदूकको उठाकर नज़दीकमें बहने वाली गोलानदीमें बहा दिया। फिर मेरे मस्तकपर किया हुआ जो तिलक था वह मेरे स्वामीने अपने थूकसे मिटा दिया, इससे तत्काल ही मेरा स्वाभाविक स्वरूप बनगया। अपने स्वामीकी आज्ञा पाकर मैंने अपने शरीर पर चंदनादिसे विलेपन कर उस बड़ वृक्षकी खोकरमें मिले हुए कुंडल वगैरह आभूषणों को धारण किया। कनकवतीके पाससे प्राप्त किया हुआ लक्ष्मीपुंज हार और कंचुक पहन कर तथा हाथमें वरमाला ले मैं उस काष्ठस्तंभके तलमें खड़ी होगई। मुझे इन्होंने समझा दिया था कि तू धीरज रखना यह तमाम काम इस तरह किया जयगा। जब मैं स्वयं-

वरमंडपमें वीणा बजाऊंगा तब तूने फालियोंके बीच लगाई हुई इस कीलीको जोरसे खींच लेना इत्यादि शिक्षा देकर, अधिक समय तक ठंडक रहे ऐसी वस्तु मेरे पास रखके और अन्दर पवन आने जानेके लिए स्तंभके ऊपरी हिस्सेमें दो बारीकसे सुराक रख उस फालीके साथ इन्होंने दूसरी फाली जोड़ दी। फिर मैंने अन्दरकी कीलिका लगा ली। इसके बाद क्या हुआ मुझे मालूम नहीं।

महाबल—'प्रिये! इसके बाद उस स्तंभको मैंने ऐसे सुन्दर रंग-बिरंगोंसे चित्रित किया कि जिससे उसके बीचकी सन्धियाँ बिलकुल मालूम न दें। इस समय मंदिरके पीछे उस संदूकको रखकर शहरमें गये हुए चोर कितना एक चोरीका माल लेकर वापिस आए। परन्तु वहाँपर उस रक्षक चोर सहित सन्दूक न मिलने पर वे उसकी खोजमें चारों तरफ घूमने लगे। मैंने उन्हें चोरोंके संकेतानुसार बुलाया, वे मेरे पास आकर विश्वस्त मनुष्यके समान बोले कि यहांपर सन्दूक सहित एक मनुष्य था वह कहाँ गया? मैंने उन्हें पान देते हुए कहा—'तुम इस स्तंभको उठाकर पूर्व दिशा वाले शहरके दरवाजेके पास ले चलो तो मैं तुम्हें उस मनुष्यका पता बतलाऊंगा। उन्होंने मेरीबात मंजूर कर और लाया हुआ चोरीका माल नदी किनारे रख उस स्तंभको उठाया। मेरे कथनानुसार

शहरके पूर्व दरवाजेके पास लाकर स्तंभको खड़ा कर दिया। अब फिर उन्होंने उस चोरके विषयमें पूछा। मैंने सोचा-उस विचारेको मंदिरके शिखरमें बतला दिया तो ये उसे जानसे मार डालेंगे। यह समझकर मैंने उन्हें असत्य उत्तर दिया "भाई! वह चोर तो सन्दूक का ताला तोड़ कर उसमेंसे माल निकाल एक पोटलीमें बाँधकर सन्दूकको नदीमें बहा और स्वयं उसपर बैठकर तैरता हुआ नीचेकी तरफ चला गया है।" चोर बोले-आपका कथन सत्य ही मालूम होता है क्योंकि वह रात भर सन्दूकपर बैठकर नदीमार्गसे गमन करेगा और प्रातःकाल होते ही उस धनकी पुटलियाको लेकर कहींपर चला जायगा। उनमें से एक बोला—भले वह कहीं भी जाय फिरभी तो कभी मिलेगा न? यों बोलते हुए वे चोर मेरे पाससे वापिस चले गये। मैंने सावधान रह रातभर उस स्तंभकी रक्षा की। जब प्रातःकाल होनेपर स्तंभकी खोजमें उस तरफ आते हुए राजपुरुषोंको देखा तब मैं निश्चिन्त होकर गुप्त रीतिसे चलकर शहरमें राजासे आ मिला। इसके बादका वृत्तान्त तुम्हें वेगवती सुनायगी, क्योंकि वह सर्वजन-प्रसिद्ध है।" प्रिये! मुझे अब उस चोरकी बात याद आई, अगर उसे मंदिरके शिखरमें से बाहर न निकाला जाय तो फिर हमारे गए बाद उसकी क्या दशा होगी?

वह विचारा अन्दर ही मर जायगा और उसका दोष मुझे ही लगेगा, इसलिए तुम यहाँ रहो मैं उस चोरको बाहर निकाल कर तुरन्त ही वापिस आता हूँ।"

मलया—"प्राणनाथ! आप मुझे ऐसी आज्ञा न करें। मैं अब आपसे जुदी न रहूँगी। अब आप पहलेके जैसे किसी तरहका बहाना निकालकर मुझे छोड़कर नहीं जा सकते। अब तो मेरे माता पिताने ही आपको मेरा जीवन समर्पण कर दिया है। माता वेगवती! यदि हमारे आनेसे पहले यहाँपर पिताजी आ जायँ तो तुम उन्हें कह देना कि मलयासुन्दरीने गोलानदीके किनारे पर रही हुई देवीकी मानता मानी थी, इस लिए वे दोनों वहाँपर नमस्कार करने गए हैं और अभी वापिस आ जायेंगे। वेगवतीको इस प्रकार कहकर मलयासुन्दरी महाबलके निषेध करने पर भी उसके साथ चल पड़ी।

इधर वीरधवल राजाने उन राजकुमारोंके पास जाकर उन्हें खूब समझाया, परन्तु उन्होंने एक न सुनी। उलटा रोषमें आकर वे महाराज वीरधवलको डराने लगे कि प्रातःकाल होनेपर हम तुम्हारे जमाईको मारकर, कन्या को लेकर जायँगे। परन्तु खाली हाथ हम यहाँ से बिलकुल न जायँगे। अब महाराज वीरधवलने उनको समझाना बुझाना छोड़ महलमें आकर महाबल के लिए

तुरन्तही एक शीघ्रगति गामिनी साँढ़नी तैयार कराई। अब जल्दी तैयारी करानेके लिए राजा मलयासुन्दरी के महलमें आया; परन्तु वहाँ आकर, उसने महाबल और मलयासुन्दरीको न पाया। वेगवतीने कहा—वे गोलाके किनारे देवीका दर्शन करने गये हैं। अभी वापिस आयेंगे। राजा उनकी राह देखता हुआ वहाँ ही बैठ गया। राह देखते हुए रात्रिका दूसरा पहर बीता, तीसरा पहर बीता और अन्तमें प्रातःकाल होने आया परन्तु उन दोनोंमेंसे एक भी वापिस न आया। राजा आकुल व्याकुल हो उठा; गोलानदी, भट्टारिकादेवीका मन्दिर इत्यादि सब जगह तलाश करने पर भी उनके कहीं पदचिन्ह तक भी नहीं मिले। प्रातःकालमें महाबल और मलयासुन्दरीके गुमहोनेका समाचार सुन कर वे तमाम राजकुमार निराश होकर अपने २ देशको चले गये।

"कठिन परीक्षा"

न दुख में मन धैर्य तजे कभी, न सुखमें वह हर्ष भजे कभी।
न सतसे जिसका पथ अन्य है, जगतमें वह मानव धन्य है॥

पुत्री और जमाईका पता न लगनेसे महाराज वीरधवलके दुःखका पार न रहा। उन्होंने घुड़सवार और पैदल सिपाही उन दम्पतीकी खोजमें चारोंतरफ दौड़ाये, किन्तु दुर्दैव वश वे फिर फिराकर जैसे गए थे वैसे ही वापिस आए। इससे राजा वीरधवलको तमाम संसार सूना मालूम होने लगा। कलही उनके दुःखका अंत आया था आज फिर उनपर यह नया दुःख आ पड़ा। वे पुत्री और जमाईके वियोग जन्य दुःखसे दुःखित होकर मूर्च्छितसे होगए। इस दुःखको दूर करनेमें मंत्री-सामन्तों की भी बुद्धि कुछ काम न करती थी। कुमारीकी धाय-माता वेगवतीने हाथ जोड़ विनय पूर्वक राजाको धीरज देते हुए कहा--'महाराज! आप धीरज धारण करें, कु-विकल्प करनेसे काम न चलेगा; कदाचित् वे किसीप्रयोगसे पृथ्वीस्थानपुर चले गये हों क्योंकि वहाँ पहुँचनेकी बहुत ही

जल्दी और उत्सुकता मालूम होती थी। इसलिये किसी आदमीको पृथ्वीस्थानपुरको भेजकर यह तमाम समाचार महाराज सूरपालको जनाना चाहिए। यदि वहाँ पर वे न भी पहुंचे होंगे तो पुत्र वात्सल्यसे दुःखित हो वे भी आपके समान सर्वत्र खोज करावेंगे। यह बात सुन राजा वीरधवल धैर्य धारण कर वेगवतीकी बुद्धिकी प्रशंसा करने लगा। उसने देश देशान्तरोंमें उनकी खोज करनेके लिये राजपुरुष भेजे और अपने मलयकेतु नामक राजकुमारको पृथ्वीस्थानपुर महाराज सूरपालके पास भेजा।

एक तरफ तो कृष्ण चतुर्दशीकी घोर अन्धेरी रात, दूसरी तरफ भयानक श्माशानभूमि, पासमें बहती हुई गोला नदीके प्रवाहका कल कल नाद, अपरिचित मार्ग चोरोंका उपद्रव, प्रतिस्पर्धासे वैरी हुये राजकुमारोंका भय, गीदड़, उल्लू, वगैरह निशाचर जानवरोंके घोर शब्द, इत्यादि कारणोंसे नदी तरफका मार्ग भयंकर मालूम होता था।

महाबल—"प्रिये! ऐसी भयानक श्मशानभूमि और अन्धेरी रातमें स्त्रीसहित फिरना यह मेरे लिये लाभदायक नहीं है। इसलिये मेरी इच्छा है कि गुटिका के प्रयोगसे तुम्हारा पुरुषरूप बनाकर निर्भयतासे फिरें।"

मलया—"स्वामिन्! आपकी इच्छामेंही मेरी

इच्छा है। महाबलने तुरन्त ही आमूरसमें गुटिका घिस कर मलयासुंदरीके मस्तक पर तिलक कर दिया। गुटिकाके प्रभावसे पहलेके जैसे ही उसका पुरुषरूप बनगया। अब दोनोंने देवीके मंदिरमें जाकर मंदिरके शिखरमें छिपे हुये चोरको बाहर निकाला; और उसे कह दिया कि कल तेरे साथी तेरी तलाश कर वापिस चले गये। आपने मुझे जीवित और द्रव्यलाभ प्राप्तिमें सहाय की है; आपका मैं यह उपकार कदापि न भूलूंगा। यों कह और नमस्कार कर वह चोर वहाँसे अन्यत्र चला गया। देवीके मंदिरसे वापिस शहरकी तरफ आते हुये जब वे समीपवर्ति वटवृक्षके नीचे आये तब उन्हें उस बड़ पर कुछ आवाजसी सुनाई दी। महाबल बोला—"प्रिये! रात्रिके इस भयानक समय में इस वटवृक्ष पर कोई व्यन्तर देव वार्तालाप करते हुये मालूम होते हैं। हम भी जरासी देर ठहर कर ध्यानपूर्वक सुनें कि ये आपसमें क्या वार्तालाप करते हैं। परन्तु व्यंतरोंमेंसे कोई तुम्हारे गलेका लक्ष्मीपुंज हार न उड़ाले इसलिये यह हारतुम मुझे दे दो। लक्ष्मीपुंज हार लेकर महाबलने अपनी कमर में बांध लिया। फिर गुप्तरीतिसे उस बड़की खोखर में खड़े होकर वे दोनोंजने बड़ी सावधानता पूर्वक व्यन्तर देवों का वार्तालाप सुनने लगे।

एक व्यन्तर ने प्रश्न किया—क्यों भाई ! किसीने पृथ्वीपर आज कोई नयी घटना देखी या सुनी है ?"

दूसरा व्यन्तर—एक जगह एक घटना बननेकी तैयारी है परन्तु वह घटना कल बनेगी और उसका स्थान भी यहाँ से कुछ दूर है ।

तीसरा—"कहो तो सही कहाँपर क्या घटना बनेगी ?

दूसरा—"आप सावधान होकर सुनें, पृथ्वीस्थानपुर के नरेश शूरपाल राजाके एक महाबल नामक कुमार है । उसकी माता रानी पद्मावतीका एकहार किसीने हरण कर लिया है, उसके लिये अपनी माताके समक्ष महाबल ने ऐसी प्रतिज्ञा की है कि यदि पांच दिनके अन्दर मैं उस हारको ढूंढ कर तुम्हें न देदूँ तो अग्निमें प्रवेश कर मर जाऊँगा । इसी तरह की प्रतिज्ञा उसकी माताने भी की है कि यदि पांचवें दिन हार न मिले तो मैं भी जीवित न रहूँगी । हारकी खोज में गये हुये कुमारका अभीतक कोई पता नहीं लगा । और वह प्रतिज्ञावाला पांचवाँ दिन कल सुबह ही होगा । उस अपने कुमार और हारकी खोज न मिलनेसे मरनेके लिये उत्सुक हुई रानीको देखकर ही मैं अब यहाँ आया हूँ । न जाने वह रानी किसतरहसे प्राण देगी । यह भी संभव है कि रानीकी मृत्युसे राजा भी जीवित न रहेगा ।

व्यन्तर देवोंके उपरोक्त वचन सुन राजकुमार महाबल कुतुहल छोड़ चिंतामें मग्न होगया। वह सोचता है कि देवताओंका वचन असत्य नहीं होता। सचमुचही इसकी कथन की हुई घटनाका होना संभवित है। मैं कैसा मूढ़ हूँ प्रतिज्ञा भ्रष्ट होकर, यहाँपर अभीतक विलास कर रहा हूँ और वहाँपर दुःखार्त हो मेरे कुटुम्बका क्षय उपस्थित हो रहा है। इतनेहीमें फिर एक व्यन्तरकी आवाज सुनाई दी। वह बोला—चलो, इस वक्त वहाँ चलकर हमें कौतुक देखना चाहिये। दूसरा व्यन्तर हाँ, यह तो ठीक है। इस घटनाको अवश्य देखनी चाहिये। सबकी सम्मति होनेपर सबने मिलकर हुंकार शब्द बोला और हुंकारके साथही वह वटवृक्ष, कुमार तथा मलयासुन्दरी सहित आकाश मार्गसे उड़ चला। यह हम प्रथम ही लिख चुके हैं कि महाबल और मलयासुन्दरी उस वटवृक्षकी ही खोकर में चुपचाप खड़े होकर व्यन्तरोंका वार्तालाप सुन रहे थे। हवाई जहाजके समान अति वेगसे आकाश मार्ग द्वारा उड़ता हुआ वह वटवृक्ष थोड़ेही समयमें एक छोटेसे पहाड़की मेखलापर आकर स्थिर हुआ। वटवृक्षसे नीचे उतर वे तमाम व्यन्तर गोलानदीके किनारे पर रहे हुये धनंजय नामक यक्षके मंदिरकी तरफ चले गये। महाबल ने गौरसे देखकर इस प्रदेशको पहचान लिया था।

अतः वह मलयासुन्दरीसे बोला—'प्रिये! अभी तक हमारा पुण्य जागृत है। यह बड़ हमारे पृथ्वीस्थान नगरके समीप ही आ पहुँचा है। अब हमें शीघ्रही इस बड़के आश्रयका त्याग करदेना चाहिये। यदि दैवाज्ञासे यह वृक्ष फिर वापिस या कहीं आगे उड़कर चला गया तो फिर न जाने हम किस विषमस्थानमें जा पड़ेंगे। यों कह तुरन्त ही महाबल और मलयासुन्दरी उस बड़की खोकरसे बाहर निकल आये। और नजदीकमें रहे हुये एक केलोंके बगीचेमें जाकर दोनोंने विश्राम पाया। कुछ देर बाद उस वटवृक्षको फिर आकाशमें उड़ता देख महाबल बोला- सुन्दरी! देखो वह वृक्ष फिर वापिस अपने स्थानपर जारहा है। बहुत अच्छा हुआ हम लोग उसकी खोकरसे निकाल यहाँ आ गये। अभी रात बहुत बाकी थी इसलिये निर्भयतासे वे दम्पती केलोंके बगीचेमें बैठकर समय बिता रहे थे। इतनेहीमें करुण स्वरसे रुदन करती हुई किसी एक स्त्रीका शब्द कुमारके कर्णगोचर हुआ। उस स्त्रीका रुदन शब्द सुनकर महाबल बोला—प्रिये! यह किसी दुःखित स्त्रीके विलापका शब्द सुनाई देता है। समर्थ पुरुषोंका यह कर्तव्य है कि वे दुखी जनोंकी सहाय करें। तुम यहाँही रहो, और धीरज रक्खो। मैं इस दुःखिनीको सहाय करके अभी वापिस आता हूँ।

अब यहाँपर किसी प्रकारका डर रखनेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि यह सब हमारे नगरकीही हदका प्रदेश है। मलयासुन्दरी इस बातका कुछ उत्तर न दे सकी, इसलिये उसे वहाँ परही छोड़ दयापूर्ण हृदयवाला महाबल परदुःख दूर करनेके लिए उस रुदनके शब्दानुसार ही उस दिशामें चल पड़ा।

अन्धेरी रात! तेरे कर्तव्य भी तेरेही समान काले होते हैं। तूने चंद्रावतीमें राजा वीरधवलको पुत्री तथा जमाईका वियोगकर संकटमें डाला और अब मलयासुन्दरीको भी तुरन्तही पतिवियोग कराकर दुखके खड्डे में डाल दिया? हे निठुर विधि! तेरीभी अजब गति है! मनुष्य क्या विचारता है और तू उसके विपरीत क्या से क्या कर डालता है? इस समय मानवसंचार रहित अन्धेरी रातमें केलोंके बगीचेमें मलयासुन्दरी पुरुषके रूप में अकेली बैठी है। बारंबार हठ करके पतिकी इच्छाके विरुद्ध उनके साथ जाना योग्य नहीं। यह समझकर ही मलयासुन्दरीने इस समय महाबलके साथ जानेका आग्रह नहीं किया। वह थोड़े समयका वियोग दुख सहकर भी एक दुःखिनी स्त्रीका पतिके द्वारा कष्ट दूर हुआ देखनेके लिये उत्सुक थी। इसी कारण उसने मौन द्वारा अपने पतिको दुखियाका दुख दूर करनेकी सम्मति दी

थी। मेरे स्वामी अभी आयेंगे, वे इस दिशामें गये हैं; इस प्रकार सोच विचार करती हुई महाबलके आगमनकी आशामें टकटकी लगाकर वह उसी तरफ देखती रही। पिछली रात बीत गई, प्रातःकाल होने पर सूर्यदेव भी उदयाचलपर आगया; परन्तु आशा तरंगोंमें डुबकियें खानेवाली मलयासुन्दरीका हृदयेश्वर न आया।

ऐसे अपरिचित जंगलमें मुझे एकली छोड़ न जाने वे कहाँ गये होंगे जो अभी तकभी नहीं आये ? माता पिता को मिलनेकी उत्कंठासे क्या वे शहरमें तो नहीं चले गये होंगे ? इत्यादि संकल्प विकल्प करती हुई मलया सुन्दरीने शहरमें जानेका निश्चय किया। जब वह शहरके दरवाजेके पास पहुँची तब उसे सन्मुख आते हुये शहर कोतवाल मिला। दिव्यवेष और सुन्दररूप देखकर कोतवालने उसका नाम स्थान पूछा, परन्तु पुरुषवेषमें मलयासुन्दरी उसके प्रश्नका उत्तर न देकर सोच विचारमें पड़ गई और घबराये हुए मनुष्यके समान वह चारों तरफ देखने लगी। इससे कोतवालको और भी अधिक वहम पैदा हुआ। उसके पास क्या क्या वस्तुयें हैं यह तलाश करनेपर कानोंमें पहने हुए कुण्डल और शरीर पर धारण किये हुए वस्त्र महाबल कुमारके मालूम हुए यह देख कोतवाल आश्चर्यमें पड़कर विचारने लगा-महाबल

कुमारके वस्त्र और इस युवकके पास ? कोतवाल उसको पकड़कर राजाके पास ले आया। उसका रूप और वेष देख कर राजा आदि सब आश्चर्यमें पड़ गये।

राजा—'कोतवाल ! यह पुरुष कौन है ? इसने पहनी हुई पोशाख महाबल कुमारकी मालूम होती है।

कोतवाल—'महाराज ! यह युवक शहरके दरवाजेमें प्रवेश करते हुए मेरे देखनेमें आया है। इसका नाम स्थान पूछनेपर यह कुछ भी उत्तर नहीं देता।

राजा—'(मलयासुन्दरी के सन्मुख देख) क्यों भाई तू कौन है ? किसका पुत्र है ? यह सुन मलयासुन्दरी विचारमें पड़ी। यदि इस समय मैं अपनी सत्य बात कहूँगी तो राजा आदि किसीभी मनुष्यको उसपर विश्वास न आयेगा, क्योंकि हम दोनोंके मिलाप और विवाहकी घटनाही ऐसी है जो सुननेवाले को असंभवित मालूम हो; तथा इस समय मेरा स्वरूप भी पुरुषका है। इसलिए जबतक मुझे अपने स्वामी का मिलाप न हो तबतक सत्य घटना प्रकाशित न करना चाहिये। जो कुछ मेरे नशीबमें है सो होगा। यह सोचकर उसने कल्पित उत्तर दिया 'मैं महाबल कुमारका प्रियमित्र हूँ, उसीने मुझे यह तमाम वेष दिया है।

सूरपाल—"महाबल कुमार इस समय कहाँ है ?"

म०—"कहीं नजदीकमेंही स्वेच्छा पूर्वक फिरता होगा।

सूरपाल—"कुमार नजदीक में ही हो तो वह अपने कथन किए वचनानुसार हमें क्यों न आ मिले ? कुमार कहीं नजदीकमें नहीं हो सकता। अगर यहाँ नजदीकमें ही होता तो चारों तरफ तलाश कराने परभी उसका पता क्यों न लगता ? खैर, यदि तू मेरे पुत्रका प्रियमित्र है तो इन तमाम मनुष्योंमेंसे कोई भी मनुष्य तुझे क्यों नहीं पहचानता ? यह सुन मलयासुन्दरीने कुछ भी उत्तर न दिया और वह चुपचाप खड़ी रही।

राजासूरपाल मनही मन विचारने लगा--यह संभव होता है कि कुछ दिन पहले कुमारके वस्त्रादि चुराए गये थे, वह सब अलंब पर्वतकी गुफामें रहनेवाले प्रचंड चोर लोहखुराने ही चुराया होगा जिसे कलही मरवा दिया गया है। यह युवक उसीका छोटा भाई या स्नेही अथवा उसके सगे सम्बन्धियोंमेंसे मालूम होता है और उसके वियोग से उदासीन या संभ्रान्त हो उसे देखनेके लिए जहाँ तहाँ फिरता हुआ मालूम होता है। कुमारके कुंडल और वस्त्र भी इसे उस चोरके पाससे ही मिले होंगे, तथा अल्पभाषी और विशेष मौनीपन यह चोरका लक्षण भी इसमें पाया जाता है। यह भी संभव है कि इन चोरोंने मिलकर कहीं

पर कुमारको मारडाला हो ? इस कारण यह मनुष्य भी मेरा दुश्मन ही है। इन विचारोंकी उलझनमें भयभ्रान्त हो राजा सूरपाल बोल उठा-अरे ! कोतवाल ! इस चोरको भी वहाँही लेजाकर जहाँपर कल उस चोरको बाँध मारा है मार डालो। राजाके शब्द सुनकर मलयासुन्दरीका हृदय काँप गया। उसने सोचा दुर्दैववश अब फिर मुझ-पर मरणान्त आपत्तिका घोर बादल आ घिरा। इस संकटका निस्तार कैसे होगा ? धैर्य पानेके लिए इस समय उसने महाबल द्वारा याद कराये उस श्लोकको स्म-रण किया। उसको याद करनेसे उसके हृदयमें धैर्यने प्रवेश किया। वह खुद ही अपने आपको आश्वासन देने लगी। अपने शुभाशुभ कर्मपर निर्भर होकर उसने अपने हृदयमें हिम्मत धारण की।

उसकी शांत और तेजस्वी आकृति देख मंत्री-मंडलपर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। अकस्मात् राजाकी अविचारित प्रचंड आज्ञासे मंत्रीमंडलमें खलबली मच गई। अतः प्रधा-न मंत्री बोला-'महाराज ! इस युवककी ऐसी भद्र और सुन्दर आकृतिसे यह अनुमान नहीं हो सकता कि यह चोर होगा ? इस दिव्य पुरुषने अपराध किया है यह निर्णय जबतक न हो जाय तबतक इसे प्राणदण्डकी शिक्षा देना सर्वथा अनुचित है। तथापि इस विषयमें आपकी भ्रान्ति

दूर न हो सकती हो तो आप इसकी कोई दिव्य परीक्षा ले सकते हैं। यदि उस कठिन परीक्षासे इसका पराभव हुआ तो इसे चोर समझा जाएगा; अगर उस परीक्षामें इसका पराभव न हुआ तो इसे निर्दोष माना जाएगा। इस प्रकार करनेसे जनतामें भी आपका अपवाद न होगा। तुम्हारा कहना यथार्थ है। 'परन्तु इसकी परीक्षा किस तरह की जाय?' मंत्री बोला—'महाराज! एक घड़ेमें सर्प डालकर उसे इसके हाथसे निकलवाया जाय। यदि वह सर्प इसे डसले तो यह सदोष और यदि वह इसे न डसे तो सर्वथा निर्दोष समझना चाहिये। बस इससे बढ़कर कठिन परीक्षा और क्या हो सकती है? यह बात मंजूरकर राजा ने गारुड़िक लोगोंको बुलवाया और अलंब नामक पहाड़की किसी गुफामेंसे एक भयंकर सर्प पकड़ लानेकी आज्ञा दी।

राजाने पुरुषरूपा मलयासुंदरीके पाससे कुमारके वस्त्र और कुंडलादि उतरवा लिये और उसे कोतवालकी निगरानीमें सौंप दिया। ठीक इसी समय राजमहलसे रानी पद्मावतीकी दासी सभामें आकर उदास हो नम्रता पूर्वक राजासे बोली—'महाराज! महारानी पद्मावती आपसे यह प्रार्थना करती हैं कि अभीतक भी कुमारकी कहीं पर खोज नहीं लगी। उसके कथनानुसार आज

पाँचवाँ दिन है : यदि कुमार जीवित रहता तो अवश्य ही अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार वह आज आये-विना न रहता। लक्ष्मीपुंज हारका भी अभी तक कोई समाचार नहीं मिला। जहाँ पर कुमारके अस्तित्वका ही अभाव मालूम होता हो वहाँ हार प्राप्तिकी आशा रखना सर्वथा व्यर्थ है। अपने इकलौते पुत्रके अभावमें मैं प्राण धारण करने के लिये सर्वथा असमर्थ हूँ। मैंने आज तक आपका जो कुछ दुर्विनय या अपराध किया हो उसे आप कृपाकर क्षमा करें। और मुझे अब आज्ञा दें तो अलंब नामक पर्वतके शिखरसे झंपापात कर प्राण त्याग द्वारा मैं अपनी आत्माको शान्ति दूँ। राजा बोला-'दासी! रानीको हिम्मत दो और मेरी तरफसे कहो कि यह दुःसह्य दुःख हम दोनोंको समान ही है। कुमारकी खोजमें मैंने चारों तरफ मनुष्य भेजे हैं। उनके लौटनेतक धीरज रक्खो। कुमारका कुछ भी समाचार अवश्य मिलेगा' क्योंकि आज पाँचवाँ दिन है अगर रात तक कुमारका कुछ भी समाचार न मिला तो कल जैसा योग्य होगा वैसा किया जायगा। दासी! आज इस सुन्दर आकृतिवाले पुरुषके पाससे कुमारके कुंडल और कुछ वस्त्र मिले हैं; संभव है कि इसी प्रकार हार और कुमार भी मिल जायगा। आज इस मनुष्यको दिव्य देकर इसकी परीक्षा करनी है। यह

तमाम समाचार कह रानीको कुमारके ये कुंडल और वस्त्र देना, यों कहकर राजाने कुंडल और वस्त्र दासीको दे दिये। दासीने रणवासमें जाकर वह कुंडल और वस्त्र महारानी पद्मावतीको दे दिये। उन्हें देख रानीको अत्यानन्द प्राप्त हुआ।

रानी—'दासी! ये कुंडलआदि कहाँसे मिले? और मेरे समाचारका राजाने क्या उत्तर दिया? दासीने राजा का कथन किया हुआ तमाम वृतान्त कह सुनाया। अब हर्ष और शोकसे व्याकुल हो रानी पद्मावती अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प करने लगी। क्या सचमुचही वह मेरे पुत्रका प्रियमित्र होगा? वह एकलाही यहाँ क्यों आया होगा? क्या वह कुमारका समाचार लाया है? या कोई धूर्त मनुष्य मेरे पुत्रको मार कर तो उसके कुंडल वस्त्रादि नहीं लाया? मैं उस पुरुषको देखूँ तो सही। यह विचार कर रानीने दासीसे कहा—"दासी! जिस जगह उस पुरुषकी दिव्य द्वारा परीक्षा की जायगी मुझेभी वहाँ पर जाना है। उसे देखकर मैं भी इस विषय में कुछ विशेष निर्णय कर सकूंगी। इसलिये वहाँ चलने की सर्व सामग्री तैयार करो। रानीके आनेके पहले ही धनंजय यक्षके मंदिरमें राजा आदि हजारों मनुष्य उस कठिन परीक्षाको देखनेके लिये आ पहुँचे थे। इस समय

सर्प लानेको भेजे हुए गारुड़िक भी वहाँ आगये। वे राजाको नमस्कार कर बोले—"महाराज! अलंबगिरिकी अनेक गुफायें ढूंढते हुए हमें श्यामवर्ण और दीर्घकाय वाला एक भयंकर सर्प मिला है, उसे हम घड़ेमें डाल कर यहाँ लाये हैं; यों कहकर उन्होंने वह घड़ा राजाके सामने रख दिया। राजाने उस घड़ेको धनंजय यक्षके मंदिरमें उसकी मूर्तिके सामने रखवा दिया और कोतवालको आज्ञा दी कि जाओ उस पुरुषको यहाँ ले आओ। राजाज्ञा पाते ही शस्त्रधारी अनेक राजपुरुषोंसे परिवेष्टित उस पुरुषको (मलयासुन्दरीको) वहाँपर लाया गया। उसके तेजस्वी और भद्राकृतिवाले चेहरेको देखकर प्रधान नागरिक आपसमें कहने लगे-क्या ऐसी आकृति वाला पुरुष कभी चोर हो सकता है? यदि जलसे अग्नि उत्पन्न हो, चंद्रसे अंगार बरसें, और अमृतसे विष प्रगट हो तो ऐसे पुरुषसे अकार्य हो सकता है। यह सोच विचार कर प्रधान नागरिक राजासे बोले—'महाराज! इसकी सुन्दर और सौम्य मुखमुद्रासे यह मनुष्य कुलीन और किसी बड़े खान्दानका मालूम होता है अतः ऐसे मनुष्यको इस तरहका भयंकर दिव्य देना योग्य नहीं है। उसकी सौम्यआकृति देख रानीने भी ऐसी घोर परीक्षा लेने से राजाको निषेध किया।

राजा–"सज्जनो ! कठिन दिव्य देनेमें किसी तरह का दोष नहीं है, जिसतरह सच्चासुवर्ण अग्निमें डालने पर विशेष तेजवान होकर शुद्ध होता है वैसे ही यदि यह पुरुष निर्दोष होगा तो इसकी कीर्तिमें विशेष वृद्धि होगी। राजाके मुखसे यह उत्तर सुनकर रानी व नागरिक लोग चुप रह गये।

राजाकी आज्ञासे प्रधान मंत्रीने उस पुरुषको कहा-महाशय ! आप कौन हैं, हमें इस बातका कुछ पता नहीं। आप पर चोरीका अपराध रक्खा गया है। इसके साथही महाबल कुमारके शरीरको नुकसान पहुँचानेका भी सुबा किया जाता है। इस विषयमें तुम निर्दोष हो या सदोष हो यह निर्णय करनेके लिये यहाँपर तुम्हें कठिन परीक्षा देनी होगी। इस यक्षके मंदिरमें सर्प डालकर एक घड़ा रक्खा गया है वह घड़ा खोलकर तुम्हें अपने हाथसे पकड़कर उस घड़ेमेंसे सर्पको बाहर निकालना होगा। फिर अपने हाथसे ही उस साँपको घड़ेमें रख देना होगा; यदि इस के दरम्यान उस साँपने तुम्हें न डसा तो तमाम जनता तुम्हें निर्दोष मानेगी। यदि तुम सदोष हुए तो अवश्यही वह सर्प तुम्हें डंक मारेगा और इसीसे तुम्हारे दोषका तुम्हें दंड भी मिल जायगा। महाराज सूरपालकी आज्ञासे तुम्हारी निर्दोषता प्रगट

करनेके लिये यह कठिन परीक्षा ली जाती है। निर्दोष मनुष्यकी यह सत्य प्रतीति वाला यक्षदेव अवश्य ही सहाय करता है।

प्रधानका कथन पूर्ण होते ही पुरुष वेषधारक मलयासुन्दरी धैर्यधारण कर शीघ्रही उस घटके पास खड़ी हुई। पंचपरमेष्ठी मंत्रको स्मरण कर, महाबल द्वारा बतलाये हुये उस श्लोकका भावार्थ यादकर उसने प्रसन्नता पूर्वक उत्साहसे उस घड़ेको उघाड़ा और जनता के आश्चर्य पूर्वक देखते हुए उसमें हाथ डालकर, सर्पको बाहर निकाला। मलयासुन्दरीका हाथ लगतेही रस्सीके समान होकर किसी स्नेहीके जैसे वह सर्प उसका मुख देखने लगा। बहुत समय तक हाथमें रखने परभी उस भयंकर सर्पने मलयासुन्दरीको कुछभी नुकसान नहीं पहुँचाया। इससे उसकी सत्यताके लिये उपस्थित जनता खुशी होकर उच्चस्वरसे निर्दोष, निर्दोष! पुकार कर तालियें बजाने लगी। मलयासुन्दरीके हाथमें पाले हुए सर्प के समान रहे हुये उस भीमकाय सर्पने अपने मुखसे एक दिव्य हार उगला और धीरे २ उसके गलेमें डाल दिया। यह आश्चर्य देख तमाम लोग विचारशून्य हो गये। अहा! यह कैसा आश्चर्य! राजाने उस हारको पहचान लिया और वह बोल उठा—"अहो! यही वह

लक्ष्मीपुंजहार है, जिसकी खोजके लिए महाबल कुमार गया है। तमाम मनुष्य एक दूसरेके सामने देखने लगे। इतनेहीमें उस साँपने ऊपर फणा उठा कर अपनी जीभसे उस परीक्षा देनेवाले युवकका मस्तक चाटकर, उसके मस्तकपर लगे हुए तिलकको मिटा दिया। तिलकके मिटतेही वह नवयौवना स्त्री बन गई। सर्प उसके मस्तक पर अपनी फणाओंको छत्राकारमें विस्तारित कर आनं-दसे झूमने लगा। इस आश्चर्यको देखकर तमाम लोगों के छक्के छूट गये। किसीके भी मुँहसे कुछ शब्द न निकला। वे भयभीत हो स्तब्धसे रह गये।

इस चमत्कारको देख भयसे कंपित हो, महाराज सूरपाल बोला—'अरे! मैंने मूर्खतामें आकर यह कैसा अयोग्य कार्य किया! जनता और रानीके मना करने परभी मैंने इस दिव्य पुरुषकी ऐसी भयंकर परीक्षा लेकर महा अनर्थ पैदा किया है। यह सर्प कोई साधारण सर्प नहीं है; परन्तु कोई देव या दानव सर्पका रूपलेकर आया मालूम होता है। अथवा इस सत्पुरुषकी सत्यताके कारण यह शेष नागही इसकी सहायता करनेके लिये आया हो, या इस मन्दिरका अधिष्ठाता धनंजय यक्षराज ही प्रगट हुआ हो यह अनुमान होता है। इस घटनाका कुछ परमार्थ समझमें नहीं आता। मुझे इनकी आराधना

करनी चाहिए। क्योंकि भक्तिसे ही देवता स्वाधीन या अनुकूल होता है। यह सोच कर राजाने पुष्प और धूप मंगाकर उस नाग देवकी पूजा की और हाथ जोड़ कर नम्रतासे कहा—'हे पन्नगाधिराज! मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से कष्ट पहुँचाया है, कृपाकर मेरा अपराध क्षमा करो।

राजा जब यह कह रहा था तब मलयासुन्दरीने उस सर्पको नीचे जमीन पर रख दिया। राजाने दूध मँगा कर उस सर्पके सामने रक्खा। जब सर्पने दूध पीलिया तब राजाने उस सर्पको लानेवाले गारुडियोंसे कहा इस नागराजको जहाँसे तुम लाये हो; उसी जगह इसतरह छोड़ आओ कि जिससे इसे जराभी तकलीफ न होने पावे। यदि इस नागदेवको वहाँ छोड़नेतक जराभी तकलीफ पहुँची तो मैं तुम्हें प्राणदंडकी शिक्षा दूंगा।' राजाका आदेश पातेही गारुड़ी लोग उस सर्पको बड़ी हिफाजतके साथ उठाकर लेगये।

अब राजा मलयासुन्दरीसे पूछने लगा—'भद्रे! तू पहले पुरुष रूपमें थी और इस समय हमारे देखते हुए तेरा स्त्रीरूप बनगया, इस बातमें क्या रहस्य है? अपना सच्चा वृत्तान्त सुनाकर हमारे सबके मनको शान्त कर।' मलयासुन्दरी इस समय यह विचार कर रही थी कि पहले भी मेरे मस्तकपर किए हुए तिलकको मेरे स्वामीके थूक

से मिटाने पर मेरा स्वाभाविक रूप बन गया था और उन्होंने मुझे यह कहाभी था कि जबतक मैं अपने थूकसे इस तिलकको न मिटा दूंगा तबतक तेरा स्वाभाविक रूप कदापि न होगा; परन्तु इस वक्त तो इस सर्पके ही तिलक चाटनेसे मेरा स्वाभाविक रूप बन गया! यह लक्ष्मीपुंज हारभी इस सर्पके मुखमेंसे निकला, तो क्या मेरे स्वामीनेही इस सर्पका रूप धारण किया होगा? यह बात समझमें नहीं आती। यदि इसवक्त मैं अपनी सत्य घटना राजाको सुना दूं तो उसमें किसी तरह की हानि मालूम नहीं होती यह सोचकर मलया-सुन्दरी बोली—महाराज? मैं चंद्रावतीनरेश महाराज वीरधवलकी मलयासुन्दरी नामा पुत्री हूँ, इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानती।

भद्रे! तेरा यह वचन विश्वास करने योग्य नहीं है क्योंकि जब तू पुरुष रूपमें थी तब कुछ औरही कहती थी। फिर कहाँ चंद्रावती और कहाँ पृथ्वीस्थानपुर नगर! बासठ योजनका अन्तर और फिर महाराज वीरधवलकी कन्या यहाँ पर एकाकी किस तरह आसकती है? खैर यदि यह बात सचही होगी तो इतमिनान होनेपर या वहाँसे कोई इसकी खोजमें आयगा तो इसका सत्कार कर उसके साथ इसे वापिस भेजदिया जायगा। अब रानीके सामने

नजर कर राजाने कहा प्रिये ! लक्ष्मीपुंजहार सहित अभी तो तुम इस कन्याको अपने पासही रक्खो। प्रतिज्ञा के अनुसार हार पांचही दिनोंमें आगया है। सत्य प्रतिज्ञा वाला कुमार भी किसी स्थानपर सुखी या दुखी अवस्थामें अवश्य होगा और वह अब जल्दीही आ मिलेगा' अतः अब तुम प्राण त्यागके अभिप्रायको त्याग दो, क्यों कि हारके लिये की हुई प्रतिज्ञाभी तुम्हारी पूर्ण हो चुकी है।

रानी पद्मावती—प्राणनाथ ! पुत्र रत्नको खोकर क्या इस हारकी प्राप्तिसे मुझे सन्तोष हो सकता है ? मैं अपने इकलौते सद्गुणी पुत्रके सिवा किस तरह जीवन धारण कर सकती हूँ ? मेरी बुद्धिमत्ताको धिकार है' मैंने मूढतामें आकर इस हारके लिये अपने प्राणप्यारे पुत्रको संकटमें डाला, सचमुच यह मैंने वैसाही किया जैसे कोई मूर्ख मनुष्य नीमके लिये अपने घरमें लगे हुए कल्पवृक्षको नष्ट कर देता है। प्यारे पुत्रको गवाँकर अब मैं जीवित नहीं रह सकती। इसलिये महाराज मुझे आज्ञा दें मैं झंपापात करके प्राण त्याग करूंगी।

देवी ! मैंने तुम्हें प्रथमही कह दिया कि कलतक धीरज धारण करो। जब लक्ष्मीपुंजहार मिल गया तो कुमारभी अवश्य आमिलेगा। इस प्रकार रानीको धीरज देकर राजा महलमें आया। लोगभी आश्चर्य पाते हुए अपने

अपने स्थान पर चले गये। मलयासुन्दरीने भी रानीके साथ राज महलमें आकर भोजन कर वह शेष दिन व्यतीत किया। राज कुमारकी चिन्तामें राजा और रानी ने वह दिन और सारी रात बड़े कष्ट से पूर्ण की!

प्रातःकाल होते ही कुमारकी खोजमें भेजे हुए राज पुरुष चारों तरफसे जैसे गये थे वैसेही वापिस आनेलगे। धीरे धीरे सबने वापिस आकर उदासीन हो कुमारके न मिलनेका समाचार दिया। इस समाचारसे राजा और रानीके हृदयमें निराशाके घोर बादल छा गये। रानी पद्मावतीने झंपापात कर प्राण त्यागका दृढ निश्चय कर लिया। निरुपाय हो राजाकोभी वैसा ही मंजूर करना पड़ा। अब वे पर्वत शिखरसे गिरकर प्राण त्याग करने के लिये समीपवर्ति अजंन नामक पहाड़की तलाटीमें आपहुंचे शहरभरकी जनता हैरान थी, मलयासुन्दरीके दुखकाभी पार न था।

पृथ्वीस्थान नगरके समीप प्रचंड प्रवाहमें गोला नदी बह रही है। किनारेपर धनंजय यक्षका मंदिर है। मंदिरसे थोड़ीही दूर एक विशाल घटादार बड़वृक्ष है। शाखाप्रशाखाओंसे विस्तार पाये हुए उस बड़वृक्षके नीचे अनेक मनुष्य और पशुगण विश्रांति लेते हैं। इसी बड़वृक्ष की एक मजबूत शाखाके साथ लटकाकर आजसे तीसरे

दिन पहले लोह खुरा नामक एक चोरको राजाकी आज्ञासे मरवा दिया गया था, उस चोरके नजदीककी दो शाखाओं के मध्यमें एक युवा पुरुष औंधे मस्तक लटक रहा था, उसके दोनों पैर दो शाखाओंके साथ मजबूत बन्धनोंसे बँधे हुये थे; वह युवक अपने असह्य दुखके कारण एक शब्द भी मुखसे नहीं बोल सकता था। उस तरफ जानेवाले कई एक राहगीर वार्तालाप करते जाते थे कि महाराज सूरपाल तथा पद्मावती रानी पुत्र वियोगमें आज झंपापात कर मरनेके लिये इस समय पहाड़की तरफ गये हैं। महाबल

कुमारको किसी तरहकी चोट तो लगी ही न थी। सिर्फ बन्धन और उलटे मस्तकसे लटकने के कारण अत्यंत दुःख सहना पड़ा था। अब वे दोनों कारण दूर होनेसे धीरे धीरे वह विशेष स्वस्थ होने लगा। सर्वथा शान्ति पाकर वह धीरेसे बैठा होगया और चारों ओर नजर घुमा कर देखने लगा। पासमें बैठी हुई मलया-सुन्दरी पर जब उसकी दृष्टि पड़ी तब अकस्मात् उसके चेहरे पर प्रसन्नता सी झलक उठी। अब वह माता-पिता के आग्रहसे अपना विचित्र वृत्तान्त सुनाने लगा।

उस दिन मध्यरात्रिके समय महलमें एक हाथ देखने में आया, था वहांसे लेकर आधीरातको मलया-सुन्दरीको केलोंके बगीचेमें एकली छोड़ एक औरत

के रोनेका शब्द सुन उसका कष्ट दूर करनेकी भावना से उस शब्दके अनुसार जंगलमें गया था, वहाँ तकका सर्ववृत्तान्त कह सुनाया। रुदन करती स्त्रीके शब्दानुसार आगे जाते हुए मंत्रसाधन करनेकी सर्व तैयारी किये बैठा हुआ मेरे एक योगी देखनेमें आया। मुझे देख कर उसने अपना काम छोड़ दिया और सन्मान देकर विनयपूर्वक वह मेरे पास याचना करने लगा कि हे कुमार! आप परोपकार करने में प्रवीण हैं। मेरे पुण्योदयसे ही आप इस समय अकस्मात् यहाँ आ पहुंचे हैं। मैंने एक महामंत्र सिद्ध करना प्रारंभ किया है। वह मंत्र सिद्ध होने पर सुवर्ण पुरुष की सिद्धि होगी। मैंने सर्व सामग्री तैयार कर रक्खी है। परन्तु उत्तर साधक के अभावसे अटक रहा हूँ। इसलिए कुछ देरके वास्ते आप मेरे पास रहकर उत्तर साधक बनें, जिससे आपकी सहायतासे मेरी मंत्रसिद्धि हो।

पिताजी! योगीकी प्रार्थनासे मुझे दया आगई। इसलिए उसकी प्रार्थना मंजूर कर और उसके कथनानुसार हाथमें खड्ग लेकर मैं उसका उत्तर साधक बना। योगीने कहा—'हे वीर पुरुष! जहाँ पर यह स्त्री रुदन कर रही है उस बड़की शाखासे बँधा हुआ अक्षतांग वाला एक चोरका मृतक है। उसे आप यहाँ ले आवें।

मैं तलवार हाथमें लिए वड़के नीचे पहुँचा। वहाँ चोरके मुरदेके नीचे जमीन पर बैठी हुई रुदन करती मुझे एक स्त्री देखनेमें आई। मैंने उससे पूछा—'भद्रे! तू कौन है? किस लिये करुण स्वरसे रुदन करती है? और ऐसी भयंकर रात्रिमें तुझे एकाकी श्मशानमें आने का क्या कारण है? मेरी बात सुनकर वह निश्चल दृष्टि से मेरे सन्मुख देखती हुई बोली—'सत्पुरुष! मैं मंद-भाग्या अपने दुःखकी तुम्हें क्या बात सुनाऊँ? इस बड़की शाखासे जो पुरुष लटकाया हुआ है वह अलंब पर्वतकी गुफामें रहनेवाला और नगरको लूटनेवाला लोहखुर नामक चोर है। आजसे दूसरे दिन पहले राज-पुरुषोंने छल अपंचसे उसे पकड़कर राजाके पास हाजिर किया। राजाने इस क्रोधमें आकर इस बड़की शाखासे बँधवा कर मरवा डाला। मैं उसकी प्रिय स्त्री हूँ। इसी दुःखसे मैं रुदन करती हूँ। जिस दिन इसकी मृत्यु हुई उस दिनही सुबह मैं इसे मिली थी। और पत्नी होकर रही थी। थोड़े ही समयमें इसने जो मुझे प्रेम किया था वह अभी तक मेरे हृदयमें खटकता है। सत्पुरुष! आप कोई ऐसा उपाय करें जिससे मैं उसके मुखपर चंदन का विलेपन करूँ।"

उसस्त्रीके करुणाजनक वचनोंसे मेरा हृदय-द्रवित

हो गया। मैने उसे कहा--तू मेरे कंधों पर चढ़कर तुझे उचित लगे वैसा कर। वह स्त्री उत्कंठा पूर्वक मेरे कंधों पर चढ़ कर, उस शवकी गर्दनमें हाथ डालकर, ज्यों उसका आलिंगन करने लगी त्योंही उस मृतकने अकस्मात् अपने दाँतोंसे उसकी नासिका पकड़ ली। वह दुःखसे रुदन करती हुई काँपने लगी। जब उसने नासिका छुड़ाने के लिये पीछे को जोर लगाया तब मजबूत पकड़ी हुई होनेके कारण वह मुर्देके मुखमें ही टूट गई। यह आश्चर्य देख मुझे हँसी आ गई। क्योंकि जिस चोरके प्रेमके लिए वह स्त्री रोती थी और जिसे आलिंगन करनेके लिए अधिक उत्कंठित थी उसी चोरके मृतकने उसका नाक कतर लिया। मुझे हँसता देख अकस्मात् उस मृतकके मुखसे यह शब्द निकले--महाबल मेरा चरित्र देख कर तू किस लिये हँसता है? कुछ समय के बाद तू भी मेरे समान इसी बड़की शाखपर लटकाया जायगा, अगली रात्रि में ही तेरे ऊँचे पैर और नीचा मस्तक करके तुझे यहाँ पर बाँधा जायगा। पिताजी! उसके यह शब्द सुनकर निर्भीक होनेपर भी मेरे हृदय में कुछ भय पैदा हुआ। महाबलके मुखसे यह कथन सुन वहाँ पर बैठे हुए राजा आदि तमाम लोग विस्मय पाकर बोल उठे--कुमार! बड़ा आश्चर्य है, क्या कभी

मुरदेभी कुछ बोलते हैं ? पिताकी तरफ देख कुमार बोला—'पिताजी ! आपका कहना सच है, मुरदा नहीं बोल सकता, परन्तु मुरदेके मुखमें प्रवेशकर कोई व्यंतर आदि देवही बोल सकता है। मैं धैर्यवान् था तथापि देव-वाक्य मिथ्या नहीं होता यह जानकर क्षोभित हुआ।

काँपती हुई स्त्री मेरे स्कंधोंसे नीचे उतरी, उसने मेरा नाम स्थान पूछा, मैंने भी अपना नाम स्थान सत्य बतला दिया। इससे उसे मुझपर कुछ विशेष विश्वास हुआ हो यह मालूम हुआ। जाते समय वह स्त्री मुझसे बोली; कुमार ! जब मेरी नासिका अच्छी हो जायगी तब मैं आपके पास आकर इस चोरका गुफामें दबाया हुआ धनादि बतलाऊँगी। उसके चले जानेपर मनको दृढ़कर मैं बड़वृक्ष पर चढ़ा। चोरके मुरदेको बन्धनसे छोड़कर ज़मीन पर गिराकर मैं नीचे उतरा। परन्तु इतनेहीमें वह मुरदा उछल कर फिर वापिस शाखासे जा बँधा। मुझे फिरसे बड़पर चढ़ना पड़ा। मैं समझ गया कि यह कुछ दैवी चमत्कार है, अन्यथा जमीनपर पड़ा हुआ मुरदा स्वयं उठकर ऊपर नहीं जा सकता। ऐसी परिस्थितिमें इस मुरदेको योगीके पास किस तरह ले जाया जा सकता है ? मैंने एक उपाय सोचकर उस मृतकको बन्धनसे छोड़ उसके केशोंको पकड़ कर मैं उसके साथही नीचे उतरा और

उसे पीठपर लादकर, योगीके पास लाकर रख दिया।

महाबल कुमारकी विचित्र घटना सुनते हुए श्रोताओंको कभी आश्चर्य, कभी शोक, कभी हास्य, कभी भयसे कंपन, कभी आनन्द, और कभी दुःखका अनुभव होता था। इस तरह अनेक रसका अनुभव करते हुए लोगोंको आगे क्या हुआ होगा; यह जाननेके लिये एकाग्रमनसे उत्सुकता हो रही थी। महाबल बोला—'पिताजी! योगीने उस मुरदेको स्नान करा कर चंदनादिके रससे उसका विलेपन किया। फिर एक बड़ा अग्निकुंड बनाकर उसमें अंगारे दहका कर उसके पास उस मुर्देको रख मुझे उत्तर साधकके तौर पर खड़ा रक्खा। इधर योगीने पद्मासन लगाकर, आँखें मीच एकाग्र चित्तसे जाप जपना शुरू किया। जाप जपते हुए सुबह होने आया परन्तु वह मृतक मंत्रप्रभावसे उठकर अग्निकुण्डमें न पड़ा। यह देख निराश हो योगी जाप जपनेमें शिथिल हो गया। इतनेही में वह मुरदा भयंकर अट्टहास्य करता हुआ आकाशमार्ग से उड़कर पहलेके जैसे उसी बड़की शाखापर जा लटका। योगी बोला—'राजकुमार! मालूम होता है मंत्रसाधनामें कहींपर मुझसे भूल हुई है। इसी कारण मंत्रसिद्ध नहीं हुआ और मृतक भी उड़ कर चला गया। अब आगामी रात्रिमें फिरसे मंत्रसाधन करना पड़ेगा। इसलिये मुझ पर

कृपाकर आने वाली रात्रितक आप यहाँ ही रहें। परोपकारी राजकुमार! आपकी सहाय विना मेरा मंत्र सिद्ध होना अशक्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है आप मेरी इस प्रार्थनाको अवश्य ही मंजूर करेंगे। योगीके अत्यन्त आग्रहसे और कुछ परोपकारकी प्रेरणाके कारण अपनी परिस्थितिको भूल कर दूसरी रातमें भी उसकी मंत्रसिद्धि में उत्तर साधक बनना मैंने मंजूर कर लिया।

भयके कारण योगी मुझसे बोला—'कुमार! आपको मेरे पास रहा हुआ देख राजपुरुष या अन्य कोई मनुष्य यह शंका करेगा कि इस योगीने राजकुमारको किसी छल प्रपंचसे अपने स्वाधीन किया हुआ है। अतः इसे मारकर राजकुमारको छुड़ा लें, अन्यथा कुमारको साथ लेकर यह योगी अन्यत्र चला जायगा। इत्यादि कई कारणोंसे मुझपर आपत्ति आनेका संभव है। इसलिये यदि तुम्हारी मर्जी हो तो सूर्य अस्ततक विद्याबलसे मैं तुम्हारा रूप परिवर्तन कर दूँ। पिताजी! मैंने योगीका कथन स्वीकार किया, मेरे पाससे यह लक्ष्मीपुंज हार न चला जाय यह सोच कर मैंने उसे अपने मुखमें डाल लिया। योगीने जंगलमेंसे एक जड़ी लाकर उसे मंत्रित कर, मेरे मस्तक पर उसका तिलक किया, उसके प्रभावसे काजलसे भी अधिक काला और देखने मात्रसे भयंकर रूपवाला मैं

एक दीर्घकाय सर्प बन गया। मुझे रहनेके लिये नजीक में ही उसने एक गुफा बतलाकर वह स्वयं किसी कार्यके लिये अन्यत्र चला गया। पवनका पान करते हुये जब मैं दुपहरीमें उस गुफामें समय बिता रहा था तब सर्पकी खोज करते हुए वहाँपर कईएक सपेरे आ पहुँचे। उन्होंने मंत्र-बलसे तंस्भित कर मुझे पकड़कर एक घड़ेमें डाल लिया। और यक्षके मन्दिरमें आपके पास ला रक्खा। आपने उस नवीन पुरुषको दिव्य करनेके लिये (परीक्षादेनेके लिये) आज्ञा दी। उसने भी निर्भीक हो मुझे पकड़ कर घड़ेसे बाहर निकाला; उसे देखकर मैंने पहचान लिया, इस लिये अपने मुखमेंसे निकाल कर मैंने उसके गलेमें हार डाल दिया। फिर वह पुरुष साक्षात् स्त्री बन गई। उसवक्त भयभीत होकर आप लोगोंने धूप, पुष्पसे साँप की पूजा की और उसे दूध पिलाया। फिर आपने उसे पर्वत की उसी गुफामें छुड़वा दिया। ये तमाम बातें आप सब को मालूम ही हैं।

राजा—'पुत्र! वह नवीन पुरुष हमारे देखते हुए अकस्मात् दिव्य रूपधारी स्त्री क्योंकर बन गई?

महाबल—'पिताजी! मध्यरात्रिमें रुदन करती हुई उस स्त्रीका शब्द सुने बाद उसके शब्दानुसार जाते समय (मलयासुन्दरी की ओर इशारा कर) 'इस' आपकी पुत्रवधू

को मैं अपने वस्त्राभूषण सहित पुरुषके रूपमें केलोंके बगीचेमें छोड़ गया था। प्रातःकाल होने पर किसी तरह वह फिरती हुई यहाँ आगई और आपने उसकी घटसर्प का भयंकर दिव्य देकर कठिन परीक्षा ली। आपके महान् पुण्योदयसे उस परीक्षामें विधाताने मुझे ही सर्पके रूपमें भेज दिया। मैंने उसे पहिचानते ही गुटिकाके प्रयोगसे पुरुष रूप बनानेवाला उसके मस्तक पर जो तिलक किया हुआ था वह तिलक अपनी जीभसे मिटा दिया। उसके मिटते ही वह आप लोगोंके समक्ष अपने स्वाभाविक रूपमें वीरधवल राजाकी पुत्री हो गई। यह राजकुमारकी ही पत्नी है, यह निश्चय होते ही राजा आदि तमाम मनुष्य आदर और स्नेहकी दृष्टिसे मलयासुन्दरी के सन्मुख देखने लगे। इस समय महाबलने मलयासुन्दरी के सन्मुख देख कुछ इशारा किया जिससे तुरन्तही उठकर मलयासुन्दरीने अपने वस्त्र संकोचकर मर्यादापूर्वक श्वशुर और सासके चरणोंको हाथ लगाकर नमस्कार किया। उन्होंने भी प्रसन्न हो उसे अखंड सौभाग्यवती रहो,, यह आशीर्वाद दिया।

इस वक्त अपने अपराधका पश्चात्ताप करते हुये महाराज शूरपालके नेत्रोंसे अश्रु बहने लगे। मस्तक हिला कर वह बोल उठा—ओ, कमनसीब शूरपाल! अपनी पुत्र

वधूपर शत्रुके समान इतना अनुचित आचरण !! नगरके प्रधान नागरिक बोले--'महाराज ! इसमें आपका नहीं परन्तु अज्ञानताका ही अपराध है। रानी पद्मावतीने हाथ पकड़कर पुत्रवधूको अपनी गोदमें बैठा कर स्नेहसे कहा-- 'पुत्री ! तूने उस समय अपना सच्चा वृत्तान्त क्यों न मालूम किया ? अथवा उस अवसर पर तेरा मौन रहना ही ठीक था। क्योंकि तुम्हारी यह विचित्र घटना उस-वक्त सच कहने पर भी किसीके माननेमें न आती। पुत्री ! अज्ञानताके कारण हमने तुझे कैसा असह्य दुःख दिया है ? हा, हा ! यदि उस अवसर पर तेरा कुछ भी अनिष्ट होता तो हमारी क्या दशा होती ? सचमुच ही अभी तक हमारे पुण्यका उदय है, इसी कारण इतना कष्ट सह कर भी हमारे कुलका उद्धार हो गया। बेटी ! तुम परमार्थको जाननेवाली कुलीन बाला हो अतः हमारा यह अपराध तुम्हें क्षमा करना चाहिये। तेरे सरीखी सद्गुणवाली राजकुमारीके साथ विधिपूर्वक विवाह कर वधूसहित सत्यप्रतिज्ञ राजकुमारको देख हम अपने मानव-जन्मको सफल समझते हैं। यों कहकर रानी पद्मावतीने अपने कीमती आभूषण देकर पुत्रवधू मलयासुन्दरीका अच्छी तरह सत्कार किया।

राजा--बेटा ! अलंबगिरिकी गुफामें सर्परूपमें फिर

तुमने क्या क्या अनुभव किया? महाबल बोला–पिता जी! शेष दिन तो शान्तिसे ही बीत गया था। संध्या समय योगी मेरे पास आया, उसने आखके दूधसे मेरे मस्तक पर किये हुए तिलकको मिटा दिया, इससे मेरा स्वाभाविक रूप हो गया। वह फिर मुझसे बोला–कुमार! चलो फिर अपना मंत्र साधन शुरू करें। मैं उसके साथ चला गया। अग्निसे जाज्वल्यमान कुण्डके पास जाकर योगीने मुझे फिर उस कलवाले मृर्देको लानेकी आज्ञा दी। मैंने पहलेके समान ही वड़से मृतकको नीचे उतार योगीके पास ला रक्खा। योगीने उसे स्नान कराकर मण्डलके अन्दर लिटा दिया और उत्तर साधकके तौरपर मैं उसके पास खड़ा रहा। अब ज्यों ज्यों उस योगीने मंत्रजाप जपना शुरू किया त्यों त्यों वह मृतक उठ उठ कर फिर वापिस नीचे पड़ने लगा। इस तरह जाप करते हुए आधी रात बीत गई। तब आकाशमें डमरूका शब्द सुनाई दिया। इसके बाद प्रत्यक्षमें यह ध्वनि सुन पड़ी "अरे! यह मृतक अशुद्ध है, इससे सुवर्ण पुरुष सिद्ध न होगा।" यों बोलती हुई कोपायमान हुई देवी आकाशसे नीचे उतरी और कपाली योगीको केशोंसे पकड़कर ऊपर उछाल उसने उस दहकते हुए अग्नि कुण्डमें फेंक दिया। धैर्यवान होनेपर भी मैं उस देवीकी क्रूर और भयंकर

आकृति देख क्षोभित होगया। देवीने एक नागपाशसे मेरे हाथ बाँध लिये और ऐसी सुंदर आकृतिवाले कुमार को मारना ठीक नहीं' यों कहकर मेरा पैर पकड़ वह देवी मुझे आकाश मार्गसे ले चली। यहाँ आकर इस बड़की शाखामें मेरे दोनों पैर बाँधकर वह आकाशमें चली गई। मैं लटकता रह गया, वह चोरका मुर्दाभी वहाँसे उड़कर फिर यहाँ ही आ लटका।

लोगोंने गर्दन घुमा कर उस चोरके मृतक की तरफ़ देख कर कहा—'अरे, यह मृतकतो अक्षतांग है, फिर देवीने 'यह अशुद्ध है, ऐसा क्यों कहा होगा? राजाने कुछ देर विचार कर मस्तक हिलाते हुए कहा—'हाँ, देवीका कहना ठीक था, जाकर देखो! उस स्त्रीका टूटा हुआ नाक इसके मुखमें होना चाहिए। और इसी कारण देवीने इस मृतकको अशुद्ध बतलाया। पासमें जाकर देखनेसे मालूम हुआ सचमुचही उस मुर्देके मुँहमें उस स्त्रीके नासिकाका अग्रभाग था। महाबल खेद पूर्वक बोल उठा'—अहा मुझे भी यह बात मालूम नहीं रही। वह घटना ही मैंने योगीको नहीं सुनाई। व्यर्थ ही बिचारे योगीके प्राण गये और उसका कार्य भी सिद्ध न हुआ। राजा बोला—'बेटा! खेद न कर! होनहार होकर ही रहती है। आगे बोलो तुम्हारे हाथों पर बँधा

हुआ नागपाश किस तरह छूटा ?' महाबल—'पिताजी ! उस सर्पकी पूँछ इधर उधर हिलती हुई मेरे मुँहके आगे आगई । उस पूँछ को रोपमें आकर मैंने अपने दाँतोंसे ऐसी दबाई कि जिससे वह साँप धीरे २ मेरे हाथों से ढीला होकर नीचे जा पड़ा । विषापहारी मंत्र और औषधी के प्रभावसे मेरे शरीरमें उसका जहर न चढ़ा । ऐसे असह्य दुःखमें रात्रिके अन्तिम दोनों पहर मैंने बड़े कष्टसे बिताये । इस समय आपने आकर मेरा संकट दूर किया। यही मेरी सारी राम कहानी है ।

कुमारका पूर्वोक्त चमत्कारि वृत्तान्त सुन आश्चर्य और दुःख का अनुभव करते हुए शहरके प्रधान नागरिक बोल उठे—कुमार ! धन्य है आपको । आपने थोड़े ही समयमें दुःखके भयंकर सागरको पार किया । ऐसे संकट में भी इतनी परोपकार बुद्धि और इतना धैर्य आपके बिना और कौन रख सकता है ?

राजाके कहनेसे योगीके मंत्रसाधन का स्थान देखने पर उस अग्निकुण्डमें पड़ा हुआ योगीका शरीर सुवर्ण पुरुषके रूपमें देख पाया । उस सुवर्णको वहाँसे उठवा कर राजाने अपने खजानेमें भेजवा दिया । सुवर्ण पुरुषका यह प्रभाव होता है कि संध्या समय उसके हाथ पैर काट लेने पर रात्रिमें वह फिर वैसाही अंगोपांग

सहित हो जाता है। अब राजा अपने परिवार सहित नगर में आगया। प्रजाजन भी अपने २ स्थान पर चले गये। परिवार सहित राजाके पुनर्जन्मकी प्राप्तिकी खुशीमें नागरिक लोगोंने नगरमें दश दिनतक महोत्सव किया। राजाने भी याचकों को खूब प्रीतिदान दिया।

सुखके दिन

कैसा गौरव पूर्ण दृश्य है। सूर्य अस्ताचल पर जा पहुँचा है। सारे आकाशमें सूर्यके सिवा और कुछ नजर नहीं आता। चार पहर तक आकाशकी मरुभूमि में चलकर, इस समय सारे जगतको लाल रंगसे रंग कर सूर्य अस्त होने जा रहा है। जैसे गौरवके साथ उसका उदय हुआ था वैसेही गौरवसे अब उसका अस्त भी हो रहा है। यह लो अस्त होगया। पीले आकाश का रंग अब धूसर हो रहा है। अब मानो देवताओं की आरतीके लिए संध्या इस समय अस्त होते हुए सूर्यकी

और चुपचाप देखती हुई धीरे २ विश्वास मन्दिर में प्रवेश कर रही है।

ऐसे प्रशांत समयमें एक भव्य मकानमें एक युवती बैठी हुई गीत गारही है।

प्यार करूं जिनको मैं वे भी, मुझको प्यार करें तो धन्य।
निर्जन वनमें या महलनमें, उन्हें चाहती रहूँ अनन्य ॥
चरण धूलि धोऊंगी उनकी, अपने आंसु जल से।
हृदय देवता उन्हें बनाकर, पूजूंगी मन निश्चल से ॥
मेरे मन मन्दिर से स्वामी, बहिर न जावें कभी कहीं।
सुखी रहूँ या दुखी सदा मैं, पर वे हरदम रहें यहीं ॥

गाना पूरा भी न होने पाया था इतने ही में वहाँपर एक प्रसन्नचित्त युवकने प्रवेश किया। वह युवक उस युवती के पीछे आखड़ा हुआ और सहसा बोल उठा अहा! आज तो देवी बड़ी प्रसन्न मालूम होती हैं, कल कैसा भयंकर कष्ट भोगा होगा क्या वह आज तुम्हें सर्वथा भूल गया? यह सुन युवती एक दम खड़ी होगई और उस युवककी ओर प्रेमभरी नजरसे देखती हुई बोली—प्यारे! आप नहीं जानते क्या कठिन यात्राका प्रवासी अपनी यात्राके अन्तमें इष्ट देवके दर्शन पा प्रवासके परिश्रमको सर्वथा भूल नहीं जाता? युवक बोला-प्रिये! मेरे अभावमें तुमने बड़े संकटका सामना किया?

युवती—हृदयेश्वर ! मैं कोमलांगी अवश्य हूँ परन्तु आपके उपदेशसे मुझमें सहन शक्ति बढ़ गई है। प्यारे! आपके वियोग दुःखके सिवा मैं अन्य दुःखोंको कुछ गिनती ही नहीं। दुःखमें अनेक प्रकारकी शिक्षा मिलती है। बल्कि मैं तो समझती हूँ कि दुःख बहुत ही महत् और सुख बहुत ही नीच होता है। सुखमें अहंकार होता है। उसका स्वर बहुत ऊंचा और कर्कश होता है, परन्तु विषाद बहुत ही विनयी, बहुत ही नीरव होता है। दुःखमें जो कुछ जमा किया जाता है सुखमें वही खर्च किया जाता है। दुःख जड़की भाँति मिट्टीमेंसे रस खींचता है, परन्तु सुख फूलों और पत्तोंकी तरह विकसित होकर उसी रसको व्यय करता है। दुःख वर्षा की तरह तपी हुई भूमिको शीतल करता है और सुख शरद् ऋतुके पूर्ण चंद्रमाकी भाँति आकर उसपर हँसता है। दुःखमें त्याग होता है और सुखमें भोग। दुःख किसानोंकी तरह खेतकी मिट्टी तोड़ता है और सुख राजाके समान उसमें पैदा हुए अन्नका भोग करता है, इसी कारण दुःख मधुर लगता है।

युवक—"प्रिये ! तुम्हारा कथन बिलकुल यथार्थ है। दुःख पड़ने पर ही मनुष्यके गुणोंका विकास होता है। हम दोनोंने तो अपने अशुभ कर्मोंका उदय होने

से दुःखका अनुभव कियाही परन्तु हमारे कारण हमारे माता पिताओंको भी भारी कष्टका अनुभव करना पड़ा। हमारे अकस्मात् चले आनेके कारण तुम्हारे माता पिता अभीतक हमारे वियोगसे महान् दुःखका अनुभव कर रहे हैं। यह समाचार अभी हमारी खोजमें आये हुए तुम्हारे भाईके द्वारा मिला है।

पाठक महाशय! इस युवक और युवतीको पुनः परिचय देनेकी हमें आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, क्यों कि इनकी वार्तालापसेही आप समझ गये होंगे कि ये दोनों इसी कथानकके नायक नायिका हैं। पहले परिच्छेदमें आपने पढ़ा होगा, महाबल, राजकुमारी मलयासुन्दरीके अकस्मात् गुम होनेके कारण उनके वियोगसे दुःखित हो महाराज वीरधवलने उनकी तलाशमें अपने पुत्र मलय केतुको पृथ्वीस्थानपुरकी तरफ रवाना किया था। अब वह बहन और बहनोईकी खोज करता हुआ पृथ्वीस्थान पुरमें आ पहुँचा है। राजसभामें आकर उन दोनोंके यहाँ पहुँच जानेका समाचार सुन वह अत्यन्त खुशी हुआ और सूरपाल राजा तथा महाबल कुमारने भी उसका बहुतही स्वागत किया। उसीसे मलयासुन्दरीके माता पिताको दुःखित होनेका समाचार मालूम हुआ। मलय केतुका स्वागत करनेमें ही महाबल कुमारको आज राज

सभामें इतनी देर होगई थी ।

राजाके साथ बातचीत किये बाद मलयासुन्दरीने अपने भाई मलयकेतुको रनवासमें बुलवा लिया और उससे बड़े प्रेम पूर्वक मिलकर महाराज वीरधवल अपनी माता रानी चंपकमाला आदिका सुख समाचार पूछा । मलयकेतुने कहा—'बहन ! तुम लोगोंके अकस्मात् चले आनेसे वे महान् दुःखका अनुभव कर रहे हैं ।

महाबल—"दैविक प्रयोगसेही हमारा आकस्मिक आगमन हुआ है, इससे मुझे इस बातका दुखः है कि मैं चलते समय उनकी आज्ञा प्राप्त न कर सका । इत्यादि कथन पूर्वक उसने अपनी तमाम घटना कह सुनाई । मलयकेतु—"अहो ! इतने थोड़े समयमें आप लोगोंने बड़े भारी दुखका अनुभव किया । यह कहकर उसने अपनी समवेदना प्रगट की, इसके बाद परस्पर प्रेमकी बातें करते हुए उन्होंने अपनी भूक प्यासको भी भुला दिया ।

कुछ समय तक आनन्दसे वहाँ रहकर एक रोज मलयकेतुने महाराज शूरपालसे प्रार्थना की अब आप मुझे घर जानेकी आज्ञा दें, जिससेकि मैं जमाई और पुत्रीके अमंगलकी चिन्तासे महान् दुखका अनुभव करते हुए माता पिताको जल्दी जाकर सांत्वना दूँ । इनके सुख समाचारकी बधाई देकर उनके हृदयको आनन्दित करूँ

महाराज शूरपाल—"कुमार ! तुम्हारे विनयादि सद्गुणोंके कारण तुम्हें विदाकरनेके लिए मेरा मन नहीं मानता तथापि तुम्हारे बतलाये हुए कारणसे विवश होकर मैं तुम्हें इसीवक्त चंद्रावती जानेकी आज्ञा देता हूँ। तुम्हारे पितासे जाकर कहना, हमारा और उनका बहुत समयसे प्रेम सम्बन्ध चला आ रहा है। अब इस रिश्तेके कारण वह औरभी दृढतापूर्वक वृद्धिको प्राप्त होगया। मलयकेतुबोला महाराज! जरूर कहूँगा और ऐसाही होगा। इसप्रकार राजाकी आज्ञाले मलयकेतुने अपनी बहन और बहनोईसे जानेकी आज्ञा मांगी। महाबलबोला-'मेरी तरफसे मेरी सासू और श्वशुरजीको नमस्कार पूर्वक कहना कि आपकी आज्ञा लिये सिवाय आपके कन्या रत्नको लेकर चला जानेसे चोरका आचरण करनेवाले महाबलने तुम्हें महान् दुःख दिया है। उस अपराधकी वहआपसे वारंवार क्षमा चाहता है। और आपके इस दुखका किसी स्वार्थ वश नहीं किन्तु दैववशात् पराधीनतासे ही मैं हेतु बना हूँ।

मलयासुन्दरी—बड़े भैया ! दैवाधीनता के कारण ही हमारा यहाँ अकस्मात् आना हुआ है। यह बात माता पित से जरूर कहना। अब वे मेरी तरफसे किसी प्रकारकी चिन्ता न करें। मैं यहाँपर सब तरहसे महान् सुखमें हूँ। मेरे निमित्तसे पैदा हुए माता पिताके दुखके लिये तुम मेरी

तरफसे क्षमा याचना करना और उनके चरण छूकर मेरा बारंबार नमस्कार कहना।

मलयकेतु कुमारने उन तमाम संदेशोंको स्नेहपूर्वक स्वीकार कर बहन बहनोईके वियोगसे उत्पन्न हुये दुखको अश्रु धारासे शान्त कर चंद्रावतीकी तरफ प्रयाण कर दिया। थोड़ेही दिनोंमें चंद्रावतीमें आकर उसने जमाई और पुत्रीके सुख समाचारकी माता पिताको बधाई दी और शोकचिन्ता दूर कराकर उसने सबको आनन्दित किया।

सांसारिक आनन्दसे सुखशान्ति प्राप्त किये दंपती एक रोज महलकी खिड़कीमें बैठे हुये पुण्यकी-प्रबलता, कर्मों की विचित्रता और पापकी विषमताके विषयमें परस्पर वार्तालाप कर रहे थे। उस समय महाबल कुमारने अपने महलके सामनेसे आती हुई एक स्त्रीको देखा। उस स्त्रीका नाक कटा हुआ था, उसकी तरफ देखकर महाबल ने मलयासुन्दरी से कहा—'प्रिये! सामने आनेवाली इस स्त्रीको देखो! जिसका रुदन सुनकर उस दिन अन्धेरी रातमें दयासे प्रेरित हो मैं तुम्हें बगीचेमें एकली छोड़ उसे संकट मुक्त करने गया था; वही यह स्त्री है। मलयासुन्दरीने उसकी ओर गौरसे देखा और आश्चर्यके साथ उसने उसे पहचान लिया। अतः वह बोल उठी—'स्वामिन्! अरे, यहतो यही कनकवती है,

जिसे हमने उस दिन सन्दूकमें बन्दकर गोला नदीमें बहा दिया था। यह यहाँपर कहाँसे आ गई होगी? यह आपके पास कुछ गुप्त बात कहनेके लिये आती हो ऐसा मालूम होता है। अगर इसने मुझे पहचान लिया तो लज्जाके कारण यह कुछभी न कहने पायगी। इसलिये यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं परदेमें जावैठूं। महाबल ने उसे वैसा करनेकी सम्मति दी।

द्वारपालसे महाबलकी आज्ञा मँगाकर वह स्त्री महाबलके पास आई और उसे नमस्कार कर एक तरफ खड़ी रही। महाबलने भी उचित सन्मान पूर्वक उसे बैठनेका इशारा किया। उसके बैठजाने पर महाबल बोला भद्रे! तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है कहाँसे आई हो? क्या तुम अपना परिचय मुझे दे सकती हो? कुछ विश्वास पाकर वह छिन्न नासिका बोली—'राजकुमार! मैं विपदाकी मारी तुम्हें अपना चरित्र क्या सुनाऊं! खैर फिरभी सुनाती हूँ सुनो मैं चंद्रावती नरेश महाराज वीरधवलकी कनकवती नामा रानी हूँ। एक दिन निष्कारण ही राजाने मुझपर कोप किया; मुझेभी उस बातसे बड़ा क्रोध आया और उसी क्रोधमें मैं तमाम वस्तुओं और अपने तमाम सुखको ठुकरा कर निकल आई। रास्तेमें मुझे एक परदेशी युवक मिला उसने मुझे गोला नदीपर

मिलनेके लिये संकेत किया। मैं भी रात्रिके समय उसके किये हुए संकेत स्थानपर उसको जा मिली। उस धूर्तने मुझसे कहा—'यहाँपर चोर फिरते हैं इस लिए कुछ देर मौन धारण कर खड़ी रह और जो तेरे पास कुछ माल हो वह रक्षणके लिये मुझे दे दे। मैंने विश्वास कर अपने पासकी उसे तमाम वस्तुयें दे दीं। फिर उसने मुझे वहाँपर पड़ी हुई एक सन्दूकमें कुछ देर तक छिप जानेके लिये कहा। मेरी दी हुई उन वस्तुओंमेंसे एक हार और एक कीमती कंचुक निकाल कर उसने बाकीके वस्त्रादि उस सन्दूकमें डाल दिये। चोरोंके डरसे और उसके कहनेसे जब मैं उस सन्दूकमें बैठ गई तब उस पापीने उस सन्दूकको ताला लगा दिया। फिर संकेत किये हुये एक दूसरे पुरुषको बुलाकर वह सन्दूक उन्होंने गोला नदीके प्रवाहमें बहा दिया।

महाबल—"भद्रे! क्या उन्होंने वह संदूक जान बूझकर नदीमें बहा दिया था? क्या तुम उन्हें पहचानती हो? उन्हें वैसा करनेका कारण तुम्हें मालूम है?"

कनक—मैं उन निष्कारण अपने दुश्मनोंको बिलकुल नहीं पहचानती। मैंने उनका कुछभी अपराध न किया था। तथापि उन्होंने मेरे साथ क्यों ऐसा किया यह मैं नहीं जानती।

महाबल–"बिना प्रयोजन उन्होंने तुम्हारे साथ बड़ा अघटित आचरण किया ! यों कह मस्तक हिला खैर, फिर वह संदूक कहां गया ?"

कनक—वह संदूक नदी प्रवाहमें तैरती हुई प्रातःकाल होते ही यहाँ धनंजय यक्षके मन्दिरके पास आ लगी। लोहखुर नामक चोरने उस संदूकको बाहर निकाला। ताला तोड़कर उसमेंसे मुझे बाहर निकाली। मुझे जीवन देनेवाले उस चोरके साथ में अलंबगिरिके विषमप्रदेशमें बनाये हुए उसके मकानपर गई। आपसमें हमारा गाढ़ प्रेम होगया। परस्पर अनन्य विश्वास हो जानेसे नगर की चुराई हुई तमाम लक्ष्मी उसने मुझे सन्मान और प्रेम से बतलाई। मैंने भी अपना नाम स्थान उसे सब कुछ बतलाया। दोपहर तक मेरे पास रहकर किसी कार्यवश वह नगरमें आया। राजपुरुषोंने उसे पहचानकर पकड़ लिया। और रजाके स्वाधीन कर दिया। राजाने उसे वड़वृक्षके साथ लटका कर मरवा दिया। उस समय उसकी राह देखती हुई में पहाड़ के शिखरपर खड़ी थी। मेरा मिलाप होते ही थोड़ेही समयमें उसकी यह दुर्दशा हुई देख मुझे बड़ा दुःख हुआ। रात्रिके समय में उसके पास जाकर शोकसे रुदन कर रही थी। उस समय आपने वहाँ आकर मेरे दुःखका कारण पूछा। इसके बादका तमाम

वृत्तान्त आप जानतेही हैं । राजकुमार ! यदि आप मेरे साथ चलें तो मैं आपको वह स्थान बतला सकती हूँ । वहाँ पर बहुत ही धन भरा है । उसे ग्रहण कर जिसका हो उसे आप वापिस दे देवें । मुझे एकलीको इतने धनकी कोई आवश्यकता नहीं है । तथा गुप्त वैभव भोगते हुए राजपुरुषोंको खबर होने पर मेरी भी चोरके जैसी दुर्दशा न हो इसलिये मैं उस द्रव्यको नहीं चाहती ।

महाबल उसस्त्रीको महाराज शूरपालके पास ले गया और आवश्यकतानुसार कुमारने महाराजको उसका परिचय दिया । राजा उस स्त्रीको अपने आगे कर कितने एक राजपुरुषोंको साथ ले उस पहाड़की गुफामें गया । वहाँ उस स्त्रीने बड़ा भारी दबा हुआ खजाना बतलाया । राजाने वह तमाम माल बाहर निकलवाया और प्रजाको बुलाकर जिसकी जो वस्तु चुराई गई थी । उनमेंसे वह वस्तु वापिस दे दी । जिस धनका कोई मालिक न था उसे साथ लिवाकर राजा वापिस शहरमें आगया । उसकी योग्यताके अनुसार उस धनमेंसे कितना एक धन राजाने उस स्त्रीको दिया । उसे लेकर कुमारके साथ वह फिर उसके महलमें आई । वहाँ पर उसने गले में लक्ष्मीपुंज हार धारण किये और आनन्द रसमें निमग्न हुई मलयासुन्दरीको बैठे देखा । मलया-

सुन्दरीको देखतेही उसके हृदयमें भयंकर चोट पहुँची हो इस तरह वह सहसा स्तब्ध हो गई। आश्चर्यमें पड़कर वह विचारने लगी—'अरे! यह दुष्ट लड़की किसतरह जीवित रही? अन्धकूपमें से कैसे निकली? और इस कुमारने कब और किसतरह इसका पाणिग्रहण किया? ये तमाम बातें जाननेकी उसके हृदयमें तीव्र जिज्ञासा हुई। परन्तु कुछभी पूछनेका साहस नहीं हुआ। उसने सोचा—यदि मैं इससे यह बात पुछूंगी तो यह मेरा तमाम विचित्र चरित्र प्रगट कर देगी और फिर मुझे यहाँ रहना तक भी मुश्किल हो जायगा। यह लक्ष्मीपुंज हार भी उस मेरे दुश्मनने इसे लाकर दिया मालूम होता है। या क्या मालूम इन दोनोंने ही मिलकर, नदीकिनारे मुझ से हार लेलिया हो। बिलकुल ये दोनों मेरे दुश्मन हैं। इत्यादि विचार करती हुई कनकवतीसे मलयासुन्दरी बोली—"माता! आज यह अनभ्रा वृष्टि कैसे हुई? आप यहाँ एकली कैसे आईं? और आपकी नाककी यह दुर्दशा कैसे और कहाँ हुई?

महाबल—"प्रिये! यह बात तुम इनसे न पूछो, ये तमाम बातें मैं जानता हूँ और समय पर तुम्हें सब कुछ बतला दूँगा, अभी तुम अन्दर जाओ। महाबलकी आज्ञा होतेही मलयासुन्दरी अन्दरके कमरेमें चली गई।"

महाबल—"कनकवती इस महलके बाहर नजदीकमें ही एकराजकीय मकान है तुम वहाँपर जा रहो।"

ऊपरसे मीठी परन्तु दुष्ट हृदयवाली कनकवती कुमारके बतलाये हुए मकानमें जा रही और धीरे-धीरे मलयासुन्दरीके पास आने जाने लगी। जब मनुष्यको उसका भाग्य चक्रमें डालता है तब उसकी तीक्ष्ण बुद्धि भी कुछ काम नहीं आती। अविश्वासमेंसे राजनीति सीखने परभी विश्वास किया जाता है; इसी कारण एक महान् अपराधीको भी महाबलकुमारने रहनेके लिये स्थानदे दिया। इसके परिणाममें उसे कैसा भयंकर विपाक भोगना पड़ेगा इस बातकी उसे स्वप्नमें भी खबर न थी, या यों कहना चाहिये कि कर्म विपाकके सामने मनुष्यकी तमाम चतुराई बेकार है। कनकवतीकी बोलचाल, हँसना और वार्तालापादि इतना चित्ताकर्षक था कि तीक्ष्ण बुद्धिवाला कुमार उसकी धूर्तताको न जान सका। धीरे २ राजमहलमें उसका आना जाना बढ़ने लगा। परन्तु जिसतरह बिल्ली नित्य चूहेके ही ध्यानमें रहती है वैसे ही निष्कारण दुश्मन वह मलयासुन्दरीको मारने या वैसे ही किसी महान् संकटमें डालनेके लिये निरन्तर उसके छल देखने लगी। यद्यपि वे दम्पती इस समय अद्वितीय संसार सुखका अनुभव कर रहे हैं परन्तु अपने

ही हाथसे उन्होंने अपने आँगनमें भविष्यमें कटुफल देने वाला विषवृक्ष लगा लिया है।

संसार रूपी वृक्षका सुखरूप मधुर फल भोगते हुए, मलयासुन्दरीने गर्भ धारण किया। महाबलकुमारने उस के तमाम मनोरथ पूर्ण किये। गर्भके साथही मलया-सुन्दरीका प्रतिदिन लावण्य वृद्धिको प्राप्त होने लगा। सुखसे समय बिताते हुए गर्भ प्रसूतिका समय भी अब नजीक ही आने लगा।

एक दिन महाराज सूरपाल महाबलसे बोले बेटा महाबल! हमारे राज्यकी पूर्व सरहद पर रहनेवाला- क्रूर नामक पल्ली पति हमारे देशमें घुसकर प्रजाको लूट ले जाता है। उसके पास कुछ सेनाबल भी होगया है। मैंने उसपर आक्रमण करनेके लिए दो दफा सेनापति को भेजा, परन्तु वह पराजित न होसका उल्टा हमेंही बहुत कुछ नुकसान उठाना पड़ा। तुम्हारे सिवा उसके बढ़ते हुए गर्वको और कोई नहीं उतार सकता। सीमा समीप की किसी भी ताकतको बढ़ने देना हमारे लिए बड़ा खतरनाक है। इस लिए मेरी राय है कि इस समय प्रबल सेना साथ लेकर तुम खुदही उसपर आक्रमण करो और उसे परास्त कर अपने सीमाप्रान्तको सदा के लिए निरुपद्रव करो। यह सुनकर विनय पूर्वक हाथ

जोड़कर राजकुमार बोला-पिताजी ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। आप आजही सेनापतिको सेना तैयार करने की आज्ञा फरमावें। आपके आशीर्वाद से मैं आपकी आज्ञानुसार आक्रमण कर उसे आपका सेवक बनाकर ही वापिस लौटूंगा।

राजाज्ञासे सेनामें पल्लीपतिपर चढ़ाई करनेकी तैयारियाँ होने लगीं। राजकुमार स्वयं सेनापति बनकर पल्ली पतिपर आक्रमण करेंगे यह जानकर सैनिकोंमें उत्साह का पार न रहा। वे दूने उत्साहसे समरकी तैयारी करने लगे।

अब पिताको नमस्कार कर महाबल अपने महलमें गया। पिताकी आज्ञा सुनाकर उसने युद्धमें जानेके लिए मलयासुन्दरी से विदा माँगी, वह बोली— प्राणनाथ ! आप खुशीसे युद्ध करें, परन्तु मैं आपके साथही चलूंगी। आप मुझेयहाँ रहनेके लिए विवश न कीजिये। आपके परोक्षमें ही मुझपर विपत्तिके पहाड़ टूट पड़ते हैं। इसलिये आप इस दासीको जुदी न करें।

महाबल—प्यारी ! समर भूमिमें तुम्हें साथ लेजाने का समय नहीं है। तुम सगर्भा हो और पूरे दिन होने आये हैं। थोड़े ही दिन बाद भावी राज्य कर्त्ताका जन्म होनेवाला है। ऐसी परिस्थितिमें मेरे साथ चलना तुम्हारे

लिए सर्वथा अनुचित है। प्रसूतिका समय आरहा है। इस वक्त पहाड़ी मार्गकी विषमता और युद्धका प्रसंग, ये तमाम बातें तुम्हारे इस नाजुक शरीरके लिए बिलकुल प्रतिकूल हैं। तुम धैर्य धारण कर यहाँही रहो। यहाँ तुम्हें सब तरहसे आराम रहेगा। बनते तक शत्रुको परास्त कर मैं शीघ्रही समरसे वापिस आजाऊंगा। कभी विषम प्रसंग आजाने पर मैं तुम्हें पुरुष रूप धारण करने की ये गुटिकायें दे जाता हूँ। आमके रसमें घिसकर तिलक करनेसे स्त्रीका पुरुष रूप बन जाता है। इन गुटि-काओंको हर वक्त सँभाल कर अपने पास रखना। प्यारी! मैं स्वयं तुम्हारा वियोग सहनेके लिए असमर्थ हूँ, परन्तु क्या किया जाय! कुलीन पुत्रोंका पिताकी आज्ञा पालन करना परम कर्तव्य है। अतः प्रिये! तुम मुझे प्रसन्न होकर समरके लिए विदा करो।

पतिकी आज्ञासे विवश हो अपने दिलको मसो-सती हुई मलयासुन्दरी मंद स्वरसे बोली—'स्वामिन्! इच्छा न होनेपर भी आपकी आज्ञाको शिरोधार्य कर मैं यहाँ ही रहती हूँ। आप जल्दी-इतना कहते हुए उसका कंठ भर आया। वह आगे कुछ न बोल सकी। आँखोंसे गालों पर मोतिसे आँसु ढलक पड़े। यह देख कुमारने उसे छाती से लगा लिया और प्रेमसे उसका मुख चूम लिया। प्रेमी

हृदयवाले राजकुमारको भी अपनी प्राणप्यारी से जुदा होनेमें बड़ा दुःख हुआ। उसकी आँखें भर आई'' तथापि वह कठिन मनकर रुमालसे आँखें पोंछता हुआ महलसे बाहर निकल गया। तमाम सेना तैयार होकर खड़ी थी। महाबल अपने घोड़े पर सवार हो सेनाके साथ पल्लीपति पर चढ़ाई करनेके लिये सीमा प्रदेशकी ओर चल पड़ा।

कनकवती अपने मकानमें बैठी हुई अपने मलीन हृदयके अनुसार विचार तरंगोंमें गोते खा रही है। मलयासुन्दरी को किस तरह कष्टमें डालूं? कोई उपाय नहीं सूझता कि जिससे उसे संकटमें डालकर अपने चित्तको शान्त करूं। न जाने क्यों उसे देखकर मेरे दिलमें डाह पैदा होता है। मैं जरूर मौका पाकर उसे संकटमें डाल अपने कलेजेको ठंडा करूंगी। इन्हीं विचारोंकी उधेड़बुनमें उसे महाबलके युद्धमें जानेका समाचार मिला। अब मलयासुन्दरीको एकली रही देख उसे बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा महाबलके यहाँ रहते हुये मेरा कोईभी उपाय काम न आ सकता था। यह ठीक हुआ मलयासुन्दरी एकली रह गई। यदि महाबलके परोक्षमें भी मैं किसी उपायसे इससे बदला न लेसकी तो फिर मेरे लिये कोईभी ऐसा सुअवसर नहीं मिल सकता। यह सोच वह शीघ्रही उठकर मलयासुन्दरीके महलमें आई। इस समय मलयासुन्दरी

अपने महलमें उदास होकर बैठी थी। पति वियोगके दुख से उसके नेत्रोंसे आँसुओंकी बूंदें पड़ रही थीं। वह हाथ पर मुख रक्खे हुये विचार दशामें निग्न हो रही थी। कनकवतीके आनेकी आहट सुन उसने ऊंची गर्दन की अपनी सौतीली माताको आई देख उसने उसे कुछ आदर दिया। अवसर देखकर कनकवतीने उसकी उदासीनता को दूर करने के लिए कोई और विषय छेड़ा; उसकी बातोंके प्रसंगसे मलयासुन्दरीका सारा दिन सुख शान्तिमें व्यतीत हुआ। पतिवियोगके दुःख में उस की मीठी बातें सुन सरल हृदया मलयासुंदरी बोली—'माता! तुम रातको भी यहाँ ही रह जाया करो जिससे दिनके समान तुम्हारे समागमसे मेरी रात भी सुखसे बीत जायगी। मनको इच्छित होनेके कारण कनकवती ने खुशीसे उसकी बात स्वीकार कर ली। रातकोभी कनकवतीने दिनके समान ही अनेक बातोंसे मलयासुन्दरीके मनको प्रसन्न रक्खा। प्रातःकाल होते ही कुछ सोच विचारकर कनकवतीने मलयासुन्दरीको कहा—'बेटी! तुझे उपद्रव करनेके लिए रात्रिमें यहाँपर एक राक्षसी फिरा करती है। रातको जब तू सोगई थी उस समय मैंने प्रत्यक्ष उसको देखा था। जागृत रहनेके कारण मैंने तुझपर उसका कोई उपद्रव नहीं होने दिया। यदि

तेरी मर्जी हो तो मैं भी उस राक्षसीके साथ उसके जैसा ही वेष धारण कर उसे ऐसी शिक्षा दूँ कि जिससे वह फिर कभी इधर देखे तकभी नहीं। क्योंकि मैं भूत प्रेतोंको निग्रह करनेके मंत्र तन्त्रादिक भी जानती हूँ। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि राक्षसी और चुडेलोंको निवारण करनेके अनेक प्रकारके तांत्रिक प्रयोग होते हैं।

विचारशील होनेपरभी भाग्यके चक्रमें पड़कर-मलयासुन्दरीने उस दुष्टाकी बात मंजूर करली। दैव-वशात् इस समय नगरमें मारी बीमारीका जोर बढ़ रहा था। कोई दिन ऐसा न जाता था कि जिसदिन दस पंद्रह मनुष्य मृत्युके ग्रास न बनते हों। मलयासुन्दरीको पूर्वो-क्त प्रकारसे समझाकर अपने घर जानेका बहाना ले कनकवती सीधी महाराज शूरपालके पास पहुँची। वहाँ जाकर उसने राजासे एकान्तमें बात करनेकी प्रार्थना की प्रार्थना मंजूर होनेपर उसने महाराज शूरपालसे कहा—महाराज! यदि आपकी मुझपर पूर्ण कृपा हो तो मैं आज आपके हितकी एक बात करनी चाहती हुं। राजा बोला—भद्रे! मैं तुझे अभय वचन देता हूँ; चाहे जैसी गुप्त बात हो तू निःशंक होकर कह। यदि उससे तुझे कुछ भय उत्पन्न होनेकी संभावना हो तो मैं तेरा पूर्ण रक्षा करूँगा।

कनकवती—'महाराज! आपको मालूम ही होगा

आपके शहरमें कितनेक दिनोंसे 'मारी' नामक रोग चल रहा है। यह उपद्रव किसी राक्षसीका किया हुआ है। चाहे साक्षात् वह राक्षसी यहाँपर न भी आती हो तथापि राक्षसीके जैसी चेष्टायें करनेसे रोगकी उत्पत्ति या उसकी वृद्धि हो सकती है। ऐसा करनेवालीको राक्षसी कहनेमें किसी प्रकारका दोष नहीं है। इस प्रकार का जनसंहार करनेवाली राक्षसी यदि आपके ही राज-कुलमें हो तो क्या आप उसे शिक्षा देकर अपनी प्रजाको नहीं बचा सकते ? 'यह सुन राजा बोला—भद्रे' मेरे राजकुलमें ऐसी कौन दुष्टा है ? सच बोल मैं उसे पूर्ण शिक्षा देकर अपनी प्रजा का रक्षण करूँगा। कनकवती बोली 'महाराज ! सच पूछो तो गुलाबमें काँटेके समान आपकी प्रजाका संहार करनेवाली आपकी पुत्रवधु मलया-सुन्दरी ही है. यदि आपको मेरे इस वचनपर विश्वास न हो तो रात्रिके समय आप दूर रहकर उसकी चेष्टायें प्रत्यक्ष देखकर, निश्चय करें। वह रात्रिके समय राक्षसी का रूप धारण कर अपने गृहांगणमें भ्रमण करती है; कूदती है, नाचती है, चारों तरफ देखती है, और मंद २ स्वरसे भयंकर फुंकार करती है, इस कारण शहरमें मारी नामक रोग विशेष वृद्धिको प्राप्त होता है। ये चेष्टायें देखकर यदि आप रात्रिमें उसी समय उसे

पकड़ना चाहेंगे तो वह आपको भयंकर उपद्रव करेगी इसलिये सुबह होनेपर आप उसे सुभटों द्वारा पकड़वाकर इच्छित शिक्षा करें। इस प्रकार कपट प्रपंचकी बातें कर कनकवती मौन रह खड़ी रही।

राजा प्रथमसे ही शहरमें पसरी हुई मारीका-कारण जाननेके लिए उत्सुक था। अब यह कनकवती की बातें सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह एक औरतके कपट पूर्ण वचनोंसे प्रेरित हो, विचारने लगा। अहो! यह कैसी बात! मेरे निर्मल कुलमें ऐसा कलंक! क्या सच-मुचही मेरी पुत्रवधु मलयासुन्दरी राक्षसी है? क्या उसीने नगरमें यह मारी फैला रक्खी है? यह बात मेरा हृदय मंजूर नहीं करता। परन्तु इस औरतका असत्य बोलनेमें क्या स्वार्थ होगा? खैर, आज रात्रिको देखने से इस बातका निश्चय होजायगा। यह विचारकर चिन्ताग्रस्त हो राजाने कनकवतीसे कहा—भद्रे! यह बात तुम अन्य किसीके समक्ष न करना। ऐसी बात जनतामें प्रगट होनेसे मेरे निर्मल कुलको कलंक लगता है। इस बातकी सचाईका निर्णय आज रातको होजायगा फिर जो योग्य होगा सो किया जायगा। कनकवती बोली—'महाराज! मैं इतनी अज्ञान नहीं हूँ, इसी कारण तो मैंने एकान्तमें यह प्रार्थना की है। अच्छा अब तुम

जाओ, यों कह राजाने कनकवतीको विदा किया।

राजमहलसे विदा हो कनकवती सीधी अपने मकान-पर आई और वहाँ आकर राक्षसीका रूपधारण करनेके योग्य वह तमाम सामग्रीको साथ ले मलयासुन्दरीके पास आपहुंची। रात पड़नेपर वह मलयासुन्दरीसे बोली–'बेटी! आज मैं उस राक्षसीका निग्रह करूंगी। जबतक मैं उसे निग्रह करके मकानके अन्दर न आऊं तबतक तू कमरेसे बहार गृहाँगणमें न आना। यदि उस समय तू कमरेसे बाहर निकली तो भयंकर उपद्रव होनेका संभव है। मयलासुन्दरीको इस तरहकी शिक्षा दे वह बाहर आई और नग्न होकर उसने अनेक प्रकारके रंग बिरंगे चित्रों द्वारा राक्षसीके समान अपने शरीरको चित्रित किया। साक्षात् राक्षसीकी भाँति रूप बनाकर उसने अपने मुखमें लम्बे लम्बे दाँत लगा लिए। एक हाथमें खप्पर और दूसरे हाथमें लम्बा छुरा लेकर जिसतरह राजा को समझाया था उसी प्रकारकी चेष्टायें करनी शुरू कीं, इस समय महाराज शूरपाल कितने एक सुभटोंको साथ ले थोड़ी दूरपर रहे एक महलपर चढ़कर गुप्तरीतिसे उसकी तमाम चेष्टायें जाननेके लिये आ खड़े हुये। उसने दूर रहकर मलयासुन्दरी के गृहांगणमें राक्षसीके सारे आचरण अपनी नजरसे देखे। वह मन ही मन विचारने लगा ओहो!

कनकवतीकी बतलाई हुई तमाम बातें सच ही निकलीं। इस स्त्रीके द्वारा मेरा निर्मल वंश कलंकित हुआ। अब मुझे इस विषयमें विलम्ब या सोचविचार न करना चाहिये। इसके निग्रहका जल्दीही उपाय करना अच्छा है। यह बात जनतामें फूट जानेपर मेरे कुलकी बदनामी होगी। और शीघ्र ही कुछ उपाय न करनेसे प्रजाका विशेष संहार होगा। इस कुलकलंकिनी राक्षसीको इसी समय शिक्षा करनी चाहिये। मेरे साथमें बहुतसे सुभट हैं, वह मुझे क्या उपद्रव कर सकती है? अब रात्रिके समयमें ही शिक्षा करनेसे जनतामें भी यह बात प्रकट न होगी" इसप्रकार सोचकर क्रोधसे विचार शून्य हो राजाने अपने विश्वासपात्र सुभटोंको आज्ञा दी अरे! सुभटो! तुम इसी वक्त जाकर इस दुष्टाको पकड़ लो। एक रथमें बैठा कर इसे रौद्रअटवीमें ले जाकर किसीको मालूम न हो इस तरह मार डालो। राजाका आदेश होतेही हथियार बन्द अनेक सुभट उसे पकड़नेके लिये दौड़ पड़े। उन राजपुरुषोंको आते देख वह दुष्टा भयभ्रांत हो मलयासुंदरी के पास आकर कंपित स्वरसे बोली—'बेटी! कितने एक राजसुभट शस्त्र हाथमें लिये मुझे मारनेके लिए आरहे हैं। मालूम होता है मैं राजाकी आज्ञा बिना रातके समय तेरे पास रहती हूँ। इसी कारण राजा मुझपर क्रोधायमान्

हुए हैं। संभव है राजपुरुष मुझे अवश्य ही मार डालेंगे इस लिए तू मुझे ऐसी जगह छिपा, जहाँपर ढूँढनेसे भी उन्हें मेरा पता न लगे। दयाकी प्रेरणासे उसके कपटको न समझनेवाली मलयासुन्दरीने वैसेही वेषमें कनकवती को एक संदूकमें छिपाकर बाहरसे ताला लगा दिया। बस इतनेहीमें राजाके भेजे हुए शस्त्रधारी सुभट वहाँ पर आ पहुँचे।
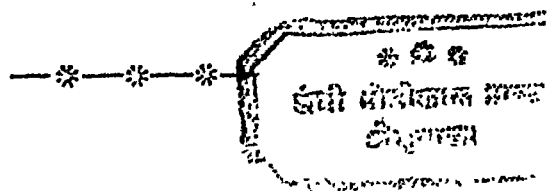
"निर्वासित जीवन"

प्रातःकालका समय है। सैनिकोंकी एक कतार लगी हुई है। घोड़ेपर चढ़ा हुआ एक तेजस्वी युवक अपने सैनिकोंको उपदेश कर रहा है। भाइयो! आज युद्धका दिन है। इतने दिनोंतक मैंने जिस शिक्षाकी तैयारी की है आज उसकी परीक्षाका समय है। मैं समझता हूँ कि जंगली पल्ली पतिके साथ जबरदस्त सेना है तथापि हम सुशिक्षित क्षत्रिय पुत्रोंके सामने वह युद्धमें अधिक समयतक नहीं ठहर सकती। इसलिये मुझे पूर्ण विश्वास है कि विजय हमारे साथ है। बस अब देरी करनेका समय नहीं है। शत्रुसेनापर आक्रमण करो।

कैसा भयंकर युद्ध ठना हुआ है। युद्धके बाजे बज रहे हैं। सैनिकोंके हृदयमें उत्साहपूर्ण वीरताकी लहरें उमड़ रही हैं। अतःउन्मत्त होकर सैनिक लोग शत्रुओंपर आक्षेप कर चिल्ला रहे हैं। घोड़े हिनहिना रहे हैं। हाथी चिंघाड़ रहे हैं। मरणोन्मुख सिपाही कराह रहे हैं। एक ओर पल्लीपतिकी अगणित सेना और दूसरी ओर महाबलकी छोटीसी किन्तु शिक्षित सेना

शत्रुओंपर झपट रही है। सैनिकोंके हाथमें रहे हुये तीर, तलवार, भालें, आदि शस्त्र खूनसे सने हुए हैं। महाबल कुमार विलक्षण साहस धारण कर वीरताके साथ शत्रु सेनाके सेनापति पल्लीपति पर टूट पड़ा। महाबल और उसके सैनिकोंका पराक्रम देखकर शत्रुसेनामें भगदड़ मच गई। जिस क्रूर नामक पल्लीपतिको दो दफा आक्रमण करनेपर भी महाराज शूरपालका युद्ध कुशल सेनापति परास्त न कर सका था उसी प्रबल शत्रुके आज समर भूमिमें महाबल कुमारने अपनी वीरतासे दांत खट्टे कर दिये। उस भग्नसेना-पल्लीपतिने महाबल का पराक्रम देख निराश हो उसे आत्मसमर्पण कर दिया। अब शत्रुको कैद कर और विजयकी रणदुन्दु भी बजाते हुए हर्षपूर्वक अपनी सेनाके साथ महाबल कुमार अपनी राजधानीकी तरफ चल पड़ा।

इधर राजपुरुषोंने मलयासुन्दरीके महलमें प्रवेश किया और उसका स्वाभाविक रूप देख वे आपसमें बोलने लगे—'अरे! हमारे भयसे इसने शीघ्रही अपने राक्षसी रूपको त्यागकर कैसा सुन्दर रूप बना लिया। दूसरा बोला—'कुछ भी हो महाराजकी आज्ञा होनेसे हम इसे छोड़ नहीं सकते। तिरस्कारके शब्दोंसे वे मलयासुन्दरीको बोले—अरे पापिनी! अभी तक तू

कितने मनुष्योंका संहार करेगी ? अरे भाई ! देखते क्या हो ? इसे पकड़कर बाँधलो ! यों कह राजपुरुषोंने मलया सुन्दरीको पकड़कर मजबूत बन्धनोंसे बाँध लिया और उसे महलसे बाहर ले आये। राजाने पहलेसेही द्वारपर रथ तैयार रखाया था। मलयासुन्दरी को उसमें बैठाकर शीघ्रताके साथ उस रथको भयंकर अटवीकी तरफ ले जाया गया। इस आकस्मिक घटनासे मलया-सुन्दरी एकदम स्तब्ध होगई। उसने सोचा– 'मैंने क्या अपराध किया है कि जिससे ये राजपुरुष मेरा इतना तिरस्कार कर रहे हैं ? मालूम होता है; किसी कारण ये मुझे मारनेके लिए या कहीं भयानक जंगलमें छोड़ आनेके लिए ले जा रहे हैं ? हाय कर्मकी कैसी विचित्र गति है ! मेरे सामने कोई नजर भरके भी नहीं देख सकता था। परन्तु आज एक पतिदेवके अभावमें मुझपर कितना भयंकर जुल्म किया जा रहा है ! न मालूम इसका क्या कारण होगा ? मैंने राजाका ऐसा क्या अपराध किया होगा ? या मेरा पुण्य पूर्ण होनेपर किसी पूर्व जन्मके अशुभ कर्मका फिरसे उदय हुआ है। मनुष्यको मालूम नहीं होता, क्लिष्ट कर्मोंके विपाकका किस वक्त उदय होगा ? हे हृदय ! अब तू इन दुःखोंको सहनेके लिए फिरसे वज्रके समान कठिन बन जा।" मनको धीरज

देखकर वह महाबलके बतलाये हुए श्लोकका स्मरण करने लगी।

रथ सहित मलयासुन्दरीको लेकर राजपुरुष उस भयानक अटवीमें जो मनुष्योंसे रहित और हिंसक पशुओं से व्याप्त थी आ पहुँचे। उसे रथसे नीचे उतारा गया। उसका राजतेज सुन्दर और करुणा पैदा करनेवाली सौम्य मुखमुद्रा तथा उसके अंबुज समान नेत्रोंसे मोतियोंके जैसे टपकते हुए अश्रु बिन्दु देखकर उनमेंसे एक क्षत्रिय राजपुरुषका हृदय द्रवित हो उठा। वह अन्य सुभटोंसे बोला—भाइयो! किसी भी कारण राजाने इस भद्राकृति वाली स्त्रीको राक्षसी समझकर हमें इसके वधकी आज्ञा दी है; परन्तु इस स्त्रीकी करुणाजनक मुखाकृति देखकर यह सर्वथा निर्दोष मालूम होती है। ऐसी निर्दोष अबला पर शस्त्र चलाना यह वीरपुरुषोंके लिए बिलकुल अनुचित है। ऐसी औरत पर हाथ उठाना यह महान निर्दयता वाले कर्म चांडालका काम है। पहले जन्ममें किये हुए अशुभ कर्मके कारण यहाँ दूसरेके सेवक बने हैं। अब निर्दोष स्त्रीकी हत्या कर न जाने कैसी नीच गतिको प्राप्त होंगे। इसलिए हमें चाहिए कि इस स्त्रीकी हत्या अपने शिरपर न लेकर हिंसक पशुओंसे परिपूर्ण इस अटवी में इसे जिन्दा छोड़ जायें। किसी हिंसक प्राणीका शिकार

बनकर यह स्वयं अपने प्राणोंको त्याग देगी और हम इस पापसे बच जायँगे। वे परस्पर एक विचार कर मल-सुन्दरीको जीवितही उस निर्जन जंगलमें छोड़ वापिस लौट आये। उन्होंने राजासे आकर कह दिया—'महाज! आपकी आज्ञानुसार हम उस स्त्रीको निर्जन जंगलमें मार आये। यह सुन राजा बड़ा खुशी हुआ और विचारने लगा कि उस राक्षसीके मर जानेसे अब नगरकी सारी बीमारी खुद बखुद शान्त हो जायगी। अब कनकवती को खुश करनेके लिए राजाने नगरमें उसकी तलाश कराई परन्तु उसका कहींपर भी पता न लगा। अब राज-कुमारका महल सूना रहनेके कारण राजाने तमाम दर-वाज़ोंपर ताले लगा उनपर सिल लगवा दिये।

महाबलकी सेना विजयके गर्वसे आनन्द मनाती लौट रही है। उसके सैनिकोंको अपनी २ वीरतापर गर्वके साथ पूर्ण विश्वास हो रहा था। यों तो महाबलके सैनि-कोंमें सभी तलवारके धणी थे। बातपर जान देनेवाले, उसके इशारेपर आगमें कूदनेवाले, उसकी आज्ञा पाकर एकबार आकाशके तारे तोड़नेको भी चलपड़ते; किन्तु युद्ध कुशलतामें महाबल सबसे बढ़ा हुआ था। वह अन्य वीरोंकी भाँति अक्खड़, मुँहफट, या घमंडी न था। और लोग अपनी वीरताको खूब बढ़ा २ कर कथन करते।

आत्मप्रशंसा करते हुए उनकी जबान न रुकती थी। महाबल जो कुछ करता शान्तभावसे, और विचारशीलतासे करता। अपनी प्रशंसा करना तो दूर रहा—वह चाहे किसी शेरहीको क्यों न मार आया हो उसकी चर्चा तक न करता। उसकी विनयशीलता और नम्रता संकोच की सीमासे भी बढ़गई थी। और लोग समरमें रात्रिके समय मीठी नींद सोते, परन्तु महाबल तारे गिनगिनकर रात काटता था। क्योंकि वह शरीरसे समरभूमिमें आया था परन्तु उसका हृदय अपनी प्राणप्यारी मलयाके पास ही रह गया था। अब वह मलयसुन्दरीको शीघ्र जा मिलनेकी उत्सुकतासे विलम्ब रहित प्रयाणसे पृथ्वीस्थान-पुरके समीप ही आ पहुँचा है। रास्तेमें कई जगह उसे अपशकुन भी हुए, बाँई आँखभी फड़की, परन्तु विजयकी खुशी और प्रियासे मिलनेकी उत्सुकतामें उसने उस ओर कुछ ध्यानही न दिया। अब वे राजनगरमें आपहुँचे। राजसभामें आकर महाबलने पिताके चरणोंमें नमस्कार कर विजयका समाचार सुनाया। पल्ली पतिको जीतनेका समाचार सुनकर राजाको बड़ा भारी हर्ष हुआ और उसने कुमारकी प्रशंसा की। पिताकी आज्ञा ले मलयासुन्दरीसे मिलनेकी उत्कंठामें कुमार अपने महल की तरफ चल पड़ा परन्तु तुरन्तही रोककर महाराज शूरपालने उसका हाथ

पकड़ एकान्तमें ले जाकर मलयासुन्दरीके राक्षसी होनेका तथा उसे दी हुई शिक्षाका सर्व वृत्तान्त कह सुनाया। पिताके मुखसे यह वृत्तान्त सुनतेही दीर्घ निश्वास केसाथ हाथसे हाथ घिसते हुए कुमारके मुखसे एकदम शीत्कार शब्द निकल पड़ा। वह रुद्ध कंठसे बोला—'हा! हा! पिताजी! आपने महान् अनर्थ कर डाला। उसके प्राणोंके साथ आपने मेरे भी प्राण ले लिये। आपने मुझे और अपनी पुत्रवधूको शत्रुसे भी बढ़कर असह्य दंड और अन्याय दिया है। मलयासुन्दरी राक्षसी थी यह भ्रमता आपको कहाँसे पैदा हुई? पिताजी! आपकी इतनी विचारशून्यता! आपकी दीर्घ दृष्टि कहाँ चली गई? यदि आपको उसमें कोई दोष मालूम हुआ भी था तथापि मेरे आनेतक तो धैर्य रखना था। जिस छिन्न नासिका स्त्री के कहने से आपने मुझपर यह अनर्थ ढ़ाया है उस कपट की खान कनकवतीको मैं भलि भाँति जानता हूँ। पिता जी! आप उस धूर्त स्त्रीके वचनोंसे सचमुच ही ठगे गये। आप मुझे जल्दी बतलाइए कि वह मेरी निष्कारण दुश्मन नकटी कहाँ पर है? मैं उससे तमाम बातें पूछूँ तो सही!' कुमारके इस प्रकारके दुःख, शोक और तिरस्कारपूर्ण वचनोंसे राजा शूरपालका मुखमंडल मुरझा गया। उसने नीचे देखते हुए कहा—'बेटा! इस घटनाके बाद हमने

उसकी सब जगह तलाश की परन्तु वह स्त्री कहींपर भी देखनेमें न आयी। अगर सचही यह उसका प्रपंच होगा तो शायद वह उसी रातको कहीं अन्यत्र भाग गई होगी।

महाबल—'पिताजी! उस पापिनीके असत्य वचनोंसे प्रेरित हो आपने व्यर्थ ही अपने निर्मल कुलमें कलंक लगाया है; इतनाही नहीं परन्तु आपने अपने वंशका विच्छेद किया है। इस प्रकार बोलता हुआ पत्नीके वियोग से दुःखित हुआ राजकुमार उदासीनता धारण किये अपने महलकी तरफ चल पड़ा। पुत्रके दुखसे दुःखित हो राजा भी कुमारके पीछे पीछे उसके महलमें आया और दरवाजों पर लगे हुए सिल तोड़कर, ताले खोल दिये। एक जगहकी तरफ दृष्टि कर राजा बोला—" देखो बेटा! इस जगह तुम्हारी प्रिया मलयासुन्दरी राक्षसीके रूपमें नग्न होकर नाचती, कूदती, अनेक प्रकारके फूत्कार करती हुई मैंने कई सुभटोंके साथ बहुत देर तक उस सामनेवाले मकान परसे देखी थी। इसलिये उसे शिक्षा करनेमें मेरा अपराधही क्या है? यदि शरीरका कोई अंगउपांग गल जाय तो क्या उसे नहीं कटवा दिया जाता? कुमार मन ही मन विचारने लगा ठीक है अब अधिक बोलनेकी कोई कीमत नहीं। अगर वह जिन्दी मिल गई तो तमाम बातें मालूम हो जायँगी, इत्यादि विचार करते हुये वह

अपने मकानमें रखी हुई सार वस्तुयें देखने लगा। क्रम से उस सन्दूकका ताला खोलने पर बिलकुल नंगी राक्षसी के रूपमें क्षुधासे दुर्बल हुई वह छिन्न नासिका कनकवती सन्दूकमें पड़ी नजर आई। उसे देखते ही राजा आदि सबही स्तब्ध होगये। महाबल जोशमें आकर बोल उठा पिताजी! राक्षसीके रूपमें नाच करती हुई आपने उसरात में इसी स्त्रीको देखा था? यों कह कुमारने उस स्त्रीका हाथ पकड़ कर उसे संदूकसे बाहर निकाली। जब उस पर निरण्ठुरता पूर्वक कुमारने ठोंकरोंकी मार शुरू की तब उसने काँपते हुये अपना तमाम प्रपंच प्रगट कर दिया। अब अविचारित किये हुए कार्यका राजाको महान् पश्चात्ताप करना पड़ा। सचमुचही ऐसे उलझन भरे प्रसंगोंमें ही बुद्धिमानोंकी बुद्धिमत्ता, धैर्यवानोंकी धीरता, विवेकी पुरुषोंकी विवेकता, दीर्घ दर्शियोंकी दीर्घ दर्शिता और विचार शीलताका निर्णय होता है।

राजाके पश्चात्ताप और गुस्सेकी हद न थी, वह इस कार्यसे लोगोंमें मुख दिखाने लायक भी अपने आपको न समझता था; इसलिये छिन्न नासिका कनकवतीको उसने तुरन्त ही देश निकाले की शिक्षा दी। परन्तु इससे महाबल की दुःखित आत्माको क्या शान्ति मिल सकती थी? पूरे दिनकी गर्भवती और निर्दोष पत्नीके ऐसे अनिष्ट

भविष्यसे महाबलके शोक या दुखका पार न रहा, उस-का हृदय पराधीन बन गया। उसने मनको मसोस कर किसीसे बोलने तथा भोजन करनेका त्यागकर दिया। उसके नेत्रोंसे रह रह कर सावन भादोंके वर्षाकी भाँति आँसुओंकी झड़ी लग गई। विशेष क्या कहें वह अपनी निर्दोष प्रियाके वियोगसे फकीर बनकर मरनेके लिए तैयार हो गया। सचमुचही मोहके उदयमें मनुष्योंके अं-तर नेत्रों पर पड़दा पड़ जाता है। राजकुमारको मृत्युके लिये उत्सुक देख राजा और रानीभी वैसीही दुःखद अवस्थाका अनुभव करने लगे। इस समय राजकुलमें ही नहीं बल्कि सारे नगरमें शोक और उदासीनताका साम्रा-ज्य छाया हुआ था। दीर्घ निश्वासके सिवा किसीके मुँहसे और कोई शब्द न निकलता था।

दैव वशात् इस समय कहींसे फिरता हुआ वहाँपर एक निमित्तज्ञ पुरुष आ पहुँचा। मालूम होनेसे उसे राजसभामें बुलाया गया। उसके हाथमें एक अष्टांग निमित्तका पुस्तक था। प्रधान मंत्रीने उसका आदर सत्कार कर उसे उचित आसनपर बैठाया।

प्रधान—"निमित्तज्ञ महाशय! महाबल कुमारकी पत्नी मलयासुन्दरी निर्दोष होनेपर भी एक स्त्रीके प्रपंचसे निकाल दी गई है। इसी कारण आज हम उसके वियोग

से दुःखित हो शोक सागरमें डूब रहे हैं। इसका परिणाम हमें बहुत भयंकर मालूम होता है। इसलिये यदि आपके निमित्त बलसे आप यह बतला सकते हैं कि वह कुमार की पत्नी किसी जगह जीवित है या नहीं। तो कृपया बतलाकर हमपर उपकार करें। प्रश्नकुण्डली बनाकर और उसे अच्छी तरह देख निमित्तज्ञ बोला—'महाशयजी! राजकुमारकी पत्नी जीवित है और वह एक वर्षके बाद कुमारको अवश्य मिलेगी। मलयासुन्दरी जीवित है यह अमृतके समान वचन सुनकर, पुनर्जन्मसा प्राप्त कर, कुमार एकदम बोल उठा—"पण्डितजी! विलंब न कीजिये, आप मुझे कृपया शीघ्र बतलाइए कि वह इस समय कहाँ पर है?"

निमित्तज्ञ—'कुमार! आपकी पत्नी जंगलमें है या बस्तीमें, दुःखमें है या सुखमें, इत्यादि विस्तारवाली बातें, मैं नहीं जान सकता। तथापि यह मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि वह सुंदरी जीवित है और उसकी आयुष्य आपसे लम्बी है। यह बात सुनकर राजाके मनमें शक पैदा हुआ कि उसे मैंने निर्जन अटवीमें भेजकर मरवा डाला है। तब फिर वह जीवित किस तरह रह सकती है? इस बातका निर्णय करनेके लिये उसने फौरन उन सुभटों को बुलवाया जिनके हवाले मारनेके लिये किया था।

राजा—'सुभटो ! मैं तुम्हें यह बात पूछनेसे पहले अभयदान देता हूँ, सच बोलो, मैंने तुम्हें मलयासुन्दरी को अटवीमें ले जाकर मार डालनेका आदेश दिया था। क्या तुमने सचमुच उसे ले जाकर मार डाला था?"

सुभट—'महाराज ! हम सच कहते हैं, आपकी आज्ञा पाकर, जब हम उसे रथमें बैठा कर, उस निर्जन अटवीमें लेगये तब प्रातःकाल हो गया था। हमने उसे रथसे नीचे उतारा' उस समय उसका शरीर भयसे काँप रहा था, आँखोंसे आँसु बह रहे थे। हमने उसकी सौम्य मुखमुद्रा को देख विचार किया कि महाराजको उसके राक्षसी होने का किसीने यों ही भ्रम डालदिया है। ऐसी सुन्दर आकृति और सुलक्षणोंवाली स्त्री कदापि राक्षसी नहीं हो सकती। इसलिए महाराजकी आज्ञानुसार यदि हम इसका वध करेंगे तो हमें निष्कारण ही दो प्राणियोंकी हत्याका पाप लगेगा। अतः यह समझकर कि इस हिंसक पशुओंवाली अटवीमें आपही यह किसी हिंसक पशुका शिकार बन जायगी, उसे जंगलमें छोड़कर हम वापिस चले आये, और हमने आपके समक्ष आकर भयसे आपको उसके मारनेका असत्य समाचार दिया था।

राजा—(दीर्घ निश्वास ले पश्चात्ताप पूर्वक) 'अहो ! इन नौकरोंमें जो दया और बुद्धिमत्ता है उतनी भी दया

और बुद्धि मुझमें नहीं ! धन्य हैं ऐसे दयालु और विचार शील मनुष्योंको । मेरे जैसे विचार एवं दयाहीन मनुष्यों को धिक्कार है । उन लोगों की प्रशंसाकर राजाने सुभटों और निमित्तज्ञको बहुतसा धन देकर उनका आदर सत्कार किया । कुमार बोला—'ज्ञानी महाशय ! आपका कहना बिलकुल सच है, सुभटोंने भी उसे जीवित ही छोड़ दिया है । (फिर पिताकी तरफ देख) पिताजी ! जिस जगह सुभटों ने उसे जंगलमें छोड़ दिया था वहाँ जाकर तलाश तो करें । राजपुरुषोंको भेजकर चंद्रावतीमें भी खबर करायें, न जाने हमारे पुण्योदयसे वह किसी तरह अपने पिताके वहाँ पहुँच गई हो । कुमारके कहनेसे राजाने जगह २ राजपुरुषोंको भेजकर मलयासुन्दरीकी शोध कराना शुरू कर दिया । राजाने कुमारको समझा बुझाकर भोजन कराया और खुदने भी भोजन किया ।

मलयासुन्दरीकी खोजमें भेजे हुए राजपुरुष कुछ समयके बाद जहाँ तहाँ ढूँढकर वापिस आने लगे और उसके न मिलनेका समाचार देने लगे । उनके समाचारसे कुमारकी आशा निराशामें परिवर्तित होगई । वह अपनी प्रियाके सम्बन्धमें नाना प्रकारकी कल्पनायें करने लगा । युद्धमें जाते समय प्रेमभरे शब्दोंसे साथ चलनेकी उसकी प्रार्थनाको याद कर विशेष दुःखित होने लगा । वह मन

हां मन उसे समझकर कहने लगा--प्यारी ! राजमहलके उत्तम सुखका थोड़ासा अनुभव कर अब तू दुःखके अगाध समुद्रमें जा पड़ी । प्रिये ! ऐसे घोर दुःखोंका अनुभव तू किस तरह करती होगी ? इन्हीं विचारोंसे महाबलको किसी भी जगह चैन न पड़ती थी । सूक्ष्म ज्वरवाले रोगीके समान अपनी प्रियाके वियोगसे उसे खाना पीना बिलकुल अच्छा न लगता था । उसने निरुपाय होकर एक रोज यह निश्चय किया "जब उस अष्टांगनिमित्तज्ञ ज्ञानीने यह बतलाया है कि एक वर्षके बाद वह मुझे जीवित मिलेगी तब मुझे स्वयं क्यों न उसकी तलाश करनी चाहिये ? उसके बगैर मेरा अब यहाँपर क्या रक्खा है ? यदि वह एक वर्ष पर्यन्त ढूँढनेपर भी न मिली तो मुझे यहाँ न आकर स्वयं भी उसके वियोगमें प्राणत्याग कर देना चाहिये । यह निश्चय कर एक रोज रातके समय किसीको मालूम न हो इस प्रकार हाथमें तलवार ले वह अपने शहरसे निकल गया । अब वह भयानक जंगलों बस्ती, और ग्रामोंमें मलयासुन्दरीकी शोध करता हुआ भूख प्यास सहनकर, निद्राको त्यागकर भिखारीके समान फिरने लगा ।

इधर प्रातःकाल होनेपर जब ढूँढनेसे भी राजकुमारका पता न लगा तब राजाके दुःखका पार न रहा । वह

समझ तो गया कि अपनी प्रियाके वियोगसे कुमार यहाँ पर नहीं रह सका। उसकी खोजके लिये ही वह रातमें एकाकी चला गया मालूम होता है। अभीतक महाराज शूरपालको एकही चिन्ता थी किन्तु कुमारके जानेसे उन पर डबल चिन्ताका भार आ पड़ा। उसने दोनोंकी तलाशमें चारों तरफ राज पुरुषोंको भेजा।

"सूर्य निकल आया, वैसाही जैसा चमकीला और सुर्ख रंगका हमेंशा निकला करता है। आसमान भी वैसाही नीला है। जंगलके दरख्तोंका वैसाही नीला रंग देख पड़ रहा है, सब कुछ वैसाही है जैसा कि मैं बचपन से देखती आ रही हूँ। परन्तु दुर्भाग्यवश खुद मैं ही वह नहीं हूँ जो कल थी। यह मैं जानती हूँ कि बदनसीबी अकेली ही नहीं आती, किन्तु अपने साथ और भी नई नई आफ़तोंको ले आती है। जब संकटोंका सिलसिला शुरू हुआ है तब वह अपना पूरा जोर दिखाये बिना न रहेगा। हतभाग्य मलयासुन्दरी! अब तू आनेवाले इन तमाम संकटोंका सामना करने और निर्वासित जीवन बितानेके लिये कठिन हृदया बनजा। राजा और राजपुरुषोंका इसमें क्या दोष है! मेरा अशुभ कर्म उदय होनेपर वे सब निमित्त बन गये हैं। परन्तु मेरे हृदयमें यह बात अधिक खटकती है कि मुझे मेरे बुद्धिमान् श्वसुरने किस अपरा-

थमें निर्वासित किया है ? इस प्रकारका अविचारित कार्य करनेके लिये उन्हें अवश्य ही महान् पश्चात्ताप होगा ।

हे नाथ ! आपतो मेरे सुखके लिएही मुझे घर छोड़ गये थे । परन्तु आपके विना मेरे नसीबमें सुख कहाँ बदा है ! जब आप युद्धसे वापिस लौटेंगे तब मेरी यह दुर्दशा सुनकर आपके प्रेमी हृदयको कितना दुःख होगा ! प्यारे ! क्या इस जीवनमें मुझे फिरसे आपका समागम हो सकेगा ? हा ! मैंने जो कुछ भी अपने सुखके लिए किया था वह सब कुछ उलटा होगया । इन्हीं विचारोंमें वह पागलसी बनकर नीचेका गाना गाने लगी—

*घर बसाया चैनको, जाना न था अंजाम ।
आगसे वह जलगया, बस मैं रही ना काम ॥१॥
अमृत सागरमें गई, गोता लगाया जाय ।
विष हुआ तकदीरसे, मेरे लिए वह हाय ॥२॥
छोड़ नीचेको चढ़ी, ऊँचे बढ़ाकर पाँव ।
अगम पानीमें गिरी, कोई चला नहीं दाव ॥३॥
चाह प्रिय सुखकी मुझे थी, आह जीके साथ ।
प्राप्त कर वह रत्न खो, आई गरीबी हाथ ॥४॥
प्यास की मारी गई मैं, मेहके जो पास ।
गिर पड़ी बिजली न पूरी, हुई मेरी आस ॥५॥

* (प्राप्त)

चारों तरफ सन्नाटा देख अब वह कुछ जागृतसी हुई। उसने रोने धोनेसे अपनी आंखें सुजा ली थीं; परन्तु रुदन और चिन्ताका कुछ भी अच्छा परिणाम न देख उसने स्वयं अपने आपको ढाडस दिया। संध्याके समय विलाप और चिन्ताके कारण उसके गर्भपूर्ण उदरमें पीड़ा होने लगी। कुछ देर वेदना सहकर जिस तरह प्रातःकालमें पूर्व दिशा तेजस्वी सूर्य बिम्बको पैदा करती है वैसेही मलयासुन्दरीने एक तेजस्वी पुत्रको जन्म दिया।

जिस राजरमणीके पास अनेक दास दासी हाजर रहते थे। जिसका प्रसूतीकर्म गगनचुम्बी राजमहलोंमें प्रसूति करानेवाली कुशल स्त्रियोंकी देख रेखमें होना था और जिसे ऐसे प्रसंगमें अनेक प्रकारके सुभीतोंकी आवश्यकता थी वही राजरमणी भाग्य चक्रमें पड़कर निर्वासित हो आज एक भिखारनके समान जंगली पशुओंकी स्थितिमें रहकर पुत्रको जन्म देती है। इस समय उसे बाह्य और अभ्यन्तर कितना दुःख हुआ होगा यहतो कोई ज्ञानी या वह स्वयंही जानती है। ऐसी दुखद स्थितिमें भी पुत्र प्राप्तिने उसे कुछ आश्वासन दिया। बच्चेको साफ सूफ कर गोदमें बैठाकर माता प्रेमभरी दृष्टिसे उसके मुख तरफ एकटक देखने लगी। इस समय वह अपने ऊपर पड़े हुये तमाम दुखोंको भूल गई। उस पुत्रकी मुख मुद्रा

सूर्य बिम्बके समान तेजस्वी और सुन्दर देखकर माताके नेत्रोंसे हर्षके अश्रु बहने लगे। वह अपनी स्थितिको याद कर पुत्रके सन्मुख देख कहने लगी—'हे पुत्र! आज हजारों मनोरथोंके साथ तेरा जन्म हुआ है, परंतु तेरी हतभाग्य माता ऐसे भयंकर अरण्यमें तेरा क्या जन्मोत्सव कर सकती है? यदि तेरा जन्म घरपर हुआ होता या तेरे पिताके पास होता तो आजके दिन राज्यभरमें महोत्सव मनाया जाता। घर २ मंगल गाये जाते। बेटा! मुझ कमनसीब स्त्रीके तमाम मनोरथ मनमें ही विलीन हो गये। यों बोलते हुए फिरसे उसका हृदय भर आया और वह फूट २ कर रोने लगी। अरण्यवासी हिंसक पशुओंके भयसे सावधान रहकर उसने बड़ी मुसकिलसे रात बिताई।

मनुष्यकी दुःखित अवस्थामें सुकुमार शारीरिक परिस्थिति भी कठोरता धारण करलेती है, एवं अधिक समयतक रहनेवाला दुःखभी उसके हृदयमें घर करलेता है। राज पुत्री होनेके कारण धैर्य और साहस धारण कर वह वहाँसे पूर्वदिशाकी ओर चलपड़ी। कुछ दूर जानेपर उसे एक नदी बहती हुई नजर आई। नदीपर जाकर उसने अपनी तमाम अशुचिको दूरकर पासमें रहे वृक्षोंके नीचे पड़ेहुए कुछ,पके हुए फल खाकर अपनी

क्षुधाशान्त की। नदीके किनारेपर वृक्षोंकी सघन घटा घिरी हुई थी; उन वृक्षोंके एक निकुंजमें रहकर मलया-सुन्दरी अपने पुत्रका पालन करते हुए अपने निर्वासित जीवन के दिन बिताने लगी।

एक दिन बहुतसे परिवार सहित बलसार नामक सार्थवाहने उसी नदीके किनारेपर अपना पड़ाव डाला जहाँ दुर्दैव पीड़ित मलयासुन्दरी अपने संकटपूर्ण समय को बिता रही थी। संध्याके समय बलसार दिशाफराकत के लिए अपने तंबूसे निकला। जब वह दिशा जाकर उस घनी-वृक्षघटाके पाससे वापिस लौटा तब उसने वहाँ पर एक बच्चेके रोनेकी आवाज सुनी। इससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा ऐसे भयंकर जंगलमें छोटे बच्चेकी आवाज कहाँ से आरही है! बच्चेके शब्दानु-सार जाकर उसने वनदेवीके समान पुत्रको गोदमें लिये वृक्षके निकुंजमें बैठी मलयासुन्दरीको देखा। वह चकित हो साहसकर पूछने लगा—'भद्रे! तुम कौन हो? ऐसे जंगलमें एकली क्यों बैठी हो? तुम्हारी मुखाकृतिसे मालूम होता है कि तुम किसी उत्तम कुलमें जन्मी हो। मैं बलसार नामक सार्थवाह हू और सागर तिलक नामक शहरमें रहता हूँ। व्यापारके निमित्त प्रायः देश देशान्तरों में विशेष घूमता रहता हूँ। तुम मुझसे किसी तरहका भी

संकोच मत करो। और इस नजीकके पड़ावमें मेरे साथ मेरे तंबूमें चलो।

मलयासुन्दरीकी रूपराशि को देख कर वलसार का मन विचलित हो गया था। अतः उसका दुःख दूर करनेके लिए नहीं किन्तु अपनी कामवासनासे प्रेरित हो वह मलयासुन्दरी को अपने तंबूमें लेजाना चाहता था। वलसारका भाव मलयासुन्दरी समझ गई थी। अतः उसने उसे उत्तर दिया--श्रीमान्! मैं एक चांडाल-की पुत्री हूँ। माता पिताके साथ क्लेश होनेके कारण क्रोधावेषमें आकर मैं यहाँ भाग आई हूँ। अब मैं वापिस अपने घर चली जाऊंगी। आप जाइये, मैं आपके साथ हरगिज न आऊंगी। सार्थवाह भी इस बातको ताड़ गया कि इसकी बोलचाल मुखाकृतिसे सचमुच यह ऊंच खानदानकी स्त्री है। परन्तु किसी कारणवश यह अपनें आपको छिपाती है। वह बोला--सुन्दरी! तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारा चांडालपन किसीके सामने प्रगट न करूंगा और जैसे तुम कहोगी वैसेही करूँगा। इस तरह बोलता हुआ सार्थवाह मलयासुन्दरीके नजदीक आपहुँचा और जिस तरह कोई लुटेरा किसीका धन छीनकर लेजाता है, वैसेही वह मलयासुन्दरीकी गोदसे उसके बच्चेको उठाकर अपने पड़ावकी तरफ चल दिया।

मलयासुन्दरी एक आपत्तिपर दूसरी आपत्ति आई देख अधिक सावधान होगई। उस महासतीने प्राणान्त कष्ट आनेपरभी सदाचारसे विचलित न होनेके लिए अपने मनको खूब दृढ़ बनालिया। परन्तु पुत्र मोहसे प्रेरित हो जैसे गाय अपने बछड़ेके पीछे चली जाती है वैसेही पुत्रको वापिस लेनेके लिए दीनताभरे वचन बोलती हुई वह सार्थवाहके पीछे २ चली गई। मलया-सुन्दरीको अपने पीछे आती देख सार्थवाहको बड़ी खुशी हुई। तंबूमें जानेपर मलयासुन्दरीने अपने बच्चेको वापिस लेनेके लिए बहुतही दीनता प्रकट की, परन्तु बलसारने न तो उसे उसका पुत्रही दिया और न ही उसे वहांसे वापिस जाने दिया। पुत्रको पैदा हुए अभी आठ ही दिन हुए थे इसलिये स्तनपान न मिलनेके कारण उसके मृत्युकी शंकासे मलयासुन्दरीने भी पुत्रको छोड़ वापिस जाना उचित न समझा। पुत्रकी रक्षाके लिए इच्छा न होनेपर भी वह बलसारके पटावासमें रह गई। बलसारने किसीको मालूम न हो इस तरह उसके रहनेका प्रबन्ध कर दिया और उसका दिल परचानेके लिए उसके पास एक दासीभी नियुक्त करदी। उसे विश्वास दिलाने के लिए सार्थवाह उचित वचनोंसे संबोधित करने लगा। अब वह अपने सार्थके साथ मलयासुन्दरीको लेकर

अपने सागरतिलक नामक शहरमें आपहुँचा। वहाँ आकर उसने एक गुप्त मकानमें मलयासुन्दरीके रहनेका प्रबन्ध किया। एक दिन बलसार मलयासुन्दरीके पास आकर नम्र शब्दोंमें बोला–सुन्दरी ! तुम्हारा नाम तो बतलाओ। मलयासुन्दरीने मंदस्वर में उत्तर दिया मेरा नाम मलयासुन्दरी है। यह नाम सुनकर उसके उच्च खानदानके विषयमें जो उसका अनुमान था वह और भी दृढ़ होगया। वह बोला–सुन्दरी ! तुम मुझे अपना स्वामी स्वीकार करो तो मैं सदाके लिए तुम्हारा सेवक बनकर रहूँगा और मेरी इसअतुल संपत्तिका मालिक तुम और यह तुम्हारा पुत्र ही होगा; क्योंकि मेरे कोई संतान नहीं है।

मलयासुन्दरी–सार्थवाह ! आप भी बड़े उच्च कुलीन मालूम होते हैं, इसलिए आप विचार करें कि पर स्त्री गमन करना संसारमें महान् पाप माना है। उसमेंभी सती स्त्रीके सतीत्वपर हाथ डालना यह और भी अधिक घोर पाप गिना जाता है। आप जैसे कुलीन पुरुषोंके लिए यह काम सर्वथा अनुचित है। तथापि मेरे सर्व-स्वका नाश हो और शरीरके टुकड़े टुकड़े हो जाने पर भी चंद्रमाके समान निर्मल मैं अपने शीलको कलंकित न करूँगी। बलसार अभी तक यह समझ रहा था कि स्त्री

जाति है, समझाने बुझानेसे और खातिर तवज्जय करने पर खुद बखुद धीरे २ रास्तेपर आजायगी। परन्तु मलयासुन्दरीके निश्चयात्मक वचन सुन उसके तमाम मनोरथों पर पानी फिर गया। अब उसके हृदयमें मलयासुन्दरी परके प्रेमने क्रोधका रूप धारण कर लिया। उसने क्रोधमें आकर फिरसे उसके बच्चेको छीन लिया और उसे एक मकानमें बन्दकर वह अपने घर चला गया। घरपर अपनी प्रियसुन्दरी नामक स्त्रीके पास जाकर बोला—"प्रिये! आज मैं अशोक बगीचेमें गया था वहाँपर मुझे श्रेष्ट लक्षणोंवाला और सुन्दर रूपवान यह लड़का पड़ा हुआ मिला है। निःसंतान होनेसे हमें रातदिन पुत्रकी चिंता रहती थी। आज हमें परमात्माने यह पुत्र दिया है। तुम बड़ी हिफाजतके साथ इस को पालन पोषण करो। निःसन्तान प्रियसुन्दरी भी उस सुन्दर बालकको देख बड़ी खुश हुई। बलसारने उसका नामभी अपने नाम पर 'बल' रक्खा और उसका पालन करनेके लिए एक धाय भी रख दी।

सागरतिलकभी एक बड़े बन्दरगाहका शहर था। वहाँ पर कंदर्प नामक राजा राज्य करता था और व्यापारी लोग भी वहाँ पर बड़े धनाढ्य थे। उन बड़े व्यापारियों में से ही एक यह बलसार सार्थवाह भी था। बलसार

अति धनाढ्य पोने परभी उसके हृदयमें सारी दुनियाका धन बटोर कर अपने घरमें एकत्रित कर लेनेकी लोभकी भावना सदैव जागृत रहती थी। इसलिए वह प्रायः व्यापारके निमित्त परदेशमें ही अधिक फिरा करता था। अब उसने व्यापारके निमित्त समुद्रमार्गसे बरबरकूल जानेकी तैयारी की। जहाज तैयार होगये। मोहान्ध बलसारने मलयासुन्दरीको बलात्कारसे अपने साथ ले लिया। समुद्रमार्गमें गमन करते हुए जहाजमें बैठी हुई मलयासुन्दरी के हृदयमें अनेक प्रकारकी भावनायें पैदा होने लगीं। क्या यह दुराशय सार्थवाह मुझे समुद्रमें डाल देगा? या परदेशमें ले जाकर कहीं बेच देगा? खैर मेरा चाहे जो हो परन्तु इस दुष्टने न जाने मेरे पुत्रको कैसी स्थितिमें रक्खा होगा? पुत्रके दुःखसे दुःखित हो उसने फिर बलसारसे पूछा—तुमने मेरे बच्चेको कहाँ रक्खा है? यह सुन बलसारने फिर वही अपनी पुरानी याचना प्रकट की। मलयासुन्दरी चुप हो रही।

पवन अनुकूल होनेसे बलसार सार्थवाहके जहाज थोड़ेही दिनोंमें बर्बरकूल जा पहुँचे। उसने अपना तमाम माल वहाँपर काफी नफेसे बेच डाला। मलयासुन्दरीसे किसी तरह सी अपनी इच्छापूर्ण होती न देखकर उस दुष्टने उसे बहुतसा धन लेकर किसी रंग करनेवाले निर्दय

रंगरेज लोगोंके हाथ बेच दिया। वहाँपर भी उसे विषयवासनासे अन्ध बने और उसके रूपसे मोहित हुए युवक पुरुषोंने काम याचनाके लिए बहुतही समझाया बुझाया परन्तु उसकी मानसिक दृढ़ताको देखकर वह अपने कार्य में सफल न हुए। मलयासुन्दरीने जब उनका कहना मंजूर न किया तब उन निर्दययुवक रंगरेजोंने उसके शरीरमें सुईयाँ चुभोकर उसका रुधिर निकाला। इससे मलयासुन्दरीको असह्य वेदनाके साथ मूर्च्छा आगई। कुछ दिनके बाद जब उसके शरीरमें फिरसे रुधिर भर आया तब फिर उन्होंने पूर्वके समानही उसके शरीरसे खून निकाला। इस तरह हमेशा खून निकालकर वे उस खूनको कपड़े रंगनेमें उपयुक्त करते थे। इस जगह मलयासुन्दरीको जो वेदनायें सहनी पड़ीं वैसे दुःख उसने कभी कानोंसे भी न सुने थे।

एक दिन उन लोगोंने फिर मलयासुन्दरीके शरीरसे रुधिर निकाला, इससे मलयासुन्दरी असह्य वेदनाके कारण मूर्च्छित हो मृतककी तरह जमीन पर पड़ी थी। उसका सारा शरीर रुधिरसे सना हुआ था। उस समय उस घरके तमाम मनुष्य किसी एक प्रसंगसे घरके अन्दर गये हुए थे। ठीक इसी समय आकाशमार्गसे अकस्मात एक भारंड पक्षी वहाँ आपहुँचा। वह पक्षी उस मकान

के गृहांगणमें अन्य कोई न होनेसे बेहोश पड़ी मलया-सुन्दरीको मांसका लोथड़ा समझ कर उठाके लेगया ।

भारंडपक्षी बहुत बड़ी पाँखोंवाला होता है। सुना है कि उसमें हाथीको भी उठा ले जानेका सामर्थ्य होता है। वही भारंडपक्षी मांसपिंडकी भ्रांतिसे मलयासुन्दरी को उठा ले गया। अब वह समुद्र परसे उड़ता हुआ किसी द्वीपकी तरफ जा रहा था। रास्तेमें सामनेसे आता हुआ एक भारंडपक्षी और मिल गया। उस माँसके लोथ-ड़ेको देख सामने आनेवाले भारंडने उस पर आक्रमण किया। दोनोंकी लड़ाईमें मलयासुन्दरी उस भारंडके पंजों से निकल पड़ी, भारंडके पंजोंसे नीचेगिरती हुईको उसे कुछ ठंडी हवा लगनेके कारण होशसा आगया था। अतः वह पंच परमेष्टिमंत्र का स्मरण करने लगी और स्मरण करते हुए ही वह समुद्रके अगाध जलमें आ गिरी।

—※—※—※—

'दु:खमें वियोगी मिलन,

दिन ढल चुका था। आज कुछ विशेष कार्य न होने से राजा कांदर्पने अपने सभासदोंसे कहा, चलो भाई! आज बन्दरगाहकी तरफ घूमने चलें। 'जी हजूर' कहकर सभासदोंने उनकी आज्ञाको स्वीकार किया। घोड़े तैयार होकर आगये। राजा कंदर्प अपने साथियोंके साथ बंदर-गाहकी तरफ चल पड़ा। बंदरगाहकी ओरसे घूमते हुए जब वे समुद्रके किनारे पूर्वकी तरफ जा रहे थे तब उनमें से एक सवार बोल उठा—अहो! कैसा आश्चर्य है? समुद्र मार्गसे कोई मनुष्य मगराकार जानवर पर बैठा हुआ समुद्रतटकी ओर आ रहा है। यह सुन तमाम मनुष्योंका ध्यान उसी तरफ खिंच गया। कुछ नजदीक आनेसे मालूम हुआ है कि कोई एक मनुष्य मगर-मच्छपर सवार हो पूर्णवेगसे उन्हीं मनुष्योंकी तरफ देखता हुआ चला आ रहा हैं। कंदर्प राजा सहित तमाम मनुष्य आश्चर्यके साथ मौन धारणकर, उसी तरफ देखते हुए खड़े रहे। जिस तरफ वे मनुष्य खड़े थे; उससे दूसरी तरफ समुद्रतट के पास आकर वह मच्छ खड़ा रहा। उसने अपनी पीठ

पर बैठे हुए उस मनुष्यको मृदुशुण्डाकार मुखसे धीरे धीरे भूमिपर उतार दिया। और उसे बारंबार देखता हुआ वह मच्छ वापिस समुद्र में चला गया।

पाठक महाशय! आप स्वयं समझ गये होंगे कि मगराकार मच्छपर बैठकर जल मार्गसे समुद्रतट पर आने वाली व्यक्ति मलयासुंदरीके सिवा और कोई नहीं है। जिस समय पंचपरमेष्ठि नवकारमंत्रको उच्चारण करते हुए वह भारंड पक्षीके पंजोंसे निकल समुद्रमें गिरी थी। उसवक्त उसके पुण्योदयसे पानीमें पड़नेकी जगह एक मगर मच्छ तैर रहा था। मलयासुन्दरी उसीकी पीठपर पड़ी थी। अब उसने अपने जीवनकी आशा सर्वथा छोड़ दी थी, इसलिये अन्तिम समय सावधानता पूर्वक वह परमात्माका नाम स्मरण कर रही थी। उसका शब्द सुनकर आश्चर्य चकित हो मगर-मच्छने गर्दन झुकाकर अपनी पीठकी तरफ देखा। मलयासुन्दरीको अपनी पीठपर बैठी देख वह एकदम स्तब्धसा हो गया। कुछदेर पानी पर स्थित रहकर वह समुद्रतटकी ओर ऐसा चला जैसे कोई शीघ्र वेगवाली किश्ती दौड़ती है। मच्छकी यह प्रवृत्ति देख विस्मयके साथ मलयासुंदरी विचारने लगी—'यह मत्स्य मुझे इसतरह कहाँ ले जायगा? सचमुचही किसी हितैषी मनुष्यके समान यह मच्छ बारंबार मेरे सन्-

मुख देखता है। यह अज्ञानजलचर प्राणीभी मुझपर कितना उपकार करता है! इस प्रकार विचार करती हुई मच्छ पर मलयासुन्दरी किनारेकी तरफ आने लगी। थोड़े ही समयमें शीघ्रगामी किस्तीके समान वह सागर तिलक नामक नगरके वंदरगाहके पास आपहुँची।

मलयासुंदरीका शरीर अनेक व्रणोंसे परिपूर्ण था। इस समय वेदना, क्षुधा, तृषा, और परिश्रमसे उसका शरीर बिलकुल अशक्त, होगया था। उसमें उठकर चलने और अच्छी तरह बात करनेकी भी ताकत न रह गई थी। मच्छके वापिस लौटजानेपर कंदर्पराजा अपने साथियों सहित मलयासुन्दरीके पास आया। अशक्त शरीर होने पर भी मलयासुन्दरीकी लावण्यता सर्वथा नष्ट न हो गई थी। अतः उसके सन्मुख देख राजा अपने साथियोंसे बोला—यह तो कोई बड़ी सुन्दर युवती है। घने काले भीगेहुए बालोंकी चोटी बड़की जटाके समान पीठपरसे होकर नीचेतक लटकरही है। शीशेके समान साफ और चमकता हुआ ललाट मानो नौकरोंको मालिकके समान आज्ञा दे रहा है। इसकी बड़ी २ आँखें सन्ध्या समयके कमल दलोंके समान मुंदी हुई हैं। कौन कह सकता है कि इनके अन्दर कैसी दृष्टि छिपी हुई है? उठी हुई सीधी लम्बी नाकके नीचे होठों में राजसी दर्पसे युक्त हास्य छिपा हुआ है। उसके नीचे

टोढ़ी मानों सुधापात्रके समान उस विगलित हास्यको ग्रहण करनेके लिये तैयार है। ऊँची और टेढ़ी गर्दनसे इस समय भी अभिमान प्रगट हो रहा है। सिकुड़े हुये गीले कपड़ोंके नीचे इसका यह गोरावदन उसी प्रकार शोभ रहा है जैसे पतले बादलोंसे घिरा हुआ आकाशमें चंद्रमा। ऐसी दुर्दशामें भी इस सुन्दरीका तेजवान् एवं सौम्य मुखमंडल कितना सुन्दर और लुभावना है! परंतु इस मत्स्यका इसके साथ क्या सम्बन्ध? इस तरह प्रयत्न पूर्वक यह जलचर प्राणी इसे समुद्रके किनारे क्यों छोड़ गया होगा? ये तमाम बातें इस स्त्रीसे ही मालूम होंगी। इसके शरीरपर नक्रचक्रादि जलचर प्राणियोंके किये हुए ही ये अनेक व्रण मालूम होते हैं। इससे यह भी साबित होता है कि यह स्त्री किसी जहाज़के डूब जानेसे समुद्रमें बहुत दिनोंसे पड़ी होगी। इन तमाम बातोंको जाननेकी उत्सुकतासे कंदर्प बोला–सुन्दरी! मैं सागर तिलक बन्दरका कंदर्प नामक राजा हूँ। तू जराभी भय न रखना। सच कहो, तुम कौन हो? तुम्हारी ऐसी स्थिति क्यों हुई? यह मच्छ कहाँसे यहाँपर तुम्हें ले आया? राजाके शब्द सुनकर मलयासुन्दरीको कुछ आनन्द और कुछ खेद पैदा हुआ। वह सोचने लगी–'अहा! अभीतक भी मेरे भाग्यका अवशेष जागृत है। यहाँपर कुछ आशा

किरणों के पड़नेका संभव होता है। उस दुष्ट सार्थवाह ने भी मुझे पुत्रसहित प्रथम यहाँ ही लाकर रक्खा था। जिस शहरमें उसने मेरे पुत्रको रक्खा है वही यह सागर तिलक शहर है। कर्मों ने मुझे फिर यहाँही लापटका संभव है किसी तरह मुझे यहाँ मेरे प्यारे पुत्रके दर्शन होजायें।

दूसरी तरफ मुझे यहाँपर यह भयभी है, कि यह कंदर्प राजा मेरे पिता और मेरे श्वशुरका कट्टर दुष्मन है। इस के सामने मुझे बड़ी सावधानतासे रहना होगा। इसको अपना परिचय देना मेरे लिये और भी भयंकर संकट दायक होगा! यह सोच मलयासुन्दरीने उत्तर दिया।

राजन्! इस दुर्भाग्य मनुष्यका वृत्तान्त सुननेकी आपको क्या आवश्कता है? मेरे बृत्तान्तसे आपको कुछ भी लाभ न होगा। मैं दूर देशकी रहनेवाली अपने पुण्य नाशके कारण ऐसी दशाको प्राप्त हुई हूँ। मलयासुन्दरीके दुःख पूर्ण उद्‌गार सुनकर राजाके साथी बोले—महाराज! यह बेचारी इस समय दुःखभारसे दबी हुई है, अपने इष्ट मनुष्योंके वियोगसे दुःखित हुई मालूम होती है। इसी कारण अच्छी तरह यह बोलभी नहीं सकती। इस समय इससे कुछभी न पूछकर इसपर कुछ उपकार करना चाहिये। राजा फिर बोला—भद्रे! इस समय तू अत्यन्त दुखी मालूम होती है; तथापि अप

ना नाम तो बतला। मलयासुन्दरीने मंदस्वरसे उत्तर दिया—"मेरा नाम मलया है। राजाने तुरन्तही राज पुरुषोंसे पालखी मँगवाई और मलयासुन्दरीको पालखीमें बैठाकर वह अपने राजमहलमें ले गया। उसने वैद्योंको बुलाकर संरोहिणी औषधी द्वारा मलयासुन्दरीका शरीर ठीक कराया। औषधीके प्रभाव और दासियोंकी परिचर्यसे उसका शरीर थोड़ेही दिनों पहले जैसा कान्ति और तेजवान् होगया।

मलयासुन्दरीका शरीर अच्छा होने पर उसके सौन्दर्य और तेजको देख राजाने उसे एक जुदे महलमें रक्खा उसकी सेवामें अनेक दासदासियाँ नियुक्त करदीं, अब उसका सुन्दर वस्त्रालंकारोंसे विशेष सत्कार किया जाने लगा। इस सत्कारके कारण मलयासुन्दरीको कंदर्प राजाका मनोगत भाव जाननेमें कुछभी देर न लगी। वह सोचती थी कि यह विशेष सम्मान मुझे सुखदाई न होगा। कुछ दिनोंके बाद उसका किया हुआ अनुमान सच मालूम हुआ। उसके रूप और लावण्यसे मुग्ध हो राजा कन्दर्पने अपनी दासीके द्वारा मलयासुन्दरीके समक्ष अपने मनका भाव प्रगट किया। उसने उसे अपनी पटरानी बनानेके लिये तरह तरहके प्रलोभन दिये। परंतु मलयासुन्दरी अपने सतीत्वका प्राणाधिक समझकर जराभी

विचलित न हुई। जब दासियों द्वारा और खुद अपनी प्रार्थनाओंसे भी कार्य सिद्ध होता हुआ न देखा तब वह एक रोज मलयासुंदरीके पास जाकर बोला-सुन्दरी ! दोनों तरफके प्रेमसेही सांसारिक सुखका आनन्द आता है, इस लिये मैं तुम्हें बारंबार समझाता हूँ कि तुम मुझे प्रेम पूर्वक अंगीकार करो अन्यथा मैं तुम्हें अपनी पत्नीतो बना ऊंगा ही। मुझे तुम्हारे रूप और सौन्दर्यने मुग्ध बना दिया है मलयासुन्दरी—धिक्कार है मेरे इस सौन्दर्यको, जिसके कारण मैं नरकके समान मानसिक और शारीरिक यातनायें भोगती हूँ ! महाराज ! आप एक प्रजाके राजा हैं; राजाको कर्तव्य है कि वह पुत्रीके समान अपनी प्रजाका पालन करे। जब आपके जैसे न्यायवान् राजा न्यायको छोड़कर अन्यायमें प्रवृत्ति करें तो संसारमें न्याय किसके पास रहेगा? रक्षक स्वयं भक्षक बनजाय तो फिर उसकी रक्षा कहाँ होगी? दूसरी यहभी बात है कि एक सतीके शीलको विध्वंस करनेका प्रयत्न करनेवाले पापी मनुष्य संसारमें अपनी अपकीर्ति फैलाते हैं और जन्मान्तरमें नरकादिकी घोर वेदनायें भोगते हैं। महाराज ! सतीके शील का खंडन करना केसरी सिंहकी केसरायें ग्रहण करनेके समान है या दृष्टिविष सर्पके मस्तक पर रहे हुये मणिको ग्रहण करना और सतीके शीलपर हाथ डालना एक सरी

खा है । इसलिये हे राजन्! आपको यह विचार परित्याग करना चाहिये । आप ऐसे कृत्योंके द्वारा अपने निष्कलंक कुलको कलंकित न करें ।

इस तरह समझाने परभी कंदर्प अपने दुष्ट अभिप्रायसे जराभी पीछे न हटा । उसने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछीभी हो मैं इसे अपनी स्त्री अवश्य बनाऊंगा मलयासुन्दरीने यह निश्चय कर लिया था अगर किसी भी उपायसे मैं अपने शीलकी रक्षा होती न देखूंगी तो उस दुष्कृत्यसे पहले मैं अपने प्राणोंकी आहुती दे दूंगी इधर वासनाका दास बना हुआ राजा कंदर्प उसे वश करनेके लिये अनेक प्रकारके उपाय सोचता है, परन्तु उसे किसीभी उपायमें सफलता प्राप्त नहीं होती । अब उसने मलयासुन्दरीको हमेशा छेड़कर हठिली बनाना उचित न समझा । अब वह यह सोचकर कि जो काम बलसे नहीं होता वह प्रेम और कपट छलसे सिद्ध होजाता है मलयासुन्दरीको देशान्तरोंसे भेटमें आये हुये अच्छे अच्छे पदार्थ भेजने लगा । एक दिन राजा अपने महलपर टहल रहा था उसी समय एक तोता कहींसे पका हुआ एक आम्रफल लिये जा रहा था; दैवयोग वह उसके चोंचसे निकल जानेके कारण राजाके सामने आ पड़ा । राजा उस सुन्दर फलको हाथमें उठाकर सोच

ने लगा—अहो ! फाल्गुन मासमें यह आम्रफल कहाँसे आया ? विचार करते हुए उसे मालूम हुआ शहरके नजदीकमें जो छिन्नटंक नामक पहाड़ है उसीके एक विषम प्रदेशमें ऐसा वृक्ष है जिसपर सदा काल फल लगते रहते हैं। उसी वृक्षका फल लेकर कोई पक्षी आकाशसे जा रहा होगा; उससे छूटकर यह फल मेरे सामने गिरा है। यदि मैं इस फलको उस स्त्रीको दूंगा तो शायद उसका मन मेरी ओर झुके। यह सोच उसने एक नोकरके द्वारा वह आम्रफल मलयासुन्दरीके पास भेजा और सेवकोंको यह भी आज्ञा दी कि आज उस स्त्रीको ज़नाने महलमें ले जाओ। बलात्कारसे भी मैं आज अपने मनोरथ पूर्ण करूंगा। सेवकने वह पका हुआ आम्रफल मलयासुन्दरीके हाथमें जा दिया। मलयासुन्दरीने आश्चर्य और हर्षके साथ उस आम्रफलको लेलिया। वह इस अवस्थामें आम्रफल मिलने पर अपने कुछ पुण्यका उदय समझ बड़ी खुश हुई। राजाकी आज्ञासे अब उसे अन्तेउरमें छोड़ागया यह समाचार राजाको सुनाया गया कि आम्रफल देख कर वह सुन्दरी बहुत प्रसन्न है और उसे अन्तेउरमें पहुँचा दिया यगाहै। मलयासुन्दरीको यह बात समझनेमें कुछभी देर न लगी कि आज उसे उसका शीलभंग करनेके लिएही अन्तेउरमें लाया गया है।

युद्धको जाते समय महाबलने मलयासुन्दरीको जो रूप परिवर्तनकी गुटिका दी थीं वह उसके पुण्योदयसे अभी तक पासही थीं। अतः समय देख अन्य कोई देख न सके इस तरह उसने एक गुटिकाको आम्ररसमें घिसकर अपने मस्तकपर तिलक कर लिया। बस फिरतो देरीही क्या थी दिव्य गुटिकावाले तिलकके प्रभावसे क्षणभरमें वह स्त्री से एक सुन्दर युवा पुरुष बनगया। अब उसकी प्रसन्नता का पार न था। वह निर्भय हो प्रसन्न चित्तसे अन्तेउरमें टहलने लगा। अन्तेउरमें रहनेवाली अन्य राजरमणियों ने उसे देखकर बड़ा आश्चर्य प्राप्त किया। जिन्हें राजा के सिवा अन्य किसी पुरुषका दर्शन न होता था आज वे अनन्य रूप राशि धारण करनेवाले युवकको देखकर विषयवासनासे प्रेरित हो उसपर मोहित होगई और आपस में कहने लगीं अहा! आज अंतेउरमें महाराजके सिवा यह सुन्दर युवक कहाँसे आगया? यह तो कोई देव या विद्याधर मालूम होता है। इस तरह बोलते हुए उनके हृदयमें विकारकी तरंगें उसी तरह उछलने लगीं जैसे चंद्र बिम्बको देख समुद्रकी लहरें उमड़ती हैं। जिस भाँति किसी पकेफलवाले वृक्षको देखकर भूखे बन्दरोंका समूह उसके फल खानेके लिये उत्सुक और लालायित होता है वैसेही रणवासमें रहने वाली राज महलायें उस पुरुष

के साथ कामक्रीड़ा करनेके लिये उत्सुक हो उसके सन्मुख अनेक प्रकारके हावभाव और कटाक्ष करने लगीं।

अंतेउरकी यह चेष्टा देख आश्चर्यंकोप्राप्त हुई एक दासीने राजाके पास जाकर प्रर्थना की, महाराज! आज अकस्मात् आपके अंतेउरमें एक कोई सुन्दर युवापुरुष बैठा है, और तमाम रानियां उसके साथ हँसी मजाक कर रही हैं। यह समाचार सुनते ही कंदर्प शीघ्रही महलमें आया और साक्षात् कामदेवके समान सुन्दर रूपवान उस नवीन पुरुषको देख वह आश्चर्यमें पड़गया। वह एक दम बोल उठा—'यह पुरुष कौन है? इसने महलमें किस तरह प्रवेश किया? इस प्रश्नके उत्तरमें राजाको कुछ भी जवाब न मिला। अकस्मात् याद आनेसे राजाने मलयासुन्दरीकी तलाश कराई; परन्तु ढूंढने पर भी उसका पता न लगा। अतः आँखें चढ़ा उसने द्वारपालसे पूछा—अरे! वह जो आज नई स्त्री यहाँपर भेजी गई थी वह कहाँ है?' हाथ जोड़कर नम्रतासे द्वारपाल बोला—महाराज! थोड़ी ही देर हुई वह स्त्री यहाँ ही बैठी थी; वह महलसे बाहर बिलकुल नहीं गई, क्योंकि मैं दरवाजे पर सावधान हो पहरा दे रहा हूँ। यह सुन राजा विचारने लगा—किसी प्रयोगसे उस सुन्दरीने पुरुष रूप तोनहीं धारण किया है? जाननेके लिए राजाने उससे प्रश्न किया अरे! तू कौन है!

मलया—"मैं कौन हूँ ? क्या तू स्वयं अपनी नजर से नहीं देख सकता ? राजाने कुछ देरतक विचार कर निश्चय कर लिया कि यह उस सुन्दरीने ही मेरे स्वाधीन न होनेके कारण किसी तरह अपना रूप परिवर्तन कर लिया है। अगर यह यहाँ पर रहेगा तो कुछ और अनर्थ होनेका संभव है। यह विचार कर वह बोला—सुभटो ? क्या देखते हो ? इस पुरुषको महलसे बाहर निकाल दूसरे मकानमें नजर कैद रखो ! राजाज्ञा होते ही राजपुरुषोंने उसे बाहर निकालकर नजदीकके एक मकानमें अपनी निगरानीमें नज़र कैद किया।

मलया सुन्दरीको इससे बड़ा हर्ष हुआ। अपने शीलकी रक्षा देख उसके आनन्दका पार न था। परन्तु इतने मात्रसे ही उसके रूपमें मुग्ध बना राजा कंदर्प उसे छोड़ नहीं सकता था। थोड़ीही देरके बाद वह फिरसे पुरुषरूपा मलया सुन्दरीके पास आया और अनेक प्रकार के अनुकूल उपचारोंसे पूछने लगा, सुन्दरी ! तुमने अपना यह पुरुष रूप किसलिए और किस प्रयोगसे बना लिया ? किस प्रयोगसे फिर तुम्हारा स्त्रीरूप बनेगा ? मलया सुन्दरीने इस बातका कुछभी उत्तर न दिया। इससे क्रोधातुर हो राजाने उसकी बहुतही ताड़ना-तर्जना की। पराधीनतामें अभागन मलयासुन्दरीको वह सब कुछ-

मौन रहकर सहना पड़ा। कामान्ध कंदर्पने जब उसपर प्रतिदिन मार पीटका क्रम शुरू कर दिया तब अति दुःखित हो उसने सोचा, कितने दिनतक इस नारकीय दुःखको सहा जाय! ऐसी कदर्थनाओंसे आत्महत्या करना श्रेयस्कर है। परन्तु यहाँसे किसी तरह निकल भागूं तब न? पुरुष रूपमें अब मुझे अपने शील भंग होनेका कहींपर भी भय नहीं। और इसी कारण इस तरहकी यातनायें भी मुझे अन्यत्र न सहनी पड़ेंगी।

एक दिन रातके समय जब कि उसका पहरेदार निद्रामें पड़ा सो रहा था अन्य कोई न जान सके इस तरह वहाँसे निकल मलयासुन्दरी शहरसे बाहर आ पहुँची। स्त्री जाति होनेके कारण एवं अनुभव और धैर्य के अभावसे वह वहाँसे दूर भाग जानेके लिए समर्थ न हुई। दुःखसे मुक्त होनेके लिए मृत्युका शरण लेनेके सिवा उसे अन्य कोई उपाय न सूझा। वह आत्महत्या करनेका निश्चय कर वहाँपर रहे हुए एक जीर्ण मठकी दीवारके पास खड़ी होगई। उसी दीवारके पास एक बड़ा अंधकूप नामक पानी रहित कुवा था; वह मलया सुन्दरीके देखनेमें आगया; उसमें झंपापात करनेके इरादे से वह उस कुवेके किनारे पर खड़ी हो विचारने लगी— प्रातःकाल होने पर मुझे वहाँपर न देख अवश्यही राजा

और राजपुरुष मेरी खोजमें मेरे पीछे आयेंगे और क्रोधांध हो मुझे बुरी मृत्युसे मारेंगे। इससे इस कुवेमें कूद कर स्वयं मरजाना अच्छा है। यह सोच उसने पंच परमेष्ठि मंत्रका स्मरण किया। मरनेका निश्चय करनेपरभी वह महाबल कुमारको प्रेम और भक्तिभाव भूल न सकी। अतः अंतमें दुर्दैवको उलाँभा देते हुए वह बोल उठी—हे दुर्दैव! तूने मुझे मेरे बन्धुसे वियोगन बनाई। और तूनेही निःस्सीम प्रेमवाले मेरे प्रियतम महाबलसे मुझे जुदा कराया! हे दैव! जन्मान्तरमें तो तू अवश्यही मुझ-पर प्रसन्न हो मेरे प्रियतमके साथ मेरा मिलाप करा देना। हे जंगलके पशुपक्षियो! अगर तुम्हें कहींपर भी मेरे स्वामी महाबल मिल जायँ तो उन्हें मेरा अन्तिम नमस्कार पूर्वक यह संदेश सुनाना कि उस तुम्हारी वियोगिनी मलया सुन्दरीने दुःखसे कायर हो, आपको याद करते हुए इस अंधकूपमें प्राण त्याग किये हैं। इस प्रकार दैवको उपालम्भ देकर और पशुपक्षियोंको अपना संदेश महाबलसे सुनानेकी याचना कर मलयासुन्दरी उस अंधकूपमें कूद पड़ी।

मलयासुन्दरीकी खोजमें महाबलको लगभग एक वर्ष पूर्ण होने आया था। उसने भूख, प्यास और निद्रा को त्यागकर देशभरके बड़े बड़े तमाम शहर, जंगल, पहाड़

और गुफायें ढूँढी, परन्तु उसे मलयासुन्दरीका समाचार तक भी कहीं न मिला। सिर्फ एक सागर तिलक शहरही बड़े शहरोंमेंसे खोज किये बिना रहा हुआ था, सो वहांभी वह आज संध्याके समय आपहुँचा है। भूख प्यास और रास्तेके परिश्रमसे आज वह बहुत ही थक गया था। परन्तु उसके मनमें जो अपनी प्रियाका प्रेम था वह जरा भी कम न हुआ था। इसी कारण आज उसके मनमें ये विचार पैदा हुए—"निमित्तज्ञ ज्ञानीके कथनानुसार आज सालभरसे अधिक समय हो गया, परन्तु मिलनेकी तो बात दूर रही प्रियाका कहीं पर समाचार तक भी नहीं मिला। यदि कल इस शहरमें भी कुछ पता न लगा तो आत्मघात कर इस भारभूत निरस जीवनका अन्त कर देना योग्य है।

रात पड़जानेसे महाबल शहरसे बाहर ही उसी पुराने मठमें ठहर गया था जिसके पास खड़ी होकर कुछ देर पहले मलयासुन्दरीने मरणोन्मुख होकर पूर्वोक्त उद्गार निकाले थे। उस मठमें पड़ेहुए महाबलने पूर्वोक्त विचारों की उधेड़बुनमें मलयासुंदरीके अन्तिम शब्दोंको सुन लिया था। इससे वह एकदम चकित हो उठ बैठा और बोला—'अहा! यह तो मेरी ही प्रियाके सरीखी किसी दुःखित सुन्दरीके मृत्यु सूचक अन्तिम शब्द मालूम होते हैं। यह विचारकर और यों बोलता हुआ 'सुंदरी! ठहरो! साहस

मत करो; वह दौड़कर उस अन्धकूपके पास आया। परन्तु दुर्दैववशात् महाबलके वहाँ पहुँचनेसे पहले ही वह अन्धकूपमें झंपापात कर चुकी थी। महाबलका भी अपनी प्रियाके प्रति कुछ कम प्रेम न था। अतः उसनेभी मलयासुंदरीके पीछे उसी कुवेमें झंपापात कर दिया।

उस जल रहितकुवेमें पड़े बाद महाबलने अपनी तकलीफ कुछ न गिनते हुए अपनेसे पहले पड़े हुए मनुष्य को देखा तो मालूम हुआ कि वह गाढ मूर्च्छामें पड़ा है। और किसी विशेष वेदनाका अनुभव करते हुए मंदस्वरसे अव्यक्त स्थितिमें 'प्यारे महाबल ! दासीको भूल न जाना, यह शब्द बोलता था। यह सुन महाबल विस्मित हुआ। उसने अपने हाथसे उसके शरीरकी शुश्रुषा करनी शुरू की। कुछ देरके बाद उसे कुछ चैतन्य आया। अतः महाबल बोला—साहसिक युवक ! तुम कौन हो ? और किस दुःखसे तुम इस कुवेमें पड़े हो ? मलयासुन्दरीने अपने स्वामी महाबलका शब्द सुनकर कुछ उसीके विषय में अनुमान किया। इसलिये उसने कहा—मुझे भी आपसे यही सवाल पूछना है। परन्तु आप इससे पहले यह काम करें कि अपने थूकसे मेरे मस्तकपर लगे हुये तिलकको मिटा दें। वैसा करनेसे मलयासुन्दरीका वास्तविक रूप हो गया। वह अपने प्राण प्यारेको सन्मुख देख उसके

गलेमें हाथ डालकर एकदम भेट पड़ी और उसके परोक्ष में सहेहुये असह्य दुःखोंको याद कर वह फूट फूट कर रोनी लगी। इस समय कुवेकी भींतके एकगड्डेमें रहे हुये साँपने अपनी फणा बाहर निकाली। उसकी फणापर दे-दीप्यमान् मणि होनेसे कुवेके अन्दर दीपकके जैसे प्रकाश फैल गया। वियोगी दम्पतीने एक दूसरेके दर्शन किये। मणि द्वारा प्रकाश कर उससर्पने भविष्यमें होनेवाले उनके उदयकी सूचना दी। प्रियासे मिलनेकी उत्कंठासे ग्राम, नगर, और जंगलोंमें भटकनेवाला महाबल एक वर्षके बाद ऐसे विषमस्थानमें मणिके प्रकाशमें मलया-सुंदरीके सत्ताात् दर्शनकर हर्षसे गद्गद हो उठा। उसने अत्यंत प्रेमसे उसे अपनी छातीसे लगा लिया। इस समय वे दोनों अपने ऊपर पड़े हुए तमाम दुःखोंको भूलकर जिस अनिर्वचनीय सुखका अनुभव कर रहे थे। भला उस सुखको लिखनेकी इस निर्जीव लेखनीमें शक्ति कहाँ ? दोनोंकी आँखोंसे आनन्द के अश्रु बहने लगे। कुछ देर तक आनन्दके वेगसे हृदय भरआनेके कारण वे एक दूसरेसे कुछ भी न बोल सके। जब अश्रुओंके द्वारा हृदयका वेग दूर होचुका तब महाबल बोलाः—प्रिये! तुम आज तकका तुम्हारा अनुभव किया हुआ मुझे सर्व वृत्तान्त सुनाओ।

मलयासुन्दरीने पतिकी आज्ञा पा कंपित शरीर, दुःखित हृदय, और अश्रु पूर्ण नेत्रोंसे अनुभव किया हुआ अपना दुःख गर्भित वृत्तान्त कह सुनाया।

उसके दुःखका वृत्तान्त सुनकर महाबलका हृदय दुःखसे भर आया, फिरसे उसके नेत्रोंसे आँसु बहने लगे। वह बोल उठा—हा! हा! सुन्दरी! क्या ऐसे दुःखोंका अनुभव करनेके लिये ही तुम्हारा मुझसे सम्बबंध हुआ था? प्रिये! भोगके योग्य तुम्हारे इस सुन्दर शरीरने किस तरह उन असह्य दुःखोंको सहा होगा? प्रिये! बलसारने तुमसे छीन कर उस हमारे पुत्रको कहाँ रक्खा है।

मलया—"स्वामिन्! उस सार्थवाहने इसी नगरमें किसी गुप्त स्थान पर पुत्रको रक्खा है। परन्तु निश्चित स्थानके बिना वह बालक हमें किस तरह मिल सकता है?"

महाबल—"प्रिये! किसी प्रकार इस कुवेसे बाहर निकल जायें फिर कुमारकी तलाश करूंगा।"

मलया—स्वामिन्! मेरे निकाले बाद आपने किसतरह इतना समय बिताया। इस प्रश्नके उत्तरमें महाबलने पल्लीपतिकी विजयसे लेकर आजतकका सर्व-वृत्तान्त कह सुनाया। अपनी बीती बातोंमेंही उन्होंने शेष रात पूरी की। इधर प्रातःकाल होने पर जब मलयासु-

न्दरीको गायब पाया तब पहरेदारने शीघ्र ही राजा कंदर्प को उसके भाग जानेका समाचार दिया। राजा अनेक राजपुरुषोंको साथ ले मलयासुन्दरीके कदम दरकदम के अनुसार चल उसकी खोज निकालता हुआ उसी अन्ध-कूपके पास आपहुँचा। कुवेमें देखनेसे वे दोनों स्त्री-पुरुष देखनेमें आए। राजा समझ गया कि यह पुरुष कोई इस स्त्रीका अवश्य सगा सम्बन्धी होगा। इसी लिये उसने इस वक्त अपना स्वाभाविक स्त्रीरूप बनालिया है और उससे वार्तालाप कर रही है। इत्यादि कुछ सोच कर राजाने उनसे कहा—मैं तुम दोनोंको अभयदान देता हूँ। तुम दोनों कुवेसे बाहर निकलो। रस्सियोंके साथ बाँधकर मांचियाँ कुवेमें लटकाई जाती हैं; उनपर चढ़ बैठो। मैं उन्हें खिंचवाकर तुम्हें बाहर निकलवाता हूँ। मलयासुन्दरीने महाबलसे कहा—प्रियदेव! यही वह कंदर्प राजा है जो विषयांध होकर मेरी अत्यंत कद-र्थना कर रहा है। अब यह मेरे पदचिन्ह देखता हुआ यहाँ आपहुँचा है। मुझे यह शक है कि मुझपर आसक्त होनेके कारण यह दुष्ट आपको न मार डाले। महाबल बोला—प्रिये! इस बातका मुझे भय नहीं है, किसी तरह इस कुवेसे बाहर निकल जाऊँ फिर तो इसके निग्रह का कोई न कोई उपाय ढूँढ़ निकालूँगा। तुम किसी

तरहका भय मत करो, एक मंचिका पर तुम बैठ जाओ और दूसरीपर मैं बैठता हूँ। मलयासुन्दरी पतिकी आज्ञा मंजूर कर एक मंचिकापर बैठ गई और दूसरीपर महाबल। मंचिकायें खींची जाने लगीं, मानो राजा अपना वंश उच्छेदन करनेके लिए पातालसे नागकुमारको आकर्षण कर रहा हो इस तरह उन दम्पतीके मंचकोंको उसने खिंचवाया। जब वह मंचिकायें कुवेके किनारेतक आगई तब राजाने पहले मलयासुन्दरीकी मंचिका बाहर निकलवाई। किनारेके नजदीक आई हुई मंचिकापर नागकुमारके समान रूपवान बैठेहुए महाबलको देखकर राजा विचार में पड़गया। ऐसे सुन्दर पतिवाली स्त्री ताड़ना-तर्जना करनेपर भी मेरे जैसे मनुष्यको कदापि स्वीकार न करेगी। इसलिए इस सुन्दर युवकको बाहर निकालना ठीक नहीं। यह सोच उसने तलवारसे महाबलके मंचका रस्सा काट दिया। रस्सा कटतेही निरालम्बन हो महाबलकुमार अपने मंचसहित शीघ्रही वापिस कुवेमें जा गिरा। यह देख मलयासुन्दरीभी फिरसे वापिस कुवेमें गिरनेके लिये छटपटाई। परन्तु उसे राजाने झटसे पकड़ लिया और उसे वह अपने महलमें ले गया। महलमें लाकर राजाने मलयासुन्दरीसे कहा—'सुन्दरी! वह मनुष्य कौन था? उसका नाम क्या है? वह तुझे किस तरह मिला? और वह

कहाँका रहनेवाला है। इत्यादि अनेक प्रश्न पूछे परन्तु मलयासुन्दरीको इन प्रश्नोंका उत्तर देनेका समयही कहाँ था ? उसे अपने पतिके वियोगमें विवशहो रुदन करनेके सिवा और कुछ न सूझता था। खाने-पीने के लिये आग्रह करनेपर उसने साफ कहदिया कि जबतक मैं उस मनुष्यका दर्शन न करूँगी तबतक अन्नजल ग्रहण न करूँगी। कंदर्पने सोचा उस पुरुषको कुवेसे बाहर निकलवाना मेरे लिए किसी तरह भी लाभदायक नहीं है और इसे अन्तेउर में रखना भी योग्य नहीं। क्योंकि यदि इसने वहाँपर रहकर पुरुषरूप कर लिया तो यह मेरे सारे अन्तेउरको खराब करेगा। इत्यादि विचारोंसे मलयासुन्दरीको राज-पुरुषोंके विशेष पहरेमें राजाने एक पुराने महलमें रक्खा। वह सारा दिन मलयासुन्दरीने पतिवियोगमें रुदन करते हुए ही पूर्ण किया।

जिस मकानमें वियोगिनी मलयासुन्दरीको रक्खा गया था वह राज कैदियोंको बंद करनेके लिये एक पुराना कारागृह था। उसके पास एकभी दासी नहीं रक्खी। सिर्फ उस महलके बाहर चारों तरफ राजाके सिपाही घूम रहे थे। रात्रि पड़नेपर चारों तरफ अंधकार पसर गया। मलयासुन्दरी पति दुःखसे दुःखित हो जलहीन मीनके समान जमीन पर तड़फने लगी। इसी समय उस

जगह कहींसे एक भयंकर जहरी सर्प आगया और उसने मलयासुन्दरीको डंक लगाया।

मृत्यु बुरी चीज है। मलयासुन्दरी एकदम चिल्ला उठी—हाय मेरे पैरमें यह दुष्ट सर्प आ लिपटा! यों बोलकर वह देव गुरुका स्मरणकरने लगी। चिल्लाहट सुनकर एकदम पहरेदार आपहुंचे। उन्होंने वहाँ साँप को देखकर उसे किसी शस्त्रसे मार डाला और शीघ्रही जाकर राजाको खबर दी कि मलयासुन्दरीको जहरीले साँपने डस लिया है। विषय स्नेही राजा यह खबर सुन आकुल व्याकुल हो शीघ्रही वहाँ आपहुँचा। राजाने तुरन्तही शहरमेंसे मंत्रवादियोंको बुलवाया। जड़ी बूंटी साँपका जहर उतारनेके तमाम साधन मंगाये। और उनका प्रयोगभी करवाया परन्तु तमाम प्रयोग निष्फलगये।

'दुःखोंका अन्त,

उठाई हर तरह तकलीफ पर परकी भलाई की।
अमर कर नाम रखदी शान अपनी वीरताई की ॥

प्रातःकाल का समय है। सूर्य देवने उदयाचल पर चढ़कर अपनी सुनहरी किरणोंसे जगत भरको पीला बना दिया है। शहरके आलसी लोग तो अभीतक सोतेभी नहीं उठे हैं। ऐसे समय राजाकी ओरसे ढींडोरा पिट रहा है "परदेशसे आई हुई उस स्त्रीको रात्रिमें भयंकर सर्पने डस लिया है, जो मनुष्य उसका विष उतार देगा उसे राजा अपना रणरंग हाथी' एक राज कन्या और देशका एक प्रान्त देगा। शहर भरमें डिंडिम नाद बजता फिरा परन्तु एकभी मनुष्य उसे स्वीकार करनेवाला न मिला। जब वे राज पुरुष वापिस राजमहलको लौट रहे थे तब उन्हें एक विदेशी युवक मिला। उसके पूछने पर उन्होंने उसे सब समाचार कह सुनाया। वह परदेशी युवक बोला चलो मुझे राजाके पास ले चलो, मैं उस स्त्रीको अच्छा करूँगा। राजपुरुष उसे साथले शीघ्रही राजाके पास आये। उस युवकको देख राजा एक दम

आश्चर्य चकित हो उसकी ओर आँखें फाड़कर देखता हुआ सोचने लगा "यह तो वही मनुष्य मालूम होता है जिसे हमने वापिस कुवेमें डाल दिया था ! इसे किस दुष्टने बाहर निकाला होगा ? नौकरोंसे बोला—यह कौन मनुष्य है ? नौकर बोले—महाराज ! सारे शहरमें पटह बजाया गया परन्तु किसी भी मनुष्यने स्वीकार न किया । रास्तेमें यह परदेशी मनुष्य मिलगया, यह उस स्त्रीका विष उतारना मंजूर करता है । राजा—(गुस्सेको दबाकर) हाँ फिर आप खुशीसे शीघ्रही उस सुन्दरीका विष उतारिये, मैं आपको अपना रण रंग हाथी, एक राज कन्या और देशका एक प्रान्त दूँगा ।

महाबल—महाराज ! मुझे आपका इनाम कुछ नहीं चाहिये । मैं परदेशी मनुष्य हूँ । और यह मेरी ही पत्नी है । यह दैवकी मारी घरसे निकली हुई है । मैं इसका विषापहारकर अवश्य ही इसे आराम कर दूँगा' आप इसे ही मुझे दे देना । यह सुन राजा स्तब्धसा होगया । उसे कुछ भी उत्तर देना न सूझा । वह कुछ देर सोचकर बोला—अच्छा ऐसाही सही, एक काम हमारा बतलाया हुआ और कर देना फिर हम तुम्हें इस स्त्रीको ही दे देंगे । महाबलने भी यह बात मंजूर करली । राजा महाबलको साथ ले मलयासुन्दरीके पास आया । इस समय मलया-

सुन्दरीके सारे शरीरमें विष व्याप्त हो चुका था और वह गाढ मूर्च्छामें अचेतन हो पड़ी थी। अपनी प्रियाकी यह दुर्दशा देख महाबलका हृदय भर आया। उसने बड़ी मेहनतसे अपने अश्रु प्रवाहको रोका। वह राजासे बोला-राजन्! इसके शरीरमें तो श्वासोश्वास की क्रिया भी मालूम नहीं होती, तथापि मैं अपना प्रयोग शुरू करता हूँ। आप यहाँपर सुगन्धीवाला जल छिड़कवा कर तमाम मनुष्योंको बाहर चले जानेकी आज्ञा करें। महाबलने उस जगहको पवित्र कराकर वहाँपर एक मंडल बनवाया और फिर राजा आदि सबको बाहर बैठ जानेकी आज्ञा की।

एकाकी महाबलने विष उतारनेका प्रयोग शुरू किया। उस मण्डलका मंत्रार्चनसे विधि पूराकर महामन्त्रका स्मरण करके उसने अपने पाससे एक विषापहारक मणि निकाला। उसे स्वच्छ जलसे धोकर वह पानी मलयासुन्दरीके नेत्रोंपर छिड़का। उस पानीकी असरसे धीरे २ उसके नेत्र झबकने लगे। फिर उसने वह पानी उसके मुख पर छिड़का इससे धीरे २ उसका श्वासोश्वास गति आगति करने लगा। फिर उसने मणिधौत जल उसके सारे शरीरपर छिड़का और कुछ उसके मुँहमें भी डाला। ऐसा करनेसे मलयासुंदरीको धीरे २ होश आया। वह कुछ देर बाद महाबलके आनन्द के साथ बैठी हो गई। अपने

पास महाबलको बैठा देख उसके हर्षका पार न रहा। वह एकदम उससे भेट पड़ी और हर्षके आँसु बहाती हुई बोल उठी-प्रियतम! आपइस अन्धकूपसे किसतरह निकले?

महाबल—"प्रिये! जब राजाने मेरे माचेकी रस्सी काट दी थी तब मैं माचीसहित वापिस कुवेमें गिर पड़ा था। मंचिका पर बैठा होनेके कारण मुझे विशेष चोट न लगी। जिसने अपनी मणिसे कल रातको हमारे मिलन समय प्रकाश किया था वह सर्प भी उस कुवेमें ही था। वह फिर से निकला तब मैंने उसके मणिप्रकाशमें कुवेके चारों तरफ देखा। जिस जगह वह सर्प बैठा था; उसी जगह मैंने एक द्वार देखा। परन्तु उसपर एक शिला लगाई हुई थी। दरवाजा होनेकी शंकासे मैंने उस शिलाको दूसरी तरफ खींच लिया। द्वार खुलगया और वह सर्प धीरे २ उसके अन्दर चलने लगा। मैंने भी साहस कर उस द्वारमें प्रवेश किया। वह सर्प रातमें मशाल धारीके समान मेरे आगे २ चल पड़ा। मणिके प्रकाशसे मुझे उस गुफामें बड़ी सहाय मिली। मैंने यह निश्चय किया कि यह सुरंग किसी चोरकी बनाई हुई होनी चाहिये। और इस कुवेसे बाहर निकलनेका इसका द्वार भी अवश्य होना चाहिये। इन्हीं विचारोंमें मैं कितनी एक दूर जब आगे गया; तब अकस्मात् वह साँप न जाने किस

तरफ गुम हो जानेसे सुरंगमें अन्धकार छा गया। परन्तु मैं भी फिर साहस धारण किये जन्मांधके समान उस घोर अन्धकारमें आगे ही बढ़ता गया। इसी तरह चलते हुए मैं एक शिलाके साथ टकरा गया। उस शिलापर जोरके साथ लात मारनेसे सुरंगका दरवाजा खुल गया। जिस तरह गर्भाशयमेंसे प्राणी बाहर निकलता है उसी प्रकार मैं उस गुफासे बाहर निकला। फिर मैंने उस साँपकी घसीट देखी। मैं उसके अनुसार कुछ दूर तक गया तो वह सर्प मुझे एक शिलापर कुण्डली लगाये बैठा मालूम हुआ। नागदमनी विद्याद्वारा मैंने उस सर्पको वश किया और अचिंत्य प्रभाववाला उसके मस्तिष्कसे वह मणि ग्रहण किया। पहाड़से उतरनेवाली नदीके नजदीक श्मशान भूमिमें सुरंगद्वार होनेसे मुझे विश्वास होता है कि वह अवश्य ही किसी चोरका बनाया हुआ गुप्त स्थान है। परन्तु यह भी मालूम होता है कि उस गुफामें बहुत दिनों से किसी मनुष्यका आना जाना न होनेके कारण वह चोर शायद मर गया होगा। उस सुरंग द्वारको मैं फिर उसी पत्थरसे ढक कर यहाँ आया हूँ।

यह राजा मुझपर अनर्थ और अन्याय करेगा यह जानते हुए भी तेरे विरहको सहन करनेमें असमर्थ होकर मैं वहाँसे सीधा शहरकी ही तरफ चला आ रहा था।

शहरमें आकर मैंने पटह बजता सुना। अतः उसका कारण पूछनेपर मालूम हुआ कि तुम्हें साँपने डस लिया है। इसी कारण मैं राजपुरुषोंके साथ राजाके पास आया और उसकी सम्मतिसे अपने साथ लाये हुए इस प्रभावित मणिसे मैंने तुम्हें इस समय जीवित किया है। प्रिये! अब तुम जरा भी चिंता न रखना। मैंने राजासे खुशी पूर्वक तुम्हें अपने साथ लेजानेका वचन ले लिया है। इससे मुझे विश्वास है कि अब तुम्हें वह मेरे स्वाधीन कर देगा। यह बात सुन मलयासुन्दरी अत्यंत खुश हुई।

महाबलने अब राजाको अन्दर बुला लिया और कहा—'राजन्! देखिये, मैंने इस सुन्दरीको बिलकुल अच्छा कर दिया। मलयासुंदरीको अपने पतिके साथ अच्छी अवस्थामें बैठी बात करती देख राजा प्रेमावेशसे पराधीन हो मस्तक हिलाकर बोला—अहा हा! जिसके जीवनकी आशा न रही थी। उसे हमारे सुखके साथ तुमने जीवित दान दिया है। धन्य है तुम्हारे विद्या सामर्थ्य को। सत्पुरुष! तुम्हारा नाम क्या है? महाबल बोला—राजन्! मेरा नाम सिद्धराज है। राजा बोला सिद्धराज! कलसे इस स्त्रीने भोजन नहीं किया अतः इसे जो रुचे सो तुम भोजन कराओ।

राजाकी आज्ञा होतेही राजसेवकोंने तमाम सामग्री

ला रक्खी। महाबलने मलयासुन्दरीको भोजन कराया। सिद्धराज--राजन् ! अब आप मुझे आज्ञा दें। अपने वचन को पालन करें। मैं अपनी स्त्रीको साथ लेकर अपने देश को जाऊँ। राजाने इस बातका कुछ भी उत्तर न दिया। उसके मौनका आशय समझ नगरके प्रधान नागरिकोंने भी उसे खूब समझाया। महाराज ! अब यह इसकी स्त्री इसे दे देनी चाहिये। अपने वचनका पालनकर इन बेचारे दुःखित दंपतीको सुखी करना चाहिये।

विषयान्ध राजाको नगर निवासियोंकी बातें बिल-कुल न सुहाती थीं। वह हित शिक्षाकी बातें सुन उल्टा मन ही मन उनपर क्रोधित होता था। कुछदेर सोचकर वह बोला--सिद्धराज ! तुमने एक काम हमारा और भी करना मंजूर किया हुआ है। वह कार्य सिर्फ यही है' मेरे मस्तकमें हमेशह दर्द हुआ करता है' शान्ति नहीं मिलती। वैद्योंका कथन है यदि कोई कभी उत्तम लक्षणवाला पुरुष मिलजाय, तो उसे चितामें जीवितको जला कर और उस चिताकी राख मस्तक पर लगाई जाय तो यह दर्द मिट सकता है।

ये शब्द सुनकर महाबल विचारमें पड़ गया। सच-मुच यह राजा मलयासुन्दरी पर आसक्त हो मुझे मारना चाहता है। इसी लिये इस दुष्ट आशयसे इसने मुझसे

पहले एक कार्य करानेका वचन ले लिया है। इसने मुझे खूब फसाया! अगर मंजूर किया हुआ मैं इसका यह कार्य न करूँ तो यह मलयासुंदरीको कदापि मुझे न सौंपेगा और इधर यह कार्य भी मृत्युके मुखमें गये विना नहीं हो सकता। कुछ सोचकर धैर्य धारणकर वह बोला-राजन्! इस औषधिके सम्बन्धमें आपको कुछ भी चिंता न करनी चाहिये। यद्यपि यह औषधि प्राप्त करना बड़ा कठिन काम है तथापि मैं आपको यह दवा ला दूँगा। आप यह कार्य होनेपर मेरी स्त्रीको मुझे सौंप देना।

दुष्ट परिणामवाला राजा कुछ हँस कर बोला—परोपकारी सिद्धराज! यह आप क्या कहते हैं? क्या मेरे वचनपर विश्वास नहीं? यह कार्य करनेपर मैं तुरंत ही आपकी स्त्रीको आपके सुपूर्द कर दूँगा। महाबल बोला-राजन्! उत्तम लक्षणवाला पुरुष जल मरनेके लिये और कहाँ मिल सकता है? मैं खुदही चितामें प्रवेशकर अपने मृतककी राख आपको ला दूँगा। आप श्मशान भूमिमें बहुतसी लकड़ियें भेजवा दें। और चिता तैयार करावें। महाबल की ये बातें सुन कंदर्पको बड़ी खुशी हुई। और उसने अनेक गाड़ियाँ भरकर लकड़ियाँ श्मशान भूमिमें भेजवा दीं। यह बात नगरमें पसरनेसे नागरिक लोगोंमें कोलाहल मच गया। वे आपसमें बोलने लगे राजा

का कितना अन्याय है ? बेचारे परदेशी पुरुषको जीवित जलानेका आग्रह कर रहा है। क्या कभी मनुष्यकी राख लगानेसे भी सिरके दर्द मिटे हैं ?

महाबल कुमार अन्तिम अवस्थाका वेष धारण कर संध्यासमय श्मशान भूमिमें आया। अनेक राजसुभट उसके चारों तरफ खड़े थे। दया दुःख और आश्चर्यसे हजारों मनुष्य एकत्रित हो इस दुर्घटनाको देख रहे थे। मलयासुन्दरीको भी यह बात मालूम होगई अतः उसे बड़ा दुःख हुआ। वह अपने आपको धिक्कारने लगी और उसने यह प्रतिज्ञा कर ली कि जबतक मैं अपने प्राण-प्रिय पतिदेवके दर्शन न करूँगी तब तक अन्न जल ग्रहण न करूँगी।। महाबलका सौन्दर्य तेज और साहस देख उसपर प्रसन्न हुये प्रजाके अनेक प्रधान पुरुषोंने दुःखित हो राजाके पास जाकर प्रार्थना की—"राजन् ! यह महा-न् अन्याय हो रहा है' राखके बहानेसे ऐसे निरपराधी परोपकारी उत्तम पुरुषको पशुके समान मार डालना' यह बात किसी तरह भी योग्य नहीं है। ऐसा अन्याय करने की अपेक्षा उसे जीवित ही अपने देशको जाने देनेकी आज्ञा देना विशेष योग्य है।" राजाबोला-'प्रजाजनो ! इस पुरुषके जीवित रहते हुए यह स्त्री तो मेरे सन्मुख भी नहीं देखती। और इस स्त्रीके विना मेरे चित्तको शांति

नहीं होती। मैं इस तरह दोनों तरफसे संकटमें पड़ा हूँ। इसलिए मेरेपास तुम्हारे लिये कोई उत्तर नहीं। राजा का जीवा नामक प्रधान बोला—भाइयो! इस बातमें तुम्हें पड़नेकी कोई आवश्यकता नहीं है। अगर सिद्धराज मरता है तो मरने दो। क्या उसके लिये हम राजाको संकटमें पड़ा देख सकते हैं? मंत्रीके शब्द सुन निराश होकर वे वापिस लौट आये। परन्तु राजा और मंत्रीकी ओरसे उनके हृदयमें घृणा और तिरस्कार पैदा हो गया।

श्मशान भूमिमें एक स्थान पसन्द कर महाबलने राजपुरुषोंको वहाँपर चिता बनानेकी आज्ञा दी। उन्हों ने शीघ्रही बहुत सी लकड़ियें लगाकर खूब ऊंची चिता रच दी। महाबल चिताके बीचमें बैठ गया और उसने अपने चारों ओर खूब लकड़ियाँ लगानेके लिये सूचना कर दी। उस समय चिताके चारों तरफ राजपुरुष इस आशयसे कि वह चितासे निकल कर कहीं भाग न जाय सख्त पहरा देरहे थे। चिता ठीक हो जानेपर उसमें अग्नि चेताई गई। यह देख लोगोंके हृदयमें भी दुःखाग्नि सिलग उठी। चिता खूब जल उठने पर भी उसके अन्दरसे महाबलका किसीने सीत्कार तकभी न सुना। इससे लोग उसके अनन्य धैर्यकी प्रशंसा करने लगे। जब चिता संपूर्ण बल चुकी तब राजपुरुषोंने वापिस आ कर राजाको

महाबलके चितामें भस्म होनेका सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उस रातको कंदर्प और मंत्री जीवाके सिवा प्राय नगरके तमाम लोगोंको सुखसे निद्रा न आई।

प्रातःकाल होने पर जब शहरमें वहाँके लोग महाबलके धैर्य और राजाके अन्यायकी परस्पर बातें कर रहे थे तब लोगोंने अकस्मात् सिरपर छोटीसी गठरी रक्खे हुए श्मशानभूमिकी तरफसे आते हुये सिद्धराजको देखा। उसे जीवित आते देख जनताके हृदयमें आश्चर्य और आनन्दका पार न रहा। आश्चर्य चकित हो वे बोल उठे धैर्यवान सत्पुरुष! आप किस तरह वापिस आये? और यह सिरपर गठड़ीमें क्या लाये हो। राजाके लिये उस चिताकी राख लेकर आया हूँ। इतनाही कहकर महाबल राजमहलकी तरफ चला गया। राजसभामें राजाके समक्ष राखकी गठरी रखकर सिद्धपुरुष बोला—'राजन्! आपकी दुर्लभमें दुर्लभ औषधी यह उस चिताकी राख है। अब आप अपनी इच्छाके अनुसार जितनी चाहिए उतनी अपने मस्तकमें डालें जिससे आपके मस्तकका व्याधि शान्त हो। साश्चर्य राजा बोला—सिद्धराज! तू चिताग्नि में दग्ध न हुआ? सिद्धराजने समयानुसार विचार कर उत्तर दिया—महाराज! मैं चितामें जलकर भस्मीभूत हो गया था परन्तु मेरे सत्वके प्रभावसे वहाँपर देव आ पहुँचे

और उन्होंने चिताको अमृतसे सिंचन किया। इससे मैं फिर सजीवित हो आया हूँ। इसलिए महाराज! आप इस रत्नाको ग्रहण करें, और अपने बोले हुये वचनोंको पालन कर मेरी स्त्री मेरे सुपूर्द करें। यह सुन राजा विचारने लगा—सचमुचही यह कोई महाधूर्त है। सुभटोंकी नजर बचाकर मालूम होता है यह चितासे बाहर निकल गया है। सिद्धराजके गुणानुरागी या कंदर्पकी अनीतिसे राजद्रोही बने मनुष्योंने मलयासुन्दरीको राख लेकर सिद्धपुरुषके जीवित आनेकी खबर दी। यह खबर पातेही मलया सुदन्री इस तरह विकसित हो गई जिस तरह रातभरकी मुरझाई हुई कमलिनी प्रातःकाल सूर्यके समागमसे विकसित हो जाती है। सिद्धराज राजसभामें राखकी गठरी रख मिलनेके लिये उत्कंठित हुई मलयासुन्दरीके पास पहुंचा। उसे देख मलयासुन्दरी हर्षसे गद्गद् हो उठी! वह बोली—प्राणनाथ! चितामें प्रवेश करने पर भी आप किस तरह वापिस आगये। महाबल प्रिये! मैं उस अन्धकूपमेंसे जिस सुरंगके रास्तेसे बाहर निकला था उसी सुरंगके मुखद्वारपर मैंने चारों तरफ बड़ी चिता चिनवाई थी और बीचमें अपने बैठनेके लिये जगह खाली रखवाई थी। चितामें प्रवेश किये बाद जब वह सुलगाई गई थी तब मैं सुरंग द्वारकी शिला दूरकर उसमें

अन्दर चला गया और अन्दरसे फिर मैंने द्वार वंदकर लिया। जब चिता जलकर ठंडी होगई तब पिछली रात में मैं धीरे २ द्वारके पास आया और उसे खोलकर बाहर निकला' उस समय वहाँपर कोईभी मनुष्यन था। इसलिये राखकी गठरी बाँध और शेपरात पूरीकर प्रातःकाल होते ही मैं यहाँ आ गया।

इस प्रकार परस्पर जब वे बातें कर रहे थे तब राजा उनके पास आकर बोला—अरे भाई! सिद्धराज! इस बेचारीको कुछ भोजन कराओ। इसने कलसे बिलकुल अन्न जल नहीं लिया' सिद्धराजने उसे भोजन कराया और फिर राजासे कहा...महाराज! मैंने आपका कार्य कर दिया है अब आप अपना वचन पालन कीजिये और अपनी स्त्रीके साथ मुझे अपने देशजानेकी आज्ञा दीजिये। यह सुन राजा घबराया, उसे कुछभी उत्तर देते न बना। वह मलयासुन्दरीको कदापि महाबलको देना न चाहता था परन्तु इससमय एकाएक वह साफ इन्कारभी न कर सकता था। इसलिये उसनें अपने पास रहे हुये प्रधान मंत्री जीवाके सन्मुख देख सहजमें इशारा किया। मंत्रीने कुछ देर विचार कर राजाकी इच्छानुसार महाबलसे कहा सिद्धराज! आपने राजाका यह काम कर हमपर बड़ा उपकार किया है। आपके धैर्य और परोपकारकी भावना

को हम धन्यवाद देते हैं। परन्तु सिर्फ एक कार्य आप राजाका और कर दें और फिर इच्छानुसार अपने देश को चले जाइये।

इस शहरके पास जो छिन्न टंक नामक पहाड़ उसके एक विषम शिखरके पिछले हिस्सेमें निरंतर फल देनेवाला एक आम्रवृक्ष है। पूर्व दिशाकी ओरसे उस शिखरकी चोटी पर चढ़ा जा सकता है। क्योंकि अन्य किसी तरफसे इतने ऊंचे चढ़नेका कोई मार्ग नहीं है। उस शिखरकी चोटीसे नीचेकी तरफ उस विषम खीणमें वह आम्रवृक्ष दीखता है। उसे लक्ष्य कर वहाँसे कूदना और आम्रके पके फल लेकर फिर उस विषम मार्गसे वापिस आकर वे फल राजाको देना। सत्पुरुष! यह काम यद्यपि बड़ा कठिन है तथापि तुम्हारे जैसे साहसी पुरुषोंके लिए यह बनने योग्य है। हमारे राजाको सदैव पित्तकी पीड़ा रहती है और वैद्योंका कथन है कि आम्र फलके खानेसे वह पित्त पीड़ा शान्त होगी।

प्रधानके ये शब्द सुनकर कुमार विचारने लगा— यह आदेश तो सर्वथा अति दुष्कर है। इसमें तो मेरी बुद्धि भी कुछ काम नहीं करती। इस कार्यमें मेरे मृत्युकी संभावना है। तथापि किसी विधियोगसे यदि यह कठिन कार्य मुझसे हो गया तो मुझे जीवन और स्त्री

दोनोंकी प्राप्ति होगी। इसलिए इस कार्यको भी करनेका मुझे प्रयत्न तो करना चाहिए। मेरे कार्योंसे और राजा की अनीतिसे यहाँ की जनताका मुझपर पूर्ण प्रेम है। यहभी मेरे विजयका चिन्ह है। इत्यादि विचारकर साहस धारण कर महाबल बोला—मंत्रीवर! मैं आप का यह कठिन कार्यभी अगर कर दूँ तो आप वारंवार अपने वचनोंसे अब न फिरना। यदि आप फिरभी वैसा ही करेंगे तो आप लोगोंके हकमें अच्छा परिणाम न होगा। इतना कहकर महाबल अपने स्थानसे उठखड़ा हुआ।

संसारमें साहसके द्वारा कठिनसे कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। साहसमें प्रबल प्रयत्न, उत्साहऔर अतुल परा क्रम है। साहसियोंका अनेक मनुष्य आश्रय लेते हैं। इसलिये साहसमें अगाध शक्ति है।

इस बातका समाचार मलयासुन्दरीको भी मिल चुका था। इसलिए उसके हृदयमें अति दुःख होना स्वा-भाविक ही था। उसकी आँखोंसे अश्रु टपकते हुए देख कर भी महाबल धैर्य धारण कर छिन्न टंक नामक पहाड़ के सन्मुख चल पड़ा। साहसी लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में विलम्ब नहीं किया करते। इस समय भी उसके प्रेम और सहानुभूतिसे महाबलके पीछे संख्या बद्ध मनु-ष्य पहाड़ की तरफ जारहे थे। क्योंकि स्वार्थी प्रेमकी

अपेक्षा संसारमें सदैव गुणोंपर अधिक प्रेम होता है। महाबल मार्ग दर्शक राजपुरुषोंके साथ उस विषम पर्वत पर चढ़ गया। इस समय भी जनताके हृदयमें शोक सन्ताप और राजा तथा जीवा मंत्रीके हृदयमें आनन्द छा रहा था। शिखरकी तीक्ष्ण चोटीपर चढ़कर राजपुरुषोंने बहुत दूरीपर नीचे विषम खाँणमें रहा हुआ इशारे से एक आमतरु बतलाया। महाबलने उसको लक्ष्यकर पंचपरमेष्ठि मंत्रको स्मरणकर और 'इस जिन्दगी में मैंने यदि कुछ न्याय पूर्वक शुभ कर्म उपार्जन किया हो तो उसके प्रभावसे मेरा यह साहस सफल हो, यों कहकर जनताके हा हारव करते हुए पर्वत शिखर से झंपापात कर दिया। वह देखते ही देखते मनुष्योंकी नजरसे अदृश्य हो गया। राजपुरुषोंने यह समाचार राजाको आ सुनाया। राजा और मंत्रीने निश्चय कर लिया था कि बस अबके वह अवश्य ही खतम हो जायगा।

प्रातःकाल होतेही पके हुए आम्रफलोंको करंडिया सिरपर रक्खे हुए प्रसन्नता धारण किये महाबल कुमार को जब नागरिक लोगोंने आते हुए देखा तब उनके हर्ष और विस्मय का पार न रहा। वे एकदम आश्चर्यमें पड़कर विचारने लगे। अहो! कैसी विचित्रता है! यह

कोई दिव्य पुरुष है या कोई विद्याधर ? ऐसे ऐसे मरणान्त संकटोंमें भी जाकर यह राजाका कार्य सिद्ध कर लाता है। सच मुचही इसका सिद्धराज नाम सार्थकही है। मालूम होता है इसके कोई देवता वशमें है। इसी कारण यह उसकी सहायसे असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर लाता है। इत्यादि विचार करते हुए वह हर्षित हो दौड़ते हुए उसके पास आये और बोले—सत्पुरुष सिद्धराज ! आप किस तरह वापिस आये ? आपके शरीरको कुछ इजा तो न पहुँची ? सिद्धराज बोला—महानुभावो ! आप मुझसे इस समय कोई सवाल न कीजिए। कुछ देर बाद आपको सब कुछ मालूम हो जायगा। इस तरह उत्तर देते हुए वह अनेक मनुष्योंके साथ राज सभामें आया। वहुतसे मनुष्योंके साथ महावलको राजसभामें आया देख राजाका चेहरा श्याम पड़गया। वह उसके सामर्थ्यको देखकर कुछ भयभीतसा होगया, इसलिए उसने महावलका कुछ भी आदर सत्कार न किया। परन्तु राजाको मौन देख जीवा मंत्री वोला—सिद्ध पुरुष! ऐसा दुष्कर कार्यकर आप वहुत ही जल्दी आगये। कहिए, आपके शरीरमें तो कुशलता है न ?

जी हाँ मेरा शरीर कुशल है। यों कहते हुए महाबलने अपने सिरसे आमके फलोंका करंडिया उतारा।

और जहाँ राजा व मंत्री बैठे थे वहाँ ही उनके पास वह करंडिया रख दिया। महाबल बोला—राजन्! इन पके हुए आम्रफलोंको खाकर आप अपने पित्त रोगोंको शान्त करो। उसके गंभीर शब्द सुन और ऐसा विषम कार्य करनेका सामर्थ्य देख सभासदोंके दिलमें भी कुछ भ्रांति पैदा हुई। इस समय तमाम राजसभा मौनावलंबी हो महाबलके अतुल सामर्थ्यका विचार कर रही थी। महाबलने करंडियेका मुँह खोलकर उसमें से दो चार सुन्दर फल ले राजासे कहा—"आप इसमेंके फल खाइए; मैं अपनी स्त्रीके पास मिल आता हूँ, यों कह वह दुःखित हुई मलया सुन्दरीके पास आया। महाबलको पास आया देख मलयासुन्दरी पूर्वके समानही हर्षित हो उस से भेट पड़ी। वह प्रसन्न मुखसे बोली, प्राण प्यारे! ऐसे कठिन कार्यमें आपको किस तरह सफलता हुई?

महाबल—"प्यारी! तुम्हें याद होगा पहले जो योगी मेरी सहायसे सुवर्ण पुरुष सिद्ध करते हुए अग्नि कुण्ड में गिरकर मर गया था, वह मरकर व्यंतर देव हो गया था। हमारे सद्भाग्य से वह आम्र वृक्षपर ही रहता है। पर्वत शिखरकी चोटीसे झंपापात करते हुए उसने मुझे देखा और मेरे अंतिम शब्द सुनें। उस व्यंतर देवने अपने ज्ञानसे मुझे पहचान लिया। जिस वक्त

झंपापात करके मैं नीचे आम्र वृक्षके पास पहुँचा उसवक्त उसने मुझे नीचे न पड़ने देकर अधर ही धारण कर लिया। उसने प्रत्यक्ष होकर मुझसे कहा—परोपकारी राजकुमार! आप जराभी भीति न करना। पृथ्वी स्थान पुरके श्मशानमें उत्तर साधक बनकर तुमने मुझपर उपकार किया है; परन्तु मेरी किसी भूलके कारण सुवर्ण पुरुष सिद्ध न हुआ। मैं वहाँसे मरकर व्यंतर देवकी योनिमें पैदा हुआ हूँ। इस समय मुझे तुम्हारे उपकारका बदला देनेका अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। इत्यादि उसने मुझे अपना सर्व वृत्तान्त सुनाया। मैं निर्भय होकर उसके पासही रहा। सचमुचही किसीपर किया हुआ उपकार निरर्थक नहीं जाता। प्रातःकाल होनेपर व्यंतर देवने कहा 'राजकुमार! आप मेरे अतिथि हैं। घर आये अतिथिका सन्मान करनाही चाहिए। इसलिए आप फरमायें मैं आपका कौनसा इष्ट कार्य करके आपका स्वागत करूँ? मैंने कहा कंदर्प राजा मुझे जो कार्य बतलावे मैं उस कार्यको करनेमें शक्तिमान बनूँ आप मुझे इस तरहकी सहाय करें।

व्यन्तर—कंदर्प राजा तो आपको मारना चाहता है। इसलिए आपकी सम्मति हो तो मैं उसे पूरी शिक्षा कर दूं। मैंने कहा-आपकी सहायतासे मैं उसका काय पूर्ण

करूँ तथापि वह अपने दुष्ट अभिप्रायसे बाज़ न आवे तो फिर आपको जो उचित मालूम दे सो करें। व्यंतर देवने मेरी बात मंजूर करली और कहा यह तो मैं करूँगा ही परन्तु और भी आपको कभी कोई असाध्य कार्य करना पड़े तो आप अवश्यही मुझे याद करें। याद करतेही सेवकके समान मैं आपकी सेवामें आकर आपकी इच्छानुसार सहाय करूँगा। यों कहकर वह किसी जगहसे एक करंडिया ले आया और उसमें पकेहुए सुन्दर फल भरकर करंडिये सहित वह मुझे इस शहरके उद्यानमें ले आया। 'कुमार! इस करंडियेको लेकर तुम राजाके पास चलो; मैं भी अदृश्य होकर तुम्हारे साथ ही चलता हूँ और वहाँपर जैसा उचित होगा वैसा किया जायगा, यों कहकर वह अदृश्य होगया। मैं फलोंका करंडिया राजसभामें रखकर इस समय तुम्हारे पास आया हूँ। प्रिये! अब घबरानेकी आवश्यकता नहीं है। मुझे विश्वास है इस देवकी सहायसे अब हमारे शीघ्रही संकट दूर होंगे।'

महाबल जिससमय अपनी प्रियाके साथ अपने दुखसुखकी बातें कर रहा था; उस समय राजसभामें रक्खे हुए उस आम्रफलोंके करंडियेमेंसे यह भयानक शब्द निकलने लगा 'राजाको खाऊँ या मंत्रीको, करंडिये

से निकलते हुए बारंबार इस भयानक शब्दको सुनकर राजा भयभ्रान्त होगया और वह लोगोंकी तरफ देखकर बोला—सचमुचही यह सिद्धराज कोई चमत्कारिक पुरुष मालूम होता है; अन्यथा ऐसे दुष्कर कार्यभी लीलामात्र से किस तरह कर आवे ? संभव है हमारा सर्वनाश करने के लिए वह इस करंडियेमें आम्रफलोंके बहाने कोई विभी-षिका ले आया है। इस प्रकार राजाको भयभीत हुआ देख जीवा मंत्री हँसते हुए बोल उठा—महाराज ! इस तरह डरनेसे काम न चलेगा। ऐसे तो बहुतही धूर्त फिरते हैं। क्या हम इससे डर जायंगे ? यदि ऐसी छोटी छोटी बातों भयभीत होने लगें तब फिर राज्यकार्य किस तरह चल सकता है ? इस तरह बोलते हुए प्रधानने उठकर करं-डियेकी तरफ हाथ लंबाया। राजाने उसे बहुत मना किया कि मंत्री ! ठहरो इस कार्यमें हमें बल दिखानेकी जरूरत नहीं है। तुम उस करंडियेके पास न जाओ। परन्तु 'विना-शकाले विपरीतबुद्धिः' इस उक्तिके अनुसार राजाके मना करनेपर भी मंत्री करंडियेके पास आकर जब उसका ढकन उठाने लगा तब फिरसे मृत्युकी दुंदुभीके समान वही शब्द सुनाई दिया "राजाको खाऊँ या मंत्रीको"। इस भयानक शब्दका भी अनादर कर करंडिया उघाड़कर आम्रफल लेनेकी इच्छासे मंत्रीने जब उसके अन्दर हाथ

डाला उस समय यमराजकी जीभके समान उस करंडिये से भयंकर अग्निज्वाला प्रकटी। इस भयंकर अग्निज्वाला में जीवा मंत्री पतंगके समान भस्मसात् होगया। वह अग्निज्वाला इतनेसे ही शान्त न होकर उसने विकराल रूप धारण करलिया। देखतेही देखते उसने ऊपर बढ़कर सभामंडपको भी भस्मीभूत कर दिया। सभामें भगदड़ मचगई। राजा भयभीत हो काँपने लगा। मृत्युके भय से उसने शीघ्रही सिद्धराजको बुलवाया। इस समाचारसे शहर भरमें हलचल सी मचगई।

जीवा मंत्रीके मरने, करंडियेमेंसे निकलते हुए भयानक शब्द, और अग्निकांडकी दुर्घटना सुनाकर राजा ने नम्रता पूर्वक महाबलसे कहा– हे सत्पुरुष! हमपर कृपाकर यह उपद्रव जल्दी शान्त करो। राजाकी नम्र प्रार्थनासे एवं उस अग्निसे किसी निर्दोष प्राणीके जानमाल को नुकसान न पहुँचे यह विचारकर सिद्धराजने पानी मंगाकर मंत्र पढ़ उस करंडिये पर छिड़का। इससे महा-बलकी इच्छाके अधीन हुए, उस देवने अग्नि शान्त कर दिया। महाबलने उस करंडियेपर फिरसे ढक्कन ढक दिया। फिर राजसभामें पहलेसी ही शान्ति होगई। परन्तु किसी भी मनुष्यकी उस करंडियेके पास जानेकी हिम्मत न चली। सबके दिलमें यही विचार होता था कि इस भयं-

कर करंडियेको यहाँसे उठवा दिया जाय। लोगोंके यह विचार करते हुये महबलने फिरसे उसकरंडियेको उघाड़ा और उसमेंसे दो चार सुन्दर फल निकाल वह राजाको देने लगा। परन्तु भयभीत हुए राजाने उन फलोंको लेनेसे इन्कार कर दिया। महाबलने वेही फल दूसरे मनुष्यके हाथमें देकर राजाको यह निश्चय करा दिया कि अब उन फलोंमें किसी तरहका भय नहीं है। फिर अन्य पुरुषके द्वारा राजाने उन फलोंको ग्रहण किया। मंत्रीकी मृत्युसे राजाको इतना दुःख हुआ मानों उसकी दहिनी भुजा टूट गई हो। परन्तु उसकी मृत्युमें राजा और मंत्रीकाही अन्याय होनेके कारण उसके शोकमें अन्य मनुष्योंकी तरफसे साहनुभूति तकभी न मिली। राजाने उसी वक्त जीवा मंत्रीके पुत्रको मंत्रीका स्थान दे दिया।

कंदर्प—'सिद्धराज! तुम इस करंडियेमें ऐसी क्या भयानक चीज़ लाये थे, जिसने देखतेही देखते जरासी देरमें अचानक हमारे मंत्रीको भस्मीभूत कर डाला।

सिद्ध—'राजन्! यह तो आपके अन्याय वृक्षका एक अंकूराही पैदा हुआ है, इसके बाद अब उसमें पुष्प और फलोंका लगना बाकी है और उन फलोंका स्वादानुभव आपकोही करना होगा। जो राजा न्यायपूर्वक प्रजापालन करते हैं वे कदापि दुःखित नहीं होते, परन्तु

दुनियामें कीर्त्ति और अनेक प्रकारकी संपत्तिको प्राप्त करते हैं। राजन्! अब भी मेरी स्त्री सहित मुझे विदाकर आप सुखसे राज्यपालन करसकते हैं। अन्यथा इसका परिणाम आपके लिये भयंकर होगा। यह सुनकर सामन्तादि राजमान्य पुरुषोंने राजाको आग्रहपूर्वक समझाया महाराज इस सत्पुरुष सिद्धराजका वचन मानो और इस की स्त्री देकर इसे यहाँसे विदा करो, ऐसे समर्थ पुरुषकोअन्यायके द्वारा प्रकोपित करना राज्यके लिए हितकर नहीं है।

मलयासुन्दरीपर अत्यन्त आसक्ति रखने वाला कंदर्प सोचने लगा--यह सिद्धराज सचमुचही सामर्थ्यवान् पुरुष है एवं मंत्रादिभी जानता है इसी कारण मैं जो कार्य बतलाता हूँ वह लीलामात्रसे कर लाता है। अब कौनसा ऐसा दुष्कर कार्य बतलाऊँ जिसके करनेसे यह मृत्युको प्राप्त करे और मैं सदाके लिए मलयासुन्दरीको प्राप्त करूँ।

जिस वक्त राजा पूर्वोक्त विचार कर रहा था उस वक्त अकस्मात् राजाकी अश्वशालामें आग लग गई। देखते ही देखते वह आग इतना जोर पकड़ गई कि अश्वशालाको जला उसकी भयंकर ज्वालायें आकाशको स्पर्श करने लगीं। यह देख राजा बोला—परोपकारी सिद्धराज! बस अब मेरा यही एक कार्य कर दो। इस जलती हुई अश्वशालामें मेरा अश्वरत्न जल रहा है

उसे बाहर निकाल लाओ। फिर मैं तुम्हारी स्त्रीको तुम्हें सौंपकर विदा कर दूँगा।

यह सुन जनतामें खलबली मच गई। वे एक दूसरे की तरफ इशारा कर कहने लगे। देखो, इतना होनेपर भी राजा अपना खराब विचार नहीं छोड़ता। मालूम होता है इस चमत्कारी पुरुषको क्रोधित कर राजा इसीसे अपना सर्वनाश करायेगा। सिद्ध पुरुषकी सहनशीलता और राजाकी निर्लज्जता पराकाष्टा तक पहुँच चुकी है। क्या अभीतक भी इसके पापोंका घड़ा नहीं भरा, ? महाबलकुमारके मनमें भी विचार परिवर्तन हो गया था। वह अब दुःखित होकर पापीको किसी भी तरह उसके पापोंका प्रायश्चित्त देना चाहता था। अतः व्यंतर देव को स्मरण कर साहस पूर्वक वह उस अग्निमें प्रवेश कर गया। इस समय राजाको बड़ा संतोष हुआ, परन्तु प्रजा में अत्यंत शोक छागया। तथापि वह हर्ष शोक बहुत देर तक न टिक सका। थोड़ीही देरमें सिद्धराज अग्निसे बाहर निकल आया। वह घोड़ेपर सवार था। उसके चेहरेपर इस समय अधिक तेज झलक रहा था। दिव्य वस्त्र और सुन्दर कीमती अलंकारोंसे उसका शरीर सुशोभित था। वह आतेही आश्चर्य पाये हुए लोगोंके सामने बोला—महाराज! और अन्य सज्जनो! इस समय जो

अग्नि प्रज्वलित हो रहा है यह बहुत ही पवित्र है। एवं जिस जगह यह दिव्य अग्नि प्रगट हुआ है वह जगह भी मनोवांच्छित फलके देनेवाली है। उस जगह जाने से मेरे जैसी दिव्य स्थिति प्राप्त होती है। और एक सुन्दर घोड़ा मिलता है। अबसे हम दोनोंको किसी समय भी रोग, जरा, या मृत्यु पराभव न कर सकेगी। यदि इस समय कोई भी मनुष्य अपना इच्छित कार्य मनमें धारण कर इस अग्निमें प्रवेश करेगा तो वह मेरे ही समान दिव्य रूप धारी होकर निकलेगा।

सिद्धराजका बना हुआ प्रत्यक्ष दिव्य रूप देख वैसा ही बननेके अर्थी और मनोवांच्छित सुखके इच्छुक राजा आदि अनेक पुरुष अग्निमें प्रवेश करनेके लिए तैयार हो गये। सिद्धराज बोला—सज्जनो! आप जरासी देर धीरज रक्खें, यह दिव्य अग्नि सचमुचही तीर्थभूमि सरीखा है इसलिये मैं पहले इसकी पूजा करलूँ' यों कहकर सिद्ध राजने घी प्रमुख अनेक हव्य पदार्थ मँगवाये और मंत्रो च्चार पूर्वक मंदपड़े हुए अग्निमें उन पदार्थोंको होम कर उसे विशेष प्रदीप्त किया। अग्नि पूजन हुए बाद पहले हम प्रवेश करते हैं इत्यादि कथन पूर्वक सिद्धराजकी माया जालमें भरमाये हुए राजा और मंत्रीने इच्छित सुख प्राप्त करनेके संकल्पसे अग्निमें प्रवेश किया। राजाके समान

प्रबल इच्छावाले अनेक राजपुरुष राजाके पीछे जाने लगे परन्तु राजा और मंत्रीको वापिस आने दो फिर जाना यों कहकर सिद्धराजने उन्हें वहाँही रोक लिया। महाबल के आदेशसे वे सब वहाँ खड़े रहे' क्योंकि उसके गुणों से महाबलपर तमाम प्रजाके हृदयमें पूर्ण प्रेम और भक्ति भाव था। राजा और मंत्रीको बहुत देर होगई' परंतु वे वापिस न लौटे, तब राजपुरुष बोले—क्या बात है? इतनी देर होनेपर भी महाराज और मंत्रीजी वापिस नहीं आये?

महाबल—क्या कभी अग्निमें गया हुआ भी कोई वापिस आया करता है? मैं तो व्यन्तर देवकी सहायसे अग्निमें न जलकर बाहर निकल आया हूँ। यह सुनकर जनता समझ गई कि राजा और पुत्र सहित मंत्रीके पाप का घड़ा फूट गया। सिद्धराजने अच्छे उपायसे बदला लिया। उनके प्रत्यक्षमें अन्यायके कारण राजा आदिकी मृत्युके शोकमें प्रजाकीय किसीभी मनुष्यने शोक सहानुभूति न बतलाई।

राजाकी मृत्युसे समस्त राजकीय प्रधान पुरुष मिल कर विचार करने लगे कि अब राज्यकी क्या व्यवस्था करनी चाहिये? राजाके एकभी ऐसा लायक पुत्र नहीं जो राज्यकी धुराको धारण कर सके। अधिक जनताकी सम्मति सिद्धराजको ही राज्य भार सौंपनेकी हुई। राजा

बहुमतसे बोली —सिद्धराज सब तरहसे राज्यकी धुरा धारण करनेमें समर्थ है। वह गुणवान तथा सामर्थ्य वान है इतनाही नहीं बल्कि देवताभी उसका सहायक है। ऐसा पुरुष राज्यके लिये मिलना मुस्किल है। प्रजा मत के साथ सबकी सहानुभूति होनेसे बड़े समारोहके साथ महाबलको राज्याभिषेक किया गया। मलयासुन्दरी पट रानीके पदपर आरूढ हुई। महासंकटोंमें पाला हुआ उसका शीलव्रत उसे सफल होगया। अब सदाके लिए उसका वियोग नष्ट हो गया। अपने दुःखोंका अन्त कर महा-बलभी सुखसे प्रजापालन करने लगा। उसने अपने सद्गुणों और न्याय निपुणतासे प्रजाको विशेष रंजित व सुखी किया। अपने प्रचण्ड बाहू बलसे शत्रुराजाओंको भी उसने थोड़ेही समयमें वश कर लिया। यहाँपर महाबल सिद्ध राजकेही नामसे प्रसिद्ध हुआ।

"स्वजन-मिलाप"

इधर बलसार्थवाह देशान्तरों से व्यापार द्वारा बहुत सा द्रव्य कमाकर, बड़ी ऋद्धि सिद्धिके साथ इतने दिनों के बाद सागर तिलक बंदरपर आ पहुँचा। क्योंकि वह वहाँका ही रहनेवाला था। देशावरसे लाये हुए मालके भरे जहाजोंको बंदरगाहपर ठैहराकर पुराने रीतिरिवाजके अनुसार वह बहुतसी उत्तम वस्तुओंकी भेट लेकर राजसभामें सिद्धराजसे मिलने आया। राजसभामें सिद्धराजके सन्मुख भेट रख, और नमस्कार कर वह हाथ जोड़कर खड़ा रहा। इस समय महारानी मलयासुन्दरी भी राजा महाबलके पासही सभामें बैठी थी। उसे देखते ही भयसे सार्थवाहका हृदय काँप गया। क्योंकि उसने मलयासुंदरी की कदर्थना करनेमें कुछभी बाकी न रक्खा था। भयसे व्याकुल हुआ बलसार सार्थवाह किसी कार्यके बहानेसे शीघ्रही राजसभासे बाहर निकल अपने घर पहुँचा। वह घर आकर सोचने लगा— इस औरतको मैंने बर्बर द्वीपमें लेजाकर बेच दिया था। यह किस तरह वहाँसे आई होगी? और किस तरह इसने यहाँ आकर राजासे संब-

न्ध जोड़ा होगा ? मैंने जो इसकी क़दर्थनायें की हैं यदि यह उन सब बातोंको राजासे कहदेगी तो अवश्य ही राजा मुझे प्राण दण्डकी शिक्षा देगा।

इधर मलयासुन्दरी पुत्र वियोगसे अत्यन्त दुःख पा रही थी। इसलिए ऐसे सुखमें भी वह अपने पुत्रका हरन करनेवाले बलसार व्यापारीको क्योंकर भूल सकती थी ? बलसारके बाहर चले जानेपर उसने तुरन्तही महाबलसे कहा—स्वामिन् ! यही वह बलसार सार्थवाह है जिसने मुझे अत्यन्त कष्ट दिये और मेरे पुत्रको छीन लिया है। मलयासुन्दरीके वचन सुनते ही राजाके शरीरमें क्रोधाग्नि व्याप्त होगया। वह बोला—इसी दुष्ट सार्थवाहने निर्दोष और निष्कारण मेरी स्त्रीकी कदर्थना की है ? अरे सुभटो ! क्या देखते हो ? जल्दी जाओ। इस दुष्टात्मा बलसार को कुटुम्बसहित बाँधलाओ और इसका तमाम माल जप्त करलो। राजाकी आज्ञा होतेही सहकुटुम्ब बलसारको गिरफ़्तार करलिया गया। और उसका तमाम माल भी जप्त किया गया। राजा सिद्धराजने सार्थवाहको लड़का ला देनेको कहा, परन्तु उसने कुछभी उत्तर न दिया। राजा ने उसका अपराध मालूम कर उसे सहकुटुम्ब कैद करलिया।

कैदमें पड़ा हुआ सार्थवाह विचार करता है— मेरेही किये कर्म मुझे उदय आये हैं। इस राजाके पंजेसे निक-

लना बिलकुल असंभवित मालूम होता है, तथापि एक उपाय है। यदि वह उपाय सफल होगया तो मेरी जान मालकी कुशलताका संभव है और वह उपाय यह कि इस राजाका कट्टर दुश्मन चंद्रावती नरेश वीरधवल है। उस के साथ मेरा विशेष परिचय भी है। वह राजा इस सिद्ध-राजका पराजय कर मुझे छुड़ा सकता है। इस राजाने मेरी मिलकत जप्त करली है, तथापि अभी तक इसे मेरी गुप्त मिलकतका पता नहीं है। इसलिये उसमेंसे आठ लाख सुवर्ण मोहरें और द्वीपान्तरसे लाये हुए लक्षणवाले आठ हाथी अपना छुटकारा पानेकी एवजमें चंद्रावती नरेश वीरधवलको भेजूँ तो ठीक हो। इस प्रकार संक-ल्प विकल्प कर कैदमें रहते हुए भी अपने विश्वासपात्र सोमचंद्र नामक एक वणिकको गुप्त संकेतसे उसने यह बात मालूम की। गुप्त खजानेमेंसे आठ लाख सुवर्ण मोहरें ले वीरधवल राजाको अपनी सहायतार्थ बुलानेके लिये सोमचंद्रको चंद्रावती जानेकी आज्ञा की।

सोमचंद्र बलसारकी आज्ञानुसार आठ लाख सुवर्ण मुहरें ले वीरधवल राजाको बुलानेके लिए चल पड़ा। जब वह रास्तेमें रौद्र अटवीमें पहुँचा तब उसे चंद्रावती नरेश वीरधवल और पृथ्वीस्थानपुरके राजासूरपाल अतुल सैन्य सहित वहाँ ही सन्मुख मिल गये।

इन दोनों राजाओंको यह खबर मिली थी कि रौद्र अटवीमें दुर्गतिलक नामक पहाड़पर भीम नामक एक पल्लीपति रहता है, उसके पास मलयासुन्दरी है। यह खबर मिलते ही पुत्र पुत्रीके वियोगी दोनों राजाओंने अपने २ राज्यसे प्रबल सैन्य ले भीम पल्लीपतिको जीत कर मलयासुंदरीको छुड़ानेके लिए चढाई की थी। दुर्जय पल्लीपतिको तो उन्होंने प्रबल सैन्यबलसे लीला मात्रमें जीत लिया; परन्तु तलाश करनेपर भी वहाँ पर मलयासुंदरीका पता न लगा। निराश होकर दोनों राजा अपने नगरको वापिस लौट रहे थे, इसी समय रास्तेमें उन्हें सोमचंद्र जा मिला। उसने बलसारका कहा हुआ सविस्तर संदेश राजा वीरधवलके समक्ष कह सुनाया। और साथमें लाई हुई आठ लाख सुवर्णमुद्रायें भेंटके बतौर राजाके सामने रख दीं। राजा वीरधवलने आठ लाख मुहरोंमेंसे आधा धन महाराज शूरपालको दे सिद्धराजको पराजित कर बलसारको छुड़ानेकी सम्मति दी। महाराज शूरपालने भी लोभके वश हो राजा वीरधवलके विचारों से सहानुभूति प्रगट की। महाराज शूरपाल बोला—सागर तिलक नरेशके साथ तो हमारा वंशपरं परासे वैरभाव चला आ रहा है। चलो यह अवसर ठीक है। उसे पराजित कर उसका सर्वस्व ग्रहण करेंगे।

सिद्धराज कौन है ? और उसने किसलिये इतने बड़े व्यापारी बलसारको कैद किया है ? इस बातसे वे दोनों ही राजा अनजान थे। इसी तरह यह मुझे कैद करने वाला सिद्धराज कौन है, और मलयासुन्दरीका वीरधवल के साथ क्या सम्बन्ध है। इस विषयमें बलसारभी बिलकुल अनजान था। अज्ञानताके कारण दोनों राजा असंख्य सैन्य ले सिद्धराजपर चढ़ आए। सागरतिलक शहरके नजीक आकर उन्होंने अपनी अनुकूलता देख एक छोटीसी पहाड़ी पर पड़ाव डाला। सिद्धराजको चेतानेके लिये शिक्षा देकर उन्होंने उसके पास एक राजदूत भेजा।

सिद्धराजकी राजसभामें आकर नमस्कार कर दूत बोला—राजन् ! पृथ्वीस्थानपुर से महाराज शूरपाल तथा चंद्रावतीसे महाराज वीरधवल अपना सैन्य लेकर यहाँ आये हुये हैं। वे आपको मालूम कराते हैं कि आपने जो बलसार व्यापारी को कैद किया है वह हमारा मित्र है। हम उसकी कदापि उपेक्षा नहीं कर सकते। इसलिए यदि आप अपना भला चाहते हैं तो उसका सत्कार कर उसे छोड़ दें। अगर उसने आपका कुछ अपराध भी किया हो तथापि आप उसका एक अपराध सहन कर लें। राजन् ! आप स्वयं यद्यपि शूरवीर हैं तथापि आपके पास सेनाबल बहुत कम है। हमारे राजाओंके पास असंख्य सेना बल

है, अतः आपको इन तमाम बातोंपर विचार कर हमारे स्वामीकी आज्ञानुसार बलसार सार्थवाहको छोड़ देना चाहिये। अगर आपको यह बात मंजूर न हो तो हमारे राजाओंका अन्तिम संदेश है कि आप युद्धके लिये तैयार होजावें। वे आपसे बलपूर्वक बलसारको छुड़ायेंगे और आपको भी शिक्षा करेंगे।

सिद्धराजने उस दूतके वचन शान्ति पूर्वक सुने। वह अपने पिता और स्वसुरको सन्मुख आया जानकर बहुतही खुश हुआ। परन्तु कुछ सोच विचारकर वह बनावटी क्रोध धारणकर दूतसे बोला—तुम्हारे दोनों स्वामी बहुत बड़ी सेना लेकर आये हैं तो हम क्या चूड़ियाँ पहनकर बैठे हैं? या हमारे भुजायें नहीं हैं? या हम मिट्टीके ही पुतले हैं? तुम्हारे स्वामी क्या यह नहीं जानते कि एकलाही सूर्य असंख्य ताराओंके तेजको नष्ट कर डालता है? एकही केशरी अनेक मदोन्मत्त हाथियों के मदको ठंडाकर देता है, क्या वे इस बातको भूल गये हैं? बलसार बड़ा व्यापारी होनेसे तुम्हारे राजाओंका मित्र है इससे हमें क्या? बड़ा हो या छोटा, अपराधी मनुष्य शिक्षाका पात्र बनता है। सज्जनोंका सन्मान करना और दुर्जनों—अपराधियों को दंड देना यह न्यायवान राजाओंका कर्तव्य है। बलसार गुन्हेगार है, अतः

उसे शिक्षा करना न्याय है अन्याय नहीं। तुम्हारे स्वामी अपराधीका पक्ष लेकर आये हैं, इसलिए मैं उनसे बिलकुल नहीं डरता। तुम्हें याद रखना चाहिये कि उल्लूको आश्रय देनेवाले अन्धकारकी सूर्यके सामने जो दशा होती है वही दशा अन्यायीको आश्रय देने-वालेकी भी होगी। इतने नीति निपुण होने पर भी अप-राधीका पक्ष लेकर मुझपर इतनी बड़ी सेना ले चढ़ाई करते हुए तुम्हारे स्वामियोंको लज्जा न आई? अन्याय पक्षकी पुष्टि करनेवाले चाहे जैसे बलवान हों समरभूमि में मेरे सामने टिक नहीं सकते। जाओ दूत! तुम्हारे स्वामियोंको भी मेरा यह अन्तिम संदेश सुनादो कि वे युद्धकी तैयारी करें। उनकी तमाम इच्छायें युद्ध भूमिमें मेरी तलवार पूर्ण करेगी।

सिद्धराजके वचन सुन दूत भी स्तब्धसा होगया। वह सिद्धराज को नमस्कार कर वहाँसे चला गया। उसने राजा सूरपाल और वीरधवलसे जाकर सिद्धराजका सारा समाचार कह सुनाया और उन्हें युद्धके लिए तैयार होनेकी सूचना दी। महाराज सूरपाल और वीरधवलकी आज्ञासे उनकी सेनामें समरकी तैयारियाँ होने लगीं।

इधर महाबल राजा सभामेंसे उठकर राजमहलमें गया। उसने बलसारको छुड़ानेके लिए अपने पिता और

स्वसुरजीके आनेका शुभ समाचार रानी मलयासुन्दरी को सुनाया। अपने पिता और स्वसुरके आनेका समाचार सुनकर मलयासुन्दरीको अत्यन्त आनन्द हुआ। महाबल बोला-प्रिये ! ऐसी परिस्थितिमें संग्राम किये बिना पिताजी और ससुरजीसे योंही जामिलना मुझे उचित मालूम नहीं होता। मैं यह समझता हूँ कि पूज्य पिता और पितातुल्य स्वसुरजीके सन्मुख युद्ध करना योग्य नहीं है, तथापि संग्राम करनेकी भावनासे आये हुए होनेके कारण उनके समक्ष जाकर "मैं आपका पुत्रहूँ। या मैं आपका जमाई हूँ" यों कहकर दीनतासे मिलना क्षत्रिय पुरुषोंके लिए अपमान कारक है। इसलिए संग्राम में कुछ हाथ बतलाकर फिर पिताजी और स्वसुरजीसे मिलना अधिक प्रेम और आनन्द दायक होगा। तुम यहाँ रहकर निश्चिन्त हो महलपरसे युद्ध देखना। मलयासुन्दरीको यों कहकर महाबल राज महलसे बाहर चला गया।

दोनों सेनाओंमें संग्रामकी तैयारी हो रही है। अपने मालिककी आज्ञा पाकर वीरतामें मत्त हो योद्धाओंमें उत्साह भर रहा है। सिद्धराज स्वयं सेनापति बनकर सैन्य संचालन करेंगे यह जानकर वीर सुभटोंके उत्साह का पार न रहा। आज उन्हें यह प्रथम ही अवसर

मिलेगा जबकि वे अपने नवीन राजा सिद्धराजको स्वयं शत्रुसेनासे लड़ता देखेंगे।

उधर विपुल शत्रुसेना देख कायर मनुष्योंका हृदय काँपता था। इधर मुट्ठीभर सुभटोंको देख सारा शहर चिन्ता सागरमें डूब रहा था। दोनों महा शक्तिशाली राजाओंकी असंख्य सेनाके सामने सिद्धराजकी सेना कुछ भी हिसाबमें न थी। परन्तु फिरभी सिद्धराजका साहस देख लोगोंको उसके पूर्वकृत कारनामोंसे विश्वास होता था कि वह जिस कार्यमें सोच समझ कर हाथ डालता है उसे बिना पूर्ण किये नहीं छोड़ता। इस समय जो उसने अतुल सेनाका सामना करना मंजूर किया है तो अवश्य ही कुछ सोच समझकर किया होगा।

सामने शत्रुसेना युद्धके लिए तैयार खड़ी है। एक तरफ काले पहाड़ोंके समान हाथियोंकी पंक्ति लगी खड़ी है। सशस्त्र सैनिक उत्साह पूर्वक शत्रुके आक्रमणकी राह देख खड़े हैं। घोड़े हिनहिनाट कर रहे हैं। संग्रामके बाजे बज रहे हैं। सिद्धराजके सैनिकोंमें भी युद्धका अदमनीय उत्साह भरा था। वे सिद्धराज जैसे सेनापतिकी अध्यक्षतामें यमराजसेभी युद्ध करनेको उत्सुक थे। रण-रंग हाथीपर बैठ और अपनी अदम्य उत्साह वाली छोटीसी सेनाको साथ ले महाबल शत्रुसेनाके सन्मुख आपहुँचा।

दोनों सेनाओंमें मुठ भेड़ होगई। भयंकर युद्ध छिड़ गया। समर भूमिकी उड़ी हुई धूलसे आकाश में बादल से छागये। उस भीषण संग्राममें तलवारोंकी चमक बिजलीकी भाँति मालूम होती थी।

सिद्धराजको आगे बढ़ा देख विश्वालंकार हाथी पर बैठ कर राजासूरपाल और संग्रामतिलक नामा हाथी पर बैठ वीरधवल राजा आगे बढ़ आये और जी तोड़ कर लड़ने लगे। अपने स्वामियोंको आगे बढ़ता देख दोनों सेनायें सिद्धराजकी सेना पर टूट पड़ीं। हाथीवाले के साथ हाथीवालों, घुड़सवारोंके साथ घुड़सवारों और पदातियोंके साथ पदातियोंमें घोर घमशान युद्ध मच गया। अनेक सुभटोंके रुंडमुंड कटकर जमीन पर पड़ने लगे। सिद्धराजकी सेनाका संगठन टूट जानेसे उसमें भगदड़सी मचगई। उसके सैनिक परास्त होकर रणभूमि से भागने लगे। अपने सैनिकोंको भागते देख और अपने बलसे सामनेका बल अजेय समझकर सिद्धराजने अपने वशवर्ती व्यन्तर देवको याद किया। स्मरण करतेही व्यन्तर देव वहाँ पर आपहुँचा। 'मैं आपको इच्छित सहाय करूँगा, यों कहकर वह देव उसकी मदद करने लगा। अब सिद्धराजने अपने सैन्यका उत्साह बढ़ाया और वह अपने हाथी परसे सामने की सेनापर विषम

वाण वर्षा करने लगा। सिद्धराजका एकभी वार खाली न जाता था और देव सहायता के कारण सामनेसे आने वाले वाण निष्फल होते थे। व्यन्तर देव रास्तेमें ही आते हुए शत्रु सेनाके वाणोंको ग्रहण कर लेता था और उन्हीं वाणोंको लाकर महाबलको दे देता था। बहुत देर तक इसी प्रकार युद्ध चलता रहनेसे अब सामने वाली सेनाका संगठन टूट गया। बड़े बड़े योद्धाओंका होशला परास्त होगया। इतनी विपुलसेना छिन्न भिन्न होती देख दोनों राजाओंके होश गुम होने लगे। जिस तरह तेजस्वी गुरु और शुक्रको चंद्रमा निस्तेज कर डालता है उसी तरह एकले महाबलने अपनी दिव्य सहायवाली वाणवृष्टिसे दोनों राजाओं को निस्तेज कर दिया। महाबलके शस्त्राघातसे उनके हाथसे छूटकर शस्त्र जमीन पर गिरने लगे। अब वे लज्जासे अधोमुख हो चिन्तातुर होकर सोचने लगे—अहो! कैसा आश्चर्य है? मुट्ठी भर सैनिकों को साथ लेकर सिद्धराज एकलाही कैसा पराक्रम बतला रहा है? धन्य है ऐसे वीर योद्धा को। हे प्रभो! आज इस दुर्दमनीय महा योद्धासिद्ध-राजके सामने किस तरह हमारी लज्जा रहेगी?

अपने पिता और स्वसुरको युद्धक्षेत्रमें पराजित होने के कारण चिन्तित देखकर महाबलने व्यन्तर देवको कुछ

सूचनाकर प्रथमसे लिखा हुआ पत्र बाणके अग्रभागमें रखकर वह बाण अपने पिता राजाशूरपालके सामने फेंका। दिव्य प्रभाववाला सिद्धराजका छोड़ा हुआ बाण राजा शूरपालको नमस्कार कर, तमाम मनुष्योंको आश्चर्य चकित करता हुआ राजाके सामने आ पड़ा। दोनों राजा आश्चर्य पाते हुए उस बाणके पास आये और उसके अग्रभागपर चिपकाये हुए पत्रको महाराज शूरपालने उठा लिया। पत्र को देख तमाम सैनिकोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। मंत्री वगैरह सेनाके तमाम प्रधान पुरुष उस पत्रको सुननेके लिए उत्सुकता पूर्वक महाराज शूरपालके पास आ खड़े हुए। महाराज शूरपालने भी उस पत्रको खोलकर सबके समक्ष उच्च स्वरमें पढ़ना शुरू किया।

श्रीमान्, वीर शिरोमणी, रणांगण भूमिमें स्थित पूज्य पिताश्री महाराज शूरपाल नरेन्द्रके चरणारविंदोंमें तथा श्रीमान् चंद्रावती नरेश, महाराज वीरधवलके चरणकमलों में, आप श्रीके सन्मुख समरभूमिमें स्थित महाबल कुमार आप सबको नमस्कार पूर्वक प्रार्थना करता है कि आपकी पवित्र कृपासे मुझे इस राज्यका पूर्ण परिग्रह प्राप्त हुआ है। पूज्य पिताश्रीके प्रमोदार्थ आपके समक्ष जो मैंने अपनी भुजाबलका विनोद किया है और उसमें आप पूज्योंका जो पराभव, अवज्ञा, या अविनय हुआ हो तो

आप कृपाकटाक्ष द्वारा उसे क्षमा करें। पूज्य पिताश्रीके दर्शनार्थ मैं स्वयं प्रबल उत्कंठित हो रहा था, इतनेहीमें पुण्योदयसे अकस्मात् पूज्योंका पवित्र दर्शन प्राप्त हुआ है; इसलिए इस अद्वितीय हर्षके स्थानमें आपश्री शोकसागरमें क्यो निमग्न हो रहे हैं ?

पत्र पढ़ते ही सारी सेनामें हर्षध्वनि होने लगी। राजा सूरपाल और वीरधवलके जिस हृदयमें कुछ ही देर पहले चिन्ता और शोकने स्थान प्राप्त किया हुआ था वही हृदय अब हर्ष और प्रमोदसे पुलकित हो उठा। राजा सूरपाल आनन्दके आवेशमें बोल उठा—अहो ! भाग्योदय ! जिस प्रियपुत्रके दर्शनार्थ लगभग डेढ़ वर्षसे तरस रहा हूँ आज वह राज्य ऋद्धि संपन्न अपनी प्रिया सहित मिलेगा !! नरकके समान वियोग दुःखसे आज हमारा उद्धार होगा। आज हमारे पिपासित नेत्र पुत्रदर्शनसे तृप्त होंगे। इस प्रकार बोलता हुआ सूरपाल राजा महाराज वीरधवलके साथ उत्सुकता पूर्वक महाबलके सन्मुख चल पड़ा।

प्रेम एक ऐसी चिकनी भावना है कि उसके सामने मान, अपमान, बड़े छोटेकी गणना या तुलना नहीं रहती। अविवेक या अविनय तो उसके अखण्ड रसके प्रवाहमें विलीन होजाता है। प्रत्युत आन्तरिक लग्नको

प्रकट कर प्रेमका पोषण करता है।

महाबल अपने पिता तथा स्वसुरको अपने सन्मुख आता देख रणरंग हाथीसे नीचे कूदकर पिताके सामने दौड़ पड़ा। शीघ्रही पास जाकर पिताके चरणोंमें मस्तक झुका दिया और आनन्दके आँसुओंसे उसने दबी हुई चिरकलीन वियोग व्यथाको दूर किया। अब समरभूमिमें न रहकर महाबलने अपने पूज्य जनोंको बड़े समारोहके साथ नगरमें प्रवेश कराया।

राजमहलमें पहुँचतेही मलयासुन्दरीने अपने पिता तथा स्वसुरके चरणोंमें आकर नमस्कार किया। उन्हें देखतेही उसे अनुभूत दुःख याद आगया। दुःख याद आनेपर उसका हृदय उसके स्वाधीन न रहा। उसके नेत्रोंसे अखण्ड अश्रु प्रवाह बहने लगा और वह फूटफूट कर रोने लगी। वह आपही नहीं रोई बल्कि अपने स्वजनोंको भी उसने खूब रुलाया। अन्तमें धैर्यधारण कर उसके पिता और स्वसुरने उसे दिलासा देकर शान्त किया। पूछनेपर मलयासुन्दरी और महाबलने अपने पिता और स्वसुरको अपना अनुभव किया हुआ आज तकका समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। मलयासुन्दरीके दुःखका वृत्तान्त सुनकर दोनों राजाओंके नेत्रोंसे अश्रु टपकने लगे। राजासूरपालके हृदयमें अपनी की हुई भूल के पश्चा-

त्तापका पार न रहा। मलयासुन्दरीके सामने उसकी गरदन नीची होगई। पश्चात्तापके दुःखसे उसका हृदय गद्गद होगया। वह विनम्र भावसे बोल उठा-बेटी कुल वधु ! तुम तत्वज्ञा हो इस अविचारी सूरपालको जो तुम्हारे सर्व दुःखों का कारण बना है क्षमा करो। देवी ! मैं तुम्हारे सामने मूर्ख और अपराधी हूँ। राजा वीरधवल पुत्रीके मस्तक पर हाथ फेरकर बोला—बेटी ! तुमने बड़ा घोर दुःख सहा ! राजकुलमें पैदा होकर भी तुम निष्पुन्यक भिखारी के समान रुलती फिरी ! चंद्र किरणोंके समान निर्दोष और गुलाब कुसुमके समान कोमलांगी पुत्री ! तूने किस तरह ऐसे घोर दुःख सहे होंगे ! इस प्रकार दुःखित हृदयसे सबने मलयासुन्दरीके दुःखसे शोक समवेदना प्रगट की।

स्नान भोजन कर फिर राज्य प्राप्तिके सम्बन्धमें बातचीत शुरू हुई। सूरपाल बोला-बेटा ! तेरी सहन शक्ति अगाध है। तुमने कंदर्प पर बड़ा भारी अनुग्रह किया। परन्तु फिर भी वह दुष्ट तुम्हारे अनुग्रहसे कुछ लाभ न उठा सका। बेटा ! तुम्हारा साहस, तुम्हारी तीक्षण बुद्धि, तुम्हारा धैर्य और तुमपर प्रजाका जो असीम प्रेम है वह सब प्रशंसाके योग्य है। इत्यादि पुत्र के गुणोंकी अनुमोदना करते हुए राजा सूरपालने पूछा—बेटा ! जंगलमें पैदा होनेवाला मलयासुन्दरीका वह पुत्र कहाँ

? पापी दुष्ट बलसारने उसकी क्या व्यवस्था की है ?

महाबल—बलसारको यहाँ बुलाकर पूछनेसे मालूम होगा। बलसारको शीघ्रही जेल खानेमेंसे राजा सूरपाल के पास बुलवाया गया। वह राज पुरुषोंके पहरेमें और हथकड़ी बेड़ियोंसे जकड़ा हुआ राज सभामें हाजिर हो उसे देखतेही राजा सूरपाल त्यौरी चढ़ाकर बोला—अरे दुष्ट! तूने हमारा भयंकर अपराध किया है। इस अपराधमें तुझे भारीसे भारी शिक्षा मिलनी चाहिये। तू प्रथम यह तो बतला कि तूने उस हमारे लड़केकी क्या व्यवस्था की है और उसे कहाँ रक्खा है ?

सूरपाल और वीरधवलराजाको वहाँ बैठा देख बलसारके छक्के छूट गये। वह और भी अधिक घबड़ा गया। वह जिनकी सहायसे सिद्धराजके जेलखानेसे छूटना चाहता था उन्हींके ये पुत्र पुत्री हैं जिनका उसने अपराध किया है। जिस वीरधवल राजाकी सहायतासे वह अपने छुटकारेकी कुछ आशा रखता था उसीकी पुत्री मलयासुन्दरीकी उसने घोर विटम्बना की है, इतनाही नहीं किन्तु उसे द्रव्य लेकर कारु लोगोंके हाथ पशुके समान बेच दिया था। इत्यादि बातें याद आतेही उसके होश गुम हो गये। वह सोचने लगा कि मेरे सब मनोरथ निष्फल हो गये। राज द्रोह और स्वामीका अपराध

करनेवाले मुझको सहकुटुम्ब प्राण दण्डकी शिक्षाके सिवा अब अन्य मार्गही नहीं दीखता । अर्थात् मरनेसे बचनेका अब कोई उपाय नहीं है । इस प्रकार सोच विचार कर बलसार बोला—महाराज ! मैंने आपका बड़ा भयंकर अपराध किया है, इससे मैं अवश्यही शिक्षाका पात्र हूँ तथापि यदि आप मुझे कुटुम्ब सहितको प्राण दान देवें तबही मैं आपके उस पुत्रको बतला सकता हूँ । अन्यथा मुझे यों भी मरना है और यों भी ।

सूरपालराजा– खैर यदि तू हमारे जीवित पुत्रको लादे तो हम तुझे तेरी इच्छोनुसार जीवित दान देते हैं । यों कहकर राजाने बलसारके बतलाये हुए गुप्त स्थानपर राज पुरुषोंको भेजा और वे वहाँ हिफाजतसे रहे हुए उस बालकको राज सभामें ले आये । जिस तरह वर्षा ऋतु में मेघागमनसे आनन्दित हो मयूर कुटुम्ब नृत्य करता है; वैसे ही पुत्रको देखकर सारा राजकुटुम्ब हर्षित हो उठा । सूरपालराजाने बलसारसे पूछा—इस कुमारका तुमने क्या नाम रक्खा है ? बलसारने कहा—महाराज ! इसका नाम बल रक्खा है । राजाने पुत्रको अपनी गोद में लेलिया, उस समय उसके हाथमें सौ सुवर्ण मुहरें थीं । उन स्वर्ण मोहरोंकी थैलीको बालकने अपने हाथसे पकड़कर खींच लिया यह देख राजाने उसका नाम सतबल

रक्खा। सूरपाल राजाने बलसार सार्थवाहका सर्वस्व लूटकर उसे सकुटुम्ब जीवन दान दे देशसे बाहर निकाल दिया।

स्वजन सम्बन्धियोंका मिलाप होनेके कारण राज-कुटुम्ब और सारे राज्यभरमें आजके दिन आनन्दोत्सव मनाया गया। बहुतसे समयसे पुत्र और पुत्रीके विरहसे संतप्त दोनों राजा आज शान्तिका अनुभव कर रहे थे। सिद्धराज सूरपाल राजाका महाबल कुमार नामक पुत्र है, यह जानकर प्रजामें और भी आनन्द छागया। अपने भुजाबलसे पैदा किया हुआ राज्य महाबल कुमारने अपने पिताको समर्पण किया। परस्पर परमस्नेहमें निमग्न होकर दोनों राजकुटुम्ब सानन्द समय व्यतीत करने लगे।

अनेक प्रकारके पार्थिव वैभवोंका अनुभव करता हुआ महाबलका राजकुटुम्ब इष्ट संयोगके सम्बन्धसे पूर्व अनुभूत असह्य दुःखोंको सर्वथा भूल गया था। पूर्वोपार्जित प्रबल पुण्यका सूर्योदय परा काष्टाको पहुँचा मालूम होता था। इस समय आन्तर सुखशान्ति प्राप्त करनेके लिए उन्हें किसी ज्ञानवान् विरक्तात्मा सद्गुरुके समागमकी आवश्यकता थी। मानो वह पूर्णकरनेके लिएही उनके पुण्य से प्रेरित हो पार्श्वनाथ प्रभुके शिष्य महात्मा 'चंद्रयशा केवली, विचरते हुए और भव्य जीवों को उपदेश करते हुए वहाँपर आ पधारें।

पूर्वभव वृत्तान्त

सागर तिलक नगरके बाह्योद्यानमें आज बहुतसे नगर निवासियोंका जमघट लगा हुआ है। शहरके बड़े बड़े आदमी उत्साह और भक्ति भावसे प्रेरित हो उधरको जा रहे हैं। इस समय राजसभामें आकर एक बागवान ने राजासे प्रार्थना की—महाराज! आज शहरके बाहर महातपस्वी और कैवल्य ज्ञानधारी एक चंद्रयशा नामक महात्मा पधारे हैं। यह समाचार सुनतेही सारा राजकुटु-म्ब इस प्रकार प्रसन्न हो उठा जिस तरह सूर्यके आगमन से कमल समुदाय विकसित हो उठता है। उन्होंने जरा भी विलम्ब न किया, सारेही राज कुटुम्बको साथ लेकर गुरुमहाराजको वन्दन करनेके लिए उनके दर्शनार्थ महा-राज शूरपाल, महाराज वीरधवल वहाँ आ पहुँचे। राजा आदि तमाम जनताके उपस्थित होने पर कृपाके समुद्र ज्ञानभानु महात्मा चंद्रयशा केवली भगवानने जगत्‌जनों पर करुणा लाकर संसारके जन्म–जरा–मरणके बन्धनोंको छेदन करनेवाली और आत्माको वास्तविक स्वरूप बतलाने वाली वैराग्य गर्भितधर्म देशना प्रारंभ की।

सुखप्राप्तिकी इच्छा रखनेवाले सज्जनो ! आपको यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि संसारके तमाम सुख निमित्तजन्य होनेके कारण विनश्वर हैं। आत्माका असली स्वरूप प्राप्त किए बिना मनुष्यको सच्चा सुख प्राप्त नहीं होता। उस सुखको प्राप्त करनेके लिये ज्ञानवान पुरुषोंने दो मार्ग बतलाये हैं। एक सन्यस्त मार्ग और दूसरा गृहस्थ है। जिस मनुष्यमें उस सुखको प्राप्त करनेकी तीव्र इच्छा और उत्सुकता प्राप्त हुई हो वह मनुष्य आत्माके साथ कर्मबन्धन करानेवाले तमाम भावोंका सर्वथा परित्याग कर प्रबल पुरुषार्थ द्वारा संन्यस्त मार्गसे उसे प्राप्त कर सकता है। जिसमें उतना त्याग करनेका प्रबल पुरुषार्थ न हो वह मनुष्य गृहस्थ धर्ममें रहकर उसके योग्य नियमोंको धारणकर धीरे २ आत्मस्वरूपकी ओर गमन करते हुए उस सुखके नजदीक पहुँच जाता है। गृहस्थ धर्मके योग्य ज्ञानी पुरुषोंने मुख्यतया व्यवहार और निश्चय नयसे बारह नियम बतलाये हैं।

दूसरे प्राणीको अपने समान समझ कर उसकी हिंसा न करे। उसे किसीभी प्रकारकी पीड़ा न पहुँचावे, इसे व्यवहार नयसे प्रथम व्रत या नियम कहते हैं। और यह प्राणी अन्य प्राणियोंकी हिंसा द्वारा कर्म बन्धन

करके दुःखका भोगी बनता है। इसलिए आत्माके साथ लगे हुए कर्मोंको दूर करना योग्य है। तथा यह आत्मा अनेक स्वाभाविक गुणवाली है। अतः हिंसादिक द्वारा कर्म ग्रहण करनेका इसका स्वाभाविक धर्म नहीं है। इस प्रकारकी ज्ञानबुद्धिसे हिंसाके त्यागरूप आत्मगुणको ग्रहण करना या ग्रहण करनेका निश्चय करना इसे निश्चय नयकी अपेक्षा प्रथम व्रत कहते हैं।

लोक निन्दित असत्य भाषणसे निवृत्त होना यह व्यवहारसे दूसरा व्रत कहलाता है। त्रिकाल ज्ञानी सर्वज्ञ देवके कथन किये हुए जीव अजीवके स्वरूपको अज्ञानतावश विपरीत कथन करना और पौद्गलिक परवस्तुको आत्मीय कहना यह सरासर मृषावाद है। अतः इस प्रकार के मृषावादसे निवृत्त होना इसे निश्चयनयकी अपेक्षा दूसरा व्रत कहा है। इस पूर्वोक्त व्रतके सिवा अन्य व्रतोंकी यदि विराधना भी हो जाय तो उसका चारित्र नष्ट हो जाता है। किन्तु ज्ञान और दर्शन ये दोनों कायम रहते हैं। पर उपरोक्त दूसरे व्रतकी विराधना होनेसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र ये तीनों ही जो आत्मीय सुखकी प्राप्ति कराते हैं नष्ट हो जाते हैं। (३) किसीकी मालकियतकी वस्तु मालिकके दिये बगैर या उसकी आज्ञा बिना ग्रहण न करना इसे व्यवहार नयसे तीसरा व्रत कहते हैं। परन्तु

द्रव्यसे परवस्तु ग्रहण न करनेके उपरान्त अन्तःकरणमें पुण्य तत्वके बेतालिस भेद प्राप्त करनेकी इच्छासे धर्म कार्य करता हुआ और पाँचों इन्द्रियोंके तेईस विषय तथा कर्मकी आठ वर्गणायें, वगैरह अनात्मीय परवस्तु ग्रहण करनेकी इच्छातक भी न करना इसे निश्चय नयकी अपेक्षा तीसरा व्रत कहते हैं।

(४)गृहस्थ धर्ममें स्वदारा संतोष और परस्त्रीका त्याग, तथा साधु मुनिराजके लिये सर्वस्त्री मात्रका परित्याग करना यह व्यवहारसे चतुर्थ व्रत कहलाता है। परन्तु विषयकी इच्छाका, ममत्व और तृष्णाका परित्याग रूप निश्चयसे चतुर्थ व्रत होता है।

(५)गृहस्थ धर्ममें नव प्रकारके परिग्रहका परिमाण करना और संन्यस्त मार्गमें सर्व प्रकारके परिग्रहका त्याग करना, यह व्यवहारसे पांचवाँ व्रत कहलाता है। भाव कर्म जो राग द्वेष, अज्ञान तथा आठ प्रकारके द्रव्यकर्म और देहकी मूर्च्छा एवं पाँचों इन्द्रियोंके विषयोंके परित्यागको ज्ञानवान् पुरुषोंने निश्चय नयसे पाँचवाँ व्रत कथन किया है।

(६) दिशाओंमें आने जानेका परिमाण करना यह व्यवहारसे छट्ठा व्रत कहलाता है। और नरकादि चतुर्गति रूप कर्मके परिणामको जानकर उस ओर उदासीन

भाव रखना तथा सिद्ध अवस्थाकी तरफ उपादेय भाव रखना इसे निश्चय नयसे छटा व्रत कहते हैं।

(७) भोगोपभोग व्रतमें सर्व भोग्य वस्तुओंका परिमाण करना यह व्यवहारसे सातवाँ व्रत कहलाता है। व्यवहार नयसे कर्मका कर्त्ता तथा भोक्ता आत्मा ही है। और निश्चय नयसे कर्मका कर्तापन कर्मकोही है, क्योंकि मन वचन और शरीरका योग ही कर्मका आकर्षण करता है। एवं भोक्तापन भी योगमें ही रहा हुआ है। अज्ञानताके कारण आत्माका उपयोग मिथ्यात्वादि कर्म ग्रहण करनेके साधनमें मिल जाता है। परन्तु परमार्थ वृत्तिसे आत्मा कर्म पुद्गलोंसे भिन्न ही है। आत्मा ज्ञानादि गुणोंकी आविष्कर्ता और भोक्ता है। संसारमें जितने पौद्गलिक पदार्थ हैं वे जगतवासी अनेक जीवोंके भोगे हुये हैं। अतएव विश्वभरके तमाम पदार्थ उच्छिष्ट भोजन के समान होनेके कारण उन पुद्गलोंको भोगोपभोग रूपसे ग्रहण करनेका आत्मीय धर्म नहीं है। इस प्रकारके चिंतनको निश्चय नयसे सातवाँ व्रत कहते हैं।

(८) विना प्रयोजन पापकारी आरम्भसे निवृत्तहोना इसे व्यवहारसे आठवाँ अनर्थदण्ड विरमण व्रत कहते हैं। मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और मन वचन शरीरके योग इन चारोंके उत्तर भेद सत्तावन होते हैं। आत्माको मलीन

कर अपने स्वरूपसे वंचित करनेवाले कर्मका आगमन इन पूर्वोक्त हेतुओंसेही होता है और कर्मों के द्वाराही आत्मा विभाव दशाको प्राप्त होती है। अतः पूर्वोक्त कर्मबन्धन के हेतुओंको त्यागना इसे निश्चय नयसे अनर्थदण्ड विरमण नामक आठवाँ व्रत कहा है।

(९)आरम्भ कार्यको त्यागकर जो सामायिक किया जाता है उसे व्यवहारसे नवम व्रत कहते हैं। परन्तु ज्ञानादि गुणोंकी मुख्य सत्ता धर्मके द्वारा सर्वजीवोंको समान समझ कर उनपर समता परिणाम रखनेको निश्चय नयसे नवम सामायिक व्रत कहते हैं।

(१०)नियमित स्थानमें स्थिति करना यह व्यवहारसे दशवाँ व्रत कहलाता है। परन्तु ज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंका स्वरुप समझकर, पाँच द्रव्योंमें त्याग बुद्धि रख ज्ञानसे आत्माका ध्यान करना इसे निश्चयसे दशवाँ देशाव-काशिक व्रत कहते हैं।

रातदिनके आरंभ समारंभ या पापकारी व्यापार का परित्याग करके ज्ञान, ध्यानमें प्रवृत्त होना व्यवहारसे ग्यारहवाँ व्रत कहलाता है। परन्तु ज्ञान-ध्यानादिके द्वारा आत्मीय गुणों का पोषण करना इसे निश्चयसे ग्यारवाँ पौषध व्रत कहते हैं।

पौषध पारकर या पूर्वोक्त नियमोंको धारण कर

वाले गृहस्थके लिए सदैव साधु मुनिराजको या किसी विशिष्ट गुणवान् श्रावकको अतिथिसंविभाग करके भोजन करना, इसे व्यवहारसे अतिथि संविभाग व्रत कहते हैं। परन्तु अपनी आत्माको तथा अन्यको ज्ञानदान करना, पठन पाठन, श्रवण, श्रावण, वगैरह को निश्चय से बारहवाँ अतिथि संविभाग नामक व्रत कहते हैं।

पूर्वोक्त निश्चय और व्यवहार भेदोंसहित ये बारह प्रकारके नियम गृहस्थधर्मको मुक्ति मंदिरकी तरफ ले जाते हैं। केवल व्यवहारसेही धारण किये ये व्रत आत्मा को देवलोकादिका सुख प्राप्त कराते हैं।

महानुभावो! आत्मीय सुख प्राप्तिका उद्देश्य किये विना सांसारिक सुखकी लालसामें अमूल्य जीवनकी कदर्थना करना मूर्खता है, क्या यह कीमती जीवन विषय वासनाओंके प्रवाहमें वहा देनेके लिए प्राप्त हुआ है? या उस क्षणिक सुखके साधनोंको एकत्रित करनेके लिये ही दुर्लभ मानव जन्म पाया है जो बादलकी छायाके समान कुछ देर आकर नष्ट होजाता है? संसार परिवर्त्तन शील है, उसमें मनुष्य अपनी जीवन नौकाको वहन करता है। यदि वह-पतवारको छोड़ हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाय तो वह नौका कालके प्रवाहमें वह जाय। परिवर्तनशील संसारमें रहनेवाले हरएक समझदार

मनुष्यको अपने बहुमूल्य मानव जीवनका लक्ष्य कायम कर सदैव उसकी ओर ध्यान रखना चाहिये। बहुतसे मनुष्य आत्मीय सुखकी ओर दुर्लक्ष्य कर शारीरिक सुखको अधिक महत्व देते हैं। वे सवारकी अपेक्षा घोड़ेको ही कीमती समझते हैं।

राजन्! परम सुख प्राप्त करनेका मुख्य साधन शरीर अस्थिर है। सुखकी भ्रांति करानेवाली लक्ष्मी बिजलीके चमत्कार की तरह चपल है। संयोग वियोग वाले हैं। प्राणीमात्रके सिरपर मृत्युका नाच हो रहा है, न जाने किस समय और किस पर उसकी तान टूट जाय। संसारके तमाम सुख स्वप्नके सरीखे हैं। संकटके समय धर्मके सिवा कोई भी सहाय नहीं कर सकता। देव देवेन्द्र, राजा रंक, स्त्री पुरुष और बाल वृद्ध आदि सबको एक समय मृत्युका ग्रास बनना है। इस लिए हे भव्यात्माओ! आलस्यकी घोर निद्राको त्यागो। सावधान होकर परम शान्तिके मार्गमें प्रयत्न करो। निरन्तर सुखकी इच्छावाले मनुष्यको कभी न कभी अवश्य ही इस मार्गका आश्रय लेना पड़ेगा। अमूल्य जीवनका एक भी क्षण निरर्थक न जाने दो। ये क्षण बड़ेही कीमती हैं। विपुल संपत्ति खर्चने पर भी गया क्षण हाथ नहीं आता और पुण्योदयसे प्राप्त हुई यह सर्व

सामग्री बारंबार नहीं मिलती।

इस धर्म देशना को सुनकर अनेक मनुष्योंको बोध प्राप्त हुआ। महात्माके वचनोंसे राजकुटुम्बको बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। ज्ञान पिपासु और धर्म जिज्ञासु मनुष्योंके आनन्दका पार न रहा। सारी सभामें शान्तिका साम्राज्य छागया। समय पाकर राजासूरपाल हाथ जोड़कर बोला—ज्ञान दिवाकर भगवन्! मेरे मनमें एक आश्चर्य जनक शंका है, कृपाकर आप उत्तर देकर कृतार्थ करें। प्रभो! समुद्रमें पड़ी मलयासुन्दरी को उस मगर मच्छने कुछ भी इजा न पहुँचाकर इसे सुख पूर्वक समुद्र तट पर क्योंकर ला उतारी? उसमें ऐसा कौनसा ज्ञान था जिससे वह इसे समुद्रकिनारे पर उतार कर बारंबार प्रेमभरी नजरसे इसकी ओर देखता हुआ वापिस चला गया!

केवलीमहात्मा—राजन्! मलयासुन्दरीकी धायमाता वेगवती अन्तसमय आर्त्त ध्यानसे मरकर इसी समुद्रमें मगर-मच्छके जन्ममें पैदा हुई है। जिस समय मलयासुन्दरी भारंडपक्षीके पंजोंसे निकलकर समुद्रमें पड़ी उस समय दैववशात् वह मगरमच्छ उसी जगह पानी पर तैरता था। पुण्यके योगसे मलया उसकी पीठपर आपड़ी। मलया-सुन्दरी उस वक्त अपना अन्तिम समय समझकर परमेष्ठी

मंत्रका उच्चारणकर रही थी। इसके शब्द उसके कानमें पड़तेही उसने इसकी ओर देखा। मलयाको देख ताजे संस्कार होनेसे उसे अपने पूर्वभवका जाति स्मरण ज्ञान होगया। उस ज्ञानके कारण उसने मलयासुन्दरीको पह-चान लिया। इससे वह विचारने लगी कि—अहो! राज महलोंमें रहनेवाली इस मेरी पुत्रीपर अवश्य कोई भयंकर संकट पड़ा है जिससे यह ऐसे अगाध समुद्रमें आ पड़ी है। मैं ऐसी तिर्यंच की अधम स्थितिमें इसे किस प्रकार सहायता करूँ? जलचर पशुकी गतिमें पैदा होनेके कारण मैं इस निराधार लड़कीको अन्य किसीभी तरहकी सहाय नहीं करसकती तथापि इसे अपनी पीठ पर बैठी हुईको किसी मनुष्यकी बस्तीवाले स्थल प्रदेश तक तो पहुँचा सकती हूँ। उसके बाद यह किसीभी प्रकारसे अपने सगे सम्बन्धियोंसे जा मिलेगी।

पूर्वोक्त विचारकर उस मगरमच्छने अगाध समुद्रसे सुखपूर्वक मलयासुन्दरीको समुद्र तटपर ला छोड़ा। पुत्री-पनके स्नेहसे गर्दन पीछेकर बारंबारउसे देखता हुआ वह वापिस समुद्रमें चला गया।

केवली—राजन्! जातिस्मरण ज्ञान होनेके बाद वह वेगवतीका जीव निरन्तर निर्दोष आहार करता है और महा-मंत्र परमेष्ठीमंत्रका ध्यान स्मरण करता रहता है। वह

अपने मच्छ भवसम्बन्धी आयुष्यको पूर्णकर पूर्वकृत कर्मोंका पश्चात्ताप, महामंत्र नवकारका स्मरण और शुभ भावकी सहायसे देवगतिको प्राप्त होगा। चंद्रयशाकेवली महात्माके मुखसे मलयासुन्दरीकी धायमाता वेगवतीका भवान्तर सुनकर राजा आदि तमाम मनुष्य आपसमें बोलने लगे—"सचमुचही उसने इस पशुभवमें भी माताके सरीखाही प्रेम बतलाया है। ऐसे तिर्यंचके भवमें भी वह अपने कर्त्तव्यको नहीं भूली।

सूरपाल—"भगवन्! इस मेरे पुत्र महाबल और मलयासुन्दरीने पूर्व जन्ममें ऐसे क्या कर्म किये हैं कि जिनसे इन्हें ऐसे सुखसंपन्न कुलमें पैदा होकर भी घोर दुखोंका अनुभव करना पड़ा?

महात्मा—"राजन्! आप सावधान होकर सुनें मैं इनका पूर्वजन्म वृत्तान्त सुनाता हूँ। पृथवीस्थान-पुरमें पहले एक प्रियमित्र नामक जमीनदार रहता था। वह बड़ा समृद्धिवान था। परन्तु उसके पुत्रादि सन्तति न थी। प्रियमित्रके भद्रा, रुद्रा और प्रियसुन्दरी नामकी तीन स्त्रियाँ थीं। रुद्रा और भद्रा दोनों सगी बहन थीं। अतः उन दोनोंमें परस्पर अच्छा प्रेमभाव रहता था। किन्तु प्रियमित्रका उन दोनों पर प्रेम न था। उसका प्रियसुन्दरी परही पूर्ण प्रेम था। बस इसी कारण प्रियमित्र और

प्रियसुन्दरीके साथ रुद्रा एवं भद्राका क्लेश रहता था। यह क्लेश उसके घरमें निरन्तर होता था। प्रियमित्रका एक मदनप्रिय नामक मित्र था। वह प्रिय सुन्दरीको प्रेमकी नजरसे देखता था। सदैव आनेजानेके विशेष परिचयसे वह प्रियसुन्दरीपर आसक्त होगया। हमेशा वह प्रियसुन्दरीके साथ बड़े प्रेमसे वार्तालाप करता। एक दिन एकान्तमें रही हुई प्रियसुन्दरीके रूपमें मुग्ध होकर मदन-प्रियने उसे अपनी विषय वासना पूरी करनेका अभिप्राय जनाया। सुन्दरीका हृदय सरल और पवित्र था। वह पतिपर पूर्णप्रेम और भक्ति रखती थी, त्योंही उसके पतिका भी उसपर अनन्य प्रेम था। सुन्दरीने मदनप्रियके अभिप्रायको तिरस्कारका भाव बतलाकर ठुकरा दिया और फिरसे मेरे समक्ष आप ऐसा अभिप्राय प्रगट न करें। यह भी उसे साम्यभावसे समझा दिया परन्तु मदनप्रिय मदनके अधीन होनेसे अपने अभिप्रायसे पीछे न हटा। वह जब कभी समय पाता तब सुन्दरीसे वही बात छेड़ता। सुन्दरी उसे समझानेका प्रयत्न करती, परन्तु मदनकी आतुरतामें और भी वृद्धि होती थी।

एक दिन प्रियसुन्दरीके सिवा घरमें अन्य कोई न था। मदन आकर सुंदरीसे फिर वही प्रार्थना करने लगा। सुंदरी उसे साम दामादि नीतिके वचनोंसे समझा रही थी।

दैव वशात् उसी समय बाहरसे वहाँपर अकस्मात् प्रिय-मित्र आपहुँचा। उसने दोनोका बोल सुनकर एकान्तमें छिप कर उसकी बातें सुनलीं। क्रोधातुर होकर प्रियमित्रने यह सर्व वृत्तान्त मदनप्रियके कुटुम्बियोंसे कहा। कुलीन होनेके कारण उन लोगोंको बड़ा शर्मिन्दा होना पड़ा। उन्होंने मदनको बुलाकर उसका बड़ा तिरस्कार किया और कह दिया कि यदि तू कुलीन है और कुछ शरम रखता है तो हमें मुँह न दिखाना।

महात्मा चंद्रयशा केवलीके मुखारविन्दसे पूर्वोक्त बातें सुनकर सभामें बैठे कईएक वृद्ध मनुष्य बोल उठे "गुरुदेव! आप बिलकुल सत्य फरमाते हैं। हम स्वयं पृथवीस्थानपुरके हीं रहनेवाले हैं। हम खुद इस बात को जानते हैं। यह घटना हमारे स्मरणमें है। मदनप्रिय आजतक अपने घर नहीं आया और प्रियमित्रका घर अभी तक उसके नामसे पहचाना जाता है। उसघरमें आजभी उसके निकट सम्बन्धी रहते हैं। अहो! ज्ञानकी कैसी महिमा है! ज्ञानी पुरुष ज्ञानबलसे पूर्वमें बीती हुई सर्व घटनाको जान सकता है।

राजासूरपाल—शहरको छोड़े बाद मदन प्रियकी क्या दशा हुई भगवन्!

महात्माचंद्रयशा—मदनप्रिय घरसे निकल कर अपने

कृत्यके लिए पश्चात्ताप करता हुआ। देशान्तरको चल दिया। चलते चलते उसे दो दिन निराहार ही बीत गये, तीसरे दिन जब वह एक अटवीमें जा रहा था तब वहाँ पर उसे बहुतसी गायें चरती दिखाई दीं। क्षुधातुर मदन ने चरवाहेसे दूधकी प्रार्थना की। तीन दिनसे भूखे मदन को देखकर चरवाहेको दया आगई। उसके गोकुलमें उस समय एक बिना दूही भैंस थी, अतः उसने उस भैंसको दूहकर मदनको बहुतसा दूध दे दिया। मदन बोला—यह नजदीकमें जो तालाब देख पड़ता है वहाँ जाकर मुँह हाथधोकर वहाँही मैं दूध पीऊँगा। चरवाहेने खुशीसे वहाँ पर दूधका घड़ा लेजानेकी सम्मति दी। मदन दूधके घड़े को लेकर तालावके किनारे आया। शुभ भावनासे वह सोचने लगा मुझे आज अन्नजल ग्रहण किये दो दिन हो गये, यदि इस समय कोई अतिथि महात्मा तपस्वी आदि उत्तम पात्र मिल जाय तो उसे इस दूधमेंसे हिस्सा देकर फिर पारणा करूँ तो मेरा जन्म सफल होजाय। मैंने अपने जीवनमें कुछ भी सुकृत नहीं किया। इसीसे मेरी यह दुर्दशा हुई है। इस समय मेरे पास खाने पीनेतक के लिए भी कुछ साधन नहीं। ऐसी विषम स्थितिमें भी अगर कोई महात्मा दर्शन दे तो मैं इस द्रव्यमेंसे उसे हिस्सा दे कुछ सुकृत उपार्जन करूँ। . . . .

जिस समय मदन पूर्वोक्त प्रकारके विचार कर रहा था ठीक उसी समय उसके सद्भाग्यसे वहाँ पर एक मासोपवासी तपस्वी आपहुँचा। वह तपस्वी मासोपवासके पारनेके लिये नजीकके गाँवकी तरफ जारहा था। तपस्वी को देखकर मदनके विशुद्ध परिणाममें और भी वृद्धि हुई। वह हर्षित होकर विचारने लगा—अहो! मेरा सद्भाग्योदय है जिससे मनोरथ करतेही इस महापुरुषके दर्शन होगये। मैं इन्हें दूधमें कुछ हिस्सा दूँ, यह निश्चय कर उसने मुनिके रास्तेकी तरफ जाकर भक्तिपूर्वक हाथ जोड़ कर कहा—'हे महात्मन्! कृपालु मुनिराज! यह निर्दोष दूध ग्रहण करके मेरा कल्याण करो। मदनका शुभ परिणाम देखकर द्रव्य, क्षेत्र, काल भावमें उस द्रव्यको विशुद्ध समझकर तपस्वीने इच्छानुसार उसमेंसे कुछ दूध ग्रहण किया। मदननेभी शुभ परिणामसे उस महातपस्वीको दूध का दान देकर विशेष पुण्य उपार्जन किया।

सचमुचही ऐसी गरीब स्थितिमें और फिर दो दिनकी सहन की हुई भूख प्यासमें भी खाद्य या पेय पदार्थ प्राप्त करके अतिथि माहत्माको दान देनेकी जो भावना पैदा होती है यही भावी शुभ दिनोंकी सूचनाका लक्षण है। ऐसी परिस्थितिमें योग्य पात्रको दिया हुआ थोड़ासा भी दान महान् फलदायक होता है। भरेको कौन नहीं भरता

सुखी और धनाढ्योंका कौन नहीं सत्कार करता ? परन्तु जो मुट्ठी-भर अन्नके लिए घर घर फटकते हैं उन्हें दान देनेमें कितना महान् लाभ होता है इस बातको समझनेवाले बहुत कम मनुष्य हैं।

मुनिराज अन्यत्र विहार कर गये। मदन भी तपस्वी मुनिको नमस्कार कर वापिस उस तालावकी पालपर आ गया और मुनिदानसे अपने आपको कृतार्थ मानते हुए उसने शेष बचा हुआ दूध पी लिया।

जंगलमें मनुष्योंके विशेष उपयोगमें न आनेके कारण इस जंगली तालावके किनारे इंटो या पत्थरसे बाँधे हुए नहीं थे। एवं मदन भी अनजान होनेसे उस तालावकी गहराई या उसके अन्दर उतरनेका सरल मार्ग न जानता था। वह उसके किनारे पर बैठकरनीचे झुककर तालावमेंसे पानी पीने लगा। इतनेमें ही उसका पैर फिसल जानेसे वह तुरन्तही तालावमें जा गिरा, तालावके किनारोंके पास ही अगाध जल था। मदन तैरना नहीं जानता था' अतः वह तालावसे बाहर न निकल सका। उसे निकालनेवाला भी इस जंगलमें नजदीकमें कोई नहीं था' इसलिये विचारे मदनको तालावमें ही अपने प्राण त्यागने पड़े।

शुभभावना पूर्वक मुनिदानके प्रभावसे मदन मृत्यु पाकर इसी सागर तिलक शहरके राजा विजयके घर पुत्र

रूपमें पैदा हुआ। उसका कंदर्प नाम रक्खा गया। विजय राजाकी मृत्युके बाद कंदर्पही इस शहरका राजा बना।

इधर प्रियमित्र भी सुन्दरीके साथ विलास करता हुआ आनन्दमें अपने दिन बिता रहा था। परन्तु इस विषयानन्दमें उसने अपनी दूसरी रुद्रा और भद्रा दोनों पत्नियोंके साथ अनेक प्रकारकी दुश्मनी पैदा कर ली थी। एकदिन प्रियमित्र सुन्दरीको साथ लेकर धनंजय यक्षके दर्शन करने जा रहा था। रास्ता चलते हुए वे एक बड़ वृक्षके विस्तारसे अलंकृत प्रदेशके पास आये, वहाँपर उन दोनोंने अपने सन्मुख आते हुए एक मुनिको देखा। मुनि के दर्शनसे प्रियसुन्दरीके मनमें अपशकुनकी भावना पैदा हुई। वह सोचने लगी कि यात्राके लिये जाते हुए हमें सबसे पहले यह नंगे सिरवाला ही मिला है इस अपशकुन से हमारी यात्रा सफल न होगी, बल्कि औरभी कुछ उपद्रव होगा। इत्यादि बोलती हुई सुन्दरीने अपनी गाड़ी और परिवारको आगे न बढ़ने देकर वहाँही ठहरा लिया।

संसारकी विचित्रताका पार नहीं है। जो महापुरुष विषय कषायादि महान् अपमंगलोंसे दूर हैं, जिनके हृदय में से सांसारिक मलीन वासनायें निकल गई हैं' जो सदैव ज्ञान ध्यान और आत्मिक विचारमें ही लीन रहते हैं' जो विषय लंपट संसारके मनुष्योंको हितोपदेश देकर दुष्कर्म-

जन्य पापोंसे रक्षण करते हैं जो हमेशह दूसरोंका कल्याण करनेकी चिन्ता किया करते हैं। जिनके दर्शन मात्रसे मनुष्योंके संकट दूर हो जाते हैं, ऐसे मंगलमय महात्मा महापुरुषोंको देखकर अपशकुन या संकट आनेका विचार करना यह कितनी भयंकर अज्ञानता है? शुभकार्यके लिये घरसे निकले मनुष्यको यदि सद्भाग्यसे सन्मुख किसी महात्मा पुरुषका दर्शन हो जाय तो इससे बढ़कर और क्या शुभ शकुन हो सकता है? परन्तु इतनी बात याद रखनी चाहिये कि शकुनको देखकर जैसी मनुष्यकी भावना होती है वैसाही उसे फल मिलता है।

अपशकुनकी बुद्धिसे मार्ग चलते बन्द होजाना ही सुंदरीके लिए बस न हुआ। वह अनेक प्रकारसे उस महात्माको उपसर्ग करने लगी। क्योंकि क्रोधाधीन स्त्रीके लिए संसारमें कोई भी कार्य अकर्तव्य नहीं होता।

मुनिने अपने ऊपर उपसर्ग आया देख विचार किया कि मेरी परीक्षाका समय आ गया है। जिस प्रकार ताप ताड़न द्वारा सच्चे सुवर्णकी परीक्षा होती है वैसे ही संकटों द्वारा उत्तम पुरुषोंकी कसौटी होती है। इन अज्ञानियोंके किये हुए उपद्रवसे अज्ञानतामें पड़कर मुझे अपने स्वभाव या स्वरूपसे विचलित न होना चाहिये। ऐसे ही समयपर अज्ञानी और ज्ञानवानका भेद मालूम पड़ता

है। यदि संकटके समय ज्ञानवान मनुष्यभी अज्ञान प्राणियोंके समान अपने स्वरूपको भूल जाय तो फिर उन दोनोंमें कुछ भी भेद नहीं रहता। उपद्रवके समय समभाव रखनेसे प्राचीन कर्मको भोग लेनेके उपरान्त नवीन कर्मबन्ध भी नहीं होता। इसलिए मुझे अब अपने स्वभावमें रहना चाहिये। यह विचार कर मानसिक वृत्ति को निर्मल रखकर आत्मोपयोगमें दत्तचित्त हो वह मुनि-राज ध्यानस्थ--कायोत्सर्गमें खड़ा रहा। मुनिको सन्मुख खड़ा देख सुन्दरीका और भी अधिक क्रोध भड़का। वह उसे अहंकारी, पाखण्डी कहकर निष्ठुर वचनोंसे उसकी कदर्थना करने लगी। वह अपने सुंदर नामक नौकरसे बोली--सुन्दर! यह जो पासमें इंटोंका पँजावा पक रहा है जा वहाँसे आग ले आ मैं इस पाखण्डी वेषधारीको दाग दूंगी, जिससे इसका किया हुआ अपशकुन दूर हो जायगा और इसको अहंकार भी नष्ट होजायगा।

सुंदर बोला स्वामिनी! मेरे पैरोंमें जूते नहीं हैं वहाँ जानेमें रास्तेमें कांटे बहुत हैं व्यर्थ ही कांटोंमें कौन जाय! और साधुको दाग देनेसे तुम्हें क्या फायदा होगा? इस निकम्मे विचरा छोड़ो गाड़ी हाँकने दो अभी दूर जाना है

अपनी स्त्रीके हुक्मका अनादर हुआ देख पत्नीके आदेशको सम्मति देनेवाला प्रियमित्र दूसरे नौकर की

और देखकर क्रोधके आवेशमें बोला—अरे ! इस सुन्दरके दोनों पैर इस वड़वृक्षकी शाखासे बाँध दो जिससे इसके पैरमें जमीन पर पड़े हुए काँटे न लगने पावें । अपने विचारोंको पतिकी सहानुभूति मिलजानेपर प्रियसुंदरीको और भी जोश आगया । अब वह गाड़ीसे नीचे उतरकर बोलने लगी "अरे पाखण्डी ! तेरे मुंडितरूप दर्शनसे हमारी पतिपत्नीरूप इस जोड़ीमें कदापि वियोग न हो । तेरा अपशकुन तुझे ही हानिकारक हो । तेरे बन्धुवर्गसे तेरा सदैव वियोग हो । तू सचमुच राक्षस जैसा है, इसी कारण तुझे देखकर हमें डर लगता है । इस प्रकार अनेक विध कटु वचनोंसे मुनिका तिरस्कार करती हुई निष्ठुर हृदयवाली सुंदरीने मानों अपने मुख पर प्रहार करती हो इस तरह मुनिपर तीन दफा पत्थरका प्रहार किया । इतना करनेपर भी उसे दुष्कर्मसे संतोष न हुआ । उसने मुनिके पास आकर उसके हाथमेंसे रजोहरण (जैनमुनिका चिन्ह) छीन लिया और उसे अपनी गाड़ीमें रख लिया । ऐसा करनेपर उसने कुछ संतोष माना, अतः नौकरोंसे बोली— "चलो अब हमारा अपशकुन दूर हो गया । अब हमें कुछ भी अनिष्ट न होगा । चलो अब निर्भय होकर आगे चलो' धनंजय यक्षकी पूजा करेंगे" । सुंदरीकी आज्ञा पाकर सब आगे चल पड़े और कुछ देरके बाद धनंजय

यक्षके मंदिर समीप आ पहुँचे।

यक्षकी पूजाकर यात्रा सफल मनाकर सकल परिवार सहित प्रियमित्र और प्रियसुन्दरी एक स्वच्छस्थान में भोजन करनेके लिये बैठे। इस समय प्रियसुंदरीको प्रसन्न देख जैन धर्ममें विशेष प्रेम रखनेवाली एक दासीने अपने मालिक और मालकिनसे नम्रतासे कहा—'आप लोगोंने उस क्षमाशील महाव्रत धारक और त्यागकी मूर्ति महा मुनिको कष्ट देकर' तिरस्कार और कदर्थना करके महान् पाप उपार्जन किया है। संसारसे विरक्त हुए महात्माकी हँसी और मजाक करनेवाला भी इस जन्म और अगले जन्ममें अनेक दुःखोंका अनुभव करता है। जिसमें आप लोगोंने तो उसका बहुतसा तिरस्कार कर, उसे पत्थरोंसे मार कर! अनेक तरह क्रोध पूर्ण वचनोंसे कदर्थनाकर उसका रजोहरण भी छीन लिया है। इससे आप लोगोंने बड़ा भयंकर दुःख भोगनेका कर्म उपार्जन कर लिया। आपको शान्त चित्तसे इसपर स्वयं विचार करना चाहिये। ऐसे महात्मा अनेक प्राणियोंका उद्धार करनेवाले होने के कारण संसारके प्राणियोंका आधार भूत होते हैं। संसार के विषयोंमें तपे हुए मनुष्य समाजके लिए ऐसे महापुरुषों का समागम मेघके समान शान्ति देनेवाला होता है। ऐसे ज्ञानीसाधु रात दिन अपने और पराये जीवोंके हित

चिन्तनमें ही लीन रहते हैं इसलिए वैराग्य और मंगल-मय मूर्ति महात्माको दुःख देना अपने सुखको नाश करनेके समान है।

दासीके उपदेशपूर्ण वचनोंको सुनकर उन दोनोंके हृदयमें इतना पश्चात्ताप हो उठा कि वे अपने किये हुए दुष्कर्मजन्य पापके भयसे थर थर काँपने लगे। दुर्गति के डरसे वे दीन मन होकर अत्यन्त पश्चात्ताप करते हुए अपने कृत्यकी निन्दा करने लगे। दुर्गतिसे बचानेवाला उपदेश देनेवाली उस दासीकी बुद्धिकी उन्होंने बहुतही प्रशंसा की। उसे अनेक धन्यवाद दिये और स्वयं जैनधर्म समझनेकी जिज्ञासा प्रकट की।

मुनिका रजोहरण वापिस देने और अपने दुष्कृत्यों की क्षमा याचना करनेके आशयसे वे शीघ्रही यक्षमन्दिर से वापिस लौटे। वह मुनिभी अभी तक ध्यान मुद्रामें उसी जगह खड़ा था। उसका रजोहरण छिन जानेपर उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जबतक मेरा रजोहरण मुझे वापिस न मिले तबतक मैं अन्यत्र न जाकर यहाँही खड़ा रहूँगा।

अब प्रियमित्र और प्रियसुन्दरी मुनिके पास आपहूँचे सुन्दरीने मुनिका रजोहरण वापिस दे दिया। अपने अज्ञान पूर्ण कृत्यके लिये पश्चात्ताप करते हुए उनकी

आँखें भर आईं। वे क्षमायाचना करते हुए मुनिके चरणोंमें लेट गये और दीनता पूर्वक प्रार्थना करने लगे कि हे कृपा समुद्र ! प्रभो ! अज्ञानतासे परतंत्र होकर हमने जगत् पूज्य महामुनिकी कदर्थना याने विराधना की है। इस मुनि विराधनाके पापसे कुँभारके चाकपर चढ़े हुए मट्टीके पिण्डके समान हमें संसार चक्रमें परिभ्रमण करना पड़ेगा। अनेक दुर्गतियोंमें घोरदुःख सहने परभी हमारा इस पाप कर्मसे छुटकारा न होगा। हे दया के सिन्धो ! क्षमासागर ! भगवन् ! प्रसन्न होकर हम अज्ञान पामर प्राणियोंको क्षमा करो। हे दीन बन्धो ! करुणा कर हम अविनीतात्माओंका यह अपराध माफ करो और इसपापसे सर्वथा मुक्त होनेका हमे कोई उपाय बतलाओ।

उनके करुणाजनक और पश्चात्ताप पूर्ण वचन सुन कर मुनिने अपना कायोत्सर्ग पूर्णकर कहा—"हे महानुभावो ! मेरे हृदयमें क्रोध नहीं है। अज्ञानतासे कर्माधीन' इसी भवको माननेवाले' परमार्थसे परान्मुख और अपनेही किये कर्मसे अनेक प्रकारकी विटंबनाको प्राप्त हुए संसारके पामर प्राणियों पर तत्वको जाननेवाले मुनि कदापि क्रोध नहीं करते। यदि वैसे लब्धिगुण धारी मुनिमहात्मा किसी कारण क्रोध करें तो वे जगत् को भस्मी भूत कर सकते हैं। मेरा हृदय संसारके सम-

स्त प्राणियोंके लिये करुणा रस पूर्ण है' इसी कारण मैं किसीकी प्रेरणा बिनाही सर्वजीवोंपर क्षमाभाव रखता हूँ। तथापि महानुभावो ! मुझे तुम्हें इतना जरूर कहना पड़ता है कि इस प्रकारकी मूढता या अज्ञानताको त्याग कर विवेकी बनना चाहिये और अज्ञानताको दूर करने वाले और आत्मस्वरूपका ज्ञान कराने वाले तुम्हें जैन धर्मको स्वीकार करना चाहिये। आत्माकी नित्यता और कर्मोंकी विचित्रता समझनी चाहिए। समस्त प्राणी सुख की इच्छा रखते हैं' तुम्हें खुदको सुख प्रिय लगता है और दुःख भयानक जान पड़ता है, तब फिर दूसरे प्राणियोंको वह क्यों देना चाहिए ? सुख प्राप्त करनेवाले मनुष्यको चाहिए कि वह दूसरोंको भी सुखही दे। हर एक मनुष्यको अपने किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका फल सुख या दुःख रूपमें अवश्य भोगना पड़ता है।

करुणासे प्रेरित हो अपकारीपर भी उपकार करने वाले त्याग मूर्ति मुनिराजने उन्हें अनेक प्रकारसे हित शिक्षा दी। संक्षेपमें द्वादश व्रतरूप गृहस्थ धर्म समझाया। उन दोनोंने मुनिका दिया हुआ हितोपदेश प्रेमपूर्वक सुना और पापकर्मोंसे मुक्त होनेके लिए एवं भविष्यमें सुख प्राप्तिकी इच्छासे उन्होंने सम्यक्त्व पूर्वक गृहस्थ धर्म अंगीकार किया। अब जैनधर्मको स्वीकार कर

वैराग्य रंगसे तरंगित हो मुनिको आहारादिके निमित्त प्रार्थना कर वे अपने घर आए। मुनिभी कुछ देर बाद समय होनेपर भिक्षाके लिए नगरमें गया। अपने योग्य निर्दोष भिक्षाकी गवेषणा करते हुए मुनिराज अकस्मात् स्वाभाविक ही प्रियमित्रके घर आ पहुँचे। मुनिका दर्शन करतेही अपने जन्मको सफल मनाते हुए दम्पतीने बड़े हर्ष पूर्वक मुनिको विशुद्ध आहार पानीका लाभ दिया आहार लेकर मुनि अन्यत्र विहार कर गया।

परस्पर प्रेम धारण करते हुए प्रियसुन्दरी और प्रिय मित्र सम्यक् श्रद्धान पूर्वक मनुष्य जन्मके सारभूत गृहस्थ धर्मकी आराधना करने लगे। आपसमें स्नेह रखती हुई रुद्रा और भद्राभी एक जुदे घरमें रहकर अपने माने हुए धर्मानुसार यथाशक्ति दानादिसे पुण्य उपार्जन करने लगीं। परस्पर प्रेम होने परभी एक दिन ऐसा कारण बन गया जिससे उन दोनोंमें भी खूब क्लेश हुआ। परन्तु कुछ देर बाद शान्त होने पर उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ, इससे वे दोनों एक जगह बैठकर विचार करने लगीं कि—धिक्कार है हमारे जीवनको जिसमें जरा भी सुख नहीं। हमारा जन्म बिलकुल निरर्थक है। इस घरमें सदैव क्लेश रहता है। पतिकी ओरसे तो हमें सर्वथा सुख नहीं; क्योंकि उसेतो सुन्दरीनेही अपने स्वाधीन

कर रक्खा है। वे दोनों पति पत्नी हमारे सामने देखते तक नहीं हैं, प्रेमसे बोलनेकी तो बातही क्या? हम दोनोंमें प्रेम है सही पर कभी न कभी हममें भी क्लेश हो ही जाता है। इस तरह क्लेशमय जीवन बितानेकी अपेक्षा मरजाना बेहतर है। हमसे जितना बन सका उतना दान पुण्य कर लिया है, अब देहका त्याग करना ठीक है। इस प्रकार प्राण त्यागका निश्चय कर एक मन वाली होकर किसीको मालूम न हो इस तरह दोनोंने किसी एक कुवेमें पड़कर अपघात कर लिया।

रुद्रा मरकर जयपुर नगरमें चंद्रपाल राजाके घर पुत्री रूपमें पैदा हुई। उसका कनकवती नाम रक्खा गया जिसका विवाह सन्मुख बैठे हुए इस चंद्रावती नरेश वीरधवलके साथ हुआ है। प्रियमित्रकी भद्रा नामकी दूसरी स्त्री मरकर परिणामकी विचित्रतासे व्यन्तर जाति की देवयोनिमें व्यन्तरी पैदा हुई। एक दिन वह व्यन्तरी आकाश मार्गसे पृथ्वीस्थानपुरके ऊपर होकर जारही थी उस समय उसने प्रियमित्र और प्रियसुन्दरीको देखा' देखतेही अपने पूर्वभवकी स्मृति आनेसे उसके हृदयमें उन दोनोंके प्रति वैरभाव जाग उठा। अतः जहाँपर वे घरमें शान्तिसे सो रहे थे' वहाँ जाकर व्यन्तरीने अपनी दैवी शक्तिसे उनपर दीवारको गिरा दिया और फिर वह वहाँ

से आगे चली गई।

वे स्त्री पुरुष शुभ भावमें मृत्यु प्राप्त कर प्रियमित्र का जीव राजन्! आपके घरमें महाबल पुत्र पैदा हुआ है और प्रिय सुन्दरीका जीव वहाँसे मरकर वीरधवल राजाकी पुत्री मलयासुन्दरी नामसे पैदा हुई है। पूर्वभवके प्रबल प्रेमके कारण इनका इस भवमेंभी पति पत्नीका सम्बन्ध कायम रहा।

राजन्! महाबल और मलयासुन्दरीने पूर्वभवमें रुद्रा और भद्राके साथ जो तीव्र वैर पैदा किया था उस वैरको याद करती हुई व्यन्तरीने फिर इस जन्ममेंभी महाबलको मारनेका प्रयत्न किया था, किन्तु इसके पुण्यकी प्रबलतासे जब वह इसे मारनेमें सफल मनोरथ न हो सकी तब रात्रिके समय अपने महलमें सोते हुएको उपद्रव करने लगी। जो चुराये गये वस्त्र और कुण्डलादि चंद्रावती नगरीके समीप वड़वृक्षकी खोखरमेंसे राजकुमारको मिले थे वे सब उस व्यन्तरीके ही हरन किये हुए थे। कुमारी मलयासुन्दरीने महाबलके प्रथम समागमके समय अपने हृदयके समान प्रिय जो उसे लक्ष्मीपुंज हार समर्पण किया था उस हारको भी कुमारके सोजाने पर उसके पाससे व्यन्तरीने ही हरन कर लिया था और पूर्वभव सम्बन्धि गाढ स्नेह होनेके कारण उसने वह हार कनक-

वतीकी गोदमें जा गेरा था ।

पूर्वोक्त अन्तिम वृत्तान्त सुनतेही आश्चर्यसे चकित हो राजा वीरधवल नम्रता पूर्वक बोल उठा—भगवन् ! क्या महाबल कुमार स्वयंवर होनेसे पहलेभी कभी मलयासुन्दरीसे मिला था ? यह बात तो असंभवितसी मालूम होती है । स्वयंवरके सिवा वह कभी हमारे वहाँ आया ही नहीं था । राजा वीरधवलके ये वचन सुनकर महाबल और मलयासुन्दरी मुखपर वस्त्र डाल कर गुप्त रीत्या हँसने लगे । क्योंकि उनके प्रथम मिलनका समाचार उन दोनोंके सिवा अन्य किसीको मालूम ही न था । राजाकी शंका दूर करनेके लिए ज्ञानी महात्माने तमाम वृत्तान्त विस्तार पूर्वक कह सुनाया कि राजकार्यके लिये आये हुए सूरपाल राजाके सेनापतिमंडलके साथ महाबल कुमार गुप्त वेषमें चंद्रावती आया था । संध्याके समय वह प्रथम कनकवतीके महलमें आया, उसीसे रास्ता पूछ ऊपर मलयासुन्दरीसे जामिला था । उस समय प्रथम मिलनमें प्रेम बन्धनको दृढ करनेके लिए मलयासुन्दरीने लक्ष्मीपुंज हार महाबलके गलेमें डाल दिया था

पूर्व जन्मके वैरके कारण इस बातको दूसरे रूपमें बदला कर कनकवतीने कपट भावसे आपको उलटा सीधा समझाकर मलयासुन्दरी पर आपका विशेष कोप

कराया था। इत्यादि कनकवतीका भी ज्ञानी गुरुने संक्षेपसे सर्व वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुनकर लोगोंके हृदयमें उसके प्रति बड़ी घृणा पैदा हुई। ज्ञानी गुरुदेवके वचन सुनकर महाबल और मलयासुन्दरी हाथ जोड़कर बोल उठे-ज्ञान दिवाकर गुरुमहाराज जो फरमाते हैं वह सर्वथा सत्य है। सर्वज्ञके ज्ञानमें कोई बात छिपी नहीं रहती। जब व्यन्तरी देवीने कुमारको हरन किया याने जब वह उस व्यन्तरीके हाथ पर बैठकर आकाश मार्गसे जा रहा था उस समय महाबलने उस व्यन्तरी पर जो मुष्टी प्रहार किया था उससे पीड़ित हो कर वह व्यन्तरी फिर आज तक कुमारके पास नहीं आई उसका वैरभाव वहाँ पर ही पूर्ण हो गया।

पूर्व भवमें जिस सुन्दर नामा नौकरको मुनिको दाग देनेके लिए जलते हुए पँजावेमें से सुन्दरीने आग-लानेकी आज्ञा की थी वह सुन्दर नौकर मरकर पृथ्वी स्थानपुरके बाहर बड़वृक्ष पर व्यन्तर होकर रहा था। जब महाबल योगीकी प्रेरणासे लोभसार चोरके मृतक को लेने उस बड़ वृक्षके पास गया तब उस व्यन्तर देवने ज्ञानबलसे महाबल को पहचान लिया और उसने जो प्रिय मित्रके भवमें अपनी पत्नीका वचन बढानेके लिए उसे यह कहा था कि इसके पैर बड़की शाखासे बाँध दो

जिससे इसके पैरोंमें काँटे न लगें। इत्यादि बातें स्मरण होनेसे उसने विचारा कि इसने स्वामीपन के मदमें आकर उस वक्त मेरा तिरस्कार किया था। इस समय मैं भी इसे इसके वचनानुसार कुछ चमत्कार बतलाऊं तो ठीक हो। यह सोचकर उस व्यन्तरने मुर्देके शरीरमें प्रवेश किया और मुर्देके मुखसे बोला कि-'अरे मूर्ख! मुझे बड़की शाखासे बँधा देखकर क्यों हँसता है, तू खुद भी आनेवाली रातमें इसी बड़की शाखा पर बाँधा जायगा और ऊपर पैर अधो मुख होकर लटकाया जायगा। ठीक उस व्यन्तर देवके कथनानुसार ही दूसरे दिन महाबल उस बड़ वृक्षकी शाखासे लटकाया गया था। पूर्वजन्ममें आक्रोशके वचनोंद्वारा जो नौकरको दुख दिया था उसी अशुभ कर्मके परिणाममें बड़की शाखासे बँधना पड़ा।

एक दिन रुद्राने लोभके वश होकर अपने पतिकी अँगूठी चुराली थी। उसे यह काम करते हुए सुन्दरने देख लिया था। घरमें सब जगह ढूँढने पर भी जब वह अँगूठी न मिली तब प्रियमित्र बहुतही व्याकुल होने लगा। अपने स्वामीको व्याकुल देख और अपने पर चोरी का वहम न आवे इस कारण सुन्दरने रुद्राके समक्षही प्रियमित्रसे कहा स्वामिन्! आप किस लिए व्याकुल होते हैं! आपकी अँगूठी रुद्राके पास है, आप इनसे

माँगलेवें। ये वाक्य सुनकर रुद्रा रोषमें आकर बोल उठी 'अरे! दुष्ट कपटी नकटे सुन्दर! तू झूँठ क्यों बोलता है? मैंने कब अँगूठी ली है? रुद्राके तिरस्कार पूर्ण शब्द सुनकर सुन्दरको बड़ा दुःख हुआ। परन्तु पराधीन होनेके कारण उसने मौन रहकर रुद्राके वचन सहनकर लिये। असत्य उत्तर देनेवाली अपनी स्वामिनीको वह और क्या कह सकता था? यह आप अपने कियेका फल भोगेगी यह समझ कर वह चुप रह गया। मित्र-मित्रने शाम दाम आदि नीतिसे रुद्राके पाससे अपनी अँगूठी निकाल ली और फिर उसकी खूब कदर्थना की। नौकर को असत्य और कटु वचन बोलकर रुद्राने रौद्र-भयानक कर्म उपार्जन कर लिया।

पूर्व भवकी अपनी मालकिन रुद्राको कनकवतीके रूपमें देख अपने ऊपर तिरस्कारपूर्ण बोले हुए दुर्वचन याद कर व्यन्तर जातिमें पैदा हुए सुन्दरके जीवने चोरके मृतक शरीरमें प्रवेश कर कनकवती की नाक काट ली।

मदनका पूर्वजन्ममें सुन्दरीपर जो अनुराग था वह प्रबल होनेके कारण इस भवमें भी मलयासुन्दरीको देख मदनके जीव कन्दर्पके हृदयमें उसपर आसक्ति हुई थी। मनुष्यके हृदयमें जो पहले भवोंके संस्कारके कारण

वासनायें पैदा होती हैं वे विना भोगके या प्रबल ज्ञानकी सहायताके सिवा कभी शान्त नहीं होतीं। पहले भवमें मलयासुन्दरी और महाबलने बारह व्रत अंगीकार पूर्वक गृहस्थधर्मकी आराधना की थी और मुनिको दान दिया था। उस शुभ कर्मके प्रभाव से इस जन्ममें इन्होंने उत्तम कुलमें पैदा होकर सुखकी सामग्री आदि प्राप्त की है

मलयासुन्दरीने प्रिय सुन्दरीके भवमें मुनिको आ-क्रोश पूर्वक तिरस्कारके वचन बोलते हुए कहा था कि "अरे! पाखण्डी मुनि! तेरे सगे सम्बन्धियोंसे तेरा सदैव वियोग हो, तू राक्षसके समान भयानक मालूम होता है" एवं क्रोधित होकर मुनिपर तीन दफा पत्थरों का प्रहार किया था। महाबलके जीव प्रियमित्रने भी मौन रहकर अपनी पत्नीके कृत्यकी अनुमोदना की थी, उस अकृत्यके द्वारा इन दोनोंने घोर पातक उपार्जन किया था। परन्तु बादमें अपनी भूल मालूम होनेसे इन्होंने खूब पश्चात्ताप किया और मुनिके पास जाकर अपने अपराधकी क्षमा याचना करते हुए बहुतसा पाप कर्म क्षय कर दिया था। किन्तु क्षय करने पर भी जो दुष्कर्म बाकी रह गया था उसके प्रभावसे इस भवमें इन्हें अपने सगे सम्बन्धियोंसे तीन दफा संकट पूर्ण वियोग सहना पड़ा है और मलयासुन्दरीको कारुक-रँगरेज

तथा कंदपकी अधीनतामें अनेक प्रहार सहने पड़े हैं। मुनिको राक्षस कहनेके कर्म परिणाममें निर्दोष होते हुए भी मलयासुन्दरीको वैर सम्बन्धसे कनकवतीकी ओरसे राक्षसीका कलंक प्राप्त हुआ। इस प्रकार राजकुलमें पैदा होकर भी इन दोनोंने अपने पहले जन्ममें किये हुए पापकर्मों के कारण यहाँपर ऐसे घोर दुःख प्राप्त किये हैं। प्रिय सुन्दरीने कुपित होकर मुनिके हाथमें से उसका रजोहरण छीन लिया था। उस रजोहरणको छीनते समय उसके क्लिष्ट अध्यवसायके प्रमाणसे वैसेही विषम फल स्वरूपमें बलसार द्वारा छीना जानेपर मलया सुन्दरीकोभी अपने निर्वासित जीवन कालमें अपने पुत्रका वियोग दुःख सहना पड़ा। जिस मुनिको इन दोनों स्त्री पुरुषोंने उपसर्ग किया था और बादमें अपनी भूल मालूम होनेसे जिसके पास उन्होंने पश्चात्ताप पूर्वक गृहस्थ धर्म अंगीकार किया था वही मुनि इस समय केवल ज्ञानीकी अवस्थामें विचरता है और मैं स्वयंही वह मुनि हूँ। महाबल और मलयासुन्दरीका यह दूसरा जन्म है परन्तु मैं तो अभी तक उसी भवमें विचर रहा हूँ।

सूरपाल—भगवन्! महाबल कुमार और मलयासुन्दरीको कनकवती अब फिरतो उपसर्ग नहीं करेगी?

ज्ञानी महात्मा—राजन्! कनकवतीकी ओरसे मल-

यासुन्दरीको नहीं परन्तु महाबलको अवश्य एक दफा भय उपस्थित होगा । वह फिरती हुई यहाँही आयगी और इसी नगरके बाहर एक दफा महाबल कुमारको भयंकर उपद्रव करेगी और उसी पापकर्मके कारण वह संसार चक्रमें पड़कर नीचादि योनियोंमें पैदा हो अनेक प्रकार के घोर दुःख सहन करेगी ।

अपने पूर्वभवका वृत्तान्त सुनकर असह्य यातनाओं से बचनेके लिये योग्यतानुसार महाबल और मलयासुन्दरीने गृहस्थधर्म अंगीकार किया और इस जन्मके दुःखों का कारण भूत पूर्व जन्ममें विराधित मुनिपदकी आराधना करनेका विशेष अभिग्रह धारण किया । इन दोनोंके पूर्वभव सम्बन्धि वैराग्य गर्भित चरित्रको सुनकर अनेक मनुष्योंने वैराग्य प्राप्तकर संयम लेनेकी उत्सुकता बतलाई । कितनेएक भद्रिक परिणामी मनुष्योंने गृहस्थ धर्म स्वीकार किया और बहुतसे क्रूर मनुष्योंके हृदय पिघल कर कोमल बन गये । अपने पुत्र और पुत्रीका विचित्र और बोध जनक वृत्तान्त सुनकर संसार दुःखसे भयभीत हो सूरपाल और वीरधवल राजा चारित्र ग्रहण करनेको तैयार होगये । वे हाथ जोड़कर ज्ञानीगुरुसे बोले भगवन् ! अपने राज्यभारकी व्यवस्था करके हम आपके चरणोंमें संयम ग्रहण करेंगे । गुरुजीने कहा—"महानु-

भाओ ! ऐसे कार्यमें विशेष विलम्ब न करना चाहिये ।

गुरुमहाराजका वचन स्वीकार कर उन्हें भक्तिभाव से नमस्कार कर दोनों राजा शहरमें आये । महाबल वहाँ परही होनेके कारण सूरपाल राजाको राज्यकी व्यवस्था करनेके लिये पृथ्वीस्थानपुर जानेकी आवश्यकता न पड़ी । उसने वहाँ परही रहकर महाबलको पृथ्वीस्थान पुरका राज्यभार सुपूर्द कर दिया और संसारसे निश्चन्त हो सह कुटुम्ब दीक्षा लेनेको तैयार होगया । विचारक धर्मार्थी मनुष्य वस्तुके सत्य स्वरूपको समझे बाद उसे ग्रहण करने और असत्य समझने पर परित्याग करनेमें कदापि विलम्ब नहीं करते ।

संयम ग्रहण करनेकी सूरपाल राजाकी अतिउत्सुकता देखकर वीरधवल राजाने भी चंद्रावती न जाकर वहाँ पर ही अपने पुत्र मलयकेतुको बुला भेजा और उसके आजाने पर वीरधवल राजाने समस्त राज्य कार्यभार उसे सौंप दिया । बस अब शेष कुछ न करना था । दोनों राजाओंने वहाँपरही अपनी रानियों सहित ज्ञानी गुरुदेव महाराजके पास जाकर संयम ग्रहण कर लिया । गुरु महाराज भी कुछ दिन वहाँ रहकर उन दोनों राजर्षि शिष्योंको साथ ले अन्यत्र विहार कर गये । कितनेएक समय तक संयम पाल कर और दुष्कर तपाचरण कर

अन्तमें आराधना पूर्वकृकाल करके वे दोनों राजर्षिस्वर्ग सिधार गये । वहाँसे आयुपूर्णकर महाविदेहमें जन्म लेकर पुनः संयम द्वारा कर्मक्षय करके मोक्ष प्राप्त करेंगे ।

वैराग्य और संयम

महाबल राजाने सागर तिलककी राजधानी पर अपने कुमार शतबलको स्थापित कर दिया और वहाँपर अपने प्रधान सेनापतिको रखकर एवं शतबल कुमारको साथ ले वह अपनी मुख्य राजधानी पृथ्वीस्थानपुरमें आ रहा । वहाँ पर रहकर दुर्जय शत्रुओंपर जय प्राप्तकर निष्कंटक राज्य पालन करने लगा । ज्ञानीगुरुदेव महाराजके उपदेशसे उसके हृदयमें सदैव धर्म भावना जागृत रहती है' अतः व्यन्तर देवकी सहायसे वह विशेष प्रकार से धर्म और प्रजाकी उन्नति करने लगा । जहाँपर धार्मिक, साधनोंकी आवश्यकता मालूम होती वहाँपर राज्यकी ओरसे वे साधन तैयार कराये जाते थे । अनेक स्थानों

पर राज्यकी तरफसे दान शालायें खोली गई। विशेषतः वह अपने पूर्वजन्मको यादकर मुनि महात्माओंकी सेवा भक्ति करने लगा। गृहस्थधर्मको पालन करते हुए कुछ समय बाद मलयासुन्दरीने अपने कुलकी धुराको धारण करनेवाले एक सद्गुणी पुत्रको जन्म दिया। जन्मोत्सव पूर्वक राजा महाबलने उस दूसरे पुत्रका नाम सहस्त्रबल रक्खा।

संसारके प्रपंचमें और पाँचों इन्द्रियोंके विषय सुखमें दिन, महीने या अनेक वर्ष बीतने परभी मनुष्योंको कुछ मालूम नहीं होते। अनादि कालके लम्बे अभ्यासके कारण निरोगी आयुष्य और इष्ट विषयोंकी प्राप्ति मनुष्यको विशेष रुचिकर होती है। पूर्व जन्मान्तरोंके संस्कारोंसे स्वाभाविक ही मनुष्यका मन वासनाओंकी तरफ आकर्षित होता रहता है। परन्तु अनादि कालसे भूले हुए आत्म स्वरूपको प्राप्त करनेके लिए बिना किसी सत्पुरुषकी प्रेरणाके स्वतः प्रयत्न करनेवाले भाग्यशाली कितने नजर आते हैं? जिस तरह भूखे मनुष्यको स्वयंही अपना खाद्य पदार्थ प्राप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये। वैसेंही आत्मीय सुखकी इच्छावाले मनुष्यको खुद धर्मकी गवेषणा करनी चाहिये। परन्तु यदि पुण्योदयसे बिना प्रयत्न कियेही धर्मोपदेशकका समागम मिलजाय तो

उससे धर्मस्वरूप समझकर सच्चेसुखकी प्राप्तिके लिये उसे सेवन करनेमें जराभी विलम्ब न करना चाहिये।

मनुष्य पर जो संकट या विपत्ति आती है वह उसे सच्चा मनुष्य बनाने, सच्चा मानव जीवन जीने का पाठ सिखानेके लिए आती है। संकटमें ही मनुष्य सहनशीलता का शिक्षण प्राप्त करता है। दुःखमें ही मनुष्य कर्तव्याकर्तव्यका विचार करता है। सुखमें मनुष्यको कुछ भी शिक्षण नहीं मिलता इतना ही नहीं बल्कि प्रत्युत वह अपने आपको भी भूल जाता है। सांसारिक सुख एक प्रकारका नसा है' उसे कोई विरला ही झेल सकता है। इसे प्राप्तकर अपने स्वरूपका भान रखना यह साधारण बात नहीं है। बड़े २ विद्वान भी इस मृगतृष्णाके लालचमें पड़कर अपने कर्तव्यमार्गसे नीचे गिर जाते हैं' जब यह दशा है तो फिर सद्गुणी, सुशील, सुन्दर स्त्री' गुणवान् पुत्र और विशाल राज्यवैभव प्राप्तकर महाबल क्यों न अपने आपको भूल जाता? अपने ऐश आरामके साधन प्राप्त करते हुए भी याने सांसारिक सुखमें निमग्न होकर भी उसने सुचारु राज्य व्यवस्थाके कारण दूर देशों तक अपनी कीर्तिरूपी सुगन्धी फैला दी थी। जितना अच्छा हो सकता है उतना अच्छा राज्यकार्य करनेमें उसने कुछ भी बाकी न उठा रक्खा था।

महाबल राज्यवैभवसे सर्वथा धर्ममार्गसे विमुख न हुआ था, किन्तु उसे जो आत्मोद्धारका परम कर्तव्य पालन करना था उसे वह अवश्य भूल गया था। राज्य कार्य और व्यवहारिक मार्गमें प्रवेश किये उसका बहुतसा समय व्यतीत हो गया था। एक दिन अर्धरात्रिके समय सुखशय्यामें सोते हुए उसे एक त्यागमूर्ति दिखाई दी, जो उसे उद्देश्यकर कह रही थी—'इतनी घोर निद्रा! अभी तक काल्पनिक सुख स्वप्न भंग नहीं हुआ?' बस समय होगया' इस अमूल्य जीवनके कीमती क्षण व्यर्थ न गवाँओ, यह स्वप्नसा देखकर महाबलकी निद्रा भंग हो गई। उसने सावधान हो उठकर चारों ओर देखा पर उसे कोई भी नजर न आया। अब वह सुनेहुए सार-गर्भित वाक्योंपर विचार करने लगा। उस रात्रिके प्रशान्त वातावरणमें तात्विक विचार करते हुए उसके हृदयमें अपने परम कर्तव्य ज्ञानके सूर्योदयकी एक किरण प्रकाशित हुई।

"निशा विरामे परिचिन्तयामि, गेहे प्रज्वलिते किमहं स्वपामि"

यह श्लोक याद आया। घर जल रहा है' मैं किस लिए सोरहा हूँ? मैं संसारकी वासनाओंमें फसकर सच-मुच ही अमूल्य मानव भवके कीमतीक्षण व्यर्थ गवाँ रहा हूँ। क्या संसारमें रहकर इससे बढ़कर और भी सुख मिल

सकता है ? जिसकी आशासे मैं मृगजलको देख मृगके समान दौड़धूप कर रहा हूँ ? मैं क्यों नहीं इस तुच्छ इन्द्रियसुख लालसाके बन्धनको तोड़कर आत्मसाधनाके मार्ग पर चढ़ जाता ? मुझमें इतनी कमजोरी ? अहा ! मैं कितना प्रमादी हूँ ! पूर्वभवमें किए हुए सुकृत और दुष्कृत का अनुभव करने पर भी उस सच्चे सुखके मार्गको न स्वीकार कर विनश्वर इन्द्रिय विषय सुखमें लुब्ध हो रहा हूँ ? बस अब ऐसा न होगा। अब मुझे यह संसार डरावना लगता है। पिता ! प्यारे पूज्य पिता ! तुम धन्य हो ! इस तृष्णामय संसारको त्याग कर परम शान्तिके मार्गमें गमनकर अपनी आत्माका कल्याण करनेवाले पिता ! तुम धन्य हो। हे पूज्यनीय वीरधवल राजर्षि ! आप धन्य हैं ! मैं भी अब उसी मार्गका आश्रय लूँगा' अवश्य लूँगा। मेरी निद्राभंग होगई। हे तेजोमय त्यागमूर्ति ! तुमने दर्शनदेकर मुझे कीचड़मेंसे खींचलिया।

पूर्वोक्त विरक्त विचारोंमें ही महाबलकी रात बीत गई। प्रतःकाल होने पर सुखशय्यासे उठकर आवश्यकादि षटकर्मसे निमट कर वैराग्यरस पूर्ण हृदयवान वह राजसभामें आया। मनुष्यकी प्रबल इच्छाशक्ति भी जादू का काम करती है। थोड़ी ही देरके बाद राजसभामें एक वनमालीने आकर विनम्रभावसे कहा—महाराज ! सरकारी

बगीचेमें ज्ञानदिवाकर और तेजोमय त्यागमूर्ति कोई एक महात्मा पुरुष पधारे हैं। यह सुनकर महाबलके हर्षका पार न रहा। अपने मनोभावको सिद्ध करनेवाले महा पुरुषका समागम सुनकर विकसित हो उठा। "सचमुच ही मैं पुण्यवान् हूँ' मेरे विचारके साथ ही ज्ञानीगुरु महा-राजका समागम होगया। बस यही मेरे समुन्नत भविष्य की निशानी है। इच्छा होतेही साधकको उत्तर साधक—सहायककी प्राप्ति होना यही कार्य सिद्धिकी सूचना है,, यह विचार करते हुए राजा प्रसन्न चित्त हो सिंहासनसे नीचे उतरा। उत्तरासन करके जिस दिशामें शहरसे बाहर महात्मा ठहरे हुए हैं उस दिशा तरफ पाँच-सात कदम चलकर जमीन पर मस्तक लगा पंचांग नमस्कार किया। गुरुमहाराजके समागमकी खबर लानेवाले वनमालीको प्रीतिदान देकर विदा किया। फिर तुरन्त ही राजसभा बरखास्तकर राजा गुरुमहाराजको वन्दनार्थ जानेकी तैयारी करने लगा। देर ही क्या थी, तुरन्त ही सर्व तैयारी होने पर तमाम राजकुलको साथ ले राजा गुरुमहाराजके समीप जा पहुँचा और उन्हें भक्तिभाव पूर्वक नमस्कारकर धर्मो-पदेश सुननेके इरादेसे गुरुमहाराजके सन्मुख बैठ गया। महात्माने धर्मदेशना प्रारम्भ की।

सज्जनो ! वास्तविक सुख क्रोध, अभिमान, कपट,

लोभ, लालच और विषय तृष्णाओंको कुचल डालने पर अपने ही भीतरसे प्राप्त होता है। बस इसेही आत्मशुद्धि कहते हैं। आत्मामें सुखका परम भण्डार भरा है। परन्तु पूर्वोक्त दोषोंको नाश किये विना वह प्राप्त हो नहीं सकता। आत्मशुद्धिके सिवा सच्चे सुखका लाभ होना असम्भव है। मानलो कि पानीसे भरा हुआ एक विशाल कुण्ड है और उसमें एक अमूल्य रत्न पड़ा है, परन्तु उस कुण्डका पानी गदला है और वारंवार पवनकी लहरियों से वह पानी हिलझुल रहा है। उस मलीन और हलन चलनवाले तरंगित पानीकी परिस्थितिमें कुण्डमें नीचे पड़े हुए अमूल्य रत्नको क्या आप देख सकेंगे ? कदापि नहीं। बस इसी प्रकार आत्माका शुद्धरूप रत्न मनरूप पानीमें नीचे पड़ा है। वह मनरूप पानी विषय कषायकी मलीनतासे गदला हो रहा है और अनेक प्रकारकी कुत्सित विचार तरंगोंसे डोलायमान होरहा है। इस लिए जब तक विषय कषायका अभाव और मनोगत अनेक वितर्कों की शान्ति न हो तबतक शुद्धात्मरत्नरूप सच्चे सुखके दर्शन या प्राप्तिकी आशा रखना व्यर्थ है। इसी कारण आत्मशुद्धिके लिए मलीन मानसिक वृत्तियोंका परित्याग करना चाहिये। बाह्य उपाधियों—जो मनोवृत्तिको मलीन करती हैं उनका भी त्याग करना चाहिये। ऐसा करने पर ही

नित्य अविनाशी आत्मिक सुख प्राप्त होता है।

गुरु महाराजके मुखसे पूर्वोक्त धर्मदेशना सुनकर राजामहाबल आत्मसाधन करनेके लिए सावधान होगया। पुण्योदयके कारण प्रथमसे ही उसके अन्दर आत्म जागृति पैदा होगई थी, धर्मदेशनासे उसका पूरापोषण होगया।

धर्मोपदेश समाप्त होनेपर सपरिवार नगरमें आगया। उसने शतबल, सहस्रबल और मलयासुन्दरीको बुलाकर उनके समक्ष अपनी संयम अंगीकार करनेकी आतुरता बतलाई। जबसे अपना पूर्वभव वृत्तान्त सुना था मलया-सुन्दरी तो तबसे ही संसारसे विरक्त थी। वह सिर्फ पति की इच्छाके अधीन होकर इतने समय तक गृहवासमें रही थी। महाबलके विचार सुनकर उसके उत्साहमें और भी वृद्धि हुई। सांसारिक स्नेह बन्धनोंको तोड़कर वह पति के साथ ही संयम ग्रहण करनेको तैयार होगई।

सागरतिलककी राजधानी प्रथमसे ही शतबलको सौंपदी गई थी। अब पृथवीस्थानपुरकी राजगद्दी पर सहस्र-बलको बैठाया गया। नवीन राजा सहस्रबल और शतबल ने माता पिताके संयम ग्रहण करनेके अवसर पर नगरमें बड़े समारोहसे अष्टान्हिका महोत्सव किया। महाबलके साथ अनेक राजपुरुषों और मलयासुन्दरीके साथ अनेक राजकुलकी स्त्रियोंने संयम अंगीकार किया। दीक्षा

ग्रहण करनेपर संयम शिक्षणके लिए मलयासुन्दरी आदि को सपरिवार महत्तरा साध्वीको सौंप दिया गया।

राजर्षि महाबल संयमोचित शिक्षण ग्रहण करते हुए कुछ दिन पृथ्वीस्थानपुरमें रहकर गुरु महाराजके साथ अन्यत्र विहार कर गया। साध्वी मलयासुन्दरी भी अपनी गुरु महत्तरा साध्वीके साथ अन्यत्र विहार कर गई।

अब वे दोनों जुदे जुदे स्थलोंमें विचरकर ज्ञानध्यान से अपनी आत्माको कृतार्थ करते थे। कभी कभी विचरते हुए सागरतिलक और पृथ्वीस्थान आकर दोनों पुत्रोंको धर्म मार्गमें प्रेरित करते और आत्मगुण घातक व्यसनों से दूर रहनेका उपदेश देते थे। वे दोनों भाईभी परस्पर प्रीतिपरायण होकर सद्गुरुके उपदेशसे धर्मध्यानमें एवं अपनी अपनी प्रजाको हरएक प्रकारसे सुखी बनानेमें सावधान रहते थे। माता पिताकी धर्म प्रेरणासे वे दोनों राजा धर्ममें इतने दृढ होगये कि दूसरे मनुष्योंको भी वे धर्ममार्गमें जोड़नेकी प्रेरणा करने लगे।

तलवारकी धारके समान तीव्र तपाचरण करते हुए राजर्षि महाबल क्रमसे सिद्धान्तका पारगामी हो गीतार्थ होगया। आत्मोद्धारके लिए महान् प्रयत्न शील महामुनि महाबलको गीतार्थ होनेके कारण एकला विचरनेकी भी गुरुमहाराजने आज्ञा देदी। अपने क्लिष्ट कर्मनाश करनेके

लिए उसने भी समुदायसे स्वतंत्र विचरना पसन्द किया। अब वह महातपस्वी अपने साधुसमूहसे पृथक होकर जंगलों, श्मशानों, पहाड़ों और गिरिकंदराओंमें निवास कर घोर तपके द्वारा आत्मोज्वल करने लगा।

अपनी मनोवृत्तिको दमन करते हुए इस महामुनि ने आत्मधर्ममें मेरु पर्वतके समान निश्चलता प्राप्त की थी। उपसर्गोंको सहन करनेमें पृथ्वीके समान सहन शीलता प्राप्त की थी। अपने श्रमणधर्ममें स्थिर रहने के लिए उसे आकाशके समान किसी आलम्बनकी आवश्यकता न थी। उसकी मुख मुद्रा चंद्रके समान सौम्य थी। उसका पवित्र हृदय समुद्रके समान गम्भीर था। वह वैराग्य रसमें लीन होकर आत्मध्यान द्वारा कर्मशत्रुओंको निर्मूल करनेमें निरन्तर सावधान रहता था अपने और परायेके लिये उस महात्माके हृदयमें द्वैतभाव न रह गया था एक दिन विहार करते हुए सन्ध्याके समय परम त्यागकी मूर्ति वह महामना महाबल मुनिसागर तिलक नगरके समीप बाह्योद्यानमें आपहुँचा। अपने क्लिष्ट कर्मरूप शत्रुओंपर विजय पाकर आत्मीय शुद्ध स्वरूप प्राप्त करनेका ही लक्ष्यबिन्दु होनेके कारण संध्या समय होनेसे वह वहाँपर ही एक राजकीय बगीचेके पास कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रामें ध्यानस्थ हो खड़ा रहा।

ठीक इसी समय उस बगीचेका माली घूमता हुआ उस महामुनिकी ओर आनिकला। उसने ध्यानमुद्रामें खड़े महाबल राजर्षिको देख कर पहचान लिया। क्यों कि वह तो सरकारी ही माली था परन्तु सागर तिलकका तो बच्चा बच्चा भी महाबलको पहचानता था। ध्यानस्थ मुनिको नमस्कार कर वनमाली शीघ्रही शहरमें आया और उसने राज सभामें जाकर राजा शतबलको सहर्ष यह समाचार सुनाया कि महाराज ! आपके पूज्य पिता जी महामुनि महाबल राजर्षि आज शहरसे बाहर सरकारी बगीचेके पास पधारे हैं और वहाँपर ध्यान मुद्रामें ध्यानस्थ हो खड़े हैं।

इस खुश खबरको सुनकर राजा शतबलके हर्षका पार न रहा। उसने अपने पूज्य पिता और धर्म गुरुका समागम समाचार देनेवाले वनमालीको बहुतसा प्रीतिदान देकर विदा किया। राजाने विचार किया इस वक्त सन्ध्या समय होगया है' रात्रिका प्रारम्भ होने आया है, इस लिए सुबह प्रातःकालमें ही सर्व परिवारके साथ जाकर पूज्य पिता श्री गुरु महाराजको वन्दन करूँगा। सचमुच ही मैं भाग्यवान हूँ' मेरे पुण्योदयसे ही गुरु महाराजने यहाँ पधार कर इस शहरको पवित्र किया है। इस तरह बोलते हुए राजाने उस दिशाकी ओर जिधर त्याग मूर्ति

महाबल राजर्षि ध्यानमें खड़ा था चलकर जमीन पर मस्तक लगाकर पंचाँग नमस्कार किया। सुबह होने पर पूज्य पिताजीका दर्शन होगा' उनके मुखारविन्दसे धर्मोपदेश सुनूगा और उनके उपदेशानुसार चलनेका भरशक प्रयत्न करूँगा। इन्हीं विचारोंकी उत्सुकतामें राजाने बड़े कष्टसे रात विताई।

निर्वाण-प्राप्ति,

मलयासुन्दरीको राक्षसीका कलंक दिए बाद सन्दूक में से बाहर निकालकर सूरपाल राजाने कनकवतीकी ताड़ना तर्जना कर उसे देश निकालेकी शिक्षा दी थी। स्त्री जाति होनेके कारण उसे प्राण दंडकी शिक्षा न दी गई। अब वह अपने दुष्कर्मों से प्रेरित हो देश देशान्तरोंमें भटकती हुई दुःखित अवस्थामें दैव वशात् आज ही कहींसे सागर तिलक शहरमें आ पहुँची है। किसी कार्य प्रसंग से वह सन्ध्याके समय शहरसे बाहर उसी प्रदेशमें गई जहांपर महातपस्वी राजर्षि महाबल ध्यान लगाये खड़ा था। महाबल मुनिको देखतेही उसने पहचान लिया। अब वह दुष्ट हृदया स्त्री मनमें विचारने लगी 'यह क्या? यह तो सूरपाल राजाका राजकुमार महाबल मालूम होता है, क्या यह साधु बन गया है! यहतो मेरे तमाम दुराचरणोंको जानता है। यदि इसने मेरे जीवनकी घटनायें यहाँपर किसीके सामने प्रगट कर दीं तो इस शहरमें भी मेरी दाल गलनी मुश्किल होजायगी। फिर तो मुझे यहाँ रहने तकको स्थान भी न मिलेगा। लोग तिरस्कार पूर्वक मुझे शहरसे बाहर निकाल देंगे। सच कहा है 'पापा सर्वत्र-

शंकिता' पापी प्राणी सब जगह अपने पापसे शंकाशील ही रहता है; मुझे इस वक्त कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे मेरे दुश्चरित्र किसीको भी मालूम न हो सकें। इसी प्रकारके विचार करती हुई और वहाँ पर चारों ओर गौरसे देखती हुई वह वापिस शहरमें आगई।

करीब डेढ़ पहर रात बीत चुकी है। चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ है। सारा शहर निद्रादेवीकी गोद में पड़ा सो रहा है, इसी कारण शहर भरमें सन्नाटा छा रहा है। रास्ते सुन सान पड़े हैं। ऐसे मानव संचार रहित समयमें एक स्त्री इधर उधर देखती हुई हाथमें एक जलती हुई लकड़ी लिए शहरसे बाहर निकल कर उसी शून्य जंगलकी तरफ जा रही है जिधर त्याग मूर्ति राजर्षि महाबल आत्मध्यानमें लीन हो खड़े हैं। सचमुचही इस समय परम संवेग रसमें निमग्न हो आत्म स्वरूपके चिंतन द्वारा वह धर्म मूर्ति महामुनि संसारमें जन्म मरण पैदा करानेवाले अपने कठिन कर्मोंको नाश करनेमें तल्लीन हो रहा था। ठीक इसी समय वह स्त्री उस महामुनिके समीप आ पहुँची। दैवयोगसे हमेशह वहाँही रहनेवाला बगीचेका माली भी आज किसी कार्यवश शहरमें ही रह गया था' अतः उस भूमिभागको जन संचार रहित देख कर वह स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई।

पाठक महाशय ! भ्रान्तिमें न पड़े। यह अन्य कोई नहीं आपकी पूर्व परिचिता और महाबल मुनिकी पूर्व भवकी वैरन कनकवती ही है। आज ऐसी अवस्थामें इसे महाबलसे बदला चुका लेनेका सूझा है। अहा कितनी नीचता! कितना क्रूर स्वभाव! अपने पराये' शत्रु मित्र सुवर्ण और पाषाण पर समान भाव रखनेवाले और आत्मस्वरूपकी प्राप्तिके लिए ध्यान मग्न अवस्थामें खड़े हुए महामुनिको जीवित जला देनेका घोर पापकर्म करने का भयंकर साहस !! हे सदय हृदय! धिक्कार नहीं परंतु ऐसे घोर पाप कर्मकरके भावी परिणाममें नरककी भयंकर यातना भोगनेवाले प्राणियोंपर तू दया धारण कर

उसी प्रदेशमें किसी मनुष्यने कोयले करनेके लिए बहुतसी लकड़ियां डाली हुई थीं। उस दुष्टा स्त्रीने अपने पापकर्मकी सिद्धिमें उन लकडियोंका उपयोग कर लिया। घोर अन्धकारवाली रात्रिमें उसवक्त वहाँपर अपना ही राज्य समझ कर कनकवतीने उन लकड़ियोंको उठा उठा कर ध्यानस्थ खड़े हुए मुनिराजके चारों ओर चिन दिया। लकड़ियाँ बहुत पड़ी थीं अतः पैरसे लेकर सिर तक लकड़ियोंका खूब ढेर लगा दिया, जिससे कहींसे भी उस का शरीर मालूम न दे सके।

मुनिको चारों तरफसे लकड़ियों द्वारा वेष्टित कर

कनकवतीने चारों गतिके अनेक प्रकारके दुःखोंसे अपनी आत्माको वेष्टित कर लिया। जन्मान्तरके वैरानुबन्धसे निर्दय हो अब उसने उस जीवित चिताके चारों तरफ अग्नि सुलगा दी। मानो कनकवतीके पुण्य संचयको जड़सेही भस्मीभूत करता हो इस प्रकार अग्नि काष्टमें प्रदीप्त हो गया। आत्म ध्यानमें सावधन खड़े हुए महा मुनिने अपनेपर मरणान्त उपसर्ग आया देख मनःसाची आराधना करली। अब वह दुःसह वेदनायें सहन करता हुआ अपने आपको बोध देने लगा।

सचमुच ऐसे समय ही आत्मा और देहकी भिन्नता का स्पष्ट ज्ञान मालूम होता है। ज्ञानवान मनुष्यकी सच्ची परीक्षा ऐसे ही अवसर पर हुआ करती है। ऐसेही वक्त पर स्वभावमें स्थित रहनेसे कठिन कर्म नाश होते हैं और अपने सच्चे बलकी परीक्षा देनेका सुअवसर भी ज्ञानवान महापुरुषोंको अपने जीवनमें कदाचितही प्राप्त होता है।

अपने चारों ओर लकड़ियाँ चिन दी हैं' किसने और किस लिए ऐसा किया है ? इसका परिणाम क्या होगा ? अब अग्नि शरीर तक पहुँचनेवाला है और उससे मैं जीवित ही जल मरूँगा' इन तमाम बातोंसे महामुनि महाबल अज्ञात न था। उसने प्रथमसेही केवलज्ञान

धारी गुरु महाराजके मुखसे सुना हुआ था कि एक दफा कनकवती महाबलको फिर दुःसह उपसर्ग करेगी। एवं महाबलमुनि स्वयंभी इस समय उसे अपनी नजरसे देख रहा था। यदि वह इस संकटसे बचना चाहता तो खुशी से बच सकता था इतना ही नहीं किन्तु यदि वह अपने पर अत्याचार करनेवाली कनकवतीको शिक्षा देना चाहता तो यह सामर्थ्य भी उसमें था ही। इस शहरका राजाभी उसीका पुत्र और परम भक्त है। यह सब कुछ होने परभी उस महामुनिने मरणान्त कष्ट क्यों सहन किया होगा? यह बात साधारण पाठकके मनमें आश्चर्य पैदा करनेवाली है। जिस ज्ञान वान त्यागी मुनिने अपने शरीरके ममत्वको त्याग दिया। जिसे किसी भी प्रकारकी शारीरिक मूर्च्छा नहीं है वह संसार के कारागृहसे मुक्त होकर सदानन्द देनेवाले आत्म स्वरूपकी प्राप्तिके मार्गमें रोड़ा अटकानेवाले शरीर ममत्वको सामने क्यों आने देगा? विशेष कारण तो वह मुनिही जाने हमें क्या पता लग सकता है?

ऐसे प्रसंग पर जिस जागृतिकी आवश्यकता होती है, वह उस महा पुरुषमें प्रथमसे ही थी। अब वह मानसिक वृत्तिको आत्म स्वभावमें स्थित रखनेके लिए स्वयंही समभावमें दृढ होने लगा। आत्मा! तू जिस देह मंदिर

में रहा हुआ है वह तुझसे जुदा है' उसके जल जानेपर तुझे जराभी आँच न आयेगी। क्योंकि तू अमर है और अरूपी है। यह अग्नि तेरे पूर्व संचित किये कर्ममलको जलाकर तुझे विशुद्ध करता है,,।

इत्यादि प्रवल विशुद्ध भावना बलसे कनकवती पर द्वेष और शरीर पर ममत्वभाव पैदा न होने देकर समभावकी सरल श्रेणीसे वह महात्मा आगे बढ़ा। एकत्व भावनामें लीन होनेके कारण उसके शुभाशुभ कर्मों और देह ममत्वका भाव सर्वथा नष्ट हो गया। इस आत्म स्थितिमें निमग्न होनेसे घाति कर्मोंका चय होते ही उसके हृदयाकाशमें केवल ज्ञानरूप सूर्यका उदय हो गया। ज्यों वह अग्नि जल रहा था त्यों आन्तर अग्नि शुक्लध्यान प्रज्वलित हो रहा था। इस शुक्ल ध्यानरूप आन्तर अग्निने देह भस्म होनेसे पहलेही शेष रहे हुए अघाति कर्मोंको भी भस्मीभूत कर डाला। बस अब वह सर्वकर्मोंका नाश होनेसे कृतकार्य हो सदाके लिए जन्म, जरा मरणसे मुक्त होकर शाश्वत अविनाशी निर्वाण पदको प्राप्त हो गया। धन्य है ऐसी पवित्रात्माओंको।

'मलयासुन्दरीका उपदेश,

यह महापुरुषोंका अटल उपदेश है कि जो शुभ कार्य कल करनेका विचार हो उसे आजही करलो और जो आज करना है उसे अभी करो। श्रेष्ठ विचार आने पर उसे आचारमें लानेके लिए विलम्ब मत करो। शुभ कार्य में विलम्ब करनेसे उसमें विघ्नबाधा पड़ते देर नहीं लगती। यदि किसी कारण मनमें बुरे विचार पैदा हुए हैं तो उन्हें आचारमें लानेकी शीघ्रता मत करो। विलम्ब करनेसे मनुष्य बुरे कर्मसे बच सकता है। परन्तु शुभ विचारको आचारमें लानेके लिए आलस्य या विलम्ब करनेसे मनुष्य को किसी समय महान् पश्चात्ताप करना पड़ता है।

प्रातःकाल होतेही उत्सुकतापूर्वक सकल परिवारको साथ लेकर शतबल राजा अपने पूज्य पिता और धर्म गुरुको वन्दनार्थ उद्यानमें आया। परन्तु वहाँपर वह महामुनि कहीं परभी देख न पड़ा। वनमालीके बतलाये मुजब जहाँपर वह महामुनि कल सन्ध्या समय ध्यानस्थ हो खड़ा था इस वक्त वहाँपर राखका ढेर लगा पड़ा है। उस राखको देखनेसे मालूम हुआ कि उसमें किसी मनुष्य को जलाया गया है। खूब बारीकाईसे तलाश करनेपर

यह साबित होगया कि किसी दुष्टने उस महामुनिको ही जला दिया है। यह दुःखद समाचार सुनते ही धर्मप्रेमी पितृभक्त शतबलराजा अकस्मात् मूर्च्छा पाकर जमीनपर गिर पड़ा। यह देख मंत्री सामन्तोंके भी दुःखका पार न रहा। शीतोपचार करनेपर राजा होशमें आया और पश्चात्ताप करते हुए बोल उठा—"अरे! भव भ्रमणसे निर्भीकहो इस महामुनिको ऐसा घोर उपसर्ग किस दुष्टात्माने किया है? राखके पुंजपर दृष्टि पड़नेसे पिता भक्त कोमल हृदय शतबलको फिरसे मूर्च्छाने दबा लिया। कुछ देर बाद सुध आनेपर वह मुक्तकंठसे विलाप करने लगा।

"हा! हताश! शतबल। तू इतना निर्भाग्य है! समीप आये हुए दुर्लभ पिताके चरणकमलोंमें नमस्कार तक भी न कर सका! इतना प्रमाद! हे पूज्यपिता! आपकी करुणापूर्ण पवित्रदृष्टि मुझ अभागेपर न पड़ सकी! मैं अभाग्यशेखर आपकी अमृतमय उप देशवाणी न सुन सका! एक दरीद्र मनुष्यके समान मेरे मनोरथ मनमें ही विलीन होगये! हा! मेरे ही राज्यमें धर्ममूर्ति पिताश्रीकी यह दशा!! यदि मैं संध्या समयही यहाँ आया होता तो मुझे कलही सब तरहका लाभ प्राप्त होजाता। परन्तु धिक्कार है मेरे प्रमादी जीवनको!

इस प्रकार दुःख मनाते हुए राजाने राजपुरुषोंको

आज्ञा दी "सुभटो ! जाओ उस दुष्टात्माके पदचिन्ह देख कर उसे जीवितको ही मेरे पास ले आओ।

राजाकी आज्ञा होतेही अनेक राजसुभट चारों ओर दौड़ पड़े। पदचिन्ह पहचानने वाले राजपुरुष उस स्त्रीके पदचिन्हके अनुसार धीरे धीरे शहरसे बाहर एक खंडहर पड़े हुए मठके पास जापहुँचे। बस वहाँपर ही वह पापात्मा कनकवती छिपकर बैठी थी। राजपुरुषोंने उसे बाँध लिया और राजाके पास ला खड़ी की। राजाने ताड़ना तर्जना द्वारा मुनिराजको भस्म करनेका कारण पूछा। उसने अपना किया हुआ तमाम अकृत्य बतला दिया। राजाने सुभटोंके द्वारा अनेक प्रकारकी मारसे उसे जानसे मरवा डाला। उसने अपने किये हुए दुष्ट कर्मों के अनुसार ही फल पाया। वह मृत्यु पाकर छठी नरकमें नारक तया उत्पन्न हुई।

अपराधीको दण्ड देनेपरभी राजा शतबलका शोक दूर न हुआ। उसके हृदयका कारी घाव न भरा। गुरु और पिताकी त्रुटि पूरी न हुई। प्रधान पुरुषोंके समझाने परभी उसके हृदयाकाशसे शोकके बादल नष्ट न हुए।

इधर यह समाचार पृथ्वीस्थानपुरमें पहुँचनेपर राजा सहस्त्रबलके भी शोकका पार न रहा। उसके आनन्दमें निरानन्द छा गया। दोनों राजाओंने पिताके शोकसागर

में निमग्न होकर अपने तमाम प्रकारके सुखोंको त्याग दिया । अब रात दिन उनके सामने पिताके गुण और उनकी वह विषममृत्यु देख पड़ती है, इससे राज्यका सर्व कार्य शिथिल होने लगा ।

इधर साध्वी मलयासुन्दरीने निर्मल चारित्र पालन करते हुए ज्ञानाभ्यासमें आगे बढ़कर क्रमसे ग्यारह अंग पर्यन्तका ज्ञान प्राप्त कर लिया था । उसने तत्वज्ञानमें बहुत गहरा प्रवेश किया था । ज्ञानोपार्जनके साथ वह तीव्र तप भी करती थी । ज्यों क्लिष्ट कर्मोंको क्षय करने में वह रातदिन सावधान रहती थी त्यों नये कर्मबन्ध से भी बचनेमें बड़ी सावचेत रहती थी । क्योंकि कर्मके भयंकर परिणामका अनुभव उसने इसी भवमें किया हुआ था । अभीतक वह उन दुःखके दिनोंको भूल न गई थी ।

निरन्तर ज्ञानध्यानमें प्रयत्न करते हुए उस महासतीको अवधिज्ञानकी प्राप्ति हुई थी । गुरु महाराजने उसकी उच्च योग्यताको देख उसे महत्तराकी (प्रवर्तनी)पदवी से विभूषित किया था । अवधिज्ञानके प्रकाशसे वह मनुष्योंके संदेह दूरकर उन्हें सद्बोध देकर धर्म मार्गमें प्रेरित करती । अपने ज्ञानके प्रकाशसे एक दिन उसने महा मुनि महाबलका निर्वाण हुआ देखा । शतबलको पितृ शोकसागरमें निमग्न देख उसका उद्धार करनेकी भावनासे

महत्तरा मलयासुन्री अनेक साध्वी समुदायके साथ विहार कर सागरतिलक शहरमें पधारी ।

अपनी माता महत्तरा मलयासुन्दरीका आगमन सुन कर राजा शतबलको बड़ी खुशी हुई। समाचार मिलतेही वह सपरिवार तत्काल महत्तराको वन्दना करने आया। नमस्कार कर वह धर्म शिक्षा ग्रहण करनेकी इच्छासे परिवार सहित उचित स्थानपर बैठ गया।

अमृतके समान मधुर वचनों द्वारा प्रसन्नमुखसे साध्वी मलयासुन्दरीने उपदेश करते हुए कहा "शतबल! क्या तुम शरीरकी क्षणभंगुरता, आयुष्यकी अल्पता और संयोगोंकी वियोगशीलता भूल गये? पुत्र! संसारमें इस नश्वर देहसे कौन अमर रहा है? अनन्त बलधारक और देवदेवेन्द्रोंसे सेवित तीर्थंकरोंने भी क्या इस देहका परित्याग नहीं किया? महासत्त्वशाली मनुष्योंमें शिरोमणि तुम्हारे पिता महामुनि महाबल उस स्त्रीके किये हुए उपसर्गके बाद केवल ज्ञान प्राप्त करके उसी समय निर्वाण पदको पाये हैं।

जिसके लिए धन, धाम, स्वजन, स्त्री पुत्रादि सर्व वस्तुओंका परित्याग किया जाता है' जिसके लिए तपश्चरण आदि दुष्कर धर्म क्रियायें कर महान् दुःख सहन किये जाते हैं वह दुर्लभमें दुर्लभ परम पद उन्होंने प्राप्त किया

है। वे जन्म जरा मृत्यु आदि संसारके दुखोंसे सदाके लिए मुक्त हो गये हैं। शाश्वते सुखको पानेवाले पिता के लिए तुम शोक किस लिए करते हो ?

यदि कभी किसी अपने प्रिय मित्रको महान् निधान की प्राप्ति हुई हो तो उस समय उसपर भक्ति या प्रेमका दम भरनेवाले मनुष्यको खुशी होगी या शोक ? बस वैसे ही तुम्हारे पिताको केवलज्ञानरूप आत्मनिधानकी प्राप्ति हुई है' इससे तुम्हें शोक नहीं बल्कि आनन्द होना चाहिये।

जिस तरह किसीका कोई सगासम्बन्धी बहुत दिनोंसे कैदखानेमें रहा हुआहो और किसी समय उस कैदखानेसे वह सदाके लिये मुक्त होगया हो और यह समाचार उसके किसी इष्ट जनको मिला हो तो इससे वह खुशी होगा या शोकातुर ? पुत्र ! तुम्हारे पूज्य पिता भी संसारके बन्धनोंसे सदाके लिए मुक्त हो गये हैं, अतः ऐसे समय तुम्हें शोक न करना चाहिये। निर्वाण समय के कष्टको यादकर जो तुम्हें शोक होता है इसमें भी विचारकी शून्यता है। क्या संग्राममें विजय की इच्छा-वाले सुभट शत्रुओंके प्रहार सहन नहीं करते ? उसी प्रकार तुम्हारे पिताने जीवन संग्राममें कर्म शत्रुओंके साथ युद्ध करते हुए शुद्धात्मा स्वभावरूप विजय लक्ष्मी

की इच्छासे जो उस समय कष्ट या उपसर्ग सहा है वह उस विजयके सामने उनके मन कुछ हिसाबमें नहीं है।

हे वत्स! तुम्हें जो इस बातके याद आनेसे दुःख होता है कि मैं पिताके चरण कमलोंमें नमस्कार न कर पाया। यह दुःख मानना भी उचित नहीं' क्योंकि तुम सदासे ही पितृभक्त हो' पिताकी सेवा भक्ति तुमने हमेशा की है और आज भी तुम्हारा उनके प्रति वही भाव है' इसलिये पिताकी साक्षात् आराधना करनेसे जो लाभ प्राप्त हो सकता है वह तुमने अपने परिणामकी विशुद्धता से प्राप्त करलिया है। उनके प्रति इस प्रकारके भक्ति भाव द्वारा और भी तुम्हें अधिक लाभ होगा। अतः हे पुत्र! संसारकी विचित्रताका खयाल कर तुझे पिताशोक में पड़कर अपने कर्तव्यको न भूलना चाहिये. शोकमें निमग्न होकर मनुष्य अपना एवं दूसरोंका रक्षण नहीं कर सकता। संसारको दुःखोंका घर समझो। संसारके सम्बन्धोंको स्वप्नके समान अनित्य समझो' लक्ष्मीको बिजली चमत्कारके तुल्य चपल समझो और जीवनको पानीके बुलबुलेके सदृश जानो। पुत्र! गुरुशिक्षा ग्रहण करनेमें चतुर तुम्हारे जैसे विवेकी पुरुष भी जब इस तरहका शोक करेंगे तो फिर धैर्य और विवेक गुण किस का आश्रय लेंगे?

इस प्रकार महत्तरा मलयासुंदरीने शोक निमग्न राजा शतबलको उपदेश देकर शोक सागरसे पार किया। उसके सारगर्भित और युक्तिपूर्ण वचनोंका शतबलपर इतना गहरा असर हुआ वह शोक रहित होकर धर्मध्यान में सावधान होगया। महत्तरा साध्वी अपनें कल्पकी मर्यादानुसार जितने दिन सागर तिलकशहरमें रही उतने दिन निरन्तर शतबल उसका धर्मोपदेश सुनता रहा। जिस जगह महाबल मुनिका निर्वाण हुआ था उस जगह शत-बल राजाने एक बड़ा विशाल मंदिर बनवाया और उसमें महाबलकी मूर्ति स्थापन कर बड़ाभारी महोत्सव किया। अब महत्तरा मलयासुंदरी राजाको धर्ममें सावधान एवं स्थिर कर वहाँसे अन्यत्र विहार कर गई।

"स्वर्ग गमन और उपसंहार,

परोपकार प्रवीणा महत्तरा मलयासुंदरी सागर तिलक से विहार कर अब अपने लघुपुत्रकी राजधानी पृथ्वीस्थानपुरमें आ पहुँची। पिताके शोकसे राजा सहस्रबलकी भी खराब दशा हो रही थी। महत्तराने उसे भी उपदेश देकर कर्तव्य मार्गमें स्थिर किया।

पृथ्वीस्थानपुरमें महत्तराके आगमनका समाचार सुन कर शतबल भी उसके दर्शनों और भाईसे मिलनेकी उत्सुकतासे वहाँ आ गया। अब निरन्तर दोनों भाई धर्मपरायण होकर महत्तराका धर्मोपदेश सुनते हैं और एकाग्रमनसे धर्मसेवा करते हैं। उनकी धर्मश्रद्धा बड़ी दृढ थी। वे सदैव त्रिकाल जिन पूजन करते' सुपात्र दान देते' यथा शक्ति तपश्चरण करते' अनेक विध संघकी भक्ति और वात्सल्य करते थे। गरीब अनाथोंके लिये जगह जगहपर अन्नदानके चेत्र खोल रक्खे थे। जीवहिंसा या अधर्म एवं अनीतिके मार्गमें गमन करनेवालोंको सक्त कानून या सजा द्वारा रोका जाता था। उन दोनों भाइयोंने अपनी प्रजामें अनेक प्रकारके उपकार कर जैनधर्मका भी खूब प्र... किया था। प्रजाके लिये स्वयं अपने खर्चसे

हरएक शहरमें जैन मन्दिर निर्माण किये थे। धर्मात्मा-ओंके लिये पोषधशालायें' बीमारोंके लिये औषधालय' अपाहिजोंके लिये अनाथालय और बेकार पशुओंके लिये पाँजरापोलें निर्माण करवाईं।

महत्तरा मलयासुन्दरी अपने दोनों पुत्रोंको धर्म-मार्गमें स्थिर कर वहाँसे अन्यत्र विहार कर गई। अनेक देशदेशान्तरोंमें विचर कर उसने हजारों मनुष्योंको धर्ममें जोड़ा। उसके सारगर्भित धर्मोपदेशमें जादूसा भरा था। उसकी शान्त और आनन्दी मुखमुद्रा दर्शकोंको नमनेके लिये विवश करती थी। राजतेज और तपस्तेज एकत्रित होनेसे उसकी धर्मदेशनाका श्रोताओंपर बड़ा गहरा असर पड़ता था। उसे देखते ही कठिन हृदयवाले मनुष्यके मन में भी पूज्यभाव पैदा होता था।

उसने अपने अंतिम दिनोंमें घोर तपश्चर्या कर और निरन्तर ज्ञानध्यानमें ही लीन रह कर बहुतसे क्लिष्ट कर्मोंको नष्ट कर दिया था। यह तो हम प्रथम ही लिख चुके हैं कि उसके घोर तपश्चर्यरण और विशुद्ध चारित्रके कारण उसे अवधिज्ञान पैदा हुआ था। एक दिन शरीर शिथिल होनेपर उसने अपने ज्ञानबलसे जान लिया कि अब उसका आयुष्य बहुत कम रह गया है। उसने साव-धान हो समाधि मरणके लिये तैयारी करली। चारों

प्रकारके आहारका परित्याग कर आराधना की। देहको वुसरा कर अरिहन्त, सिद्ध' साधु और सर्वज्ञ प्रणीत धर्म का शरण स्वीकार किया।

अन्त समय संसारके समस्त प्राणियोंसे अपनेसे ज्ञाताज्ञात हुए अपराधोंकीक्षमा याचना करते और अरिहन्त, भगवन्तको स्मरण करते हुये इस मानवजीवन यात्राको समाप्त कर महत्तरा मलयासुन्दरी स्वर्गसिधार गई। उसकी आत्मा अच्युत नामक वारहवें स्वर्गमें जाकर देवतया उत्पन्न होगई।

पाठक! महाशय! बस यहाँ ही इस महासती का जीवन चरित्र समाप्त होता है। यदि आपने इसे ध्यानपूर्वक पढ़ा है तो इसमें से आपके जीवनको उन्नत बनाने वाली आपको वहुतसी शिक्षायें मिल सकती हैं। ग्रन्थ पाठकके विचारानुसार ही या उसके ग्रहण करनेकी योग्यतानुसार ही उसे लाभ प्रद होसकता है। इस ग्रन्थमें भी पाठकोंको ज्ञेय', हेय और उपादेय तथा ग्रहण करने योग्य बहुतसी शिक्षायें भरी हैं। आप अपनी इच्छानुसार ग्रहण कर सकते हैं।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः